



॥ ॐ श्रीपरमगुरुन्योनमः ॥

॥ अथ पंक्ति श्रीकांतिविजयजी कृत ॥

॥ श्रीमहावल मलयसुंदरीनो रास प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री सुख संपदा, पूरण परम उदार ॥ श्री
दीप्तर ध्यानंद निधी, प्रणमुप्रेम अपार ॥ १ ॥ फणि
मणि मंजित नील तनु, करुणारस नरपूर ॥ पारस
जलधर पद्मवो, बोध बीज अंकूर ॥ २ ॥ शासन ना
यक साहिवो, गिरुठ गुण विलसंत ॥ हरिलंतन हियडे
धरुं, महावीर जगवंत ॥ ३ ॥ गणधर सुख मंमथ व
से, अविद्वड महिमा जेह ॥ अंतर तिमिर विनाशिनी,
समरुं सरसति तेह ॥ ४ ॥ चउमंगल वरत्यां हवे,
प्रगटयो वचन प्रकाश ॥ निजइछा पूर्वक पणे, जापुं
चारु नास ॥ ५ ॥ धर्म सहित कौतुक कथा, कवि
ता कहेतो सार ॥ निज जीहा पावन करे, विकसे
मति परिचार ॥ ६ ॥ वींकार धुर संठव्यो, चउवेदा
चोसाल ॥ तिम पुरुषारथ धुर धर्यो, धर्म एक सु र
साल ॥ ७ ॥ इगति पढता जीवने, धारण्यी ते

मर्म ॥ नाणादिक त्रण रत्नमय, कहीयें ताहि सुमर्म ॥
 ॥ ८ ॥ नाणादिक जिन उपदिस्था, निर्मलता गुण
 हेतु ॥ पण विशेष नाणज कह्यो, सोधितणो संकेतु
 ॥ ९ ॥ अकल पदारथ सोधिदै, परमारथथी नाण ॥
 निरुपाधिक लोचन नवुं, त्रीजुं नाण प्रमाण ॥ १० ॥
 निःकारण बंधव समो, नवजल तरण उपाय ॥ स्व
 लता दुरगति खाडमें, आलंबन निरपाय ॥ ११ ॥
 अंतर तिमिरने जेदवा, नाण दीप निरबाध ॥ नरता
 दिक नृप नाणथी, नवजल तखा अगाध ॥ १२ ॥
 नाण विपदथी उदरे, नाण दीये सवि थोक ॥ मल
 यसुंदरी जिम सुख लही, चित्तधरी एक सलोक ॥ १३ ॥
 किम आपदथी उतरी, किम पामी सुख ठाय ॥ तास
 चरित्र चौपै कहुं, सुणजो सद्गु चित्त लाय ॥ १४ ॥
 आलश निडा परिहरी, ठंमी विकथा मित्र ॥ सुणतां
 मलयानी कथा, करजो करण पवित्र ॥ १५ ॥
 ॥ ढाल पहेली ॥ अजितजिणंदसुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥
 ॥ जंबू द्वीप सोहामणो, सोहे सोहे हो सवि
 ॥ विचाल के, लवण समुडें वींटीउं, लाख लोय
 हो वरतुल जिम आलके ॥ जं० ॥ १ ॥ तेमांहे क्षेत्र
 ॥ अठे, खटखंमे हो मंमित सुविशाल ॥ नव नव

संपद चूमिका, ते साधे हो चक्री ठोगाल ॥ जं० ॥ १ ॥
 दक्षिण नाग चंडावती, नगरी तिहां हो ठाजे निकलं
 क ॥ अलकापुरि उपर गई, लंकावली हो सायर जस
 संक ॥ जं० ॥ ३ ॥ विस्तर चहुटा चिटुंदिसं, चोरा
 सी हो चाया जिहां खास ॥ सायर तजी जल दूष
 णें, जाणे लखमी हो तिहां कीथो निवास ॥ जं० ॥
 ॥ ४ ॥ फटिक रतनमय सौधनी, रुचि उज्जल हो प
 सरे अजिराम ॥ अंधारें पख पण नहीं, तिणे रहेवा
 हो क्षण तिमिरनो ठाम ॥ जं० ॥ ५ ॥ किहां कणें
 घर चंडकांतनां, पडिजिंवे हो तिहां चंड मरीच ॥ अ
 खल जल परनालना, वरसालो हो परगट करे सी
 च ॥ जं० ॥ ६ ॥ गयणंगणतल पूरती, अटारी हो
 उंची कैलाश ॥ गोखें गोखें रहे गोरडी, जाणे अपहर
 हो करे रंग विलास ॥ जं० ॥ ७ ॥ मरकत विद्रुम
 कांचने, कैरचिया हो मंदरना जाल ॥ दिसिदिसि तेज
 जलामले, होये दिन दिन हो सुर धनुष अकाल ॥
 ॥ जं० ॥ ८ ॥ कुंकुम मृगमद वासीया, जलपूरें हो
 दगगें प्रनाल ॥ नमर नमे रसीया परें, रस लंपट
 हो करता ठक चाल ॥ जं० ॥ ९ ॥ गढविंटी चिन्
 दिसि ॐ हो सुखीए सविलोग ॥ -

आलंबन लहे बहु, पामे पामे हो नव नवला जोग
 ॥ जं० ॥ १० ॥ कंटक कंटक तरु रह्या, दो जीहा हो
 विषहर कहेवाय ॥ खल दाखीजे खेतमां, मंददीजे
 हो सुर मंदिर ठाय ॥ जं० ॥ ११ ॥ करछेदन नृप जे
 ग्रहे, तिम कुसुमे हो बंधन उपचार ॥ कुटिल पणो
 केसें ठव्यो, नव दीसे हो कोइ लोक मजार ॥ जं० ॥
 ॥ १२ ॥ निर्मल सरवर जल नखां, के दर्पण हो दि
 सिनां मनुहार ॥ जोगी जमर जीजे घणा, घण महके
 हो कमलोनो सार ॥ जं० ॥ १३ ॥ वनवाडी आरामनी,
 ठबि नीली हो अडती चिहुं उर ॥ स्वर्गपुरी जीतण न
 णी, कसी चीडयो हो बखतर हठ जोर ॥ जं० ॥ १४ ॥
 अतुलबली बली नृप समो, रिपुमृगने हो त्रासन जे
 सींह ॥ दाता ताता साहसी, न्याये धोरी हो गुण
 वंत अबीह ॥ जं० ॥ १५ ॥ सबल प्रतापें तापव्या,
 रिपु वसीया हो सीतल गिरि कूंज ॥ वनफल नखी
 निजर पीयें, मुनिवृत्तें हो जीवे दुःख पूंज ॥ जं० ॥
 ॥ १६ ॥ लखमी करकमलें वसी, मुख एहने हो स
 रसती विलसंत ॥ विण आदर रहवो किशो, जस
 कीरति हो गइ कोपी दिगंत ॥ जं० ॥ १७ ॥ हेलें
 धनुष नमाडतां, शिर नमिया हो अरिनां तत

काल ॥ वीरधवल नामे तिहा, करे राजा हो निज
 राज संनाज ॥ जं० ॥ १७ ॥ देशावर नृप जेटणा, बहु
 आवे हो हय गय रथ कोडि ॥ चतुरंगी सेनाधणी,
 नवि आवे हो तेहनी कोइ जोडि ॥ जं० ॥ १८ ॥ को
 मल चंपक दल जिसी, घर राणी हो रतिने अनुहार ॥
 चंपकमाला तेहने, शीलादिक हो गुण मणि चमार ॥
 ॥ जं० ॥ १९ ॥ बीजी कनवती अठे, सोहागिण हो
 नृप प्रेम निधान ॥ विलसे रंगे रायसुं, सुखलीणी हो
 बे चढते मान ॥ जं० ॥ २० ॥ पुर वर्णनी परगढी, इम
 कांते हो कही पहेजी ढाल ॥ सुणो श्रोता जीजी क
 री, आगल ठे हो अतिवात रसाल ॥ जं० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पालें प्रजा, निज संतति परें तेह ॥
 दुःख दोहग दूरें करे, दिनदिन धरतो नेह ॥ १ ॥
 एक दिन चिंतातुर थइ, बेगो तेह नृपान्न ॥ अतिहिं
 आमण दूमणो, नीची दृष्टि निहाल ॥ २ ॥ आद
 र नवि दे केहने, दिलगिरी दिल मांह ॥ ठोडी ठय
 लें नवनवी, रागरंगनी चाह ॥ ३ ॥ वदनकमल जा
 खुं थयुं, डरवल थयुं शरीर ॥ चिंता मायणी आग
 लें, धीरज कुण सहे धीर ॥ ४ ॥ चिंता मायणि

मनवसी, कृण कृण पंजर खाय ॥ तिलतिल करी
 जे संचीउ, ते तोले तोले जाय ॥ ५ ॥ संतापें ता
 प्यो घणु, नसुणो केहनी वात ॥ अन्न उदक रुची
 परिहरि, जोगीसरज्युं ध्यात ॥ ६ ॥ चंपक माला पे
 खीउं, इणो अवसर नरनाह ॥ आइ तुरत पणो ति
 हां, सन्नम नर चित्तचाह ॥ ७ ॥ राय आगल उनी
 रही, धरती राग विशेष ॥ करजोडी बोली प्रिया, इ
 णीपरें अवर उवेख ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ करजोडी मंत्रि कहे ॥ एदेशी ॥

॥ करजोडी राणीकहे, अरज सुणो महाराज हो
 प्रीतम ॥ पूहुं हुं ठंदे रह्या, कहेतां मत करो लाज
 हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १ ॥ बोली नहीं मन मेलवी,
 खोली नहीं सदजाव हो ॥ प्री० ॥ आवतां आव
 कहो नहीं, जातां कहो नहीं जाव हो ॥ प्री० ॥
 कर० ॥ २ ॥ यइवेठा अण उंजखू, नधरो कांइ सने
 ह हो ॥ प्री० ॥ वरी जाउं लखवार हूं, मुजरो द्यो
 गुण नेह हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ३ ॥ दासी हूं पा
 पहुं, यें महारा सिररा मोड हो ॥ प्री० ॥ यें जी
 वणी उंयधी, कुंण करे तुमची होड हो ॥ प्री० ॥
 कर० ॥ ४ ॥ किम तरसे वोढ्या विना, प्रगटे ठे अ

म ताप हो ॥ प्री० ॥ मौन लीउ केणे कारणे, चिं
 तातुर थइ आप हो ॥ प्री० कर० ॥ ५ ॥ केणे तु
 म कथन कीउ नहीं, कुणे इहव्या माहाराय हो ॥
 प्री० ॥ के कांता कोइ विल वसी, चिंतो तास उपा
 य हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ६ ॥ के कोइ अरिअण
 जागीउ, चिंता पेगी तास हो ॥ प्री० ॥ के जोगी
 जंगम मळो, कीधां तेणे उदास हो ॥ प्री० ॥ क
 र० ॥ ७ ॥ के कोइ बाधा उपनी, अंगे जीवन प्रा
 ण हो ॥ प्री० ॥ के इणे वेला सांनखो, अरिअण
 वयरी पुराण हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ८ ॥ कवण अ
 ठे ते राजीउ, जे बांधे तुमसुं तेग हो ॥ प्री० ॥ पं
 चायण गिरि गाजते, मृग नासैं करे वेग हो ॥ प्री०
 ॥ कर० ॥ ९ ॥ के केणे डुरजने जाखीउ, अणहुंतो
 अम दोष हो ॥ प्री० ॥ के किण्हिक अपहरि
 लीउ, नवलो लखमी कोश हो ॥ प्री० ॥ कर०
 ॥ १० ॥ के मनमान्यो सांनखो, परदेशी कोइ मित्त
 हो ॥ प्री० ॥ सुरत समयनुं बोलहुं, के खटक्यो को
 इ चित्त हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ ११ ॥ के मारग सं
 वेगनो, जेदाणु सरवंग हो ॥ प्री० ॥ मनमेलु साचुं
 कहो, आशय एह अजंग हो ॥ प्री० ॥ कर०

१२ ॥ यद्यपि नजांजे अम थकी, चिंता मोटी कां
 य हो ॥ प्री० ॥ तो पण एकांगे रही, समतायें विं
 हचाय हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १३ ॥ एम सुण्या ध
 रणी धवे, हृदयें स्त्रीना बोल हो ॥ प्री० ॥ सरिसा
 मन जेदन जना, मधुरा अमृतनें तोल हो ॥ प्री०
 ॥ करे० ॥ १४ ॥ कहेसे हवे राणी प्रते, ए अइ बी
 जी ढाल हो ॥ प्री० ॥ कांति कहे धन तेत्रिया, जे
 लहे पति चित्त चाल हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी उद्देग नर, बोदयो तव नूपाल ॥ चिं
 ता कारण चित्तधरी, सुण सुंदरी सुकुमाल ॥ १ ॥
 जे तें पूठया विविध परें, नहीं तेहनी मुज चिंत ॥
 शुद्ध स्वभावे सर्वथा, तिण बातें निश्चित ॥ २ ॥
 ए मुज चिंता उमटी, अकस्मात बलवंत ॥ मूल
 थकी मांमी कहूं, सुपरें सवि विरतंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ धिगधिग विषय विटंबना ॥ एदेशी ॥

॥ इणपुरमां व्यवहारिया, निवसे ठे गुणवंतो रे ॥
 लोननंदी लोनाकरा, वे जाइ धनवंतो रे ॥ १ ॥ धि
 गधिग लोच विटंबना, लोने लक्षण जाय रे ॥ लोने
 नर पीडा लहे, लोने डुरगति थाय रे ॥ धि० ॥ २ ॥

बांधव नेह धरे घणु, मांहो मांहें बेहो रे ॥ जेद न
 पामे ए कदा, खीर नीर परें तेहो रे ॥ धि० ॥ ३ ॥
 लोनाकरने सुत थयो, नाम कीउ गुणवर्म्मा रे ॥
 लोजनंदी परण्यो फरी, पण सुत नही पूरव कर्म्मा
 रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ एक दिवस बेठा मली, हाटें बे
 दु जेवारो रे ॥ परदेशी एक पंथीयो, आयो तेथ
 तिवारो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ जइ प्रकृति उनो रह्यो,
 तेहने को न पिठाणे रे ॥ दीगो शेठें एकलो, उत्तम
 पुरुष प्रमाणे रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ बोलाव्यो गोरव पणो,
 आगत स्वागत कीधो रे ॥ आदरसुं आगल जलो,
 आसण बेसण दीधो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ पूछे शेठ कि
 हां रहो, किम आव्या इण गामे रे ॥ जात किस्ती
 ठे तुमतणी, नीकलिया कियो कामे रे ॥ धि० ॥
 ८ ॥ कहे पंथी कृत्रि अबुं, परदेशी असहायो रे ॥
 देश देशावर देखतो, फरतो हुंतो इहां आयो रे ॥
 ९ ॥ शेठें निजघर तेडीउ, जोजन जगत जलेरी रे ॥
 कीधी वली केइ दिन लगें, राख्यो जातो घेरी रे ॥
 धि० ॥ १० ॥ विश्वासें हलि मलि रह्यो, अंतर कांइ
 न राखे रे ॥ देश विदेश तणी गणी, वात जली न
 ली जाखे रे ॥ धि० ११ ॥ अन्य दिवस कहे

यो, ए तुंबी मुज लीजे रे ॥ पाठी देजो शेवजी, जि
 ए दिन फरी मागीजे रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ मुखमुद्रा
 गाढी करी, शेव तणे कर दीधी रे ॥ उंची बांधी तुंब
 डी, हाट मांहे तेणे सीधी रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ वे नाश्ने
 तेणे कह्यो, करजो एहनी संजाल रे ॥ ते कहे हुं जीव
 न समो, एहणे तुमचो माल रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ चतुर
 विदेशी चूकीउ, रोप्यो अनरथ मूल रे ॥ कांति विजय
 कहे ढाल ए, त्रीजी थड अनुकूल रे ॥ धि० ॥ १५ ॥
 ॥ दोहा शेरवी ॥

॥ तुंबी लागो ताप, अवर वस्तुनो आकरो ॥ वाव्यो
 रसनो व्याप, जरवा लागी जटकसुं ॥ १ ॥ दोहा ॥
 तुंबीमांथी रस गली, हेव वंधार्ये बंद ॥ लोह कोश नीचें
 पडी, सिंचाणी निरमंद ॥ २ ॥ लोह दिशा लघु ठांमी
 ने, हेमदूउ द्युतिमंत ॥ हाट कोण जलिमलि रह्यो,
 मोडयो तिमिर तदंत ॥ ३ ॥ दृष्टिपडयो दो सेवने, सो
 वन साचे रंग ॥ चमत्कार चित्त पामीउ, जाण्यो रस
 नो संग ॥ ४ ॥ अतिलोनें आंधा दूआ, तुंबी ले नि
 स्संक ॥ गुपति पणें मूकी गृहे, नगण्यो काल कलंक ॥
 ॥ ५ ॥ मायावी मन हरखीया, लोनें वाह्या जुंम ॥
 कुलवट वहेती मूकीने, कीधो कारज जुंम ॥ ६ ॥ अ

ति उहक पंथी थयो, साचो चालण संच ॥ तुंबी मा
गी ते कन्हें, विनय वचन परपंच ॥ ४ ॥ मायावी मृड
वचनसुं, बोल्या बे डुरबुद्धि ॥ व्यग्रपणे तुज तुंबिनी,
कीधी कांइ न सुद्धि ॥ ५ ॥ वदित वंदेर थाफले, वा
म ताम प्रचंम ॥ काढयो बंधण तुंविका, पडी थइ श
तखंम ॥ ६ ॥ कोइक दिन तसु कटकडा, दीठा पड्या
थनेक ॥ अम दिलमें अति दुःख दुज, चिंताये व्यति
रेक ॥ ७ ॥ समसगरां करी साचज्युं, कृतिम करे दुःख
चार ॥ अपर तुंबीना खंम ले, देखाड्या तेणी वार ॥
॥ ११ ॥ वैदेशिक विलखो थयो, खोइ सघली थाथ ॥
हाहा दैव किछुं कीयो, जूमि पड्या वे हाथ ॥ १२ ॥
दह पणे जाण्यो तेणे, ए नहों तेहनां खंम ॥ जिम
तिम तुंबी उलवी, समकाढे ठे लंम ॥ १३ ॥ किहां
जावं केहने कहुं, किशो करुं हुं सूल ॥ दगो दिउं डुष्ट
बुरो, लीधो तुंब अमूल ॥ १४ ॥ कहुं कदाचित राय
ने, तोपण रस ले तेह ॥ चिंति चुंपे चित्तमें, श्म बोलें
गुण गेह ॥ १५ ॥

॥ ढाल चौथी ॥ विठियानी देशी ॥

॥ मोरी तुंबी दीउ शेवजी, हुंतो कहुंहुं गोद वि
ठाय रे ॥ काम न कीजें कांइ तेहवो, जेणे मान

तम जाय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ अरे परदेशीनुं उलबी,
 एह जीवन लीधो मुक्त रे ॥ जण विससीआ नीसा
 सडो, दुःख होसे सही तुक्त रे ॥ मो० ॥ २ ॥ बली
 तुम सरिखा जो इम करे, जन निंदित मातां काम रे ॥
 तो संतति विना जू लोकमां, सत्य रहेवानो कुंण ठाम
 रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ जलनिधि रहे मर्यादमां, धरणि शिर
 शेष वहंत रे ॥ अति सूर तपे नहीं आकारो, ते म
 हिमा ठे सत्यवंत रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ सत्यें सुर सानि
 थ करे, होय सत्यें पुरुष प्रमाण रे ॥ जग उत्तम स
 त्य राखण जणी, निज प्राण करे कुरवाण रे ॥ मो०
 ॥ ५ ॥ कांइ हांसुं न कीजें हेलथी, ए घर खोयानुं ठा
 म रे ॥ पठतावो होसें तुम मने, इणवातें खोसो मा
 म रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ इम जूठां सम खातां अकां, ना
 ठी तुमची किहां लाज रे ॥ नर उत्तम हाम वहे न
 ही, करतां जूंमां एहज काम रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ हवे
 लोच वसें लहेता नथी, एह वावोठो विष वेलि रे ॥
 तुम अनरथ फल देसें घणा, हुं कहुंहुं लज्जा मेलि
 रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ बिहुं शेठ कहे सुण पंथिया, कांइ
 सुधि गईठे तुक्त रे ॥ जग वाडि न चोरे चीनडां, दिल
 बूज विचारि अबूज रे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इम जूठो दोष

चढावीने, तुं खोवे कां निज ठाम रे ॥ किहां सुणिया
 शाह् शिरोमणी, ए करता जूना काम रे ॥ मो० ॥ १० ॥
 फिट लाजे नहीं कां बोलतो, अणहुंति एम गमार
 रे ॥ जो होत होये राउल जणी, तो जइयें आव
 ए वार रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ अति काठो उत्तर इम दी
 उ, शेते करी कपट निवार रे ॥ ते पंथिक निरास प
 णो ग्रही, कोप्यो अति जोर तिवार रे ॥ मो० ॥ १२ ॥
 कांइ साची सीखामण दुं हवे, इम बोढ्यो तेंणीवार
 रे ॥ एक विद्या ठोडी थंजणी, ते थंन्या घरने वार रे ॥
 ॥ मो० ॥ १३ ॥ तव संधे संधे बंधित थया, न खिते
 त्यांथी तिल मात रे ॥ विहुं चित्र लिखित परें थिर
 रह्या, मन मांहे धणु अकुजात रे ॥ मो० ॥ १४ ॥ तेह
 कठी चढ्यो परदेशियो, दुःखजाल बंधाणा बेह रे ॥
 इहां चोथी ढाल सोहामणी, इम कांतिविजय कही
 एह रे ॥ मो० ॥ १५ ॥

॥ दोहा शेरवी ॥

॥ सोचें सूधा शेर, वेढु कजा वारणो ॥ दैवें दीधी
 वेठ, पेट मसली पीडा करी ॥ १ ॥ आव्या लोक अ
 नेक, थंज जिशा थिर देखोने ॥ ठेतरिया ठल ठे
 वोले अचरिज जखा ॥ २ ॥ सुणतां लोक

शीत कहे संकट पड्या ॥ करुणा करी को जाए, अ
 मने ठोडे इहां थकी ॥ ३ ॥ अमे नजाण्यो एह, आ
 पद पडसे आकरी ॥ दुःखनर दाधी देह, प्राण दुआ
 ठे प्राहूणा ॥ ४ ॥ कीजें कवण उपाय, मरताने मा
 ख्या दिवें ॥ जो किम तूट्यो जाय, तो काम नकीजें
 एहवो ॥ ५ ॥ लोक हसें जख कोडि, कै रोवें कै कूकु
 ए ॥ देता दह दिसि दोड, कौतुक निरखे कइ जणा ॥
 ॥ ६ ॥ हुठ ते हाहाकार, पुर मांहे प्रबल पणे ॥ वा
 त तणो विस्तार, जाण्यो सघले जुगतिसुं ॥ ७ ॥
 दोहा ॥ गुणवर्मा इणे अवसरें, ग्रामांतरथी गेह ॥
 आयो वात कुटुंबथी, जाणी सघली तेह ॥ ८ ॥ पि
 ता पिताबांधव बेहु, द्वारें थंन्या देखि ॥ लाज्यो
 मनमांहे घणो, दुःख पाय्यो सविशेष ॥ ९ ॥ कु
 मर कहे सुणो तातजी, मकरो चिंता कांय ॥ विधि
 सुं तुम ठोडण नणी, करसुं कोडि उपाय ॥ १० ॥
 चिंतातुर तव कुमरते, सोधे नवनव बुद्धि ॥ कार न
 थावी कांइ तिणें, जोवे तांत्रिक सिद्ध ॥ ११ ॥
 ॥ ढाल पांचमी ॥ अबला किम उवेखीयें रे ॥ एदेशी ॥

॥ कुमर हवे उनमत थयो रे, सोधे नव नव वाद्य
 रे ॥ मांत्रिक तांत्रिक मेलवा रे, मांमे कोडि उपाय रे ॥

तातने लोटवा, करता दीज नकांय रे ॥ पुरमाहे फरे,
 जोवे छुगति बनाय रे ॥ धंभण तोडवा, पण नाने को
 य दाय रे ॥ तानने लोटवा ॥ १ ॥ गाम नगर पुर क
 व्बडे रे, जमतो नाते रे आम ॥ जे थम तातने वो
 टवे रे, तो मुंह माग्या चुं दाम रे ॥ ता० ॥ २ ॥ च
 चन सुणी ठग्या तिते रे, विविध वैद्यना पुत्र ॥ लिख
 बुद्ध औपधी धरा रे, जणता निज निज सूत्र रे ॥ ता०
 ॥ ३ ॥ केइ जंगम केइ जोगीया रे, केइ तापस अवधूत ॥
 जाप जपंता थाविया रे, चाढी शीत विजून रे ॥ ता०
 ॥ ४ ॥ कै कापिल कै कापडो रे, कै सन्यासी नक्ति ॥
 कै बांजण वली वेदीआ रे, कै ध्याता शिव शक्ति रे ॥
 ता० ॥ ५ ॥ ब्रह्मचारी केता मिह्या रे, केताइक श्रीपा
 त ॥ केइ निरंजन पंथना रे, केइक चरक कहात रे ॥
 ता० ॥ ६ ॥ केइ दिगंबर दोडीया रे, जरडाने जगवंत ॥
 केइ त्रिदंभी मुंमिया रे, थागल कीध महंत रे ॥ ता०
 ॥ ७ ॥ राउल रंगे उमटवा रे, दोडवा केइ दरवेश ॥
 जगने फंदे पाडवा रे, करता नवनव वेश रे ॥
 ता० ॥ ८ ॥ इष्टधरा अचिचारका रे, जतन करावे को
 डि ॥ आवी विध विध उपचरे रे, करता होडा होडि रे
 ॥ ता० ॥ ९ ॥ एक कहे थादति दिथो रे, बनिद्यो

कहंत ॥ इष्ट मनावो कोइ कहे रें, मंमलको विरचंत रे ॥
 ता० ॥ १० ॥ एक कहे धूषावीर्यें रे, एक कहे दीजे
 मंन ॥ एक कहे शिर मूंमीने रे, करियें तंत्र अचंन रे ॥
 ता० ॥ ११ ॥ एक कहे जल ठांटीयें रे, मंत्री एहने
 अंग ॥ एक कहे ए यंत्रथी रे, यासे पहेला चंग रे ॥
 ता० ॥ १२ ॥ एक कहे ग्रह पूजिने रे, करसुं साजा
 आंहिं ॥ एम अनेक शब्दें करी रे, कोलाहल दूठ त्यां
 हिं रे ॥ ता० ॥ १३ ॥ उद्यम सवि निःफल थयां रे,
 कोइ न आव्यो तंत ॥ रणनी कखर नूमिका रे, जिम
 जलधर वरसंत रे ॥ १४ ॥ जिम जिम युगति उपच
 ख्या रे, तिम तिम बाधे पीड ॥ सायर जल उंदा जि
 हां रे, तिहां वडवानल जीड रे ॥ ता० ॥ १५ ॥ दुर्जन
 न परे मंत्रादिकें रे, कीधा तेह निरास ॥ ऊठी गया
 निज निज थले रें, साथ मनोरथ तास रे ॥ ता० ॥ १६ ॥
 कुमर इस्यो मन चिंतवे रे, उठी जेहथी आग ॥ समसे
 तेहथी तेहने रे, आणु उद्यम लाग रे ॥ ता० ॥ १७ ॥
 उपलक्षक साथें लीउ रे, तव नर एक सखाय ॥ चाढ्यो
 नर सोधण नणी रे, कुमर करी चित्त ठाय रे ॥ ता०
 ॥ १८ ॥ शैठ रह्या बांध्या तिहां रे, करशे कुमर सहाय ॥
 ढाल कही ए पांचमी रे, कांतिविजय सुख दायरे ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वनगिरि गुहिर पुर नगर, निसदिन तेह नमं
 त ॥ पग पग पूने पंथमें, पण खबर न कोइ कहं
 त ॥ १ ॥ विकटपंथ अमथी पडयो, मांदो तेह स
 हाय ॥ सूकी कोइक नगरमां, कुमर चढ्यो असहा
 य ॥ २ ॥ पुर अटवी वलंधतो, पोहोतो एकण दे
 श ॥ निर मानुष मोटो तिहां, (मनुष्यनी वस्तिविना
 नो) दीगो नगर विशेष ॥ ३ ॥ उंचा मंदिर जगहले
 जाणो गिरि कैलास ॥ ठाम ठाम सुंनो पढी, मणिमा
 णिकनी राति ॥ ४ ॥ धानपूज पंखी चणो, बख उ
 ढाढे बाय ॥ श्रीफल फोडीने वांनरां, खांत करीने
 खाय ॥ ५ ॥ ब्रूटा ध्वज धरणी पडयां, ढोव्या मदिरा
 माट ॥ फूज पगर ठावें नखां, सुंनो दीसे हाट ॥ ६ ॥
 कुमर तब विस्मित पणो, कीधो नगर प्रवेश ॥ दीगो
 नर तिहां एक अति, सुंदर तरुणो वेश ॥ ७ ॥ बोव्यो
 तरुणो कुमरनें, कुणठे तुं महाजाग ॥ आव्यो कि
 हांयो किहां रहे, साचो कहे अम आग ॥ ८ ॥ कु
 मर कहे सुण मोहनां, हुं पंथी असहाय ॥ पंथकरी
 याको घणु, आव्यो तुं इणो गाय ॥ ९ ॥ तुं कुंण
 दीसे एकजो, वेगो वे किण काम ॥ रुद्धिनी सुं

किसैं, कुण नगरीजुं नाम ॥ १० ॥ ततऋण नर
बोव्युं इगुं, सुण बांधव गुणवंत ॥ मूलथकी कहुं मा
मीने, सकल परैं विरतंत ॥ ११ ॥

॥ ढाल ठही ॥ कपूर होये अतिऊजलुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुशवर्धन पुर ए नलुं रे, स्वर्ग पुरी उपमान ॥
राजासूरें शोजतो रे, दिन दिन चढते वान ॥ सुगुण
नर सांजल मोरी वात ॥ १ ॥ पुत्र दुआ वे सूरनैं
रे, जयचंडने विजयचंड, ॥ वे बांधव वाला घणुं रे,
कुवलयने जेम चंड ॥ सु० ॥ २ ॥ मुज बांधव जय
चंडने रे, ताते दीधुं राज ॥ लाडे लाढ्यो हुं रहुं रे,
न लहुं काज अकाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्वर्गे तात स
धारियो रे, मुजमन बेठी चिंत ॥ सघजा दिन नहिं
सारिखा रे, जग सहु एम कहंत ॥ सु० ॥ ४ ॥ वां
धव आणा किम बहूं रे, आणी एम अंदेश ॥ अ
निमाने हुं नीसखो रे, जोवा देशविदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥
जोतो जोतो नवनवा रे, देश विदेश चरित्त ॥ एक दि
वस चंडावती रे, पुरी वन मांहे पहुत्त ॥ सु० ॥ ६ ॥
सोन्य सुरूप सोहामणो रे, कोइक विद्या सिद्ध ॥ दीगो
नर में ततखणें रे, प्रणपति विनयें कीथ ॥ सु० ॥ ७ ॥
पीडा तनु तस आकरी रे, रोग विकट अतिसार ॥ की

ए अंग लागे नहीं रे, ठठण सक्ति जगार ॥ सु० ॥ १० ॥
 मुज मन करुणा उपनी रे, कीधा बहु उपचार ॥ सु० ॥
 डा दिन माहे थयो रे, रोग सकल परिहार ॥ सु० ॥
 ॥ ११ ॥ प्रसन्न थई मुज पुठीउ रे, नामादिक सवि तेण ॥ सु० ॥
 विद्या वे दीधी जली रे, जक्ति विमोहे एण ॥ सु० ॥
 ॥ १२ ॥ थनकरी एक वशिकरी रे, बीजी सूधी पाठ ॥ सु० ॥ १३ ॥
 विगत बताई जूझई रे, जोडी जाचा ठाठ ॥ सु० ॥ १४ ॥
 रस तुंबी दीधी बली रे, सेवा साची जाण ॥ चतुर ठु
 रत इम बोलीउ रे, मुज उपर हित थाण ॥ सु० ॥ १५ ॥
 गाढी खप करतां जह्यो रे, अति दुर्जन रस एह ॥
 लोह थकी कांचन करे रे, तिलनर फरश्यो जेह ॥
 सु० ॥ १६ ॥ ते थाप्यो ठे तुळने रे, करजे कोडी ज
 तन्न ॥ फिरि फिरि लहेतां दोहिलो रे, जेहवो दिव्य र
 तन्न ॥ सु० ॥ १७ ॥ मात पिता जिम बालने रे, देई सीख
 सुजाण ॥ श्रीपरवत नेटण जणी रे, तेह गयो गुण
 वाण ॥ सु० ॥ १८ ॥ तिहाथी हुं चाल्यो बली रे, जो
 देश विशेष ॥ कौतुक रंगे नवनवां रे, अचरज दीठ
 पलेख ॥ सु० ॥ १९ ॥ फिरि थाव्यो चंझावती रे, केतेक
 चस थटंत ॥ जोग मले जवितव्यनुं रे, विधिना
 ह घटंत ॥ सु० ॥ २० ॥ पुरनां कौतुक निमण्यो

किसैं, कुण नगरीनुं नाम ॥ १० ॥ ततहुण नर
वोल्ह्युं इहुं, सुण बांधव गुणवंत ॥ मूलथकी कहुं मां
मीने, सकल परें विरतंत ॥ ११ ॥

॥ ढाल ठछी ॥ कपूर होये अतिऊजलुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुशवर्धन पुर ए जलुं रे, स्वर्ग पुरी उपमान ॥
राजासूरें शोजतो रे, दिन दिन चढते वान ॥ सुगुण
नर सांजल मोरी वात ॥ १ ॥ पुत्र दुआ वे सूरनै
रे, जयचंडने विजयचंड, ॥ वे बांधव वाला घणुं रे,
कुवलयने जेम चंड ॥ सु० ॥ २ ॥ मुज बांधव जय
चंडने रे, ताते दीधुं राज ॥ लाडे लाढ्यो हुं रहुं रे,
न लहुं काज अकाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्वर्गे तात स
धारियो रे, मुजमन वेठी चिंत ॥ सघला दिन नहिं
सारिखा रे, जग सहु एम कहंत ॥ सु० ॥ ४ ॥ बां
धव आणा किम वहुं रे, आणी एम अंदेश ॥ अ
निमाने हुं नीसखो रे, जोवा देशविदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥
जोतो जोतो नवनवा रे, देश विदेश चरित्त ॥ एक दि
वस चंडावती रे, पुरी वन माहि पहुत्त ॥ सु० ॥ ६ ॥
सोम्य सुख सोहामणो रे, कोइक विद्या सिद्ध ॥ दीगो
नर में ततखणें रे, प्रणपति विनयें कीय ॥ सु० ॥ ७ ॥
पीडा तनु तत आकरी रे, रोग विकट अतिसार ॥ द्दी

ण अंग लागे नही रे, उवाण सकि जगार ॥ सु० ॥ १० ॥
 मुज मन करुणा उपनी रे, कीया बहु उपचार ॥ थो
 डा दिन माहि थपो रे, रोग सकल परिहार ॥ सु० ॥
 ॥ ११ ॥ प्रसन्न थई मुज पुत्रीउं रे, नामादिक सबि तेण ॥
 विद्या वे दीधी जली रे, नकि विमोहे एण ॥ सु० ॥
 ॥ १२ ॥ थंनकरी एक यशिकरी रे, बीजी मूयी पाठ ॥
 विगत वताई जूजूई रे, जोडी जाया वाठ ॥ सु० ॥ १३ ॥
 रस तुंबी दीधी बली रे, सेवा साथी जाण ॥ चतुर तु
 रत इम बोलीउं रे, मुज उपर हित थाण ॥ सु० ॥ १४ ॥
 गाढी खप करतां जह्यो रे, अति दुर्जन रस एह ॥
 जोह थकी कांचन करे रे, तिजनर फरस्यो जेह ॥
 सु० ॥ १५ ॥ ते थाप्यो ने तुझने रे, करजे कोढी ज
 तन्न ॥ फिरि फिरि लहेतां दोहिलो रे, जेहवो दिव्य र
 तन्न ॥ सु० ॥ १६ ॥ मात पिता जिम बालने रे, देई सीख
 सुजाण ॥ श्रीपरवत नेटण जणी रे, तेह गयो गुण
 खाण ॥ सु० ॥ १७ ॥ तिहांथी हुं चाव्यो बली रे, जो
 वा देश विशेष ॥ कौतुक रंगे नवनवां रे, अचरज दीठ
 थलेख ॥ सु० ॥ १८ ॥ फिरि थाव्यो चंडावती रे, केतेक
 दिवस थटंत ॥ जोग मले जवितव्यनुं रे, विधिना
 जेह घटंत ॥ सु० ॥ १९ ॥ पुरनां कौतुक निर

में प्रगट करुं नहीं, आतम गत अवदात ॥ १ ॥ इम
 निश्चयकरी चित्तसुं, पूठे वली ससनेह ॥ पठी ययोसुं
 साहेवा, हितकरी सर्व कहेह ॥ २ ॥ कुमार कहे हुं
 दुःख नखो, फरियो नगर अशेष ॥ विस्मय सहित
 कुटुंबनी, व्यापि चिंत विशेष ॥ ४ ॥ शून्यपुरी सब
 निरखतो, नृपकुल पोहोतो जाम ॥ राजसुवन रमणि
 य द्युति, उपरें चढीउं ताम ॥ ५ ॥ दीन वदन विहा
 य तनु, करती चिंत अपार ॥ बेठी वीठी एकली, ति
 हां वड बांधव नार ॥ ६ ॥ में बोलावी हेजसुं, आ
 वी साहमी धाय ॥ नयणे आवण जंडी लगी, हीपडे
 दुःख न समाय ॥ ७ ॥ मधुर जपा मुज आगलें, मू
 के बेसण पीठ ॥ वात विगत पूठण नणी, हुं तस नि
 कट वर्त ॥ ८ ॥ रीति कीसी एह नगरीनी, दुरवस्थि
 त किम आम ॥ इम पूठयो में ततखिएं, बोली वा
 त विराम ॥ ९ ॥

ढाल सातमी ॥ मोरासाहेवहो श्रीशीतलनाथके ॥ एदेशी ॥

॥ मोरा देवर हो सुण दुःखनी वात के, कहेतां हइ
 हुं थरहरे ॥ वाल्हाने हो आगें अवदात के, कहा
 विण कहो किम सरे ॥ १ ॥ एक दिवस हो इण
 उद्यान के, तापस कोशक आचीयो ॥ रक्तांबर

तो शिव ध्यान के, मास दिवस तप जावीयो ॥ ३ ॥
 तस सांजलि हो महिमा निरपाय के, लोक सकल
 आवी नमे ॥ केइ चरचे हो जकें करी पाय के, केश
 र चंदन कुंकुमे ॥ ३ ॥ केताएक हो सेवे तस पास
 के, अर्हनिशि शिष्य जेम तेहनां ॥ केताएक हो खु
 ति मांमी खास के, ॥ लोक ते गहेजा नेहना ॥ ४ ॥
 ध्यामंत्रे हो केइ नोजन हेत के, पण नावे तेहने घ
 रें ॥ तुज बांधव हो एकदिन सुचि चेत के, पारण काजे
 तुंहतरे. ॥ ५ ॥ ते तापस हो मानी नृप वयण के,
 ध्याव्यो पारण कारणे ॥ नृप बोले हो इम विकसित
 नयण के, अंब फल्यो अम वारणे ॥ ६ ॥ ते वेगो
 हो जिमण जेणी वार के, मुजने इम नृपें कहायो ॥
 जो नाखे हो तुं पवन प्रचार के, ए तापस पुण्य ल
 ह्यो ॥ ७ ॥ में जुगते हो बीज्यो रुपी वाय के, रागें
 धागें बेमकें ॥ जाणंती हो करुणानिधि ध्याज के प्र
 सन्न करं दिज पमेकें ॥ ८ ॥ ते पापी हो मुज रूप
 निहाज के, पागंमी चितमां चव्यो ॥ चाहंती हो मु
 ल संगम ध्याज के, कामाकृत मन टल वच्यो ॥ ९ ॥
 निज ध्यानक हो पांढ्रोतो दृढ शोंग के, शाल वच्यो
 मन आकरो ॥ संकल्पें हो मजवानो योग के, योग

सकल मूक्यो परो ॥ १० ॥ निशि आब्यो हो कर ल
 ई गोह के, नांखी मंदिर उपरें ॥ करी संचो हो चढी
 ने तव जोह के, चोर परें गृह संचरे ॥ ११ ॥ मुज
 पासैं हो आब्यो ततकाल के, प्रारथना मांमी घणी
 ॥ बीवरावे हो करतो चकचाल के, शक्ति देखावे आ
 पणी ॥ १२ ॥ प्रतिबोध्यो हो में दृढता काज के, पा
 प तणा फल दाखीने, ते बोले हो विरमुं नहीं आज
 के, काम सिद्धाविण चाखीने ॥ १३ ॥ इम मतलत
 हो करतां सब तेह के, नृप सुणी आब्यो बारणे ॥ मु
 नि दीगो हो उलखीयो तेह के, घर तेडयो जे पारणे
 ॥ १४ ॥ फिट पापी हो धूरत शिरदार के, काम करे
 एहवा ॥ तुज प्रगटयो हो ए पाप अपार के, फल
 मीम हवे तेहवा ॥ १५ ॥ एम कहीने हो बंधाब्यो
 के, राजायें सेवक कने ॥ अपराधें हो गोधाने जे
 मांदि के, मेरी मेरी कूटना, खर चाटयो हो दुःख
 त्यांदि के, चट चट आमिष चूटना ॥ १७ ॥ निं
 हो गजायें जांर के, पुरजन वरग हमी जनो ॥
 नो हो नमिउ विहुं उर के, मजमूत्र मिंची जनो
 ॥ आकोम्यां हो मविनोक विडंब के, चांग मा

तो शिव ध्यान के, मास दिवस तप जावीयो ॥ १ ॥
 तस सांजलि हो महिमा निरपाय के, लोक सकल
 आवी नमे ॥ केइ चरचे हो नक्तें करी पाय के, केश
 र चंदन कुंकुमे ॥ ३ ॥ केताएक हो सेवे तस पास
 के, अर्हनिशि शिष्य जेम तेहनां ॥ केताएक हो खु
 ति मांमी खास के, ॥ लोक ते गहेजा नेहना ॥ ४ ॥
 ध्यामंत्रे हो केइ नोजन हेत के, पण नावे तेहने ध
 रें ॥ तुज बांधव हो एकदिन सुचि चेत के, पारण काजे
 नुंहतरे, ॥ ५ ॥ ते तापस हो मानी नृप वयण के,
 ध्याव्यो पारण कारणे ॥ नृप बोझे हो इम विकसित
 नयण के, अंब फड्यो अम वारणो ॥ ६ ॥ ते वेगो
 हो जिमण जेणी वार के, मुजने इम नूपें कह्यो ॥
 जो नावे हो तुं पवन प्रचार के, ए तापस पुष्टे ल
 ह्यो ॥ ७ ॥ में जुगनें हो वीज्यो रूपी वाय के, रागें
 ध्यानें वेमके ॥ जाणंती हो करुणानिधि ध्याज के, प्र
 सन्न कहें दिन पमेके ॥ ८ ॥ ते पापी हो मुज रूप
 निहाज के, पाग्वंमी चिनमां चव्यो ॥ चाहंतो हो छ
 ल संगम व्याज के, कामाकुज मन टल वव्यो ॥ ९ ॥
 निज ध्यानक हो पोहोंतो दृढ शोग के, शाल वस्थो
 मन आरुगो ॥ संकल्पें हो मजवानो योग के, योग

सकल मूक्यो पगो ॥ १० ॥ निनि व्याधो हो कर ने
 ह गोह के, नाखी मंदिर परे ॥ करी संचो हो चटो
 ने तय लोह के, चोर परे गृह संचरे ॥ ११ ॥ मुज
 पास हो आधो ततकाल के, शरयना मोगी पणी
 ॥ बीवरावे हो करतो चकचाल के, मक्ति देलाहें आ
 पणी ॥ १२ ॥ प्रतिबोधो हो में दृढता काज के, पा
 प तणा फल दाखीने, ते बोले हो विरमुं नहीं आज
 के, काम सिद्धाविण दाखीने ॥ १३ ॥ इम मतलजत
 हो करतां सवि तेह के, नृप मुणी आधो वारणे ॥ मु
 नि दीगो हो ठंजखीयो तेह के, पर तेहगो जे पारणे
 ॥ १४ ॥ फिट पापी हो धूरत शिरदार के, काम करे
 छूं एहवा ॥ तुज प्रगटघो हो ए पाप अपार के, फल
 पामीस हवे तेहवा ॥ १५ ॥ एम कहीने हो बंधाधो
 तेम के, राजायें सेवक कने ॥ अपराधें हो गोधाने जे
 म के, जीकें जुड़े तेहने ॥ १६ ॥ परजातें हो फेस्यो
 पुरमांहि के, सेरी सेरी कूटता, खर चाढघो हो दुःख
 पामे त्यांहि के, चट चट आमिष चूटता ॥ १७ ॥ निं
 दितो हो राजायें जोर के, पुरजन वरग हसी जतो ॥
 ताढीतो हो जमिउ चिहुं उर के, मलमूत्रें सिंची जतो
 ॥ १८ ॥ आक्रोम्यो हो सविलोक विडंब के, च

रें ते मारीउ ॥ बलपुखो हो योगिणना तुंब कें, नूपें
 काम इस्यो कीयो ॥ १९ ॥ ते ऊपनो हो राक्षस अव
 सान के, निज आतम विद्या करी ॥ संजारी हो पूर
 व अपमान के, वैर जाग्यो मत उंसरी ॥ २० ॥ अ
 ति जीपण हो विरुउ विकराल के, कोपाकुज गलगा
 जतो ॥ बलगाड्या हो कंठे विष व्याल के, गिरिवर
 वन तरु नाजतो ॥ २१ ॥ मुख वमतो हो विश्वानर
 जाल के, पिंगल लोचन हठ नखो ॥ कर लीधो हो
 तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचखो ॥ २२ ॥
 घस मसतो हो आव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें
 कहे ॥ मुज मारक हो पापी नूपाल के, किम सातार्यें
 तुं रहे ॥ २३ ॥ तुज बांधव हो सरणे गयो तास के,
 तोपण जटकसुं मारियो, पापीयडे हो आवी एक शा
 लके, नृपनो वैर उतारियो ॥ २४ ॥ नय देखी हो पु
 न सविजोक के, जीव लेई नासी गया ॥ केइ मा
 स्ता हो करता वणु शोक के, पण नावी पापी दया
 ॥ २५ ॥ पुरुषनो हो देखी जयनूत के, नासंती मु
 जने ग्रही ॥ इम बोझो हो धरी राग प्रतीत के, नई
 बही ॥ २६ ॥ मुजसाथें हो नोगव सुखनोग
 ॥ वीहे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरिखा

योग के, नाग्ये लहीयें नामनी ॥ ३३ ॥ एक कहि हूं ह
 राखी तेणे जूंग के, आप वसे सुख लंपटें, निशि आ
 वे हो मंदिरमां रंग के, दिवसैं किहां किण ते अटें
 ॥ ३४ ॥ देवरजी हो अम एहवा हवाल के, जे जा
 णो ते करो हवे ॥ इम कातें हो कही सातमी ढाल
 के, बात कही विजया सवे ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर निसासो नांखीने, पूठे मर्म विचार ॥ कि
 म जीतीने एहने, वालुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मर्म
 कहे विजया हवे, सांजल शुनट पुरोग ॥ राज चिंत
 तुज शिर अठे, तिणे दाखुं योग ॥ २ ॥ सूतां राहु
 सनां चरण, घृतघुं जो मरदाय ॥ मृतक समो अति
 निंद वश, तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निहि
 त हुवे, स्त्री फरसे नवि थाय ॥ जो नर जेद लहे व
 ली, नांखे शित उढाय ॥ ४ ॥ बांधव नारी मुख अ
 की, सांजली सर्व सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चा
 ल्यो हूं अनिरूप ॥ ५ ॥ तेटले मुजनें तुं मल्यो, नाग्य
 योग गुणवंत ॥ तें पूठी मुज बात ते, में नाखी सहु
 तंत ॥ ६ ॥ कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥
 वली गुणवर्माने इती, थरज करे तेणे गाम ॥ ७ ॥

रें ते मारीउ ॥ बलपुखो हो योगिणना तुंव कें, नूपें
 काम इस्यो कीयो ॥ ३९ ॥ ते ऊपनो हो राहुस अब
 सान के, निज आतम विद्या करी ॥ संजारी हो पूर
 व अपमान के, वैर जाग्यो मत उंसरी ॥ ४० ॥ अ
 ति नीषण हो विरुउ विकराल के, कोपाकुल गलगा
 जतो ॥ बलगाड्या हो कंठे विष व्याल के, गिरिवर
 बन तरु नाजतो ॥ ४१ ॥ मुख वमतो हो विश्वानर
 जाल के, पिंगल लोचन हठ नखो ॥ कर लीधो हो
 तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचखो ॥ ४२ ॥
 घस मसतो हो आव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें
 कहे ॥ मुज मारक हो पापी नृपाल के, किम सातायें
 तुं रहे ॥ ४३ ॥ तुज बांधव हो सरणे गयो तास के,
 तोषण जटकसुं मारियो, पापीयडे हो आवी एक शा
 सके, नृपनो वैर उतारियो ॥ ४४ ॥ नय देखी हो पु
 रना सविलोक के, जीव लेई नासी गया ॥ केइ मा
 ख्या हो करता घणु शोक के, पण नावी पापी दया
 ॥ ४५ ॥ पुरुषनो हो देखी नयनूत के, नासंती मु
 जने ग्रही ॥ इम बोव्यो हो धरी राग प्रतीत के, नई
 जावे किहां वही ॥ ४६ ॥ मुजसाथें हो जोगव सुखनोग
 ने नही ब्रीडे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरखें

योग के, नाग्ये लहीवें नामनी ॥ ३३ ॥ एमरुहि हूं हो
 राखी तेणो जुंग के, आप नसे मुख जंपटे, निशि था
 वे हो मंदिरमा रंग के, दिवसे किहां किण ते थटें
 ॥ ३४ ॥ देवरजी हो थम एदया हयाज के, जे जा
 णो ते करो हवे ॥ इम कार्ते हो कही सातमी ठाज
 के, बात कही बिजया सवे ॥ ३५ ॥

॥ बोहा ॥

कुमर निसासो नांखीने, पूठे मर्म विचार ॥ कि
 जीतीने एहने, बाहुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मर्म
 दे बिजया हवे, सांज छुनट पुरोग ॥ राज चिंत
 ज शिर थठे, तिणो दाखुं जुंग योग ॥ २ ॥ सूतां राहु
 तां चरण, पृतथं जो मरदाय ॥ मृतक समो अति
 द वश, तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निडि
 हवे, स्त्री फरसे नवि थाय ॥ जो नर जेद लहे व
 नांखे शिस उढाय ॥ ४ ॥ बांयव नारी मुख थ
 सांजली सर्व सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चा
 हें अनिरूप ॥ ५ ॥ तेटले मुजनें तुं मल्यो, नाग्य
 गुणवंत ॥ तें पूठी मुज बात ते, में जाखी सहु
 ६ ॥ कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥
 गुणवर्माने इत्ती, थरज करे तेणो गाम ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे करजोडीने रे, सांजल सुगुण सुजाण
 ॥ मनरा मान्या ॥ तुज दरिण करतां हूँ रे, मानव
 जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ म० ॥ अतिमाठा हो सकल दुःख
 नाठा, जयत्राठा महारा राज अति काठा, घाठा अ
 रियण मान ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ हियडुं हेजे
 गहगहे रे, उत्तम नरने संग ॥ म० ॥ अणचिंत्या
 साजन मले रे, ते आलसमां गंग ॥ म० ॥ २ ॥ स
 ज्ञान सहेजे परकजूरे, दुखीआं ये आधार ॥ म० ॥
 बलिहारी दुष्टं लखगमें रे, घडिया जेणे किरतार ॥
 म० ॥ ३ ॥ विधि सघली दूषण धरी रे, चूको सघ
 ली सृष्ट ॥ म० ॥ पण साजन घडतां करी रे, चतुरा
 ई उत्कृष्ट ॥ म० ॥ ४ ॥ स्वारथ तजी पर कारजे रे,
 समरथ सुगुण दुवंत ॥ म० ॥ चंद्रधवल जस शासतूं
 रे, दिन दिन ते प्रसवंत ॥ म० ॥ ५ ॥ परजन सु
 खीया देखीने रे, संत लहे संतोष ॥ म० ॥ दूहव्या
 ठे माणसें रे, पणनाणे मन रोष ॥ म० ॥ ६ ॥
 तटनी घण घेनुका रे, संत शशी दिणकार ॥
 म० ॥ मित्त कल्या विण स्वारथें रे, करता जग उपगार
 ॥ कर साहज तुं माहारों रे, यासे सु

जस अनंत ॥ म० ॥ डुरवस्थित पुर देखतां रे, कि
म तुज दुःख न वहंत ॥ म० ॥ ८ ॥ शैव कुमार चिं
ते इस्यो रे, कठण करेवो काज ॥ म० ॥ ९ ॥ पण उपकार
कखा पठी रे, ए करसे प्रतिकार ॥ म० ॥ १० ॥ अंगि
कखो शिर चांढीने रे, विजय वचन निरधार ॥ म० ॥
विनय सहित हवे शैवने रे, बोढ्यो विजय कुमार ॥
म० ॥ ११ ॥ राक्षसना पग मरदजो रे, घृतसुं हो
साहस धार ॥ म० ॥ सहस जपन करि मंत्रनो रे,
यंजावीस तेणीवार ॥ म० ॥ १२ ॥ राक्षसने हुं व
श करी रे, करसुं चिंत्या काम ॥ म० ॥ इम विचारी
मेलवी रे, सामग्री पर ताम ॥ म० ॥ १३ ॥ गुप्त प
णो ध्यावी रह्या रे, मंदिरमां एकंत ॥ म० ॥ गुणव
र्मायें पहेरियो रे, विजया वेश सुतंत ॥ म० ॥ १४ ॥
रयणी पढी रवि थायम्यो रे, प्रगटवो घण अंधार ॥
म० ॥ राक्षस रमतो थावियो रे, रंगे रमे तिणिवार
॥ म० ॥ १५ ॥ रयणीचर कहे नरतणी रे, आज थ
ठे सी वास ॥ मननी मानी ॥ हणतां जे रह्यो जी
वतो रे, करणुं तास विनास ॥ मननी ० ॥ १६ ॥ प्रि
या बोले हो चतुर हुंहुं नारी, घणुं वासैं महाराज
धरचारी, थवर नही कोई पास ॥ म० ॥ १७ ॥

वगणतो उन्नट पणो रे, सूतो सेजें तुरंग ॥ म० ॥
 कुमर बहु मिस आवीने रे, मरदे पय निरचंग ॥ म०
 ॥ १७ ॥ विजय कुमर विधिसुं जपे रे, अंजन मंत्र वि
 शेष ॥ म० ॥ ते पण नरनां गंधाची रे, ऊठे करी अं
 देश ॥ म० १८ ॥ जिमजिम ऊठे सेजथी रे, राक्षस
 मारण हेत ॥ म० ॥ तिम तिम फरस तणो सुखें रे, जो
 टि पडे गत चेत ॥ म० ॥ १९ ॥ मंत्र जाप पूरण थयो
 रे, मूक्यो मरदन जाम ॥ म० ॥ कुमर बिडुने मा
 रवा रे, ऊठयो राक्षस ताम ॥ म० ॥ २० ॥ अंन्यो
 अनोपम मंत्रथी रे, सक्तिथि विबिन्न ॥ म० ॥ दास
 थयो करजोडीने रे, जाखें एम वचन ॥ म० ॥ २१ ॥
 रेरे साक्ष मंमणी रे, कुमर सुणो एक वात ॥ म० ॥
 मुज महिमा मंत्रे हख्यो रे, जिम घन दहण वात
 ॥ म० ॥ २२ ॥ किंकर हुं कीधो खरो रे, मंत्र श
 क्तिसुं आज ॥ म० ॥ सेवक साचो जाणीने रे, द्यो सा
 हिव कोइ काज ॥ म० ॥ २३ ॥ कुमर कहे सुण ते
 करी रे, मुज नगरी निरलोक ॥ म० ॥ गत मंगल वि
 धवा जिस्ती रे, दीसे आज सशोक ॥ म० ॥ २४ ॥ म
 णि माणिक कण कंचणो रे, पूरण नरी घर हाट
 म० ॥ रचि तोरण स्वस्तिक जळें रे, सुरजित कर स

विवाट ॥ म० ॥ २५ ॥ तहत्ति करी कृणमें करी रे, न
 गरी नवले रूप ॥ म० ॥ लोक गया वहदिशि जिके
 रे, ते तेढया सवि नूप ॥ म० ॥ २६ ॥ विजय कुम
 र मजि मंत्रवी रे, थाप्यो राज सनूर ॥ म० ॥ अत
 मी अरियण नामिया रे, वाप्यो जस महि मूर ॥
 म० ॥ २७ ॥ विजय नृपति करजे हवे रे, थंन्या व
 णिक नो सूल ॥ म० ॥ कांतिविजय पूरी करी रे, था
 वमी ढाल अमूल ॥ म० ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विजय कुमर पाले प्रजा, दिन दिन परम प्रमोद
 ॥ शैव कुमर संगे चतुर, करतो रंग विनोद ॥ १ ॥ ए
 क दिवस गुणवर्मने, नूप कहे सदभाव ॥ राजगुं
 जे में लह्युं, ते सवि तुज परभाव ॥ २ ॥ अतिछुक्क
 र पणो आदरी, कीधुं मोहुं काज ॥ प्रत्युपकार करण
 नणी, ल्ये थुं तुं तुज राज ॥ ३ ॥ अवसर निरखी बोली
 ठ, शैव कुमर एम वाच ॥ में धरा फिरते निरखीठ, तुं
 मणि बीजा काच ॥ ४ ॥ सुगुणा तेह सराहियें, जे ज
 गमाहें ठतझ ॥ प्रत्युपकार करे जिके, ते सघला धुरि
 विझ ॥ ५ ॥ राज्य बधो दिन दिन घणो, हुं सेवक तुं
 स्वामि ॥ जो मानो मुज बीनती, तो सारो एक का

॥ ६ ॥ लोनाकर बांधव सहित, चंडपुरीनो शाह ॥
 विद्या थंन्यो तात मुज, ते ठोडो नरनाह ॥ ७ ॥ अ
 विनय सहियें साहेबा, करियें ए उपचार ॥ जां जी
 तुं तां तुम तणो, गणसुं ए उपकार ॥ ८ ॥ विगत
 पणो वृत्तांत सवि, नाखे करी मनुहार ॥ करतां नृपने
 वीनती, रीज्यो चित उदार ॥ ९ ॥

ढाल नवमी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ ए देशी ॥
 ॥ जीहो राय अचंनो पामीउ, जीहो बोख्यो शीस
 धुंणाय ॥ जीहो वषथी अमृत ऊपनो, जीहो अकथ
 कथा कहेवाय ॥ १ ॥ कुमर वारी धन धन तुम अय
 तार ॥ जीहो आप सहित दुःख दोहिलो, जीहो की
 धो मुज उपकार ॥ कुमर ० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो ते
 तेहवा तुं एहवो, जीहो उपकारक पवीत्र ॥ जीहो अ
 भूत रचना दैवनी, जीहो दीठी आज विचित्र ॥ कुम
 ० ॥ २ ॥ जीहो कारण गुण कारज ग्रहे, जीहो ए
 हवुं शास्त्र प्रसिद्ध ॥ जीहो तात तणा डरगुण विधि,
 जीहो पण तुज अंग न कीध ॥ कुम ० ॥ ३ ॥ जीहो
 काम अठे ए केटलुं, जीहो करवो में निरधार ॥ जी
 हो पण कारण तुज हाथ ठे, जीहो जेहथी न लागे वा
 ॥ कुम ० ॥ ४ ॥ जीहो इणो पुर परिसर बाहेरें, जी

हो एक सिंगगिरि नाम ॥ जीहो देवाधिष्ठित ठे तिहां,
 जीहो कूर्ई एक सुगम ॥ कुम० ॥ ५ ॥ जीहो गुप्त र
 हे गिरि कूपिका, जीहो सुरसानिध दिन रयण ॥ जी
 हो कृण मले कृण कधडे, जीहो तस मुख जिम नर
 नयण ॥ कुम० ॥ ६ ॥ जीहो सिद्धोपध जल तेहनूं,
 जीहो पूर्णहि लहेरां स्वाय ॥ जीहो काम पडे विद्या
 निजो, जीहो कोइक लेवा जाय ॥ कुम० ॥ ७ ॥
 जीहो उत्तर साधक शिर रहे, जीहो साधक पेसे
 त्याहिं ॥ जीहो जल लेइने नीकले, जीहो जो न
 मरेंदिलमांहि ॥ कुम० ॥ ८ ॥ जीहो ते जलनो
 महिमा घणो, जीहो जांजे नीड निदान ॥ जीहो
 थंन्यो नर वृटे सही, जीहो जो सुत ठांटे थाण
 ॥ कुम० ॥ ९ ॥ जीहो जेहने सुत नहीं आपणो,
 जीहो ते नर नवि वृटंत ॥ जीहो वार तीन ठांटे
 सही, जीहो बंधन चट विघटंत ॥ कुम० ॥ १० ॥
 जीहो कारण ए वृटा तणो, जीहो एहनो अन्य न को
 य ॥ जीहो थारति कुमरें अनुमन्यो, जीहो दुःकर का
 रज जोय ॥ कुम० ॥ ११ ॥ जीहो सामग्री सुतहा
 यसुं, जीहो कुमर गयो गिरि गृंग ॥ जीहो थाप कूर्ई
 मां उत्तरे, जीहो जिम पंकज मांहे जृंग ॥ कु० ॥ १२ ॥

जीहो निर्जय जल तूंबी नरी, जीहो बेगो मांची संव ॥
 जीहो कूर्ई बाहिर काढीउ, जीहो नूपें त्यांथी खंच ॥
 ॥ कुम० ॥ १३ ॥ जीहो अती साहसथी रीजीउ, जी
 हो तव कूर्ईनो देव ॥ जीहो प्रसन्न प्रगट आवी रह्यो,
 जीहो आगल करवा सेव ॥ कुम० ॥ १४ ॥ जीहो
 अश्वरूप कीथो सुरें, जीहो बे बेगो तस पीठ ॥ जीहो
 आख्या पुर चंदावती, जीहो अंन्या बेहु दीठ ॥ कुम०
 ॥ १५ ॥ जीहो कुमरें जलसुं सिंचीउ, जीहो लोनाकरनो
 अंस ॥ जीहो जटक बूटी अलगो रह्यो, जीहो पास य
 की जिम हंस ॥ कुम० ॥ १६ ॥ जीहो लोचनंदी बूटी
 नहीं, जीहो पाडे मुख पोकार ॥ जीहो पुत्रविना को
 ण तेहने, जीहो दुःखथी ठोडण हार ॥ कुम० ॥ १७ ॥
 जीहो विजयचंडने वीनवी, जीहो गुणवर्म्म ते शेठ ॥
 जीहो घरमांहे पेसण दीउ, जीहो बीजा शिर रह
 वेठ ॥ कुम० ॥ १८ ॥ जीहो मंत्री पद मुझा नणी
 जीहो आमंत्रे नरपाल ॥ जीहो गुणवर्म्मा नवि अ
 दरे, जीहो जाणी पाप कराल ॥ कुम० ॥ १९ ॥ जी
 हो केतेक दिन पूर्तें नृपें, जीहो निजपुर कीथ प्रय
 ण ॥ जीहो विरहव्यथा हीयडे वधी, जीहो कुमर
 बांध्या प्राण ॥ कुम० ॥ २० ॥ जीहो करी सत्कार अनेव

या, जीहो तुंची दीखी काडि, जीहो नृपति यत्नी पा
 ही दीए, जीहो कुमर जीए शिर चाडि ॥ कुम० ॥ २१ ॥
 जीहो माया घोटक कपरें, जीहो बेसी विजय नरिंद ॥
 जीहो निजपुर पोहोतो वेगळुं, जीहो जिम विद्याधर
 इंद ॥ कुम० ॥ २२ ॥ जीहो गुणवर्मायें आवीने, जी
 हो रात्रि समय एकांत ॥ जीहो मुज आगें नेटण ध
 स्यो, जीहो जाख्यो सविवृत्तांत ॥ कुम० ॥ २३ ॥ जीहो
 प्राण पियारी आगळें, जीहो राखीजें सुं गुळ ॥ प्रीयें
 सुण चिंता कारण मुळ ॥ ए आंकणी ॥ जीहो काका
 नो निज तातनो, जीहो थापण मोसा दोष ॥ जीहो
 कुमरें खमाव्यो मुळने, जीहो विनय विविध परे पोष
 ॥ प्री० ॥ २४ ॥ जीहो राज्य गपुं वालुं फरी, जीहो
 वालुं बैर डुरंत ॥ जीहो विजय कुमर निज तातने,
 जीहो चाढी शोन थनंत ॥ प्री० ॥ २५ ॥ जीहो मर
 ण पणु पण आगमी, जीहो शेव सुतें निज तात ॥
 जीहो थापदमांथी उद्धखो, जीहो जूज सुतनां थवदा
 त ॥ प्री० ॥ २६ ॥ जीहो पुत्र पाखें कुण कामिनी,
 जीहो धण कंचणनी रासि, जीहो सोच दिसा पामे स
 दा, जीहो पुत्र रहित थावास ॥ प्री० ॥ २७ ॥ जीहो
 धन्यते कृत पुण्यते, जीहो जेहने नवजा पुत्र ॥ ज

लाज वधारे वंशनी, जीहो राखे घरनां सूत्र ॥ प्री०
 ॥ ३० ॥ जीहो लोचनंदी संकट सद्यो, जीहो देखी
 सयल कुटुंब ॥ जीहो जो सुत होवे एहने, जीहो गो
 डावे अविलंब ॥ प्री० ॥ ३१ ॥ जीहो हुं जगमां निरजा
 गीयो, जीहो माहारे पोतें पोत ॥ जीहो पुत्र रहित
 सरज्यो कियो, जीहो बाढ्यो चिंता पोत ॥ प्र० ॥
 ३२ ॥ जीहो कुंण पूजे गुरु देवने, जीहो कुंण उद
 रे धर्म ठाण ॥ जीहो कुंण धारे कुल आपण, जीहो
 पुत्रविना हित आण ॥ प्री० ॥ ३३ ॥ जीहो वंसल
 ता फरसी समो, जीहो सरज्यो कां जगदीश ॥ जीहो
 ए चिंता मुज नामिनी, जीहो बीजी राव न रीस
 ॥ प्री० ॥ ३४ ॥ जीहो नवमी ढाल पूरी थई, जीहो
 राय कही ए वात ॥ जीहो कांति कहे पुण्ये हवे, जीहो
 घर संतति सुख सात ॥ प्री० ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंपकमाला चित्तमां, दुःखपूरी दिलगीर ॥ इम
 बोली प्रीतम प्रत्ये, नयण जरंती नीर ॥ १ ॥ धन्य
 जनम तस लहीजीयें, जेहने आगल बाल ॥ हंसे रमे
 रोवे लुटें, चाले चाल मराल ॥ २ ॥ घूघर पग घम
 कावतो, करतो विविध टकोल ॥ माय तणो ठेडो अ

हो, बोले मण मण बोल ॥ ३ ॥ गुनग शिखा शिर
 फरहरें, धूर्ने धूसर देह ॥ लघुयंता आर्कें पड़े, हेनवि
 या करि वेह ॥ ४ ॥ सुतविण चंचा मालियां, प्रत्य
 क् स्वरा मलाण ॥ निजकुल कमल निकाशवा, पुत्र क
 ह्यो नव जाण ॥ ५ ॥ में पाप्यो नहीं एक पण, धि
 गधिग मुज अवतार ॥ पुत्र विदुणी दुःखणी, कां स
 रजी किरतार ॥ ६ ॥ पूरव पूण्य किया बिना, क्या
 थी संतति होय ॥ सुरुत करीजें दुःख तजी, ते नणी
 आपण दोष ॥ ७ ॥ चिंता दूरें ठोडियो, रुंदय थकी
 हेकंत ॥ पुत्र हेतें आराधयुं, देव कोई सतवंत ॥ ८ ॥
 प्रसन्नययो सुर पूरवो, वंठित नवलो एह ॥ सुरसेवा सा
 ची करी, निःफल न होवे केह ॥ ९ ॥ राय कहे सुण
 सुंदरी, मुजमन नावि वात ॥ गुनदिनथी आराधयुं,
 कोइक सुर विख्यात ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ राजाने परधान रे ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे अवसर नृप नारि रे, बली बोले इशुं, धर
 ति दिलमां दुःख घणुए ॥ वदनयुं विहाय रे, चिंता
 उमटी, दीसे अंग दयामाणुए ॥ १ ॥ थरहर थरके
 गात्र रे, विनय विव्हल थी, चटपट लागी आकरीए
 ॥ रति नाठी संताप रे, व्याप्यो पापीठ, चतुराइ

उत्तरीए ॥ ३ ॥ फरके जमणी आंख रे, प्रीतम मा
 हरी, कुंण जाणे से कारणेए ॥ नावि कोइ अनर्थ रे,
 फरि फरि सूचवै, मुज मन नरहे धारणेए ॥ ३ ॥ या
 शे कोइ उतपात रे, नूतादिक तणुं, दुःखदाई मुजने
 सहीए ॥ अथवा विद्युत्पात रे, याशे मुज शिरे, के
 उलका पडशे बहीए ॥ ४ ॥ के जासे सर्वस्व रे, जी
 वन माहरो, कुशल होजो तुमने सदाए ॥ के याशे मु
 ज रोग रे, शोक अछुन कर, के पडशे कांइ आपदा
 ए ॥ ५ ॥ प्राण तणो संदेह रे, होशे माहरे, निश्चय
 लोचन एम कहेए ॥ हुं नवि जाणुं कांइ रे, जोली
 नामिनी, दैवगति ज्ञानी लहेए ॥ ६ ॥ रति नाठी मु
 ज तेण रे, हइहुं कम कमे, अधृति धइहुं काहिलीए
 ॥ वीरधवल नूपाल रे, बलतुं एम बदे, कां नामिनी
 दुःखमां नलीए ॥ ७ ॥ चिंता मकरिस लगार रे, मु
 ज वेठां किसी, शंका शंकटनी कहेए ॥ रवि तपते अ
 तितीव्र रे, तिमिर नरम समो, लोक मांहे केम धिति
 लहेए ॥ ८ ॥ जो होसे तुज कांइ रे, बाधा अणजा
 णी, विरह व्यथा दुःख कारणीए ॥ तो मुजने तुज सा
 धें रे, शरण अगनी तणो, होशे सही सुण नामि
 नीए ॥ ९ ॥ इणीपरें धरणी नाहरे, आश्वासी प्रिया,

सिंहासन जई बेसियो ए ॥ फिरि फिरि फरके नयण रे,
 राणीनो बली, तिमतिम थरके तस ह्योए ॥ १० ॥
 मंदिरमांथी उठी रे, बनिकामां गई, अरतिजहे तिण
 पण घडीए ॥ बनिकोमांथी तेम रे, आवी मंदिरे, त्यां
 थो बाहिर बन जणोए ॥ ११ ॥ वनथी पुरमां आई
 रे, सहियर परवरी, देवकुलें लावे बलीए ॥ नलहे र
 ति लवलेश रे, केश सहे घणु, जिम शूके जल मा
 ठलीए ॥ १२ ॥ इम बोझा मथ्यान्ह रे, आवी निज
 घरें, सूती पण मन बाउलोए ॥ अल्प अल्प तव निंद
 रे, आवी तिणो समे, जेह थयो ते सांजलोए ॥ १३ ॥
 वेगवती नामेण रे, दासी तेंतलें, हाथांसुं गिर कूटती
 ए ॥ आंगुधार प्रवाह रे, मारग सिंचती, केश चटा
 चट चूटतीए ॥ १४ ॥ बिलवन्ती डुःखपूर रे, आवी
 दोडी नै, राय कन्हे रोती घणुए ॥ हा हा गुं थयो
 तुझ रे, सामणि माहरी, दीधुं देव विगोवणुए ॥ १५ ॥
 फिटरे धीठा देव रे, इम कही ढली पढी, निरखी च
 क्यो नृप चिंतवेए ॥ आपद दीसे कांय रे, राणीने
 पढी, हा हा सुं करवुं हवेए ॥ १६ ॥ उठघा व्याकु
 ल राय रे, दीनवदन थई, पूठे दासीने इच्छुंए ॥ ऊठ
 कवने ऊठ रे, कहेने सुं थयुं, सुल अंतैचरनुं

ए ॥ १७ ॥ फाटे हीयडुं मुज्ज रे, धीरज सहुं नहीं,
 कहेतां वारम जावीयेँए ॥ वेगवती तव ऊठी रे, रडती
 इम कहे, है सुंडःख उदनावीयेँए ॥ १८ ॥ कहेवा सर
 खी वात रे, नहींहो साहेबा, कहेतां नवहे जीनडी
 ए, वीर शिरोमणी देव रे, रुदथ कठण करो, वज्र वि
 षम ठे वातडीए ॥ १९ ॥ चंपकमाला देव रे, प्रभु
 रुदथें सरी, दाहिण लोयण फुरकंतेए ॥ वेला गालण
 काज रे, चिंतातुर नमी, बाहिर अंतर जत ततेंए ॥
 ॥ २० ॥ लहति अरति अपार रे, मंदिर आवीने,
 सूती एकांते जईए ॥ मुजने पान निमित्त रे, मूकी हुं
 पण, पान लई पाठी गईए ॥ २१ ॥ बोलावी जर हे
 ज रे, सुख बोले नहीं, दीठी काठ परें पडीए ॥ जीव
 रहित निश्चेष्ट रे, जांखी देहडी, मीचाणी दोय आं
 खडीए ॥ २२ ॥ के सोती कुंण प्रेत रे, के साकिण
 असी, के कांइ सापणी मसी गईए ॥ अथवा उत्कृष्ट
 रोग रे, जीव लेई गयो, के निज हत्या करी मुईए ॥
 ॥ २३ ॥ निरखी माठा सूल रे, पडियो घ्रासको, पण
 नकलाय ए सुं थयुंए ॥ आई दोडी एथ रे, शुद्धि स
 वे गई, जीवडलो ऊडी गयोए ॥ २४ ॥ वयणसुणी
 नूपाल रे, कडुआ विष जियां, मूर्खगित धरणी ढ

न्योए ॥ चोच्यो सीतल चाय रे, सोच्यो चंने, कां
 मूछाथो वन्योए ॥ २५ ॥ लागो छुल अनेह रे, नेह
 वियस थयो, विलपण लागो एणीपरेंए ॥ रे हत्पा
 रा देव रे, कहेने किहो गयो, जीवन माहारुं थप
 हरिए ॥ २६ ॥ जोमुज देवां छुल रे, समरथ तुं हू
 उं, मुनेकां प्रथम न मारियोए ॥ करुणा हीणा छुट
 रे, देखेने दगो, विण हथियारे विदारियोए ॥ २७ ॥
 जाहि जाहि जाहि रे, मत रहे जीउडा, मन मेसूं
 सीधारतांए ॥ हा हा हूउ संताप रे, विरहानल त
 णु, सुंदरी विण तुज धारतांए ॥ २८ ॥ रे रे कुजनी
 देवीरे, अवसर आजने, कांइ उबेखो परिथईए ॥ ते
 कुरीनी आसीत रे, सुकृत फलें नरी, तेपण निःफल
 केम गईए ॥ २९ ॥ हा गोरी गुणवंत रे, किम नकही
 मुक, मरण दिसा जाणी तरेए ॥ जो जाणत एरीत
 रे, पहेली ताहरी, तो राखतं हूडा उपरेंए ॥ ३० ॥
 हाहा हुं अज्ञान रे, मूढ शिरोमणि, जावि आपद
 सांसहीए ॥ दीनवदन विधाय रे, धुरतें मुजने, हुं
 नारी आपद कहीए ॥ ३१ ॥ निंदा करतो आप रे,
 नृपति विलपतो, परिजननें दुःखियां करेए ॥ कृण
 हिमें गति मंद रे, कृण धरणी ठजे, कृण आंसू न



अकृत दीसे सर्वथाए ॥ के सुर मारी केण रे, के म
न पीडायें, साजी तनु केम अन्यथाए ॥ ४० ॥ मरगो
निश्चै राय रे, देवी मोहियो, राज्य जंग थाशे सहिए ॥
करवो कोण प्रकार रे, इम मंत्री सहू, अणबोल्या रह्या
कहीए ॥ ४१ ॥ मंत्री नाम सुबुद्धि रे, बोढ्यो तत्कणे,
काल विलंब न कीजियें ॥ तो होये कोइ उपाय रे,
जेहथी नूपने, मरण थकी राखीजियें ॥ ४२ ॥ मंत्री
बोढ्यो एक रे, बली एम चित्तधरी, कालक्षेप केणी प
रे दूबेए ॥ राजादेवी मोहें रे, घाखो परवर्जो, काज अ
काज नवी जूबे ए ॥ ४३ ॥ बली कहे मंत्री सुबुद्धि रे,
विपनी विक्रिया, ठे देवीए जीवसेए ॥ मणिमंत्रोपथ
योग रे, विष टलजो परहो, राणी अति सुख पामसे
ए ॥ ४४ ॥ जूतो कहीने एम रे, नृपने आश्वासी, क
रत अकाज निवारीयें ॥ गुप्तमंत्री करे सर्व रे, मंत्री
सर बोढ्या, राजन विष उपचारियें ॥ ४५ ॥ कांइ क
रो महाराज रे, निपट अधीरता, नबलां मंगल वर
तरोए ॥ सांनली एम नरेश रे, विकथर लोचने, हर्ष
सुधा नाह्यो तिसें ॥ ४६ ॥ करगो कोढी उपाय रे,
नृपने जोलवी, मंत्रीसर मति आगजा ए ॥ ४७ ॥

ढाल रसाल रे, कांतिविजय कहे, मोहें नडीया
नलाए ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे रे व्यावो धास्ने, विषधर औषध यंत्र ॥
त्रो संत्रिक प्रते, धारे विष मणिमंत्र ॥ १ ॥ नृप
देशे मेलवी, सामग्री ततकाल ॥ आरंजे सांत्रिक
या, उचित कह्या सवि चाल ॥ २ ॥ एकांते देवी
करे चिकित्सा तेस ॥ सांत्रिक मंत्रीसर सहित,
नृप जेम एम ॥ ३ ॥ हमणां देवी कउसे, करेश
त्र विकाश ॥ हवणां कांश्क बोलशे, बलशे बली
सास ॥ ४ ॥ बोली एम नृप चिंततां, अर्धदिवस
रात्र ॥ सचिवादि निरुपाय सवि, करे विचार प्रना
॥ ५ ॥ नृपने केम उगारसुं, मरण दिशायी आ
नेह ग्रन्थो जाणें नहीं, करतो चतुर अकाज ॥ ६ ॥
राज्य देश गढ सुंदरी, सेना लोक हिरण्य ॥ सवि
प्रमुख दिन आजथी, सकल अया अशरण्य ॥ ७ ॥
इन चिंता सायर पड्या, मंत्रीसर नयवाम ॥ एक
क साहामुं जूवे, जिम मृग चूका ठाम ॥ ८ ॥ द
कांता त्रिण समे, पूर्वपरें नृप आप ॥ आपूखो अ
हःखसुं, इणिविध करे विलाप ॥ ९ ॥

॥ दाल अनीधारसी ॥ रे रंगरना करहला रे, मो
 पीठ बिरतो जाण ॥ हुंतो ऊपर काढीने रे
 प्राण करुं कुरवाण ॥ सुरंगा करदा रे ॥ मो
 पीठ पादो बाल, मलीडा करदा रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ रे गुणवंति गोखडी रे, कांइ रही रे रीताय ॥ वि
 ण बोल्यां मुज जीवडो रे, प्राहुणडा परें जाय ॥ प्रि
 यारी बोलो हो, थइ प्रीतमहुं एक वार ॥ १ ॥ ह
 तीजी बोलो हो ॥ विरत्त थइ कुण कारणे-रे, एवडो
 ठेह दिखाय ॥ प्रि० ॥ ए आंकणी ॥ तुज नघटे गजगाम
 नी रे, करवो मान अपार ॥ जीवतणी तुं औदधी रे,
 तुंहिज प्राणाधार ॥ प्रि० ॥ २ ॥ जक नलहे पल जी
 यडो रे, तुज विरहें प्रजनाय ॥ हासुं नकीजें तेहवुं
 रे, जिणे हासैं घर जाय ॥ प्रि० ॥ ३ ॥ कंठप्रिया
 दिन बहु चढ्यो रे, लोक जगे व्यवसाय ॥ पण प्रीत
 मने ठवेखती रे, तुं बोलो नहीं कांय ॥ प्रि० ॥ ४ ॥
 तुं कहेती मुजने सदा रे, रुदय बसो ठो मुझ ॥ ते
 मुज आज बीसारतां रे, बात जही में तुझ ॥ प्रि० ॥
 ॥ ५ ॥ एक घडी मुज तुजबिना रे, मुजने वरस स
 मान ॥ तो दिन ए केम बोलसे रे, गोरी कहे गुण स्वा
 ण ॥ प्रि० ॥ ६ ॥ केइ बिजसे केइ हसे रे, सुखीयां

पुर नर नार ॥ आज अवस्था मुज नणी रे,
 ए किरतार ॥ प्रि० ॥ ७ ॥ मो तनु दुःख दुर्वल
 रे, जो तुं आंख उघाड ॥ ग्रीबम पवने आकरी रे,
 म तरु नांख्या जाड ॥ प्रि० ॥ ८ ॥ तुं चतुरा चर
 रे, जीव रहणनी वाड ॥ पण इण वेला पदमणी
 हीयडुं नाख्युं जाड ॥ प्रि० ॥ ९ ॥ हरिलंकी
 बोलनै रे, निंद रयणरी ठांमि ॥ कर करुणा मुज
 मनी रे, मननी पूर रुहाडि ॥ प्रि० ॥ १० ॥ तु
 कारण कीथा घणा रे, सबल जुगति उपचार ॥
 हा पण ऊठे नहीं रे, कीजें कदण प्रकार ॥ प्रि०
 ११ ॥ निश्चे दीसे ठे हवे रे, पोहोती तुं परलो
 नहिंतो मुख बोले सही रे, वालम करते शोक ॥
 ॥ १२ ॥ धिग प्रचुता धिग चातुरी रे, धिग जीवन
 राज्य ॥ संकट सांहेथी तुळने रे, हुं राखी शक्यो
 आज ॥ प्रि० ॥ १३ ॥ हे सुगधे हे कोपनै रे, हे
 गई केथ ॥ तुज मुख निरखण उमह्यो रे, हुं पण
 हुं तेथ ॥ प्रि० ॥ १४ ॥ हवे सूधे ठोडी हवे रे,
 पण निरधार ॥ सांसि सकी नहिं सोकने रे, फि
 ट तुज आचार ॥ प्रि० ॥ १५ ॥ इम कहीने
 दळ्यो रे, सूर्वावर्शें नूपाल ॥ शीतल जल सिंच्यो

उठयो वली करुणाल ॥ प्रि० ॥ १५ ॥ हा हा मै
 ॥ तर सुणो रे, नूमि पड्या मुज हाथ ॥ परलोकें
 ॥ तां प्रिया रे, जाइत हुं पण साथ ॥ १७ ॥ सजुं
 ॥ मंत्रि हो, ढील करो मत कांइ, सुरंगा मंत्रि हो ॥
 ॥ आंकणी ॥ गोजानदीने कांठे रे, हुं प्रजलीत संवा
 ॥ सजुं ॥ सीघ करावो चय तिहा रे, कावें पुरो
 ॥ अंग बाजीने आपणो रे, निर्वृत्ति याइत तूण
 ॥ स० ॥ १८ ॥ नयणे आवण जडोजगी रे, बोल्या
 ॥ म प्रधान ॥ हाहाहा अनरथ कित्यो रे, मांढयो ए
 ॥ जान ॥ १९ ॥ रंगीजा राजन हो ॥ समजो हीपडा
 ॥ जाहे, ठवीजा राजन हो ॥ मत करो आत्म दाह,
 ॥ हवीजा राजन हो ॥ कहीयें गोव विठायने रे, साहेबजी
 ॥ न मान ॥ रंगी० ॥ कमल जित्यां रवि आथमे रे, जल
 ॥ के जिम मीन ॥ माय ताय विण वाजज्युं रे, कांइ
 ॥ करो जगदीन ॥ रंगी० ॥ २० ॥ मत ल्यो रिपु एह रा
 ॥ ज्यने रे, पामो प्रजा मत पीड ॥ वसुधा मत अशरण
 ॥ हुत रे, नपडो थममा जीड ॥ रंगी० ॥ २१ ॥ तुमस
 ॥ रिखा महाराजवी रे, धीर पणुं मत ठांन ॥ तो
 ॥ किहां रहेसे लोकमा रे, धानक ते देखाड ॥ रंगी० ॥
 ॥ २२ ॥ मरण जही देवी प्रनो रे, ते तो कर्म निदान

॥ एह अवस्था ध्रुव कही रे, सवजाने अवशान ॥ रं
 गी० ॥ २३ ॥ राजा खेचर केशवा रे, चक्रधरा देवेन्द्र ॥
 कर्मचकी नवि तूटीया रे, गणधर देव जिनेन्द्र ॥ रं
 गी० ॥ २४ ॥ जीवित अथिर संसारमां रे, मान अणी ज
 ल विंद ॥ संपद चपल स्वनावथी रे, जेहवी स्त्री सग
 द ॥ रंगी० ॥ २५ ॥ सचण कह्यां सवि कारमां रे, जे
 हवा छुपन जंजाल ॥ काया काच घटिजिली रे, यौव
 न संथ्या काज ॥ रंगी० ॥ २६ ॥ जन्म जरा मरणे न
 सो रे, ए संसार असार ॥ इम जाणीने साहेबा रे,
 मतकरो दुख लगार ॥ रंगी० ॥ २७ ॥ संजाजो निजग
 जने रे, टाजो मननो शोक ॥ गाजो अरियण मानने
 रे, पाजो पीडित लोक ॥ रंगी० ॥ २८ ॥ राय कहे म
 जीमो रे, ताची तुमारी बात ॥ पण देवी मोहें मढ्य
 रे, तेजणी ग्यां न जात ॥ रंगी० ॥ २९ ॥ में पूर्वे अ
 नी कयो रे, तावे मरणो वोज ॥ जो सकहे तो
 न ग्हे रे, सत्यवादीनां तोज ॥ रंगी० ॥ ३० ॥ आज
 ने में निगड्यो रे, सुखी सत्य नचल ॥ ते अंतग
 ठीतनां रे, नवदे सादने मल ॥ रंगी० ॥ ३१ ॥ नि
 मुसली ने आदरी रे, वे सम प्रतिज्ञा काय ॥ अवन
 दहेली मुहतां रे, महमा मत्व जजाय ॥ रंगी० ॥ ३२ ॥

जिण सत्य कारण होमीउं रे, वल्लन पणे निजदेह ॥
 मूठ पण जंग जीवतो रे, शाखें कस्यो नर तेह ॥
 ॥ रंगी० ॥ ३३ ॥ क्षिप्र करोने सज्जता रे, महारी
 देवी साथ ॥ देशुं दुःखने जलांजली रे, ए निश्चय
 अम थाय ॥ रंगी० ॥ ३४ ॥ इम कहेतां नृप वारिउं
 रे, बहु परे सर्व प्रधान ॥ पण विरमे नहीं मरणथी
 रे, देवी मोह निदान ॥ रंगी० ॥ ३५ ॥ अनरथ
 करतां नवि चले रे, कोइ मंत्रीनुं मन्न ॥ ते जणी मौन
 जेई रह्या रे, रोता मंत्री रतन्न ॥ रंगी० ॥ ३६ ॥ पूरी
 ढाल इग्यारमी रे, कांतिविजय कहे एह ॥ मोह गु
 नट जीते जिके रे, होय नर सुखिया तेह ॥ रंगी० ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नूपें मंत्रीशने, देखी करता ढील ॥ प्रेखा
 पुरुष बीजा बली, करवा साज हवीज ॥ १ ॥ तुरत
 मंगावी पालखी, रयण जडित मनुहार ॥ नवरावे
 कलेवर नारिनुं, कनक कलश जलधार ॥ २ ॥ कुंकुम
 चंदन मृगमदे, कर्पूरें करी लेप ॥ कुसुम सरसुं पूजि
 कें, कस्यो धूप वल्हेप ॥ ३ ॥ शिविका मांहे यापिउं,
 ते राणीनुं देह ॥ चाले नृप गोलो तटें, शविका थार्गे

करेह ॥ ४ ॥ पुरथी जव नृप नीकले, तव दुखिया
सविलोक ॥ जूरे विलपे दूबकें, रोवे करता शोक ॥ पा
॥ ढाल बारमी ॥ उलंगडी उलंगडी तो कीजे
मुनिसुव्रत स्वामीनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ परिजन परिजन दुःखियो सहु रोवे घणु रे, नृप
विरहो न खमाय ॥ करुणें करुणें शब्दें बोले आवीने
रे, वदन हूआ विन्नाय ॥ १ ॥ रायजिम रायजिम ठोडो
अमने साहेबा रे, विण शरणें गुणवंत ॥ तुममुख तुम
मुख दीते सुख पासुं सदा रे, ठेह न द्यो क्षिति कंत
॥ रा० ॥ २ ॥ तुमविण तुमविण अमने कहो कुंण राखरो
रे, शंकटथी महाराय ॥ मनना मनना मनोरथ हवे
कुंण पूरसे रे, बहुला लाड लढाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ न
शक्यो नशक्यो देखी दैव अटारडो रे, अमचो सुख
निरधार ॥ नहींतो नहींतो समजु पण केम चूकीड
रे, मूके विण आधार ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिणदिन तिण
दिन बाल तरुण घरढा मली रे, करे घणां आक्रंद ॥
अन्न न अन्न न जावे नाठी निंदडी रे, वाध्यो दिल
दुःख दंद ॥ रा० ॥ ५ ॥ हणीया हणीया वज्रकें वि
व्यापिया रे, घूमे पडिया केई ॥ हृदय हृदय सुंनाहत
सर्व स्वजुं रे, गहिला केई फिरेई ॥ रा० ॥ ६ ॥ हावत

हा वस्तु दानिधि हा कुल दीवडा रे, कुलमंरुण कुल मो
 ड ॥ हानृप हानृप अमने उंची चढावीने रे, धतका
 ई विण ठोड ॥ रा० ॥ ४ ॥ कुलनी कुलनी नृदा इम
 विलपे पणुं रे, नाठी रति विलगीर ॥ मनमें मनमें खू
 तो नेह नरिंदनो रे, जिम तीखेरो तीर ॥ रा० ॥ ७
 ॥ धिगंधिग धिगंधिग अमची बुद्धिने रे, जे नावी कोइ
 काम ॥ सहज सहज सनेहो अमने ठोडीने रे, जो
 जावे ठे आस ॥ रा० ॥ ८ ॥ सुजरो सुजरो अमचो
 कुंण लेशे हवे रे, कुंण देसे सनमान ॥ आतम आ
 तम निचिंताये वावला रे, इम निंदे परधान ॥ रा०
 ॥ १० ॥ हाजिणे हाजिणे रूपें काम हरावीयो रे,
 वली हूठ निंदेह ॥ सुंदर हो सुंदर हो प्रभु नारी कार
 णे रे, किम वालीश ते देह ॥ रा० ॥ ११ ॥ कवीहो
 कवीहो रूप मनोहर पेलखुं रे, परगट पूनम चंद ॥
 इमकही इमकही नयणे जल झवे रे, पुरनारिनां वृंद ॥
 रा० ॥ १२ ॥ जनक जनक तणीपरें पाह्या प्रेमथी रे, ए
 सयला पुर लोक ॥ रुलसे रुलसे दैव विठोह्या वापडा
 रे, जिम दिणयर विण कोक ॥ रा० ॥ १३ ॥ नगरी
 नगरी दीसे आज दयामणो रे, जिम दवदाधुं वन्न ॥
 इमकेइ इमकेइ संचरता नृप मार्गे रे, जाखें दीन वचन

॥ रा० ॥ १४ ॥ सींचिय सींचिय धण कंचण मणि माणि
 के रे, मोहोटा कीधा आप ॥ तुमविण तुमविण तरु
 सम अमचो टालशे रे, कुण दुःख दव संताप ॥ रा०
 ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक जणे नृप आगले रे,
 आपणो दुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां
 केहनो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा
 करुणा दाक्षिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥
 कविता कविता सत्य सुनग गंजीरता रे, निरुपम ज्ञा
 न विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्र
 चंद उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ एसवि एस
 वि गुण निरधारी आजयी रे, कीधा ते विण मर्म
 ॥ रा० ॥ १८ ॥ रंमित रंमित पंमित कीधा विण गुने
 रे, खंमित दैवे एण ॥ मंमित मंमित विद्यायें तुम सा
 रिखा रे, पडिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद
 चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे, ठोडे पंखी चूण ॥
 तो नर तो नर देखी जातो राजवी रे, दुःख पामे नहीं
 कूण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर अणघटतुं इम
 राजीया रे, हाहा धींगड धीर ॥ इमपुर इमपुर वासी
 वचन उवेखतो रे, पोहोतो गोला तीर ॥ रा० ॥ २१ ॥
 ते शव ते शव तीरें तव उतरावीने रे, मंमावे चय

याहिं ॥ बेतो देतो दान याचकने कतरे रे, न्हावा
 जागो माहिं ॥ रा० ॥ २३ ॥ नूधव नूधव नाहे त्यां
 जल जेतले रे, रडते लोक समय ॥ जलने जलने पू
 रे, तव एक ताणियुं रे, आव्यो काठ उदय ॥ रा० ॥
 २४ ॥ निरखी निरखी मंत्रीसर तव बोलीया रे, रे रे
 तारक जाडु ॥ लाकड लाकड जलमां सनमुख आव
 तुं रे, वेगें काढी व्याडु ॥ रा० ॥ २५ ॥ एह ठे एह ठे
 योग्य चित्ताने इम सुणी रे, धीवर पेसी त्याहिं ॥ बा
 हिर बाहिर काढ्यो ताणी तत्कणे रे, जलकंठुं थव
 गाहिं ॥ रा० ॥ २६ ॥ बंधन बंधन बहुजे बांध्यो नि
 हुं पखें रे, त्रापा परें ते थंज ॥ दीसे दीसे स्थूल कठि
 नं थारें पड्यो रे, जाणे वाहण थंज ॥ रा० ॥ २७
 ॥ आदेशें आदेशें नृपने सेवकें रे, काप्यो ठुरियें बंध
 ॥ जटक जटकसुं थरुं जुडो उघडी पड्यो रे, त्रूटीग
 या सविसंध ॥ रा० ॥ २८ ॥ तेहमां तेहमां मृगमर्दे
 केशर चंदने रे, थरची सुंदर थंग ॥ चरची चरची ध
 न सारादिक गंवशुं रे, माल ठवि बहुजंग ॥ रा० ॥
 २९ ॥ कंठे कंठे लहके द्वार मनोदरू रे, निद्रित जो
 चन पंग ॥ जलमां जलमां ठानि रति आवी रही रे,
 नेतरी थाणी थनंग ॥ रा० ॥ ३० ॥ चंपक

माला नृप मनमोहनी रे, दीर्घी दैव संयोग ॥ पेखवी
पेखवी नृपतिनो दिल जागीउ रे, जागो विरह वियो
ग ॥ रा० ॥ ३० ॥ अचरिज अचरिज पाम्या पुरजन
सवे तिहां रे, दूरगया जंजाल ॥ इंणी परे इंणीपरें कां
तिविजयें कही बारमी रे, सुंदर ढाल रसाल ॥ रा० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक सकलवस्थित पणे, नृपने बोले आंम ॥
चंपकमाला जीवती, लही सुकृतथी स्वाम ॥ १ ॥ पा
लखीयें पोढाडीने, राणी आणी गेह ॥ खरी एहके ते
ह ठे, के कोइ ठल ठे एह ॥ २ ॥ नृपति कहे सेवक
प्रतें, निरखो शिबिका मांहिं ॥ तेह देह तिमहिंज अ
ठे, के विध धरिउ आंहिं ॥ ३ ॥ जब सेवक जइ नि
रखीउ, आवी शिबिका पास ॥ तबते शब हड हड
हसत, उडी गयो आकाश ॥ ४ ॥ हैहै हुं वंच्यो ख
रो, ठेतरतां नृप ठेल ॥ नारि कारण जे नर मरे, ते
जग साचा वेल ॥ ५ ॥ इम कहेतो चलतो ननै, ज
लत्कार मय देह ॥ दंत मसत करतल घसत, थयो
उलका सम तेह ॥ ६ ॥ अरहरता सेवक सवे, आव्य
नृपने पास ॥ वीतक व्यतिकर नृपनै, दाख्यो शक
प्रकाश ॥ ७ ॥ राय कहे ए बातनो, कोइ न लहे वि

राम ॥ तेमाटे पुने हवे, राणीने इण ठाम ॥ ८ ॥

॥ डाल तेरमी ॥ सोनानी आगीहे, सुंदर मारा

साहेबाने अंग, बिच बिच रतन जडाय;

कोडी सूरज करुं वारणेजी ॥ ए वेशी ॥

॥ मृगा नयणी राणी हे, सुंदरहवे नयण उघाड ॥

करो राणी आलश ठोडी, कचको प्रीतम अलजो करे

जी ॥ १ ॥ प्रिया मोरो बोलो हे हसित मुखें मीठडा

बोल, कहो राणी बोलक वात ॥ धुरथो जाणीजे

जिण परेंजी ॥ २ ॥ वयणा ते सुणी हे, राणी कहे

निडा ठाम ॥ कहो पीउं कजाठो केंम, जीना वशन

ए पहेरीनेंजी ॥ ३ ॥ लखगमे कजा हे, निकट चय

पाखलें लोक ॥ कहो पीउ शिविका माहें, उबोय जा

व्याठो केहनेजी ॥ ४ ॥ नृपति कहे माहरी हे, सुंद

र पठे कहेसुं वात, कहो तुमचो विरतंत, जिम अम

मन सांतो टलेजी ॥ ५ ॥ क्यां गइ क्यां रही हे, नव

ज किहां पाम्यो द्वार, कहो किम पेठो काठ, कियो वा

ही गोला जलेंजी ॥ ६ ॥ पदमणी प्रेमे हे, कहे एणे

वडनी ठांहीं ॥ चालो पीउ थाउं सुड, संजनावुं अ

म वातडोजी ॥ ७ ॥ नृपति तव आव्यो हे, सकल ज

न विंटयो तेथ ॥ अमें जरी कोमल काय, तडकें त

थइ रातडीजी ॥ ७ ॥ राणी कहे वाणी हे, प्रीतम प
 ण जाणो गो तेह ॥ दाहिण मुज फुरक्यो जे नयण,
 सूचक अच्युन निमित्तनोजी ॥ ८ ॥ नमी वन वाढी
 हे, आवी फरी मंदिर माहे ॥ दासी गइ जेवा पान,
 वेगवती चंचल तनुंजी ॥ ९ ॥ निझानर तेणें हे
 सूती जव सेज हुं आय ॥ दुष्ट कोइ आयो पास, तुरत
 उपाडी जेई गयोजी ॥ १० ॥ सुंने गिरि टुंके हे, मूकी
 मुज नागो धीठ ॥ जर्ये घण थरकित गात, सकल दि
 श जोवं सुंथयोजी ॥ ११ ॥ दीसे नही कोइ हे, पा
 ठल मुख आगल पास ॥ सुणुं कोइ विषम आकं
 द, विरुआ वनचरना घणाजी ॥ १२ ॥ बाध सिंह
 धडूके ह. सबल दीये चित्ता फाल ॥ रमे रीठ देतां दो
 ट, किहां कणे मृग करे खेलणाजी ॥ १३ ॥ जावं कि
 ण आगें हे, सुणे कोण दुःखनी वात ॥ चिंता चयसुं
 लगी चित्त, कृणएक दुःख पूरें जरीजी ॥ १४ ॥ सा
 हस धरी साचो हे, चाली दिशि एक निहाल ॥ किह
 पिउ किहां वन केणि, वैरी अकारण अपहरिजी ॥ १५ ॥
 चढीगिरि टुंके हे, करुं निज आतम घात ॥ चित्त चि
 ती एहवुं त्यांहिं, चाली लड थडते पगेंजी ॥ १६ ॥
 दीगों तस सिंगे हे, वारू एक नवल प्रासाद ॥ उंच

अति जलद्वल ल्योति, जलके अंबर सल लगेजी ॥
 १७ ॥ कृपन प्रहुराजे हे, मोहन जिही लगनो ना
 थ ॥ देखो मणि मूरत खास, अंतर आतम अलस्यो
 जी ॥ १८ ॥ कीधी स्तुति मोटीहे, ललित पद अर्थ
 गंजोर ॥ लागो जिनसुं एकतान, दुःख सयल मनथी
 खिस्योजी ॥ १९ ॥ कांते कही रुढी हे, सरस ए तेरमो
 दाल ॥ मीठो जिम साकर दाल, सुणतां काने अमृ
 त वस्योजी ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ विधिविवेक पूर्वक पणें, कीधी में जिन सेव ॥
 नगति निरखी हरखित थई, बोली शासन देव ॥ १ ॥
 हुं शासन रखवाजिका, चकेसरी मुज नाम ॥ आ
 दि सुवन रक्षा करूं, मलयाचल गुन वाम ॥ २ ॥ म
 लय देवी मुज नाम ठे, बीजुं ठाण गुणेण ॥ साहमो
 धर्म नणी चरण, प्रणमुं बुं तिणे एण ॥ ३ ॥ कठिण
 हीपुं करी कामनी, मनमां कांइ म बीह ॥ पडे अव
 स्था माणसा, नटले सुख दुःख लोह ॥ ४ ॥ पूढ्युं
 में कहे मावडी, कियो आणी मुज थाहिं ॥ कहियें स
 वि निरतसुं, तवसा बोली त्याहिं ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देखी ॥
 ॥ वीरधवल तुज नाहने रे, वीरपाल दुज बंधु ॥ व०
 सनजो ॥ निर्गुण लोनी राज्यनो रे, कूड कपटनो सिं
 धु ॥ व० ॥ १ ॥ वड बांधव हणवा जणी रे, चिंते नि
 विध ठपाय ॥ व० ॥ अन्य दिवस वध कारणे रे, पे
 तो मंदिर आय ॥ व० ॥ २ ॥ खड्ड घाय मूके खरों
 रे, नृप साहामो अति धीठ ॥ व० ॥ एक घायें वड
 बांधवें रे, पाडयो धरणी पीठ ॥ व० ॥ ३ ॥ शुनना
 वें अंते मरी रे, एणै गिरि ए अयो नूत ॥ व० ॥ अ
 तुज वजी परिवारमें रे, दीठी माहरे दूत ॥ व० ॥ ४
 ॥ गत जवें ते पापीउ रे, संनारे निज वयर ॥ व० ॥
 ठज जोतो नर नाहनां रे, विचरे वनगिरि नयर ॥ व०
 ॥ ५ ॥ पुण्यवजें नसके करी रे, नृपने कांइ विरूप
 ॥ व० ॥ चिंते नृपने नारिछुं रे, प्रेम निवड ठे अनृप
 ॥ व० ॥ ६ ॥ जो मारुं नृप नारिने रे, तो मरसे नृप
 आप ॥ व० ॥ खस जाते सीतल जलें रे, टलसे सर्व
 संताप ॥ व० ॥ ७ ॥ ठानो ठज ताके रसी रे, लागो
 रहे नित पूर ॥ व० ॥ सूती सेजें तूं एकजी रे, क
 ॥ ८ ॥ तेणे छुट ॥ व० ॥ ९ ॥ इणगिरि टुंके मूकीने
 रे, आप ययो वितराज ॥ व० ॥ पूरव पुणें नेटीया

रे, तें श्रीरूपन रुपाज ॥ व० ॥ १० ॥ तुमी हुं जिन न
 कित्थी रे, आपुं तुं वर माग ॥ व० ॥ छलहो वरीन दे
 वतो रे, दीगो ये सोनाग ॥ व० ॥ ११ ॥ देवीने में
 बीनव्युं रे, जो तुमी मुज माय ॥ व० ॥ संतति नहीं
 महारे कित्थो रे, कीर्जे तास चपाय ॥ व० ॥ १२ ॥
 चंपकमालाने कहे रे, निसुणी घाणी एम ॥ व० ॥
 चक्रेसरी देवी बली रे, बोली धरी अति प्रेम ॥ व०
 ॥ १३ ॥ पुत्र पुत्रीने जोढले रे, पाशें तुज संतान
 ॥ व० ॥ गर्न रोध तहारे थयो रे, तेतो नूत निदान
 ॥ व० ॥ १४ ॥ हवे दुःख देतां वारव्युं रे, निज सेव
 कने नूत ॥ व० ॥ शिक्षा देसुं आकरी रे, खल न करे
 करतून ॥ व० ॥ १५ ॥ नृप कहे मति तुज रुश्रडी रे,
 माग्यो वारू एह ॥ व० ॥ चिंता माहारी चक्रे रे,
 तुज विण कुण गुण गेह ॥ व० ॥ १६ ॥ प्रिया कहे खिति
 कंतनें रे, परम रुपापर जूज ॥ प्रीतम सांजलो ॥ हार
 दीयो ए देवीये रे, नामें लक्ष्मी पूंज ॥ प्री० ॥ १७ ॥
 सप्रजाव सुर संक्रम्यो रे, हार रयणबहु मूल ॥ प्री० ॥ स
 यल मनोरथ पूरसे रे, करशे जग अनुकून ॥ प्री० ॥
 ॥ १८ ॥ एहयकी सपराक्रमी रे, होशे तुज संतान
 ॥ प्री० ॥ अतुल विघन जाशे परां रे, वधशे जगमां

मान ॥ प्री० १७ ॥ पूढ्यो वली देवी कहे रे, जूत त
 एो संबंध ॥ प्री० ॥ चंडावतीयें ते गयोरे, तुज ठवि
 गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १८ ॥ तुज ठामें तुज सारिखो
 रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही द
 यिता गणी रे, धणु दुःख पाम्यो जूप ॥ प्री० ॥ १९ ॥
 सात पोहोरने अंतरें रे, मजशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
 तिण वेला एक खेंचरी रे, ननपंथथी आवंत ॥ प्री०
 ॥ २० ॥ अदृश्य नाव देवी लहे रे, खगनारी दुई संग
 ॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखीने रे, पूढ्युं वचन विजं
 ग ॥ प्री० ॥ २१ ॥ तस आगल में माहरो रे, नाख्यो
 सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मित बोली तिका रे,
 मुज दुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २२ ॥ चिंता ममक
 नामिनी रे, करणुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंडावतीयें
 मूकणुं रे, जिहां तुज प्राणधार ॥ प्री० ॥ २३ ॥ इम
 आसासैं खेंचरी रे, वचन अमृत सुरसाल ॥ प्री० ॥
 कांतिविजय इम चौदमी रे, नाखी निरूपम ढाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांजल गु
 खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इणे ठाण ॥ २५ ॥
 स्त्री लंपट मुज पति इहां, आवे ठे मुज पूठ ॥ २६ ॥

तुम रूप निहालगे, श्रील खमगे कठ ॥ ३ ॥ लोक
 धरम भाइरे हते, जनमा वधे दुःखदाय ॥ खोइत तुं
 कुल बट्टी, परब्रह्म वास बताय ॥ ३ ॥ नवरत्न
 लोनी नाहलो, अलगणगे कुल लाज ॥ आबी बुरत
 लिम ताहरो, विपम सुधारुं काज ॥ ४ ॥ एम फही
 करतल ग्रही, खग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल
 नर बहे, आबी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ घोडीतो आई यां ॥

रा-देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ गुहीरं नदी जल वधले ॥ वारुजी ॥ ठटके पवन
 नी ठांट हो, मृगा नयणीरा नमर सुणो वातढी, मा
 रुजी ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥ वा० ॥ हीयहुं ना
 खे काट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेंचरी ॥
 वा० ॥ हणसे सही इणि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु
 मालें बांधगे ॥ वा० ॥ के जागे खिति वाट हो ॥
 मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहगे ॥ वा० ॥ इम मन
 मुज दुःख घाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेंचरी ॥
 वा० ॥ सुक कठिन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ वि
 द्या बलें ते खेंचरी ॥ वा० ॥ कीधो फाडी दुनाग हो ॥
 मृ० ॥ ठिइ कखो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष

एो माग हो ॥ मृ० ॥ ४ ॥ मुंज तनु चरच्यो चंदने
 ॥ वा० ॥ करी मृगमद ठिरकाव हो ॥ मृ० ॥ अग
 प्रमुख शुन वस्तुर्ये ॥ वा० ॥ कीधी मुने गरकाव हो
 ॥ मृ० ॥ ५ ॥ काठ विवरमां मुजधरी ॥ वा० ॥ ठां
 ऊपर फाल हो ॥ मृ० ॥ तदनंतर न लहुं किस्सुं ॥ वा
 ॥ गर्ज रही जेम बाज हो ॥ मृ० ॥ ६ ॥ नयणें दीव
 हवे नाथजी ॥ वा० ॥ पूरवपुण्य संयोग हो ॥ मृ० ॥ नृ
 कहे तुज विरहण दुःखें ॥ वा० ॥ मेलवीठ ए योग हो
 ॥ मृ० ॥ ७ ॥ चयमांमी गोला तटें ॥ वा० ॥ वार
 मिलिया लोग हो ॥ मृ० ॥ दुःख सुख लाजे लोकम
 ॥ वा० ॥ नटले पूरवकृत जोग हो ॥ मृ० ॥ ८ ॥ मं
 कहे तेणे खेंचरी ॥ वा० ॥ शोक सबज दुःख जानि हो
 ॥ मृ० ॥ काठ डुबज विवरें धरी ॥ वा० ॥ बहेती क
 जल बाज हो ॥ मृ० ॥ ९ ॥ मारे ते जो खेंचरी
 वा० ॥ तो विद्या होये आज हो ॥ मृ० ॥ पोहोर
 वस चढते मढ्यां ॥ वा० ॥ सात पोहोर सवि का
 हो ॥ मृ० ॥ १० ॥ नृपकहे मुज दयीता तणो ॥ वा०
 हरण हूँ सुख हेत हो ॥ मृ० ॥ कुजद्वयकारी नृत
 ॥ वा० ॥ बंध कखो संकेत हो ॥ मृ० ॥ ११ ॥ दे
 जल मंदिर तलें ॥ वा० ॥ काठ धखो शुनठाम हो

मृ० ॥ ५० ॥ अवंसर विरुदावली ॥ वा० ॥ ब्रोज्यो वे
 तालीक ताम हो ॥ मृ० ॥ १२ ॥ प्रवज प्रतापी वि
 श्वमा ॥ वा० ॥ कमजा नासण जेह हो ॥ मृ० ॥
 जय जय ते जग शिर उच्यो ॥ वा० ॥ प्रभुपरें दिन
 कर एह हो ॥ मृ० ॥ १३ ॥ मंत्री नणे अवसर लही
 ॥ वा० ॥ पठधारी पुरनाह हो ॥ मृ० ॥ नाहण नोय
 ण पाणथी ॥ वा० ॥ बीतारो दुःख दाह हो ॥ मृ०
 ॥ १४ ॥ तहत्ति करी नृप ऊठीयो ॥ वा० ॥ आवे
 नयरी वाट हो ॥ मृ० ॥ शब्द पंच नार्देकरी ॥ वा० ॥
 बीहिना दिति गज थाट हो ॥ मृ० ॥ १५ ॥ मांगलिया
 जय रव नणे ॥ वा० ॥ नाचे गणिका कोढि हो ॥ मृ० ॥
 ये आसीश सोहामणी ॥ वा० ॥ गुणीजन होढा
 होढि हो ॥ मृ० ॥ १६ ॥ लेतो सद्गुथ वधामणा ॥
 वा० ॥ वेतो दान उदार हो ॥ मृ० ॥ जोतो पुरनां व्य
 वहारिया ॥ वा० ॥ सणगाखां बाजार हो ॥ मृ० ॥
 १७ ॥ नूपति लखनां जेटणां ॥ वा० ॥ ग्रहतो ह्य
 गय घाट हो ॥ मृ० ॥ सुणतां याचकनी स्तुति घणी
 ॥ वा० ॥ करतो थरिमुख दाट हो ॥ मृ० ॥ १८ ॥
 मंदिर पोहोतो महीपति ॥ वा० ॥ जेटे निज परिवा
 र हो ॥ मृ० ॥ सचिव प्रमुख नमी नूपने ॥ वा० ॥

पोहोता निज निज वार हो ॥ मृ० ॥ १९ ॥ नाहण
 करी नरपति गृहे ॥ वा० ॥ पूजे अरिहंत बिंब हो
 मृ० ॥ नोजन विविध प्रकारनां ॥ वा० ॥ आरोगे
 विलंब हो ॥ मृ० ॥ २० ॥ नृपति दयाता संगतें ॥
 वा० ॥ विलसे नवनव नोग हो ॥ मृ० ॥ पुण्यकी
 दिशा पाथरी ॥ वा० ॥ लहेसे सकल संयोग हो ॥
 मृ० ॥ २१ ॥ गर्जधरे ते दिनथकी ॥ वा० ॥ पट्टा
 णी गजगेल हो ॥ मृ० ॥ कांति कहे ए पनरमी ॥
 वा० ॥ ढाल सरस रस रेल हो ॥ मृ० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ युगल गर्न जिमजिम वधे, तिम तिम नृप मनमो
 द ॥ राणी नाग्य सोनाग्य जर, धारे विविध विनो
 ॥ १ ॥ तन रक्षा रुडी परें, नूप करावे तास ॥ क
 कृतारथ दोहजा, पूरे मननी आस ॥ २ ॥ दयित
 सुख केते दिनें, केतक दल ठवी हुंत ॥ तनु डर्वज
 एगार रस, अल्प अल्प जावंत ॥ ३ ॥ सुख परिम
 रस जाजचें, चिहुंदिति नमर नमंत ॥ सहज सुर
 कसातयी, पंकज कुल जाजंत ॥ ४ ॥ पूर्ण दिव
 रुन दातरें, रुन सुहृन् रुन वार ॥ पुत्र पुत्रिका
 प तिणे, प्रसव्यो युग्म उदार ॥ ५ ॥

॥ डाल झेलमी ॥ गेंडुडानी ॥ एवेसी ॥

॥ पटराणी प्रसव्यो तिहां रे हांजी, सुत तनूजानो
 पुगल अचूप ॥ एरूडोरे ॥ रतिपतिनो रंग, एरूडोरे
 ॥ सरसतीनो अंग, एरूडो रे ॥ जिम नंदन खितिथो
 हूवेरे हांजी, कल्पवृक्ष ते अंकूर रूप ॥ ए० ॥ १ ॥
 वेगवती दासी धसी रे हांजी, दीये वधामणी नृपने आ
 य ॥ ए० ॥ शिर न्हवरावे संतोपसुं रे हांजी, दास
 करम तस टाले राय ॥ ए० ॥ २ ॥ वेग करावो नय
 रमा रे हांजी, दशदिन नृप यितिपति काज ॥ ए० ॥
 पुत्रागमननां हर्षणी रे हांजी, हूउ अपूरव मन सुख
 साज ॥ ए० ॥ ३ ॥ नगर सुवन सवि चीतखां रे हांजी,
 वारण ठविया सोवन कुंन ॥ ए० ॥ ध्वज पट लह
 काविया रे हांजी, रोप्या टोमें कदली थंन ॥ ए० ॥
 ॥ ॥ रयणर्थन ऊना कखा रे हांजी, अति सुंदर पु
 र शोना हेत ॥ ए० ॥ तोरण दल सहकारनां रे हां
 जी, बांध्या नव मंगल शंकेत ॥ ए० ॥ ५ ॥ पुरजा
 कें हट सहेरमां रे हांजी, थापी सोवन दीरक उंन
 ॥ ए० ॥ सेरी पंथी पूजावीने रे हांजी, कीयां सोच
 ण चंदन घोल ॥ ए० ॥ ६ ॥ राज मारग त्रिक चा
 चरें रे हांजी, देवरावे मणि कंचन दान ॥ ए० ॥ ७ ॥

दि नवन सोधि विधि रे हांजी, मूक्यां सयला
 वान ॥ ए० ॥ ७ ॥ वाज्यो पडह अमारनो रे
 देश मांहे नय नंजण नाग ॥ ए० ॥ कुसुम पगर
 तें नव्या रे हांजी, धूपघटा पसरि नन माग ॥ ए०
 ८ ॥ जनपद अकर कव्या हसें रे हांजी, ताड्या
 नि वाज्या घोर ॥ ए० ॥ नाच करी हाव जावयी
 हांजी, वार वधू कुल चतुर चकोर ॥ ए० ॥ ९
 अकृत पात्र नरी रंगथी रे हांजी, नृपने वधावे आ
 वी नार ॥ ए० ॥ विकशित रंग वधामणा रे हांजी
 चतुर सचिव मलिया दरवार ॥ ए० ॥ १० ॥ जुव
 जुवन थापा दीया रे हांजी, सुरजी अगर कुंकुम प
 घोल ॥ ए० ॥ उत्सव महोत्सव मांनिया रे हांजी, शो जाव
 नगरनी पोल ॥ ए० ॥ ११ ॥ मांगलिया मंगल न
 रे हांजी, बंजण नणे बहुला स्तुति पाठ ॥ ए०
 मल्ल रमें बल माव्हता रे हांजी, नटुआ ठेंके उं
 काठ ॥ ए० ॥ १२ ॥ जिन जुवन पूजा रचे रे
 जी, सामी नक्ति करंत अनेक ॥ ए० ॥ अवसर
 र खेंचे नही रे हांजी, कहियें साचो तास विवेक
 ए० ॥ १३ ॥ अष्टचिकर्म वीत्या पठी रे हांजी,
 तोपें सुपरें कुटुंब ॥ ए० ॥ कर पंकज जोडी कदे

हांजी, ते आगल नृपति अविर्जव ॥ ए० ॥ १४ ॥
 मया करी प्रलया सुरी रे हांजी, आप्या मुजने वे सं
 तान ॥ ए० ॥ तस नामे हांजी विन्हे रे हांजी, मज
 य सुंदरी अजियान ॥ ए० ॥ १५ ॥ पंचधाइ पाजीज
 ता रे हांजी, कुमार कुमरी वधे तसनूर ॥ ए० ॥ दि
 नदिन नवल कला ग्रहे रे हांजी, बीज तणो जिम
 घंड अंकूर ॥ ए० ॥ १६ ॥ हसण लुगण चजणादि
 करे हांजी, जिम जिम साथे शैशव योग ॥ ए० ॥ ति
 म तिम नृप राणी लहे रे हांजी, हर्ष मनोहर फल
 संयोग ॥ ए० ॥ १७ ॥ निरुपम यौवनने रस रे हां
 जी, शिष्टता रस मूके आस्वाद ॥ ए० ॥ कालें उचि
 त कला ग्रहे रे हांजी, बुध संगें निज मति वनमाद
 ॥ ए० ॥ १८ ॥ किणदिन मदगज राजथी रे हांजी,
 खेल करे पण नृप सुत बांध ॥ ए० ॥ ख्याजकरे
 हयथी कदे रे हांजी, खड्ग रमें नाखें सरसांध
 ॥ ए० ॥ १९ ॥ कुमरी पण नमरी परे रे हांजी, वी
 ढी परिकर अति अनुकूल ॥ ए० ॥ वनवाढी आरा
 ममां रे हांजी, रमण करे यौवन मद जूल ॥ ए०
 ॥ २० ॥ कांतिविजय बुद्ध शोलमी रे हांजी,
 ढाल कही वत्सवनी एह ॥ ए० ॥ पुण्यथकी जय मा

लिका रे हांजी, बाधे दिनदिन वधते नेह ॥ ए० ॥
२१ ए० ॥ २० ॥ स० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४५ ॥

॥ चोपाइ ॥ खंमखंम रस ठे नवनवा, सुणत
मोठा साकर लवा ॥ निर्मल मलयचरित्र जग जयो
प्रथम खंम संपूर्ण थयो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनिमलपुष्प
रिचरित्रे पंढितकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रथम
मलयसुंदरीप्रशयनो नाम प्रथमः खंमः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंम प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री गुरु जिन गिरा, गणधरने करजोडी
बीजो खंम कहं हवे, थालश निझा ठोडी ॥ १ ॥ पु
मोठी जो होय कया, कथक वचन निदोष ॥ मी
सना सुणे बली, तो होये रसनो पोष ॥ २ ॥ फोर
फोरवे चातुरी, विचमां करे वकोर ॥ रस संजण विकर
करे, माणस नहीं ते दोर ॥ ३ ॥ तेहनणी मन थिर कर
मूली थलनो थंय ॥ कहैतां श्रोता सांनजो, गर
कया संबंध ॥ ४ ॥ लही हवे कुमरी छुनग, यौवन
थजंग ॥ काळें कान समुझना, लगमें विविध तरंगा ॥

बाल पकेली ॥ यनामारु यौवन आईती पुर ॥ १५ ॥ रेओ ॥
 ॥ यौवन रम पुरे बडी रे, नवनगोरीगे गत ॥
 लकै करे लजिबंदिका रे, जाणु आसो पुनिधनी रात
 ॥ १॥ कन्यावारु यौवन आईती पुर, गली रूपे लूटी
 लीथी रति गणो ॥ कन्यावारु यौवन आईती पुर ॥ २ ॥
 आंकणी ॥ त्रेणि निहाली शामली रे, नानुं नागिण
 घोड ॥ बदन कमल रम लालचै रे, मानुं पेठी नमरनी
 उत ॥ क० ॥ ३ ॥ जालनलुं नार्ये ननुं रे, दीपे सबल
 सुवाट ॥ पुण्य रेल तिलवा नणी रे, विधि मांगो क
 नकनो पाट ॥ क० ॥ ४ ॥ गीत्रडिया मृगनां तिस्या रे,
 लोचन तास बखाण ॥ तीखाई विधिना गटी रे, जिम
 सर चाढया खुरसाण ॥ क० ॥ ५ ॥ सझन मन धारा
 जिती रे, नासा सरल सुहाय ॥ चांचे लाज्या सूदला
 रे, ते लखि लखि वनफल खाय ॥ क० ॥ ६ ॥ अधर
 धरे रंग रातडो रे, नवपल्लव सुकुमाल ॥ बढवातल
 संगति मिसे रे, मानु पेठी बिडुम जाल ॥ क० ॥ ७ ॥
 बिहुं पखधारे अतिकजा रे, तस मुख चंड हसाय ॥
 निरखी खिस्ताणो चंडमा रे, नित्य उदय लहो खिसी
 जाय ॥ क० ॥ ८ ॥ सरल सुहाली बाहडी रे, तेह लु
 ढावे बाल ॥ अजिनव उपे जोडले रे, नमी आवी क

त्वत्तरु माल ॥ क० ॥ ८ ॥ गोत्र कठिन कंचुक कश्यप
 रे, कुच युग एम शोनाय ॥ काम नृपति जीतवा न
 णी रे, इहां तंबू दीधा आय ॥ क० ॥ ९ ॥ उदर स
 कोमल पातलुं रे, जेहवुं पोषण पान ॥ जलकार
 जाण्यो पडे रे, अति कनक तवकने वान ॥ क० ॥ १० ॥
 ठाजे सुंदर वाटलो रे, जीणो केडनो लंक ॥ देखतही
 वन गिरि गया रे, मृगराज थया साशंक ॥ क० ॥ ११ ॥
 जंब युगल दीपे जलां रे, अचला कदली खंन ॥ म
 दन मालियें सिंचिया रे, नरी लावण्य अमृत कुंन ॥
 ॥ क० ॥ १२ ॥ उंचा मांसल सुंदरू रे, पग काठव
 अनुहार ॥ तस तुलना करवा नणी रे, जाणे कमल
 लीयो अवतार ॥ क० ॥ १३ ॥ कोमल कर पग अ
 गुली रे, कपर नख दीपंत ॥ माणिक मंमिंत लेखणी रे
 रति पतिनी एहवी नहुंत ॥ क० ॥ १४ ॥ पगें जांज
 जम जम करे रे, कटि मेखल खलकार ॥ लक्ष्मी पूंज
 सोहामणो रे, तस कंठे ठाजे द्वार ॥ क० ॥ १५ ॥
 कर कंकण मणिमय जड्या रे, कांने कुंमल जोड
 शोहे सवि शिणगारथी रे, गज गामणिअं शिर म
 ड ॥ क० ॥ १६ ॥ निपुणपणो दिन निगमी रे, व

लापक ते बाल ॥ नाखी बीजा खंफनी रे, इम काते
पहेली ढाल ॥ क० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे अने एह नरतमां, पुरवर पुहवी ठाण ॥
सूरपाल तामे तिहा, राज्य करे खिति जाण ॥ १ ॥
पटराणी पदमावती, रूप शील गुण वास ॥ सुत सु-
दर तेहने दूज; नाम महावल तास ॥ २ ॥ विद्या सा-
धक कोइक नर, सेव्यो कुमरे एण ॥ रूप पलटण
कारणी, विद्या दीधी तेण ॥ ३ ॥ नाग दमण व्यामो-
हनी, नूत दमणि वशितंत ॥ मंत्र यंत्र कामेण प्रमु-
ख, शाख्यो कुमर अनंत ॥ ४ ॥ सूरपाल नृप कारजे,
खासा आप खवास ॥ मिलेणु आपी मोकले, वीर
धवल नृप पास ॥ ५ ॥ कुमरे पण नृप वीनवी, कीधुं
साथ प्रयाण ॥ केतेक दिन चंडावती, पोहोता सुगुण
सुजाण ॥ ६ ॥ मूकी मुहगो जेटणो, उचित करी व्यव-
हार ॥ नृप आगल वेठा सहु, नाखे कुशल प्रकार ॥
॥ ७ ॥ निरखी नृप कहे इश्यो, ए कुंण तरुणो जेह ॥
एक सचिव माह्यो कहे, मुज लघु बांधव एह ॥ ८ ॥
कही काम निज स्वामीनां, कठयो तेह प्रधान ॥ नृप
दत्त मंदिर जई, चतरिधा सुनथान ॥ ९ ॥ राज कु-

र मन कौतुकी, निरखत पुर आवास ॥ नमतो नम
तो आवीठ, मलया मंदिर पास ॥ १० ॥
॥ ठाल बीजी ॥ आहारा मोहला कपर मेह जबूके

बीजली होलाल, जबूके बीजली ॥ ए देशी ॥
॥ कुमरी कुमरनुं रूप, निहाली तव तिहां लोला
ल निहाली ॥ मांमे मींट अनूप कुमर कनो जिहां
हो ॥ कु ॥ जक नपड़े तिल मात्र, के विरहयो
परजली हो ॥ के ॥ कामातुर अकुलात के, दु
मन आकली हो ॥ के ॥ १ ॥ निरखी सुंदर अं
वखाणे तेहनां हो ॥ व ॥ फूल्या जासू रंग चरण
तल एहनां हो ॥ च ॥ तेज तणो अंवार रह्यो
रपति जिस्यो हो ॥ र ॥ मयगल सुंमाकार सुज
शुग तिस्यो हो ॥ सु ॥ २ ॥ सुंदर कटीनो लंक
राजे लंकथी हो ॥ वि ॥ मावे करतल माग न
मध्य अंकषी हो ॥ न ॥ हृदय महा सुविशज
जा नोगल जिसी हो ॥ चु ॥ रेखा त्रण गलना
कहुं छपमा किसी हो ॥ क ॥ ३ ॥ सूडा चंचु
मान सुहावे नाशिका हो ॥ सु ॥ मणिदर्पण
मान कपालें नाशिका हो ॥ क ॥ कामणगारी
नें थड़ी बिहुं आंखड़ी हो ॥ अ ॥ श्याम न

अनुमान शिवा रतिपति उरी हो० ॥ अ० ॥ ४० ॥
 लिहारी जवं तास पदपो जेण एहो हो० ॥ ४० ॥
 निरख्यो रूप निवास जनम सफलो हवो हो० ॥ ४० ॥
 नृप आला नरी नयण पीये रस रूपनो हो० ॥ ४० ॥
 लागो लइने गयण समाहो चूपनो हो० ॥ ४० ॥ ५ ॥
 नृपसुत पण ते देखी थयो मवनाकुलो हो० ॥ ४० ॥
 बाध्यो विरह विशेष अलेख उपापलो हो० ॥ ४० ॥
 अहो अहो रूप निहाली चतुर गुण धारिका हो० ॥
 ४० ॥ परणी अठे एह घालके हजीअ कुंआरिका
 हो० ॥ ४० ॥ ६ ॥ इम चिंतवता लेख लखीने बा
 लिका हो० ॥ ४० ॥ नाखे नीचुं देखत लागी ना
 लिका हो० ॥ ४० ॥ तला० ॥ कुमरें सकल उदंत चतुर प
 णें चाचिया हो० ॥ ४० ॥ पदपद अंग अनंतह ह
 राख रोमाचिया हो० ॥ ४० ॥ ७ ॥ कवण अठे तुज
 जाति रहे तुं किहां बली हो० ॥ ४० ॥ नाम कवण कु
 ण जाति जायो तुं महाबली हो० ॥ ४० ॥ वीरधवल
 नी जाति अ हुंहुं कुमारिका हो० ॥ ४० ॥ मोही ता
 हरु गात निहाली वारिका हो० ॥ ४० ॥ ८ ॥ तुम
 विरहें मुज काय रही ए जलवली हो० रही० ॥ जे
 ट देइ महाराय करो हवे सीयली हो० ॥ ४० ॥

चो इम विरतंत कुमर मन वेधितं हो० ॥ कु० ॥ वे
 ह निविडने तंत विहुं मन साधितं हो० ॥ विहुं
 ए० ॥ कुमर अई थिरथंन निहाले वली जिहां हो०
 नि० ॥ कोइक नर निरदंत कहे आवी तिहां हो० ॥
 क० ॥ कुमर संबाहो वेग पिघाणो आज ठे हो० ॥
 पि० ॥ ठांमो निरखण नेग उतावलो काज ठे
 ॥ १० ॥ वैरवसाव्यो ध्याय तिणे तिहां आवीने हो०
 ॥ ति० ॥ हठनाएयो अकुलाय चव्यो विरचाइने हो०
 ॥ च० ॥ विरहो तास कठोर हियामां आयडे हो० ॥
 हि० ॥ मांमे आघा जोर चरण पाठा पडे हो० ॥ च०
 ॥ ११ ॥ चिंते चित्तमां आप जणाव्यो में नही हो० ॥
 ज० ॥ रहेसे मुज संताप मिलणनो ए सही हो० ॥
 मि० ॥ चालणरी जो वार हसे एका घडी हो० ॥ ह०
 ॥ रहेसे पण निशिचार आवीश हुं दडबडी हो० ॥
 अ० ॥ १२ ॥ धारी इम मनमांहे गयो निज थानकें
 हो० ॥ ग० ॥ अवसर देखी त्यांहिं आव्यो उचानकें
 हो० ॥ आ० ॥ किरणरूप अइ फाल दिये गढ ऊपर
 हो० ॥ दि० ॥ आव्यो पहेले माल विद्याधरनी पर
 हो० ॥ वि० ॥ १३ ॥ कनकवती नृपनारि निहाले पेस
 तो हो० ॥ नि० ॥ कवण पुरुष इणो ठाम आव्यो कि

म हिंसतो हो० ॥ आ० ॥ अतिदूरा दरबान सूता इ
 पो वेचिया हो० ॥ सु० ॥ के कोइ मंत्र निदान तिणे
 जन वंचिया ॥ हो० ॥ ति० ॥ १४ ॥ इम चिं
 तवीते तेह मोही रूपें घणुं हो० ॥ मो० ॥
 जाखें धरती नेह मनोरथ आपणुं हो० ॥ म० ॥ आ
 वो कुमर करार करो इणें आसणें हो० ॥ क० ॥ ला
 हो द्यो मुज सार शरीरने फरसणें हो० ॥ श० ॥ १५ ॥
 कुमर सुणी ते वाणी विचारे निज हियें हो० ॥ वि० ॥
 पेसी एहवे ठाण विसास न कीजीयें हो० ॥ वि० ॥
 कपट करी ए नारि करुं राजी खरी हो० ॥ क० ॥ वो
 ले वचन विचार सुगुण तिहां अवसरी हो० ॥ १६ ॥
 सुण सुंदरी गुण रेख विदेशी आवीउ हो० ॥ वि० ॥
 मजयानो एक लेख विगतसुं लावीउ हो० ॥ वि० ॥
 देखाढे तसवाम देई ते तेहने हो० ॥ दे० ॥ तो बली
 ताहारो काम करुं दुं थिर मने हो० ॥ क० ॥ १७ ॥
 तब नृप दयिता आवी देखाढे वाटढी हो० ॥ दे० ॥
 उंचो चढिउ धाय नारी नीचें खढी हो० ॥ ना० ॥
 दीउी बाला दीन वदन करतल धरी हो० ॥ व० ॥
 वेठी करी आफीन कुमर एक ठपरें हो० ॥ १८ कु०

कुमरनणो सुण बाल करो चिंता किती हो० ॥ क० ॥
 करवा तुम संजाल आव्यो हुं उल्लसी हो० ॥ अ० ॥
 देखो उघोडो आंख हवे कां पांतरो हो० ॥ ह० ॥
 नाखो विरहो ताडि करो मत आंतरो हो० ॥ क० ॥
 ॥१॥ उठी बाला रंग मिलि मन मोदसुं हो० ॥ मि० ॥
 माथुं अतिहें उजंग धरेतस गोदमां हो० ॥ ध० ॥ बीजे
 खंमे ढाल थई बीजी इहां हो० ॥ थई० ॥ कांति
 कहे वर बाल बिहुं मिलिया तिहां हो० ॥ बि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ करे विविध तिहां गोठडी, बिहुं जण प्रेम धरंत
 ॥ कुमर कहे सवि आपणो, ते आगल विरतंत ॥१॥
 पुहवी गण तणो धणी, सूरपाल मुज तात ॥ पट
 देवी पद्मावती, तेहनो हुं तन जात ॥ २ ॥ नाम महा
 बल माहरो, देश निरखणनी खंत ॥ नृप कामे परि
 वारछुं, इहां आव्यो गुणवंत ॥ ३ ॥ निरखत अचरज
 पुरतणां, दीगो तें उपकंठ ॥ लेख लख्यो ते वांचतां,
 लाग्यो नेह उल्लंठ ॥ ४ ॥ मलीज हसि हवे शीख ठे,
 चालण मुख सहु साथ ॥ वचनसुणी वाला विलपि,
 इम कहे जोडी हाथ ॥ ५ ॥

॥ बाल ग्रीजी ॥ बनी जावलवे राणो अरज
करेढे, अबको वरसालो घर कीजें हो ॥

गढमुंदी वाला ॥ ए देशी ॥

॥ मलया कहे विरहानल तापी, अवसर एह र
ह्यानो हो ॥ प्र० धणरा हो जोनी, चाला चलण न
देस्यां ॥ चलण तुमारो मोहन मरण हमारो, रहो र
हो कहुं मानो हो ॥ प्र० ॥ १ ॥ करुणा करीने मुज
ऊपर विष्टुजी, पुरो मनोरथ रूढा हो ॥ प्र० ॥ लक्ष्मी
पूज सुताहल मनछुं, एह ल्यो चातुर सूढा हो ॥ प्र०
॥ २ ॥ हार तणो मिते ए वरमाला, कंठे ठवी इम
जाणो हो ॥ प्र० ॥ हवणाही गांधर्व विवाहें, परणी
मुज सुख माणो हो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कुमर कहे सुण
चंड मुखीतें, वचन कहुं ते वारू हो ॥ प्र० ॥ मात
पिता आणा विण कन्या, वरवी नहीं विवहारू हो
॥ प्र० ॥ ४ ॥ दुःख मथरिस रही दिन केताइक, बुद्धि
करुं दुं तेहवी हो ॥ प्र० ॥ मात पिता जन जोतें तु
जनै, देसे मुज ततखेवी हो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ पण वांध्यो
ए में तुज आगें, मन रलीआयत कीजें हो ॥ प्र० ॥
ढीज हुवे जावाने तेहथी, सीखडी सी हवें दीजें हो
॥ प्र० ॥ ६ ॥ कनकवती नीचें नृपराणी, वातसुणे -

ही ठानें हो ॥ प्र० ॥ रीसाणी चिंते ए धूरत, लाने
 कन्याने कानें हो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ करी संकेत मल्लो
 एहनें, मुज कारज नवि सोधुं हो ॥ प्र० ॥ दो
 दादरने ढारें, ठानेंसें तालुं दोधुं हो ॥ प्र० ॥ ८ ॥ कुमरी
 कहे मुज एह विमाता, मुज मातानी शोकि हो ॥ प्र० ॥
 कनकवती इणो कपट करीनें, राख्यांते बिहुं रोंकी हो
 ॥ प्र० ॥ ९ ॥ व्यतिकर सर्व सुण्यो रीसाली, अनरय
 करसे प्राहिं हो ॥ प्र० ॥ कुमर नणे एहनें हुं कूडे,
 वंची आव्यो आहिं हो ॥ प्र० ॥ १० ॥ वात करे जई इम
 तेणी वेला, कनकवती नृप पासें हो ॥ प्र० ॥ आयो
 प्रकाशे सुख रस वाही, दोठी वात उल्लासें हो ॥ प्र० ॥
 ॥ ११ ॥ कोपें लोचन रातां कीधां, हणवाने मन प्र
 खुं हो ॥ प्र० ॥ शुनट घटा वींटये नरनाथें, कन्या म
 दिर घेखुं हो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ कहे कुमरी हैहै विप
 कन्या, हुं सरजीकां नाथें हो ॥ प्र० ॥ मुज कारण अ
 नरय लहेमे, ए आयो परायें हाथें हो ॥ प्र० ॥ १३ ॥
 कुमर नणे शुनगे कां वीहो, एहथी नहीं मुज प
 डा हो ॥ प्र० ॥ परघर पेसे तेतो किहां कियो, राखे
 ठजवज बीमा हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥ इम कही आप वि
 खाथी काढी, गुटिका सुखमां धोरी हो ॥ प्र० ॥ १५ ॥

अनुजावें चंपक माला, यह श्रेष्ठ ते नारी हो ॥ प्र०
 ॥ १५ ॥ रूप निहाली निज जननीनु, कुमरी अचर
 ज नारी हो ॥ प्र० ॥ नांजी तालुं नरवर आब्यो, दे
 खे सुताने नारी हो ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नृप बोख्यो क
 नका मुख देखो, कूडुं इमकां नांखे हो ॥ प्र० ॥ अल
 वे आल देई पर उपर, कां पुरगति फल चाखे हो ॥
 ॥ प्र० ॥ १७ ॥ आकोसी विलखी यह कुमरें, बोला
 बी हसी आगें हो ॥ प्र० ॥ कही बहैनी पीठ को
 प्या केणे, इहां आब्या किए ठगें हो ॥ प्र० ॥
 ॥ १८ ॥ पुरनो लोक धनादर बयणे, कनकामें निर
 धाडे हो ॥ प्र० ॥ कहे कनका जो हुंहुं जूठी, तो कि
 हां हार देखाडे हो ॥ प्र० ॥ १९ ॥ छल जननी निज
 कंठयकी ते, उंचो हार ठगाले हो ॥ प्र० ॥ नृप प्रमु
 ख सहुने देखाडे, कनकानो मद गाले हो ॥ प्र० ॥ २० ॥
 तिण बेला कुमरीनो जननी, जर निझामांहे हूंती हो
 ॥ प्र० ॥ सुख निझायें निज पुत्रीनी, विगत लहे नहीं
 सूती हो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ फरी आब्या हसंतां निज
 थाने, नृपादिक सविलोक हो ॥ प्र० ॥ कनक बती
 नी निंदा करतां, लोक बदन कहां बोक हो ॥ प्र० ॥
 ॥ २२ ॥ कूडी पढी कनका महाबलनो, विघन

विसराल हो ॥ प्र० ॥ कांति कहे इम बीजे खंमे, ए
थइ बीजी ठाल हो ॥ प्र० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनका चित्त चिंता करे, नयणें नावे नींद ॥
मलया किम दुःख पामसे, मानी जेह महींद ॥ १ ॥
हवे कुमर मुख मांहेथी, काढे गुटिका रयण ॥ प्र
गट हूउ नररूप त्यां, जाणे नवलो मयण ॥ २ ॥ क
हे कुमर अनरथ वडो, दुउं एह विसराल ॥ जो बली
रहियें तो हूवे, अणचिंत्यो को आल ॥ ३ ॥ तेमाटे
तुम सीखथी, चालीश हुं निजदेश ॥ प्रीतलता संजा
लजो, ऊगी हृदय निवेश ॥ ४ ॥ कखो गुलन मेजा
वडो, आपण विहुंनो जेण ॥ चिंता करशे तेह विधि,
मकरें चिंता तेण ॥ ५ ॥ बलि अनोपम तुजने कहुं
सुंदर एक सजोक ॥ सरवकाल ते चिंतवे, याशे सयन
थोक ॥ ६ ॥ तद्वया ॥ विधत्तेय विधिस्ततूत्या, (चि
त्कारपामीने) न्नस्यात् हृदयचिंतितं ॥ एवमेवोत्सुकं नि
ज, सुपायां चिंतयेद्बहून् ॥ १ ॥ दोहा ॥ वरण उकंय
ठांकणे, इम लागी तस चित्त ॥ तेह प्रशंसे चित्तचर्क
ए श्जोक सवल सुपवित ॥ ३ ॥ सुखिया होजो सा
ना. दुःखिया होजो पंच ॥ देजो वेग मेजावडो, म

नो लखमी गंध ॥ ७ ॥ कहे बाला नरो लोयणां, रे
 यलां ठोगाल ॥ नेह नवल तुज खटकशे, जिम तन
 सुतो शाल ॥ ८ ॥ गुप्त मोहोलथी नीसरी, आवी च
 ढ्यो केकाण ॥ नियत प्रयाणे चालतो, पोहोतो पु
 हवी राण ॥ ९ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ करेलणां घडिवे रे ॥ एदेशी ॥

॥ तात चरण आवी नम्यो, आपे अनोपम हार ॥
 वीरधवल दीधो मुने, इम कही कूड तिवार ॥ १ ॥ नविक
 लन सांजलो रे, मंलयानो अधिकार ॥ जं० ॥ एतो सु
 एतां हर्षे अपार ॥ ज० ॥ ए. आंरुणी ॥ राय कहे तुज
 चातुरी, दीठी अधिक वदीत ॥ थोडो दिनमां जेहथी, वा
 धी एवढी प्रीत ॥ ज० ॥ २ ॥ इम कहीने कंठे ठव्यो,
 कुमरें मायने हार ॥ घणुं सराहें पुत्रने, राणी पण
 तेणीवार ॥ ज० ॥ ३ ॥ राज कुमर इम चिंतये, पण
 बांध्यो में जेह ॥ कन्या किम परणी हवे, साचो करणुं
 तेह ॥ ज० ॥ ४ ॥ तिणे अवसर एक आचिउं, वीरधवल
 नो दूत ॥ प्रणमी नृपनें वीनवे, सांजल नर पुरुदूत
 ॥ ज० ॥ ५ ॥ पुत्रि अमचा स्वामीनी, मलया सुंदर
 नाम ॥ तास स्वर्णवर मांमीउं, करीने प्रतिज्ञा आम
 ॥ ज० ॥ ६ ॥ धनुष पूर्व परिया तणुं, वज्र सार ठे

सार ॥ जे नर तेह चढावरो, वररो तेह कुमार ॥ १० ॥
 ॥ ७ ॥ देशदेशावर रायनां, नंदन तेडण काज ॥
 त मोकल्या राजीये, हुं मूक्यो तुमराज ॥ न० ॥
 देव महाबल मोकलो, कुमार काम अवतार ॥
 एजाणे एहथी विधें, योग लिख्यो यानार ॥ न० ॥
 ए ॥ ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी, आज अइ तिथि खास ॥
 आगामी चौदशि दिने, होसे स्वयंवर तास ॥ न० ॥
 १० ॥ वांटे हुं मांदो थयो, तेहथी हूउ विलंब ॥
 री उतावलो मोक्यो, लगन अळे अविलंब ॥ न० ॥
 सनमानी ते दूतनें, शीख करे नूपाल ॥ कुमार सन
 मां सांजली, चिंतवे इम हरखाल, ॥ न० ॥ १२ ॥
 देवें मुज करुणा करी, नीठा दुःख संयोग ॥ दुखम
 हे नोजन मले, तिम ए दीसे योग ॥ न० ॥ १३ ॥
 काज हतुं सांसें पडयुं, सिखाययुं ते आज ॥ विश्व
 वीश दया करी, मुज ऊपर महाराज ॥ न० ॥ १४ ॥
 तात दीए मुज आगन्या, तो तिहां जइ तत्काल
 राजपुत्र कुल अवगणी, हुं परणुं ते बाल ॥ न० ॥
 ॥ १५ ॥ तव नृपनिरखी पुत्रने, कहे वड तुं गुन
 ल ॥ बल वाहनना घाटस्यो, रातें सधावो आज
 न० ॥ १६ ॥ कहे कुमार विनयें जखो, तात वच

परमाण ॥ दल सज कीधुं तांयजी, धोव्यो हरखें रा
 ए ॥ न० ॥ १३ ॥ लखमी पूंज मनोहर, सुत द्यो
 साथें हार ॥ कुमर कहे ते हारनी, वात सुणो निर
 धार ॥ न० ॥ १४ ॥ सूता मुज निशिनें समें, करें उ
 पडव कोइ ॥ बख्ख शख्ख नूपण हरे, गुप्त बीहायें सोइ
 ॥ न० ॥ १५ ॥ मात कनेयी में ग्रही, हार उव्यो मुज कं
 व ॥ थाल रयणमां थपहरी, लीयो तेणे उल्लव ॥
 न० ॥ १६ ॥ हार गयो जाणी हवे, माता धारे दुःख ॥
 करी प्रतिज्ञा में तिहां, माताने थनिमुक्क ॥ न० ॥ १७ ॥
 जो नापुं दिन पांचमां, ते मुत्तावली हार ॥ तो मुंज
 काया आगमां, दहेवी ए निरधार ॥ न० ॥ १८ ॥ हार
 कदापि नवि लहुं, तो मुज मरण सहाय ॥ करे प्र
 तिज्ञा आकरी, दुःख धरती इम माय ॥ न० ॥ १९ ॥
 अट्ठश नडे जे रातिमां, राक्षस के चूडेल ॥ पोहोर
 एक बे रही इहां, नाखुं तस पग जेल ॥ न० ॥ २० ॥
 स्वयं करी तेह दुष्टनें, लेई हार नजिनांति ॥ सुंपी
 माताने पठें, चालीश पाठलो राति ॥ न० ॥ २१ ॥
 राय प्रभांसे पुत्रनां, साहस सत्त्व विशाल ॥ बीजे खंमें
 ए कही, कांतें चौथी ढाल ॥ न० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर मंदिर गयो, अलवे त्यांथी ऊठि
 बार जडी खांहुं ग्रहा, बेगो दीवा पूठ ॥ १ ॥ म
 रयणीनें आंतरें, चंचल सबल जस टेक ॥ गोख
 र्गथी मलपतो, पेसैं कर तिहां एक ॥ २ ॥ कुमर बि
 चारे पूर्वपरें, करसे कांइ विरुद्ध ॥ तेह थकी पहेल
 जली, आणुं शिद्धा शुद्ध ॥ ३ ॥ सोवन चूडी खल
 लें, उपें कंकण रेह ॥ तेह जणी कर नारिनो, ए
 निस्संदेह ॥ ४ ॥ देवी अथवा दानवी, आवी ठे इ
 कोय ॥ देव सक्तिनां बल थकी, दृष्टें नावे सोय
 ॥ ५ ॥ जो नांखुं खांहुं खरुं, तो बली जासे जागि
 चढरो हाथ न माहरे, नही आवे बली लाग ॥
 एम विचारी ऊठव्यो, त्रिवली जालें चाढि, चढि वे
 कर ऊपरें, ग्रही वे हाथें गाढि ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ तट यमुनानोरे अतिरजिया
 मणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मंदिरसांथी रे ते कर कंपतो रे, गयणें चढि
 आंटा खाय ॥ सुर असुरनां रे कुल वीवरातो रे,
 लट पलट करी चाढ्यो जाय ॥ मं० ॥ ॥ १ ॥ निर
 वेगो रे कुमर ते ऊपरें रे, तेहनें नारें कर लचकाय

पवने ऊडाडयो रे ध्वज पटनी परें रे, हठ चढ़िउं चिह्नं
 दिशि मोलाय ॥ मं० ॥ ३ ॥ जटकि आठाटें रे नीचो
 नांखवा रे, पण आसण नकरे चलचाल ॥ कुमरें थ
 काडयो रे अलड केकाण जुं रे, तव प्रगटी देवी वि
 कराल ॥ मं० ॥ ३ ॥ एह रोशाली रे मुजनें नांखते रे,
 विपम मंदावने गिरिवर ठेह ॥ इम निरधारी रे मारी
 आकारी रे, कुमरें करकश मुठी तेह ॥ मं० ॥ ४ ॥ दीन
 रडंती रे देवी इम कहें रे, रे करुणा वंत दयाल ॥ मुज
 अधलानें रे सबला कां नहें रे, मूक हवे नकरुं तुज
 चाल ॥ मं० ॥ ५ ॥ मूकी कुमरें रे ते नासी गई रें,
 ठेयो कानें कूकर जेम ॥ आप तिवारें रे पडिउं गयण
 थी रे, विद्या चूक्यो खेचर एम ॥ मं० ॥ ६ ॥ फलनर
 जारी रे वन आंधा शिरें रे, आवी रह्यो नृप नंदन
 वेग ॥ नयण निमेली रे हण मूरठा लह्यो रे, पवने
 विंज्यो अति तेग ॥ मं० ॥ ७ ॥ कुमर विमासे रे चे
 त बझा पठें रे, किण थानक हुं आयो चालि ॥ रयणि
 आंधारे रे कर फरस्या थकी रे, जाण्यो तरु साही त
 स मालि ॥ मं० ॥ ८ ॥ हण एक मांहे रे तरुथी उ
 तरी रे, आवी वेछो तरुने खंध ॥ इम मन सोचे रे
 कुण ए आपदा रे, दीधी तिण कुज वैर प्रबंध ॥ मं० ॥

ए ॥ किहां मुज माता रे किहां तात माहरो रे, किहां
 हुं ए किम थासे सूल ॥ हार नपामे रे जननी जो हवे
 रे, करगो जीवितनुं प्रतिकूल ॥ मं० ॥ १० ॥ माय
 वियोगें रे वली मुज तातजी रे, धरवा प्राण अठे अ
 समठ ॥ हैहै दीसे रे कुलक्षय माहरो रे, इम चिंता
 नर वेगो तठ ॥ मं० ॥ ११ ॥ खरखर वागो रे तव
 रव नूमिनो रे, नूपति सुत निरखे तरुमूल ॥ नारिग
 जीने अरधी आवतो रे, नजर पडयो अजगर एक थू
 ल ॥ मं० ॥ १२ ॥ कुमर विचारे रे ए प्राणी गली
 रे, आवे तरु आफलवा कोय ॥ ए बिठोडावुं रे जो
 जोरो करी रे, तो मुज आतम सफलो होय ॥ मं०
 ॥ १३ ॥ साहस धारी रे तरुथी ऊतखो रे, वेगो व
 नें आवा गौड ॥ अजगर आयो रे देवा विंटली रे
 कुमर अहे तल मुख अति प्रौढ ॥ मं० ॥ १४ ॥
 दन विदाखुं रे होव बिन्दे अही रे, ते मांहेंथी काठ
 एक नारि ॥ वचन कहंती रे माहारे इण समे रे,
 रण होजो महाबल एक तारि ॥ मं० ॥ १५ ॥
 म सुणीनें रे पोतानुं तिहां रे, बिहमय विकसित
 चन पाय ॥ इरें कडाडी रे अजगर नाखीउं रे, दे
 अवजा सुखगत नाय ॥ मं० ॥ १६ ॥ मजया तरखीरे रि

स्त्री गोरडी रे, त्रिज चमक्यो ढोले तिहां वाय ॥ चेतन
 बाहुं रे तव बाला जणे रे, पूरवलो ते श्लोक सुणा
 य ॥ मं० ॥ १७ ॥ कुमर सुणीनें रे तिहां निभय करी
 रे, वीरधवल तनुजा ए होय ॥ कर पद सेवा रे कुमर
 करे वली रे, जिम पीडा तनुं विरली होय ॥ मं० ॥
 १८ ॥ कुमर पयंपे रे कणो सुंदरी रे, तुम विरहें सु
 ज मन शीदाय ॥ नयण कवाडे रे निरखी पदमणी
 रे, सेवापर नृप सुत चित्तलाय ॥ मं० ॥ १९ ॥ ला
 ज करंती रे नेहल मीटमां रे, कहे जीवन जीवाडी
 थाज ॥ संगम दैवें रे किम मेळ्यो इहां रे, नाखोजी
 नाखो महाराज ॥ मं० ॥ २० ॥ कुमर तिवारे रे क
 हे सरिता जलें रे, प्रथम पखालो तनुं पंकाल ॥ वी
 तक वेहु रे कहेणुं वली पठें रे, इम कही आणी नदी
 ये बाल ॥ मं० ॥ २१ ॥ अंग पखाळुं रे, जल पीधुं
 गली रे, वली आख्या पाठा तरु तीर ॥ कुमरें सुणावी
 रे निज वीती कथा रे, सुणतां थरके तास शरीर ॥
 मं० ॥ २२ ॥ नृप सुत तेहनेरे धणिने पृथगे रे, वीतक
 सयल करी चित्त चूप ॥ कांतें प्रकाशी रे खास्ती पांच
 मी रे, बीजे खंमे ढाल अनूप ॥ मृ० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नणे कुमर क्षीणोदरो, मांझी कहे तुं वात ॥ अ
 जगर वदने किम पडी, राखीर्तानटव्रात ॥ १ ॥ कहे कु
 मरी हु नवि लहुं, अजगर वदन प्रवेश ॥ सुणो कवि
 एथइ जे कहुं, अवर दात जवजेश ॥ २ ॥ तेहवा
 मां पग रव थकी, जाण्यो जन संचार ॥ कुमर विचार
 रातिमां, केहनो एह विहार ॥ ३ ॥ आवे ठे साहमो
 धस्यो, रसीयो के लूटाक ॥ व्यसनी मद पीयो अवे,
 के कोइ जार लडाक ॥ ४ ॥ के कोइ परिचित नारिनां
 आवे ठे इणवाट ॥ मीट न पाहुं गोरडी, ए अवसर
 ते माट ॥ ५ ॥ एम विचारी शिर थकी, काढी गुठिक
 टाल ॥ आंवानां रसमां घसी, कस्युं तिलक तस न
 ॥ ६ ॥ पुरुष थयो नारि टली, कुमर कहे मत शंक
 रूप पाजट्युं तुझमें, आवत नर आशंक ॥ ७ ॥ ज
 नहिं मांजुं थूंकथी, त्यां लगें तुज नर रूप ॥ पुरुष
 या मांज्या पठी, याजें मृज सरूप ॥ ८ ॥ आपण
 एक ठे, सुखें पथारो आंहिं ॥ इम कही निरख
 वाटडी, दीगी नारी त्यांहिं ॥ ९ ॥ तरुणी हरिणी
 धती, आवे विक्रित गात ॥ नृप नंदन मधुरे स
 पुते तल अवदात ॥ १० ॥

॥ ढाल लठी ॥ नदी यमुनाके तीर, उ
 डे दोष पंखीया ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे तुं आहिं, आवी कुण एकली; किम कं
 पे तुज गात, चिंतातुर कां वली ॥ कुण तटनी ए नूप,
 कवण नगरी किती; इहां पाम्या सुखशांत अमें मन
 मां वसी ॥ १ ॥ नारी जणे ए नीर, नदी गोला वहे;
 चंडावती उपकंठ पुरि अति गहगहे ॥ दशदिशि पस
 री जात, महा कीरति ध्वजा; वीरधवल नूपाल, इहां
 पाले प्रजा ॥ २ ॥ कुमर विचारे जेथ, आवण हुं
 चाहतो, पढतो पढतो तेथ, आयो नज गाहतो ॥ अ
 हो मुज पुण्य प्रमाण, प्रसन्न ठे जगपती; जस मुखें
 पेठी नारि, मजो जे जीवती ॥ ३ ॥ कहे वली आ
 गज वात, नारि अचरित जरी; पुत्रो दुइ ते नूपने,
 मजया सुंदरी ॥ मंमप मांमयो तास, स्वयंवर नूपतें;
 मूढ्या हुंत निमंत्रणें, नृप नंदन प्रतें ॥ ४ ॥ आज
 थकी विवाह, होसे त्रीजे दिनें; कीथी सामग्यो सर्व,
 अगाध मेजीनें ॥ नृपने बीजी नारि, अठे कनकाव
 ती; मजया सार्यें रोश, वहे ते डुमति ॥ ५ ॥ सोमा
 माहरुं नाम, हुं तास महोजणी; सर्वे रहस्यनुं ठा
 म, पणुं विसवासणी ॥ मजयानो केइ ठिइ, जावे ॥

ज सामिनी; पण नांव देखे कोइ, किहां अवगुण क
 णी ॥ ६ ॥ नृप पुत्री नर रूप, रही पूठे इस्थुं; ते साथें
 इम रोष, तणु कारण किस्थुं ॥ कुमर कहे संतान, हो
 वे जो शोकनां; शोकतणे मनशाल, समा हुए सहेज
 नां ॥ ७ ॥ नारी जणे ए साच, कह्यो ठे जेहवो; जो
 तां तेहनां बिड, समय केतो हवो ॥ आजूनी अधरा
 त, थइ कौतुक कथा; दीठी कहुं तुज आगें, नही ते
 अन्यथा ॥ ८ ॥ नामे लखमी पूंज, गले कनका तणे;
 हार ठव्यो किए आइ, गगनथी चुंप पणे ॥ कुमर
 विचारे हार, ठव्यो तेणे व्यंतरी; निश्चय कोइक
 नेह, कारणथी ऊतरी ॥ ९ ॥ पामी नहिं में शुद्ध,
 किहां हमणा जगें; ते पाम्यो हवे वात, सवे होसे व
 गें ॥ सोमा कहे मुज हार, देखाडी श्रीमुखें; वारीहुं
 ए लाज, किहां कहेती रखे ॥ १० ॥ हार रखण व
 हु मूल, ठुपाडी एकमने; मुजनें साथें लेइ, गइ न
 पति कनें ॥ अक्सर देखी दोष, ऊघाडे अतिघणा;
 विरस पणे एम आल, लवे मलया तणा ॥ ११ ॥ स्वा
 मी सुणो अवदात, कहुं पुत्रीतणा; नयणे दीठा आ
 ज, निपट असुहामणा ॥ पुहवो ठाण नगरनी, नृप
 वखांणियें; सुरपाल तस पुत्र महावज्र जाणियें ॥ १२ ॥

॥ तेहनो किंकर एक, गुप्त मलया घरे; आवे ठे नि
 ल्य रात, निशाचरनी परें ॥ द्वार खण ते साथ, कु
 मरने पाठव्यो; लेखें लिखि संदेश, इस्यो वली सूच
 व्यो ॥ १३ ॥ मलशे नृपनां नंद, अनेक स्वयंवरे; ते
 मित तुंगण वेग, आवे आमंवरें ॥ मुज बुद्धियें राज्य,
 सकल हाथें करी; परणी मुज फलवंत, करे यौवन
 सिरि ॥ १४ ॥ राज्य ग्रहणनी चाहि, कुमारी धूरतें; धू
 तीए तिण वेदु, यया एकण मत्तें ॥ नारी दूए मति
 हीण, कपटनी कोथली; बाढहाने ये ठेह, सरें स्वारं
 थ वली ॥ १५ ॥ अतिविरुड रोशाली, बाणण जिम
 सुंदरी; साहसनी जंमार, अनृतनी ठे दरी ॥ मुखमी
 ठी मन धीठ, धरमणी दामणी; नहुवे केहनी नेट, सं
 तोपी कामणी ॥ १६ ॥ एहने संग विलुद्धा, जेनर
 बापडा; ते पामे दुःख लाख, यया रस लापडा ॥ नहिं
 करुणानो लेश, हीयामां नारीनें; मजतानें सविशेषें,
 मूके मारीनें ॥ १७ ॥ अजरथ ए हो नारि, कह्यो में
 ठे जिस्यो; करतां पूर्व उपाय, पठें नही सोचसो ॥ जो
 मुज वचन विचार, जरोसों नवि करो; मांगो अमृजि
 क द्वार, न देसे तो खरो ॥ १८ ॥ ईम उदनाय्या दाव,
 अनेक मृदा कही, रोषारुण नृपाल, कखो देखें ग्रही

॥ ठही ढाल रसाल, ए बीजा खंमनी; कांतें कही,
मीठास, जरी मधुखंमनी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोष गहिल नरपती तिहां, अमने करी विदाय ॥
चंपकमाला नामिनी, बोलावी विलखाय ॥ ३ ॥ व्य-
तिकर सर्व सुणावियो, राणीने राजान ॥ निजपुत्री
उपर तिका, अई रोष असमान ॥ ३ ॥ मांगो हार
मनोहर, जो नवि देसे बाल ॥ तो व्यतिकर सवलो
खरो, इम कहे चंपक माल ॥ ३ ॥ कन्या तेडी मांगीयो,
हार रयण ततकाल ॥ भ्रमनूली मौनें रही, मनमा-
पेठी जाल ॥ ४ ॥ चित्त विकल्पी कूड इम, उत्तर दीधुं
एण ॥ तात हार मुज कंठशी, अपहरि लीयो केण ॥ ५ ॥
अवगुण इंधण अति सबल, वचन पवन नृप कुंम ॥
रोष अनल कुमरी दहन, वागो जई ब्रह्मंम ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमो ॥ जीणा मारुजीनी करहलडी, करद-
लडी केशररो कूपो मने आलाहो राज ॥ एवेशी ॥

॥ नृप कहे निज पुत्री जणी, फिट पापिणी हति
यारी, मुखडुं कांई देखाडे होराज ॥ अजगी रहे मुज
नयणशी, कुजखंपणी मति हीणी, मुजकां लाज ल-
गाडे होराज ॥ १ ॥ न्हानी पण दोपें जरी, जिम वि-

पहरी दाढा, अलवें लागी मारे होराज ॥ कन्या
 रूपे वैरणी, थड लागी उपरांठी, वैर विरोध वधारे
 होराज ॥ २ ॥ एवहुं तुज किणें सोखवुं, चरित्र
 विषम अति वहुं, सुणतां लागे होराज ॥
 आज थकी जो इम करे, वधती वधती बली शुं कर
 शे जातां आगें होराज ॥ ३ ॥ दोष नहीं माहरे शि
 रें, कोधुं ते तें जेहवुं, तेहवा फलतुं चाखे होराज ॥ प्र
 त्यक्ष विपनी बेलडी, उखेडी हवे नाखी, सारेसुं तुज
 पाखें होराज ॥ ४ ॥ तात वचन कहुआ सुणी, मा
 य रीसाणी जाणी, थाई निज आवासें होराज ॥ बे
 गी थामण दूमणी, करीनें मुख नीचुं, मनमां एम वि
 मासे होराज ॥ ५ ॥ अणगमतुं में तातनुं, विकल प
 णेसुं कीधुं जेहथी, तात रीसाणी होराज ॥ हार रयण
 खोया थकी, एवढो कोप किवारें, राजा मनमां नाणे
 होराज ॥ ६ ॥ स्यो अवगुण नृप माहरो, देखीने फ
 लुपाणो बोल्यो, विरुथां वधणा होराज ॥ इम कुमरी
 चिंता जरी, मुखपंकज करमाणी, वरसे आसुं नयणा
 होराज ॥ ७ ॥ नृप कहे पटराणी प्रत्ये, तुज तनुजानां
 दीठां, चरित्र महाविष तोले होराज ॥ हार रयण तिण
 कुमरनें, इणे दीधो ते निश्चें, मुज मारणने कोलें

ज ॥७॥ बाढही पण वैरणी हूई, जिम विपधरीयें मंकी
आंगुली होय डवाजही होराज ॥ रिपुकुलने जां न
वी मले, ते पहेली ए हणवी, पाप न गणवो काढही
होराज ॥ ८ ॥ दुःख नरी रयणीनें गमी, प्रह कावे
नृप तेडी, सेवकनें इम जासे होराज ॥ मलयाने ह
णजो तुमें, दुकम फरी मत पूढो, रखे किहां किए ए
नासे होराज ॥ ९ ॥ मंत्रि सुबुद्धि सुण्यो सवे, व्यति
कर ए कन्यानो, आवी नृपने नेटे होराज ॥ करजोडी
इम वीनवे, असमंजस ए मांमयो, नृप कहो किए
खेटे होराज ॥ १० ॥ सुं अपराधि कन्यका, नेह गयो
स्यां पहेजो, धरता जे एह साथें होराज ॥ विपतरु
वर पण कापवो, नघटे जेह उठेखो धुरथी, आपणें
हाथें होराज ॥ ११ ॥ देव विचारी कीजीयें, जिम न
होवे पठतावो, पठे फल पाकंतां होराज ॥ सकल वि
चार सुणावीउं, सचिव नणी नृप धुरथी, सचिव न
खो जाखंतां होराज ॥ १२ ॥ मौनधरी मंत्रि रह्यो,
सेवक नृप आदेशें, मलया मंदिर आवे होराज ॥ गद
गद कंठें इम कहे, तुज उपर नृप रूढो, आणा वध
फुरमावे होराज ॥ १३ ॥ दीन वदन कन्या कहे, वीर
नृप किम कोप्यो, ते कहे नजहुं कांई होराज ॥ १४ ॥

या इम बिलपे तिहा, हाहा मुज किण नाख्या, अथ
 पुण चैर चसाई होराज ॥ १५ ॥ मुज मुख निरखी
 हरखती, तेपण थइ अतिवांको, नरपति मुजनै मारे
 होराज ॥ चंपकमाला मावडी, कपरांगी थई वेठी, नृ
 पने ते नवी वारे होराज ॥ १६ ॥ मलयकुमर मुज
 सुंदरू, तेपण आखुं आमा, कान देईने वेठी होराज ॥
 बंधु वरग हुं परिहरी, परिहरियें जिम मीठो पण जे
 जोलन एवो होराज ॥ १७ ॥ पुण्य गयां किहां माह
 रां, प्रगट्यां क्यांथी प्रौढा, पाप पूरव नव केरां हो
 राज ॥ करुं धरणी तुज बीनती, द्ये मारग जिम पेती
 काहुं प्राण आपेरा होराज ॥ १८ ॥ महोल मांहे मलया
 रही, पूर्व कर्मने निंदे, कहेसे बली कांइ आगें होरा
 ज ॥ बीजे खंमे सातमी, ढाल सरस ए नाखी, कांते
 इम अति रागें होराज ॥ १९ ॥ *

॥ दोहा ॥

॥ तेढावे मलया हवे, वेगवतीने वेग ॥ नृप आदेश सु
 णावीने, कहे निज कारज नेग ॥ १ ॥ सखी सिधा
 वो नृप कन्हें, कहेजो इम संदेस ॥ तुम पुत्री इम
 मुज मुखें, दीपो ठे निर्देश ॥ २ ॥ वेगवती घाला थ

की, आवे नृपनै पास ॥ कुमरीनां संदेसडा, इम
जावे तास ॥ ३ ॥

॥ होल आठमी ॥ कोइलो परवत धूंधलो
॥ होलाल ॥ ए. देशी ॥

॥ संदेसो मजया कहे होलाल, सांजल पुरना
॥ नरिंदजी ॥ गुनह करी में रावलो होलाल, य
पाई रीत ॥ न० ॥ १ ॥ सं० ॥ अवगुण खमजो महारा
होलाल, कीया जे में अजाण ॥ न० ॥ मरण सरण
ते सिरें होलाल, दंम कस्यो परमाण ॥ न० ॥ सं० ॥
३ ॥ आहुं प्रभु पद नेटवा होलाल, तुम वचनं महा
जाग ॥ न० ॥ अतिथि दूआ परलोकना होलाल
जहेसुं तेवजी लाग ॥ न० ॥ सं० ॥ ३ ॥ इम न
मेंतो इहां थकी होलाल, ग्रहेजो प्रणति अनेक ॥
न० ॥ प्रणति बजी विहुं मायने होलाल, कहेजो म
ज सुविवेक ॥ न० ॥ सं० ॥ ४ ॥ अंतरय जेमें आव
स्यो होलाल, ते जांस्यो निरसंक ॥ न० ॥ दोर देखा
ही मागतां होलाल, नहुवे कानकजंक ॥ न० ॥ सं०
॥ ५ ॥ नृप विचारे देखजो होलाल, करी बैरीनां कान
॥ सुजोचनी ॥ गुनह पृथवे आपलो होलाल ॥ अ
जाणी कर आम ॥ सुजोचनी ॥ ५ ॥ चरित्र जनी म

तणो होलाल ॥ ए आकणी ॥ कपट मंजूस त्रिया
 कही होलाल, मुख मीठी धूतारि ॥ सु० मधु लिंपी वि
 य गोलिका होलाल, एवी रची किरतार ॥ सु० ॥ च०
 ॥ ७ ॥ प्रणति म होजो एहनी होलाल, नहीं मुख दी
 ठे काम ॥ सु० ॥ मरण सरण बहेली करो होलाल,
 कन्या अचगुण धाम ॥ सु० ॥ च० ॥ ८ ॥ वेगवती व
 लतुं नणो होलाल, नरपतिने कुमणाय ॥ सु० ॥ गो
 ला नदी तट दाहिणो होलाल, अंध कूड कहेवाय ॥
 सु० ॥ च० ॥ ९ ॥ ए ॥ जंप देई कुमरी तिहां होलाल, कर
 से जीवित नास ॥ सु० ॥ इम करी रोती जूरती होला
 ल, आवे मलया पास ॥ सु० ॥ च० ॥ १० ॥ वेगव
 ती मलया नणी होलाल, नारख्यो तेह प्रबंध ॥ सु०
 ॥ तास बचन अनिलंबीनें होलाल, कठे तिहांथी मुंघ
 ॥ सु० ॥ च० ॥ ११ ॥ वज्रकविन हीयहुं करी होला
 ल, साक्षस वस असमान ॥ सु० ॥ पुरयकर्मने निंदती
 होलाल, धरती नवपद ध्यान ॥ सु० ॥ च० ॥ १२ ॥
 धारी मन निर्जय पणे होलाल, विंटी सुनट अनेक ॥
 सु० ॥ पाले पग पंथे बहे होलाल, साक्षी संयजो टे
 क ॥ सु० ॥ च० ॥ १३ ॥ पग पग पंथे आफले हो
 लाल, पडि पडि कठे तेम ॥ सु० ॥ दासी दास ०

[illegible]

कैय ॥ सु० ॥ देता दैव उज्जैनदा होलाज, आया
लोक बलेय ॥ सु० ॥ घ० ॥ २२ ॥ खबर कही जे
सेवकें होलाज, संतुवो नरपाल ॥ सु० ॥ बीजे खंमे
आवमी होलाज, कांतें कही ए ढाल ॥ सु० ॥ च० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नरपति हरख्यो हीये, चित्तमां चिंतें एम ॥
हणतां पुत्री डटनें, थयो वंशनें खेम ॥ १ ॥ आमं व्या
नृप नंद जे, तास जणाबुं वात ॥ मुज तनुजा व्याधें
मूर्ख, मति आवो किण घात ॥ २ ॥ वजी पूबुं कनका
प्रत्ये, मुज उपकारक एह ॥ इम विचारी सचिवेणुं,
नृप पोहोतो तल गेह ॥ ३ ॥ बार जडयां देखी ति
हां, पामे चित्र सरूप ॥ कुंची विवर कमाडनो, तेहमां
निरखे नूप ॥ ४ ॥ गर्ज नवन दीपक करी, लेई हार
ते नार ॥ दीडी नूपें विवरथी, करति इम मनोहार ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ केशर वरणोहो काढ कसुंवो
मारा जाल ॥ ए देशी ॥ अथवा नेमि पयंपेहो

प्रीति संजालो महारा जाल ॥ ए देशी ॥

॥ द्वार ठबिला हो करुणा धरजो ॥ मारा जाल ॥
संकट हरजो हो मंगल करजो ॥ मा० ॥ डुल्लेज जाधो
हो सुरमणि बीजो ॥ मा० ॥ दीवो ताहारो हो सबज

बाळुं हो नृपतुं लोके ॥ मा० ॥ नृपति रोवे हो लां
 बी पोके ॥ मा० ॥ चंपकमाला हो आवी दोडी ॥ मा० ॥
 पीउने पूठे हो वेकर जोडी ॥ मा० ॥ ८ ॥ एह अ
 मारुं हो प्राण निपातन ॥ मा० ॥ छुं मांमपुं ठे हो शो
 ग संतापन ॥ मा० ॥ प्रगट प्रकाशे हो रोतां मंत्री ॥
 मा० ॥ कनकयतीना हो करणीसूत्री ॥ मा० ॥ ९ ॥
 चंपकमाला हो नृप गल वलगी ॥ मा० ॥ दुःख
 पावकनी हो जाला सजगी ॥ मा० ॥ गदगद सादें हो
 रोवा लागी ॥ मा० ॥ करति दुःखनां हो लोक विनागी
 ॥ मा० ॥ १० ॥ सचिव त्रिहुनें हो इम समजावे
 ॥ मा० ॥ मूआं जगमांहिं हो पाठा नावे ॥ मा० ॥ तो
 पण देखो हो कूप एकंती ॥ मा० ॥ जाग्यें जहीयें
 हो जइ जीवन्ती ॥ मा० ॥ ११ ॥ कूआ कंठे हो नृपति
 आब्यो ॥ मा० ॥ जण पेसाडी हो ते शोधाब्यो ॥
 ॥ मा० ॥ मलया नावी हो मीटे क्यांथी ॥ मा० ॥
 आशा त्रुटी हो नृपनी तिहांथी ॥ मा० ॥ १२ ॥ मं
 दिर पोहोतो हो मन दुःख करतो ॥ मा० ॥ कनका
 धामें हो थावे फिरतो ॥ मा० ॥ बार उघाडी हो रा
 णो जांखे ॥ मा० ॥ पापिणी नागी हो अणियें आ
 खें ॥ मा० ॥ १३ ॥ जोवा पगलां हो किहां गइ नागी

॥ मा० ॥ आणो बांधी हो केहें लागी ॥ मा० ॥ राख
 कहाथी हो तस घर लूट्यो ॥ मा० ॥ परिजन तेहना
 हो पकडी कूट्यो ॥ मा० ॥ १४ ॥ वांक विना जे हो
 पुत्री मारी ॥ मा० ॥ अति पठतावो हो ते चित्त
 री ॥ मा० ॥ सूरज उगे हो राणी सार्थे ॥ मा० ॥ न
 पति बलशे हो चयमां हाथे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जिह
 तिहां जमती हो नृप नट पेखी ॥ मा० ॥ कनका व
 हिनी हो करणी देखी ॥ मा० ॥ इम मुज जांवे क
 विहुं विठडीयें ॥ मा० ॥ रहेतां जेजां हो हाथे पडी
 ॥ मा० ॥ १६ ॥ हागदिक सवि हो जे निज संगें ॥ मा० ॥
 सुजने ठोडी हो दांड़ी रंगें ॥ मा० ॥ मगधा वेदया
 मिजती पहेली ॥ मा० ॥ ते घर पेवी हो धमकी व
 ली ॥ मा० ॥ १७ ॥ हुं एकलडी हो रही त्यां न रा
 ॥ मा० ॥ गने कवी हो बनमां चमकी ॥ मा० ॥ इहां
 दोहुं हो नय धूजती ॥ मा० ॥ यान कही में हो जे
 हो हुंती ॥ मा० ॥ १८ ॥ हवे हुं जायुं हो रसनि
 दाणी ॥ मा० ॥ इम कही सोमा हो आगे यज
 ॥ मा० ॥ दाल न बवमी हो बीजे रंगें ॥ मा० ॥ क
 पहेले हो यजन कसने ॥ मा० ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वात सुणी विस्मित हूँ, कहे कुमर गुण गेह ॥
 पहेली इणो जे संग्रह, नर विशोध्यु तेह ॥ १ ॥ हु
 हृदय सुवती तणो, विषम चरित्र चमार ॥ करता
 न जुए कामिनी, अनाचरण संचार ॥ २ ॥ कन्या रयण
 विणासता, मरणोन्मुख नृप कीध ॥ प्रजा अनाथ क
 री बली, पोतें अपजश लीध ॥ ३ ॥ फनकानी दासी
 थकी, सुंदरी तुज विरतंत ॥ लखु सकल में मूलथी,
 अहो चरित्र बलवंत ॥ ४ ॥ अल्पकालमां अतिघणी,
 दीठी तें दुःख राशि ॥ अंधकूप पडतां ग्रही, अजग
 र वदन विकाशि ॥ ५ ॥ निकट किहांकिण कूप ठे,
 तेमांथी ते साप ॥ आफलवा आंचा थडें, इणी थ
 ल आव्यो आप ॥ ६ ॥ वदन विदाखुं बल करी, में
 तेहनुं कलसाज ॥ तेमांथी तुं नीसरी, मिली इहां सु
 ज आज ॥ ७ ॥ एकांतें अजगर पड्यो, देखी बौहिनी
 वाल ॥ कुमर कहे शंका किसी, जो विधि ठे रखवाल
 ॥ ८ ॥ पूरव श्लोक जणो तिहां, विहुं जण धरी बहु
 राग ॥ मुख धोवे गोला जलें, जखां सबल सोनाग
 ॥ ९ ॥ तेहज आंचा फल ग्रही, नक्षत्र करी ससने
 ह ॥ देवी जल मंवरि जणी, वेगें आव्यां बेह ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ हारे कांइ जोवनीयांनो ल

टको दाहाडा चारजो ॥ एदेशी ॥

॥ हारे वारी बिहुं तिहां देखे काठ तणीवे फाडजो,
पहेलां रे जेहमांथी नृप राणी लह्यो रेलो ॥ हारे वारी
री-कुमर ते देखी तेहमां विवर विचाल जो, धूणी
शिर चित्तमां चिंति इम कह्यो रेलो ॥ १ ॥ हारे वारी
तीन कारज हवे करवां माहारे आहिंजो, एकतो
रे नृप बलतो चयमांथी राखवो रेलो ॥ हारे वारी
बीजुं ए तुज परणुं नृपनी चाहिजो, त्रीजुं रे जननी
गले हार ते नाखवो रेलो ॥ २ ॥ हारे वारी लखमी
पुंज अनोपम नावो हार जो, ते हुं रे तुज देखि दा
हाडा पांचमां रेलो ॥ हारे वारी इम पण बांध्यो जन
नी आगे सार जो, सफलो रे करवो ते साची वाचमां
रेलो ॥ ३ ॥ हारे वारी तेमाटे तुं पुरमां फरि नर
पजो, सांजेरे मगधा घरे जाजे हांमछुं रेलो ॥ हारे वारी
री तिहां रहीने कनकानुं निरखीश रूपजो, करतां रे
ठल बल मुत्तावली पामछुं रेलो ॥ ४ ॥ हारे वारी हुं
पण जइ चय बलता नृपने संग जो, वारुं रे नवली
बुद्धि कोइ केनवी रेलो ॥ हारे वारी नामांकित मुज
ये तुज मुझा नंगजो, ग्रहेरो रे एहथी तुज को चोर

उबी रेलो ॥ ५ ॥ हारे वारी मुझ दीधी ते थापि शि
 र थापजो, इम कहारे इहां ठानी फरतां फायदो रे
 लो, हारेवारी आजनी रजनी मगधा घरें थिर थापजो,
 मलजो रे कालें साजे ठे वायदो रेलो ॥ ६ ॥ हारे
 वारी साधी कारज सघलां कालें सांजजो, आवीश रे दे
 बीजल नवनें हुं वली रेलो ॥ हारे वारी कुमर वचन
 चित्तधारी ते पुरमांहिंजो, आवीरे नर बेजें किणही
 न अटकजो रेलो ॥ ७ ॥ हारे वारी आगामी जे कर
 वां काम अशेष जो, ते सविरे निरधारी पुर आव्यो
 धसी रेलो ॥ हारे वारी नृपनंदन नैमित्तिकनो जेइ वें
 शजो, तरुतल्लेरे बांध्यो एक गज देखे रसी रेलो ॥
 ८ ॥ हारेवारी ते गजनुं बहुला जण जेइ ठाणजो,
 दीगरे जाजनमां जलशुं गालता रेलो ॥ हारेवारी कु
 मरें पूठया कहे कारण परमाणजो, गतदिन रे नृप
 सुत इहां आव्या मालता रेलो ॥ ९ ॥ हारे वारी र
 मतमां तेणे सोवन सांकज एकजो, विंटीरे सेजढोयें
 नांखी गजदिशा रेलो ॥ हारेवारी पडती लै गज मुख
 मां घाली ठेक जो, ताणीरे थाक्या तिहां केइ महा
 वत जित्या रेलो ॥ १० ॥ हारेवारी नृप आदेशें गालीजें
 एह ठाणजो, तेहनारे इहां खंन कदाचित् पामीयेंरे

लो ॥ हारेवारी काढी महाबल केश थकी सुविनाय
 जो, मुझारे पूजामां उबी गजने दीये रेलो ॥ ११ ॥ हारे
 वारी चावण लागो गयवर पूजो तेहजो, तेहवरे नृपति
 सुत आगे चालीउ रेलो ॥ हारे वारी गोला कंठे मजिउ
 लोक अठेह जो, करतो रे कोलाहल कुमरें जालिउ रे
 लो ॥ १२ ॥ हारेवारी कुमर विचारे चाव्यो हुं जिण का
 मजो, पुरवरे रे कारज एह तेहनो मेलव्यो रेलो ॥ हारे
 वारी चयमांथी उललते अति वढामजो, दीसरे व
 ण धूमें नजतल जेलव्यो रेलो ॥ १३ ॥ हारे वारी
 जुज उंचा करी दोडे कुमर तिवारजो, कहेतो रे इम
 मधुरवचन गाढे स्वरे रेलो ॥ हारेवारी जीवे ठे तुम
 पुत्री मलय कुमारिजो, खेले रे साहस कां जोला इणी
 परें रेलो ॥ १४ ॥ हारे वारी कर्ण सुधासम सुणीने
 तेहनां वयणजो, साहामारे आव्या जख लोक उजा
 यने रेलो ॥ हारेवारी जीनें जवण उतारुं तुजने स
 यणजो, क्यांठे रे कहो मलया तेह बतायने रेलो
 ॥ १५ ॥ हारेवारी इम सुणी बोले तेह निमित्तनो
 जाणजो, काढोरे नृप राणी चयथी वेगजां रेलो ॥
 हारेवारी तो नाखुं आगमगति हुं इणें ठाणजो, इम
 सुणीरे चयमांथी काढ्यां करी कला रेलो ॥ १६ ॥

॥ हारेवारी कुंअर कहे वसुधाधिप का अकुनायजो,
 किहांएक रे मलया ठे निश्चै जीवती रेलो ॥ हारेवा
 री निमित्ततपो चल जाणुं में महारायजो, मतिबल्लेरे
 कहें तुं हूं तुमने तेयली रेलो ॥ १७ ॥ हारेवारी हवे
 नृप पूठे मलया केरी वातजो, करशे रे अति कौतुक
 महाबल इहा बली रेलो ॥ हारेवारी बीजे खंने ए थ
 इ.वशमी ढाल जो, नाखी रे इम कांति विजय रंगे
 नली रेलो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूप कहे सुण निमिनिया, दुःखियो हूं विण ना
 ॥ देखुं मलया जीवती, एवढो किहां मुज नाग्य
 ॥ १ ॥ काल कूट्ही सम कूपमां, नाखी न मरे केम ॥
 अहो वैवनी चित्रता, न मुइ नाखे एम ॥ २ ॥ शो
 यो पण लाधी नहीं, जिम निर्धन धन कोडि ॥ डट
 कियो जल थलचरै, खाधी होशे मरोडि ॥ ३ ॥ तेह
 नणी मुजनै सुखे, होजो अग्नि सहाय ॥ वचन सुणी
 इम नूपनां, बोख्यो कुमर वनाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ सूवटिथालाइ ॥ ए देशी ॥

॥ नूपतिजी रुढा, सांजल चतुर सुजाण होरेहां ॥
 वात न नाखुं कूथडी ॥ नूप ॥ आजदिवस सुख

ए हारेहां ॥ बारश तिथि अइ रूअडी ॥ जू० ॥ १ ॥
 आजयी त्रीजे दिवमें हारेहां, दोय पोहोर वासर च
 ठे ॥ जू० ॥ वेठा सहु अवनीश हारेहां, मंमप आ
 मंवर मटे ॥ जू० ॥ २ ॥ शोनित तनु शणगार हारे
 हां, कुमरी दरिअण आपगे ॥ जू० ॥ देखीस सहसा
 कार हारेहां, अचरज सहुने आपगे ॥ जू० ॥ ३ ॥
 रचि स्वयंवर छुन एह हारेहां, आवत नृप मत बारजे
 ॥ जू० ॥ जो ने तुज संदेह हारेहां, तो अहिनाणी ए
 धारजे ॥ जू० ॥ ४ ॥ मजया मुझियण हारेहां, का
 लें तुम कग आवगे ॥ जू० ॥ तो माचां मुज वयण
 हारेहां, वेद वाणी गुण पावगे ॥ जू० ॥ ५ ॥ चौद
 शने परजात हारेहां, पूरवदिशि पुग वाहिमें ॥ जू० ॥
 नृपनां बज मन खांत हारेहां, परगवारण तुज कुजसुरी
 ॥ जू० ॥ ६ ॥ पट करणो एक येन हारेहां, रात मनीप
 आपगे ॥ जू० ॥ जहेना जोर अचन हारेहां, देख
 त रंग नआपगे ॥ जू० ॥ ७ ॥ ते जेउ तेपि हारे
 हां, यिरयापि मंमप तजें ॥ जू० ॥ जेदग वाता ते
 हारेहां, (धनुष बजनाग हारेहां, वाप महित
 जा नजें ॥ जू० ॥ ८ ॥ आपि आना उह हारेहां,
 जे नर तेह चडाजें ॥ जू० ॥ जेदगे आनां तेह

रेहां, होशे वर तुज जाईने ॥ नू० ॥ ९ ॥ अनोपम
 ठे अतिनाति होरेहां, पूजाविधि ते थंननी ॥ नू० ॥
 नांख्या ए अवदात होरेहां, निमित्त कलायें अनुम
 नी ॥ नू० ॥ १० ॥ मजसे ए अहिनाण होरेहां, नि
 मित्त वलें नांख्या अठे ॥ नू० ॥ न मजे जो निरवा
 ण होरेहां, मन मान्युं करजे पठें ॥ पं० ॥ पं० ॥ पं० ॥
 ११ ॥ लोक कहे शिरनाम होरेहां, अम जाग्यें तुं
 आवियो ॥ पं० ॥ १२ ॥ ज्ञानी तुं जस पाम होरेहां, उप
 कार धुर ठावियो ॥ पं० ॥ १३ ॥ ताहारा ए उपका
 र होरेहां, वीतरशे नहीं जीवते ॥ पं० ॥ आप्यो ए
 अधिकार होरेहां, जगदीसैं तुज गुण ठते ॥ पं० ॥
 १४ ॥ आजे हरख निधान होरेहां, कंचन मणि नू
 पण बहु ॥ पं० ॥ ते कहे जो द्युं दान होरेहां, तो
 उपकार कित्यो कहूं ॥ पं० ॥ १५ ॥ करजे तुंहिज ते
 हं होरेहां, थंन तणो पूजा वडी ॥ पं० ॥ नृप वचन
 ठेहडे एह होरेहां, बांधे शुक्रननी गांठडी ॥ पं० ॥
 १६ ॥ नृप कहे कन्या कंत होरेहां, किण नामें होसे
 कहो ॥ पं० ॥ आगम निगम अनंत होरेहां, प्रगट
 पणो शास्त्रें जहो ॥ पं० ॥ १७ ॥ पोहवीपुर सूरपाल
 होरेहां, महावल नंदन परवडो ॥ पं० ॥ वरशे ते त

ज बाल होरेहां, कुमर कहे एम परगडो ॥ पं० ॥ १७
 ॥ दिवस थयो मध्यान्ह होरेहां, नृप आवे नगरी न
 एणी ॥ पं० ॥ कुमर घणुं सनमान होरेहां, साथें ले
 पुरनो धणी ॥ पं० ॥ १८ ॥ सामंवर महाराय होरे
 हां, आयो मंदिर ऊजमें ॥ पं० ॥ कुमर नृपति ति
 एताय होरेहां, साथें वली नोजन जमे ॥ पं० ॥ १९ ॥
 बीती करतां वात होरेहां, अरध दिवसने ते निशा
 ॥ पं० ॥ गह मह दुइ परजात होरेहां, रवि ऊगे
 पूरवदिशा ॥ ज० ॥ २० ॥ बीजे खंमे एह होरेहां,
 पूरण ढाल इग्यारमी ॥ नू० ॥ कांति कहे ससनेह
 होरेहां, सुणतां श्रोताने गमी ॥ नू० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पहेला नृप मूक्या जिके, गालण गजनुं ठाण ॥
 तेह प्रजातें आविया ॥ सेवक जिहां महिराण ॥ १ ॥
 करजोडो कौतिक नखा, बोल्या तिहां एम वयण ॥
 लाधुं गजमल गालतां, ए प्रछु मुडा रयण ॥ २ ॥ नृ
 प लीधी ते मुडिका, रजस पणें ससलूंण ॥ वांचत
 नाम सुता तणुं, इम बोळ्यो शिर धूंण ॥ ३ ॥ अहो
 अचंनो मुडिका, किम आवी गज पेट ॥ वली निमि
 त्त ए कारणी, मजतो दीसे नेट ॥ ४ ॥ तव बोळ्यो झा

नी ईसुं, निमित्त विकल नवि हुंत ॥ कुलदेवी कार
 ण इहां, संनविये खितिकंत ॥ ५ ॥ हरख्यो नृप वि
 शेषथी, करे स्वयंवर काज ॥ लोक कहे कुमरी विना,
 स्यो माने नृप साज ॥ ६ ॥ कथन थकी किम रा
 चिये, होये जूठके साच ॥ पेटें पड्यां पतीजीये, ईम
 बोले केई वाच ॥ ७ ॥ कन्या विण लघुता घणी,
 लहेसे नृप नृप माहिं, मझ्या नृप विलखा थई, धुक
 ल करसे प्राहिं ॥ ८ ॥ सांज समय तेरस दिनें, था
 व्या नृपना नंद ॥ आप्यां मंदिर जूजूथां, त्यां उत
 खा नरिंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल वारमी ॥ रहो-रहो रहो-वालहा ॥ ए-देशी ॥

॥ ज्ञानी कहे इम रायने, जो आपो थम सीख लाल
 रे ॥ मंत्र अर्द्ध में साधित, ते साधुं मन ईव लाल रे
 ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांजो ॥ ए-आंकणी ॥ जो
 नवि साधुं ए समे, तो बलतुं न सधाय लाल रे ॥ कोई
 विघन गुन काममां, अण जाण्या वहराय लाल रे
 ॥ सु० ॥ २ ॥ आजूनी एक रातिनो, आपो जो अव
 काश लाल रे ॥ साधी मंत्र प्रजातमां, आवीश हुं तुम
 पास लाल रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ शीख देई नृप इम कहे,
 मंत्र साधनने काज लाल रे ॥ जोईये ते आपुं

जेतां न करशो लाज लाल रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ धन
 केतुं तिहां, कुमर गयो वन मांहिं लाल रे ॥
 गमाढी दोहिलें, राजायें चित्त चाहिं लाल रे ॥
 ॥ ५ ॥ प्रह्कालें पग नूपनां, जेटे नाणी आय
 रे ॥ नृप कहे तुज मंत्रनी, सिद्धि थई निरपाय
 रें ॥ सु० ॥ ६ ॥ कुमर कहे कांईक थई, कांईकरही ते गो
 लाल रे ॥ अर्चन थंनतणुं करी, जाईश बली ते
 देश लाल रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ खबर करावा थंननी,
 हेलो मूक्यो जेह लाल रे ॥ सेवक ते तिहां थानि
 बोळ्यो धरी इम नेह लाल रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ तुम
 आदेशें हुं गयो, पुरवाहिर परजात लाल रे ॥ पोहाज
 तणी मावी दिशें, दीगो थंन सुजात लाल रे ॥ सु० ॥
 ॥ ९ ॥ इम सुणी राजा कवीउं, ते नर साथें ले
 लाल रे ॥ थंन समीपें थावीउं, निरखें दृष्टि नो
 लाल रे ॥ सु० ॥ १० ॥ लोक सहित पुर राजिया
 आवे पूजण थंन लाल रे, तेहवे तेह निमित्ति
 बोळ्यो इम धरी दंन लाल रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ थ
 शे जे ए थंनने, समज्या विण नर कोई लाल रे
 तो कुलदेवी कोपशे, करशे अनरथ सोई लाल रे
 सु० ॥ १२ ॥ राय प्रमुख पाठा खिले, मनमां

हीता अनेह लाल रे ॥ नृप नरो पूजो तुमैं, पूज प्र
 नृति लेइ एह लाल रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ विधि पूर्वक
 नाणी तिहां, पूजी बेगो ध्यान लाल रे ॥ छीपद मुख
 थी ठञ्जरी, मेले माया तान लाल रे ॥ सु० ॥ १४ ॥
 दोढ पहोर वासर चढे, सेवक नृप आदेश लाल रे ॥
 थंन ठपाडी पुर नणी, पावन थई सविशेष लाल रे ॥
 सु० ॥ १५ ॥ मंमपमा आमंवरें, आप्यो आणी का
 र लाल रे ॥ पटकरणी पञ्जर शिला, कुमरें करावी
 त्पार लाल रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ उजी खोसे मंमपें,
 धरती मांहे वे हाथ लाल रे ॥ थंन निपुण निज सं
 चथी, लेइ बांध्यो ते साथ लाल रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ वे
 कर मुख उंचे रहे, शिला थकी ते थंन लाल रे ॥ वा
 ण धनुष तेहथी ठवे, पठिमनें थारंन लाल रे ॥ सु०
 ॥ १८ ॥ सिंहासन नृपनीं ठव्यां, दक्षिण उत्तर नाग
 लाल रे ॥ गंधर्वे मांमयो तिहां, गावा मधुरो राग
 लाल रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ थंन धनुष पूजावीने, नृप
 पासें ततकाल लाल रे ॥ कुमर कहे नृपति प्रतें, ते
 डाव्या नरपाल लाल रे ॥ सु० ॥ २० ॥ नाणी नृपनी
 जीडमां, देखी अचसर खास लाल रे ॥ जई वेगो गांध
 र्वमां, पलटी वेश प्रकाश लाल रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ वेठा न

सिंहासने, देव जिस्या सोहंत लाल रे ॥
 परिवारगुं, रूपे जग मोहंत लाल रे ॥ सु० ॥ १२ ॥
 थईए बारमी, बीजे खंमें उदार लाल रे ॥ कांति कहे
 इहां परणसे, महाबल मलया नार लाल रे ॥ सु० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूप न देखे कुमरने, तव बोल्यो अकुजाय ॥ १ ॥
 जोवो नाणी किहां, गयो बखर व्यो जाय ॥ २ ॥ क
 हे सेवक जोई तिहां, आव्यो नहीं अम मीट ॥
 करथी बूटो किहां गयो, जिम फल पाके बींट ॥ ३ ॥
 नूप जणे पहेजा इणो, साधयो मंत्र सुसाज ॥ साधन
 थई रह्यो हतो, गयो हरो तस काज ॥ ४ ॥ वचन त
 वे तेहनां मल्यां, पण न खल्यो एक बोल ॥ कन्या वर
 महाबल कह्यो, एतो वचन टकोल ॥ ५ ॥ अवसर
 इहां आव्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन
 निःफल होसे, है है सरजण द्वार ॥ ६ ॥ कुअर सुणी
 तिहां वखसुं, ढांकी वदन हसंत ॥ सर्व जणासे नेहदे,
 इम मनमाहें कहंत ॥ ७ ॥ वात लही कन्या तणी
 नूपें सकल यथार्थ ॥ मांहो मांहिं ते कहे, आव्यो तुं
 गे अर्थ ॥ ८ ॥ मलया बाजा बापडी, मारी विण अप
 राध ॥ हवे नृपनें किम बालगो, उत्तर देई अबाध ॥ ९ ॥

एहवामा नृप कहेणथी, उंवे स्वर संजलाई ॥ निपुण
नकीब कहे ईस्पुं, राजसनामां आई ॥ ए ॥

ढाल तेरमी ॥ चित्रोटा राजा रे ॥ ए-वैशी ॥

॥ सुणो नृप हवाला रे, नरपति ठोगाला रे, थाउ
उजमाला विकथा ठोढीने रे ॥ मंमपतलें आवो रे,
निजशक्ति जगावो रे, वज्र सार चढावो दावो जो
ढीने रे ॥ १ ॥ शर पुंखी जोरें रे, थांजा मुख कोरें
रे, करे घात कवोरें घे दल जुजूथा रे ॥ ते नृप महा
बलने रे, प्रगटी ठलकलिने रे, वरसे अटकलीने अम
नृपनी धूआ रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, वठयो
संपराणो रे, आवे हर्ष जराणो मंमपनें तलें रे ॥
इंइ धनुषयी जारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां
इम धारी ते पाठो बले रे ॥ ३ ॥ चौड नृपति नामें
रे, कठयो तिहां हामें रे, आव्यो मंमप ठामें घईने
सांसतो रे ॥ निरखी बिलकारा रे, जिम तपत अं
गारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे
॥ ४ ॥ गौडाधिप हसतो रे, आव्यो धसमसतो रे,
ते तो दरिउं खिसतो धनुष उपाडतो रे ॥ हूंतो
ए रसिउं रे, पण देवें मुशिउं रे, इम नृपगण
हसियो ताली पाडतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक २५

रे, आयो गजगामी रे, राखे नहीं स्वामी बज
 अडे रे ॥ शर नाखी वंको रे, थयो ते साशंको
 जिम दुये सुकुल कलंकोरे तिम जांखी पडे रे ॥ ५ ॥
 केता नवी ऊठे रे, केई वेठा पूठे रे, केई शरनी
 जेदे थंजन रे ॥ पण थंजन जेद्यो रे, नृप टोली
 द्यो रे, निज दर्प उठेद्यो बल थारंजीने रे ॥ ६ ॥
 मरडक मूठाला रे, लाज्या नूपाला रे, करता टक
 ला निदे आप आपने रे ॥ माटी पण मूक्या
 जुजनुं बल चूक्या रे, साहामा बली ठूक्या कोई
 चापने रे ॥ ७ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी सवि
 लामे रे, प्रगटी नहीं पासं जनमां लाजनुं रे ॥ मर
 बल ते तेह्वे रे, थंन पासं एह्वे रे, आब्यो धसि
 ह्वे वीणा साजनुं रे ॥ ८ ॥ तिहां वीण बजावी रे,
 आकाज गजावी रे, मूक्या रीजावी जण तंती रमे
 बली धनुष उपाडी रे, बोव्यो अति त्राडी रे, परणी
 दुं लाडी मुज बजने वगे रे ॥ ९ ॥ गांधर्व ए धीरो रे,
 एह्वे विधि नरो रे, नहीं ने इन्हा मीरो खावो नीलनो
 रे ॥ ईम कही नृप नृतता रे, मन्थजनुं सुतता रे,
 देवो कर वसता कहूं मग शीलनो रे ॥ १० ॥ ता
 यनुर ते नीयो रे, टंकाय वीयो रे, जाणे मद पीयो रे

प. गण जोटव्यो रे ॥ शर चाढी खंचे रे, नाखे परपंचे
 रे, खीजीने संचे थांनो जोटव्यो रे ॥ १२ ॥ संपुट उ
 धडिउ रे, माथे जे जडिउ रे, अलगो जई पडिउ बाणे
 आहण्यो रे ॥ तेहमांथी सारी रे, नरराय कुमारी रे,
 प्रगटी मनोहारी वेश जजो बन्यो रे ॥ १३ ॥ श्रीखं
 म कपूरें रे, कस्तूरी पूरें रे, अंबरने चूरें लेपी देहडी
 रे ॥ दिव्यालंकारें रे, अति शोना धारें रे, श्रीपुंजने
 हारें ठवी बमणी चढी रे ॥ १४ ॥ बीडी कर मावे
 रे, जिमणे कर ठावे रे, वरमाल सुहावे हावें ते नरी रे ॥
 दीपे द्युति नारी रे, जिम रतिपति नारी रे, जाणे ना
 गकुमारी थंनमां कतरी रे ॥ १५ ॥ पेठी किम काठें
 रे, क्यारें किणे ठाठें रे, पूठे इति पाठें नृप कन्या प्रत्ये
 रे ॥ जीवी जस शक्ते रे, कन्या कहे विगतें रे, जाणे ते
 जुगतें कुजदेवी मते रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में चूपें रे,
 नाखी ते कूपें रे, राखी इणे रूपें अम कुजदेवीयें रे ॥
 वरशोमां चूमो रे, एहने वर रूढो रे, आलोचीने उंमो
 चित्त देवी तियें रे ॥ १७ ॥ नृपतिना वारु रे, बज परखण
 सारु रे, रचियो ए वारु थंनो कावनो रे ॥ कनकाथी
 लीयो रे, श्रीहार प्रसिद्धो रे, तुजने तेणे दीयो सुंदर
 ठावनो रे ॥ १८ ॥ चर्चित अति रूढे रे, मणि

न चूडे रे, उपी बाजूडे कोमल बाहडी रे ॥ कुजरेवी
 सुधारी रे, वरमाला धारी रे, थंन मांदि उतारी तुं
 अमने जडी रे ॥ १९ ॥ दुःखडुं मुज नातुं रे, कारख
 ययुं कातुं रे, पण लागे एं मातुं जे महाबल नहीं रे ॥
 जेणें थंन उघाडयो रे, नृप गर्व लताडयो रे, गंधर्व दे
 खाडयो ते नाग्यें वही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिया
 रें रे, नूपति दुःख नारें रे, महाबल तेणि वारें मुख
 टांकी हसे रे ॥ थांजाथी निकसी रे, कुंमरी कहे विक
 सी रे, नाख्यो थंन उकसी ते नर क्यां वसे रे ॥ २१ ॥
 देखाडे प्रकाशें रे, धाई मात उह्लासें रे, ऊनो थंन
 पासें श्लोक ते गोठवे रे ॥ नूपतिनी बाला रे, सुंदर
 वरमाला रे, महाबलनें विशाला कंठें लोठवे रे ॥ २२ ॥
 महाबल वर वरीठ रे, नाग्यें अति नरीठ रे, रतिपति
 अवतरीठ रूप समाजयुं रे ॥ बीजे खंमैं दाखी रे, ठान
 तेरमी नांखी रे, लेजो रस चाखी कांतिकहे ईशुं रे ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूपति कोपें धडहड्या, बोले विषम वचन
 जूठ परीक्षा एहनी, वरीठ पुरुष रतन ॥ १ ॥ नृ
 मणि ठांमी आदख्यो, मूर्खपणो ए काच ॥ देव
 सी पात्री हुवे, ए उखाणो साच ॥ २ ॥ सहेयुं कि

जलपुर परे, प्रगट पगानव पाल ॥ हणी एह गंघर्वने,
 जेष्ट बाज कलाल ॥ ३ ॥ इम कही ते दुई एकठा,
 हणवा इठया रुठ ॥ धवल कटक गंघर्वने, ततकृण
 बाटे कठ ॥ ४ ॥ वज्र सार ते कर ग्रही, वेण करण
 रोपाल ॥ करे प्रगट शर वर्षणें, पौरुष वर्षाकाल ॥ ५ ॥
 अण सहेता प्रति घात तस, नावा तेह वराक ॥ जे
 म दंभायें धीहता, जाये दिशोदिश काग ॥ ६ ॥ नट
 पुत्र परिचित तिहां, कजो एक नजीक ॥ महबलनें
 जाणी ईत्ती, नणी स्वस्ति निर्जीक ॥ ७ ॥

॥ डाल-चौदमी ॥ बांवा किसनपुरी ॥ ए-देशी ॥
 ॥ शूर नृपति कुज नासण चंद, पदमावती दे
 बीना नंद ॥ मोहन स्वस्ति ग्रहो ॥ आया इहां केम
 कहोजी कहो ॥ घणा दिवसनी हुती चाह, सफल
 दुई दीठा नरनाह ॥ मो० ॥ आ० ॥ १ ॥ वायनी
 मारी कोयल जेम, संजवे तुम आगम इहां एम ॥
 मो० ॥ अलगा नकखा मीटथी लेश, धीखा किम न
 रपति परदेश ॥ मो० ॥ आ० ॥ २ ॥ परिकर साथें नहीं
 वे कोय, इम क्यों आया एकाकी होय ॥ मो० ॥
 कारज को सोंपो महाराज, मुज लायक करीयें जेम
 आज ॥ मो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ इम सुणी त्यां रीज्यो नृ

चित्त, पूठे कवण साचुं कहो मित्त ॥ मो० ॥ ते कहे
 इहां नही ठे संदेह, माहाबल नामें कुमर होय एव
 ॥ मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वाव्यो जेहने हाथां हेठ, उंन
 खीयें नही किम ते नेठ ॥ मो० ॥ नृप कहे साचुं नि
 मित्तनुं वयण, आज हूँ मिल ते नररयण ॥ मो० ॥
 आ० ॥ ५ ॥ आव्यो हरी एह गयणने माग, के वली
 धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कजायी करतो
 केलि, अम जाग्यें पायो गजगेल ॥ मो० ॥ आ० ॥ ६ ॥
 पूठीश पाठें सवली वात, पहेलां नृपनी टाखुं वात ॥
 मो० ॥ एम विमासी नृप आंश्वास, समजावी वा
 व्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या वर
 कन्या वेह, नोजन सूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जोव
 राव्या ते नाणी राय, पण नवि लाधो किणहीं वा
 य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते नरजोन
 पवन परें न जहे किहां ओज ॥ मो० ॥ चंयकमाज
 साधें नृप, जुंजे नोजन सरस अन्नूप ॥ मो० ॥ आ० ॥ ९ ॥
 लगननो दादाडो लीधो समीप, करे सजाई अति अ
 वनीर ॥ मो० ॥ समराव्या जल वांट्यां तेर, रुपगरी
 नगरी चोदरे ॥ मो० ॥ आ० ॥ १० ॥ समीयाणा न
 एव वली आसरे, जाणे उनाव्या सुर आवान ॥ मो० ॥

रुष्णागरुना धूम धूखंत, आकाशे घण थइ वरखंत ॥
 मो० ॥ अ० ॥ १२॥ तोरण माला जाक जमाल, घर
 घर वत्प्या धवल धमाल ॥ मो० ॥ बीजे खमे चौदमी
 ढाल, कांति कहे सुखो वचन रसाल ॥ मो० ॥ अ० ॥ १३॥
 ॥ दोहा ॥

॥ राज नवनमां रसचरै, प्रगटवा रंग अपार ॥
 अजिनव शोभायें कखो, लीलायें संचार ॥ १ ॥ करे
 विलेपन कुंकुमें, साजन मांहोमांहि ॥ देह धरी बाहिर
 रह्यो, जाणे राग उछांहि ॥ २ ॥ कुलदेवी पूजी विधे,
 वज्रढाव्यां नीशाण ॥ अशन वसन तांबूलनां, लहे
 गुरु जन सनमान ॥ ३ ॥ नृत्य करे वारांगना, विधि
 विधि अंग उवट ॥ सोहे मीन कुटुंबनी, लेती जेम
 पलट ॥ ४ ॥ बांध्या जलके चंडुथ्या, जरतारी जर
 बाफ ॥ जेम थकालें पुगतिनी, संध्या फूली साफ ॥ ५ ॥
 शणगारें सारी सबल, सधवा सुंदर तेह ॥ कोकिल
 कंठे कासिनी, धवल दिये धरी नेह ॥ ६ ॥ मले जम
 लणुं जानीया, खमकंठे केकाण ॥ सोधे चीना सा
 मठा, गाहिड नखा जुवाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ करहो तिहां कोटवाल ॥ एदेशी ॥
 ॥ महावल मलया वाल, चंदन चर्चित सोह्या नू

पणोजी ॥ सुरतरु मोहन वेली, सरिखां दीसे बिहुनि
 दूषणोजी ॥ १ ॥ वाजे नूंगल जेरि, ताल कंसाज न
 फेरी नादशुंजी ॥ शणगाखा गजराज, आगल चाबे
 अति उनमादशुंजी ॥ २ ॥ चामर ठत्र ठलंत, फरद
 रते केसरिये वाघे सज्योजी ॥ निरुपम थाप्यो मोह,
 श्रीफल करमां सुंदर राजतोजी ॥ ३ ॥ कुंकुम तिल
 क बनाय, तंडुल जालें चोढया उजलाजी ॥ परवरिया
 मसाण, तोरण आव्यो वर वधती कलाजी ॥ ४ ॥
 मोती आल वधाव, पधराव्या वर कन्या चोरीयेंजी ॥
 नट्ट नणे जयमाल, सोहजा गाया सरलें गोरीयें
 जी ॥ ५ ॥ ब्राह्मण नणते वेद, पंचामृतना होम ति
 हां कीयाजी ॥ चारे चोरी अंग, दीपे जिम पुरुषारथ
 वींटीयाजी ॥ ६ ॥ बिहुंना ठेहडा बांध, चारे फेरे म
 गल वरतीयांजी ॥ प्रीति जिस्या सुसवाद, सार कता
 र तिहां आरोगायांजी ॥ ७ ॥ विधिपूर्वक कमनीय
 पाणी ग्रहण महोत्सव तिहां कियोजी ॥ नृप स
 णी आशीष, वचन इस्यो अति हेजें उच्चखोजी ॥ ८ ॥
 चंडिका चंड समान, अविचल होजो तुमची जो
 लीजी ॥ हयगयरथ धन कोडी, करमोचन वेलायें
 नलीजी ॥ ९ ॥ वरकन्या मन रंग, मोहलामांहे तिह

पधरावियांजी ॥ संतोष्यो परिवार, मान महोत वै सहु
 राजी किरांजी ॥ १० ॥ लोक कहे लख कोटि, मलती
 जोडी विधाता मेलवीजी ॥ मुझ नंग समान, रतिपतिना
 यकनी जोडी हवीजी ॥ ११ ॥ अक्सर लही अक्वनी
 श, पूरे त्यां माहावलने खांतगुंजी ॥ एकाकी ईणे वा
 म, लगन समय आध्या किए जांतगुंजी ॥ १२ ॥
 हुमर नणे महाराय, जाणुं नहिं किए देवी आणी
 वंजी ॥ नृप कहे सघलुं साच, कुलदेवी निपजावे जा
 णीवंजी ॥ १३ ॥ वली माहावल कहे एम, शीख क
 रो तो चालुं घर नणीजी ॥ मुज विरहें मा तात, कर
 तां होशे चिंता मन घणीजी ॥ १४ ॥ बार पहोरमां
 जाई, न मलुं तो ते मरगे नेह्यीजी ॥ करि करुणा क
 रुणाल, शीख दीयो हवे मुजने तेह्यीजी ॥ १५ ॥
 पडवेने दिन सूर, कग्या पहेली जो जाई मलुंजी ॥
 जीवता मा बाप, तो देखुं हवे कहुं वली केटलुंजी
 ॥ १६ ॥ राय कहे सुण धीर, धैर्य धरो मत थाउ आ
 कलाजी ॥ सघलानी मुज चिंत, करची में जाणो सु
 ण आगलाजी ॥ १७ ॥ वाशठ योजन दूर, पोहवी
 गण नगर इहांथी थठेजी ॥ आज रयणी एक याम,
 पडखोजी वोजावीश हुं पठेजी ॥ १८ ॥ करहजि

करी साज, करवतियां धर काटण कोरडीजी
 श ततकाल, असवारी मनधारी ए ठडीजी ॥
 कोण्या जे नरपाल, सतकारी वोलावुं तेहनेजी ॥
 लगे धीर धराय, रहो रहो इमहिज करतां ए
 ॥२०॥ इम कही कथो नूप, बीजे खंमे सरस
 मणीजी ॥ ए पन्नरमी ढाल, कांतिविजय
 पणे नणीजी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमार कहे कन्या प्रत्ये, रहस्य पणे तजी
 ॥ करी प्रतिज्ञा तुज सुखें, ते में पूरी आज ॥
 त दिवमें देवी गृहे, मिढ्यारनसमां जेह ॥
 तक्या निज निज कथा, हवे कहीजें तेह ॥
 एहवे वेगवती तिहां, मजयानी घामाड ॥
 कर जोडी बिन्दे, पूरे एम दसाड ॥ ३ ॥ क.
 देवी तयां, अथवा अवर उपाय ॥ अम मन
 आकृष्टे, कदां सुनग समजाय ॥ ४ ॥ कहे
 ए माहरे, बीजवातणी ने स्वामी ॥ सुखें कदां
 तजी एह सुन नामनि ठाम ॥ ५ ॥ गजमुख
 मुद्रा, तेह प्रमुख मुचरित्र ॥ नांखीने दिन
 नुं, संयानुं कहे चित्र ॥ ६ ॥

॥ बाल सांजनी ॥ सखीरी आयो जन्हालो
अठारहो ॥ ए देवी ॥

॥ पिथारी सांज समय बीजे दीने, बीजे दीने, नृ
पथी मांजी प्रपंच ॥ मृगाक्षी सांजनी ॥ पिथारी मंत्र
साधन मिश नीकल्यो, नीकल्यो जूप कर्ने लेई लंच ॥
मृ० ॥ १ ॥ पि० ॥ ते डव्यें सूतारना ॥ मृ० ॥ उपक
रण लेई मूल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ रंग अनेक लीया वली ॥
ली० ॥ मृगमद प्रमुख अतूल ॥ मृ० ॥ २ ॥ पि० ॥
सामग्री इम संग्रही ॥ सं० ॥ आव्यो देवी धाम ॥ मृ० ॥
पि० ॥ विवर सहित ते फालिका ॥ फा० ॥ कीथी घडी
अनिराम ॥ मृ० ॥ ३ ॥ पि० ॥ खीजी ठानी तेहमां,
ते० ॥ वेतारी करी संच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ सालं संचें
मुखं ढांकणो ॥ मु० ॥ नीपायो परपंच ॥ मृ० ॥ ४ ॥
पि० ॥ एहवे त्यां केइ तस्करा ॥ के० ॥ मूकी नीत
मंचूप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तस्कर एक ठवी गया ॥ ठ० ॥
ते पुरं चोरी हुंश ॥ मृ० ॥ ५ ॥ पि० ॥ पूर्व सामग्री
गोपवी ॥ गो० ॥ हुं ययो चोर समान ॥ मृ० ॥ पि० ॥
जाणी एकाकी ते कर्ने ॥ ते० ॥ ठजो रह्यो करी शान
॥ मृ० ॥ ६ ॥ पि० ॥ मुजने निरखी इम कहे ॥ इ० ॥
ते अति लोचने व्याप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तालुं नांजी

नवि शकुं ॥ न० ॥ तुं मुज खोली आप ॥ मृ० ॥ ७
 पि० ॥ तुरत उघाडी में दीयो ॥ में० ॥ लीथो तिणे
 वि माल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ताणी बांधे पोटली ॥ पो
 डव्यतणी लोनाल ॥ मृ० ॥ ८ ॥ पि० ॥ बीहीतो
 जने इम कहे ॥ इ० ॥ शूकी सतनी मूंठ ॥ मृ० ॥ पि
 जाउंतो हवे चोर ते ॥ चो० ॥ के नृप जन करे पूंठ ॥
 मृ० ॥ ९ ॥ पि० ॥ मारे मुजने मूलथी ॥ मृ० ॥
 तेहथी चित्त ॥ मृ० ॥ पि० ॥ आनक मुज जीव्या त
 णुं ॥ जी० ॥ देखाडो कोई मित्त ॥ मृ० ॥ १० ॥ पि० ॥
 पद्मशिला ते नवननी ॥ ते० ॥ में उघाडी खांच ॥
 मृ० ॥ पि० ॥ माल सहित ते चोरने ॥ ते० ॥ घाव्यो
 उंचे खांच ॥ मृ० ॥ ११ ॥ पि० ॥ तिमहीज ऊपर
 ते उवी ॥ ते० ॥ विवर अंतर राख ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ऊ
 तरतां अंगण तले ॥ अं० ॥ दीगो वडतरु जांख ॥ मृ०
 ॥ १२ ॥ पि० ॥ दोडी वड ऊपर चढ्यो ॥ ऊ० ॥ रहुं
 जोतो तुज वाट ॥ मृ० ॥ पि० ॥ दीगो वडनी कूखमा
 ॥ कू० ॥ नूपण वसननो याट ॥ मृ० ॥ १३ ॥ पि० ॥ अपह
 रि लीधा देवीये ॥ दे० ॥ पहेलो मुज समुदाय ॥ मृ० ॥
 ॥ पि० ॥ ते तिण ठानां गोपव्यां ॥ गो० ॥ दीसे ठे ए प्राय
 ॥ मृ० ॥ १४ ॥ पि० ॥ में लीथो ते उंजखी ॥ उं० ॥

निरखुं बेगो गुल्ल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ कयट नाटं आ
 वती ॥ आ० ॥ नजरें पड़ी तुं मुल्ल ॥ मृ० ॥ १५ ॥
 पि० ॥ बढतरुथी हुं कतरघो ॥ हुं० ॥ साहामो आ
 व्यो दोड ॥ मृ० ॥ पियारि घेहुं मयां ए माहरी ॥ मा० ॥
 बात कही नज ठोड ॥ मृ० ॥ १६ ॥ पि० ॥ बीजे
 खमें शोलमी ॥ शो० ॥ ए थई निरुपम ढाल ॥
 मृ० ॥ पि० ॥ कांति कहे मलया हवे ॥ म० ॥ कहेरो
 बात रसाल ॥ मृ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर नणे में जुगतिशुं, नाख्यो मुज विरतंत ॥
 तुं पण कहे ताहरो हवे, मूलथकी जिम हुंत ॥ १ ॥
 ते कहे तुम शिद्धा ग्रही, पेवि हुं पुरमांहिं ॥ पुरुष वे
 प मगधासदन, पुंहुं पग पग ठांहिं ॥ २ ॥ घर न
 मली पुरमां नमी, किहांई न दीठी स्वाम ॥ बेठी देव
 ल एकमां, दीठी मगधा नाम ॥ ३ ॥ नाखी बांके
 फांकडे, धूरत एके धूत ॥ जावा लाग लहे नहीं, रो
 की सबल कुसूत ॥ ४ ॥ कारण में पूट्या थकी, बो
 ली करती रींग ॥ अहो सुगुण मुज पाठले, बलगो
 ठे एक विंग ॥ ५ ॥ धूरत एह पूठें पडघो, लंघावे ठे
 मुल्ल ॥ दूण दूण थई विरुज नडे, गूमड जेम अरु

ॐ ॥ ६ ॥ निःकारण मुंजनें इणो, जोडी संकट मांदि
 वात कहुं ते आदिथो, सुणजो चित्तनी चाहिं
 ॥ ठाल सत्तरमी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी
 गतदिन बेठी हो राज, मंदिर बारें राज, धूरत
 रें रे, एतो आव्यो माब्हतो ॥ १ ॥ हात करीने
 राज, में बोलाव्यो राज, इमतो न जाण्यो रे धूतारो
 जन एह ठे ॥ २ ॥ मुज तनु मरदे हो राज, खांते क
 रीने राज, कांश्क आपुं रे हुं तुमने रुअहुं ॥ ३ ॥ व
 चन सुणीने हो राज, आव्यो समीपें राज, मदीं मा
 हारी रें इणो देह चोलीने ॥ ४ ॥ हुं पण तूठी हो राज,
 मनमां वारु राज, जिमवा सारु रे मेंतो एहनें नोतखो
 ॥ ५ ॥ एह कहे माहरे हो राज, काम नहीं ठे राज,
 जोजन न करुं रे कांश्क मुने दे हवे ॥ ६ ॥ पीत प
 टोली हो राज, ले नहीं देतां राज, सोगमे देतां रे दामें
 राजी ना थयो ॥ ७ ॥ नाम न जांखे हो राज, कांश्क
 मागे राज, आज ए आवी रे लागो पूठें माहरे ॥ ८ ॥
 देहरे बेसारी हो राज, मुंजनें लंघावे राज, जावा न
 दीये रे क्यांहिं फीटयो बाहिरें ॥ ९ ॥ तव में विचा
 खुं हो राज, जो हुं दुःखमां राज, जगडो निवेडी रे
 वेक्ष्याने ठोडवुं ॥ १० ॥ तो मुज थावे हो राज, कारज

एहथी राज, इम निरधारी रे बेठी त्यां हुं ते कन्हें
 ॥ ११ ॥ मगधाने काने हो राज, कहि कांइ ठाने राज,
 में कसुं बिहुने रे जाउ जमवा जोखमां ॥ १२ ॥ त्री
 जे ते पहोरें हो राज, जगहो हुं जांजीश राज, वेहेजा
 आहिं रे वेहु पाठां आवजो ॥ १३ ॥ माहाबल पूढे
 हो राज, वाद ए मोटो राज, किम करी जांज्यो रे गो
 री कहेने ते हवे ॥ १४ ॥ पंथनी थाकी होराज, दे
 हरे हुं सूती राज, त्रीजे पोहोरें रे फरी वेहु आवीयां
 ॥ १५ ॥ मुजने कठाडी हो राज, मगधानी दासी रा
 ज, घट एक टांकी रे मांहे ठानो त्यां उवे ॥ १६ ॥
 में कसुं तेहने हो राज, जण करीं साखी राज, कांइक
 अपावी रे तुजनें राजी हुं करुं ॥ १७ ॥ ते कहे वा
 हो राज, कांइक अपावो राज, तो नहीं दावो रे ए
 हथी माहारे थाजथी ॥ १८ ॥ मगधाने कीधी होरा
 ज, शानमें ज्यारें राज, मगधा त्यारें रे जांखे एहवुं
 पूतनें ॥ १९ ॥ हुंतो हारी हो राज, तुं हवे जील्यो
 राज, कांइक मूक्युं रे मेंतो मांहे कुंजमां ॥ २० ॥ ते
 तुं लेहनें हो राज, वेहडो बोडे राज, इम सुणी था
 यो रे रंगें देवलमा वही ॥ २१ ॥ कुंज निहाजी हो
 राज, टांकणी उपाडी राज, कांइक खेवारे घाजे मांहे

हाथ ते ॥ ११ ॥ फणधर महोदो हो राज,
 बलगो राज, न रहे अलगो रे वांको कर
 ॥ १२ ॥ ते कहे इहां तो हो राज, कांश्क
 राज, मगधा हसतीरे जांखे एह ठे ताहरो ॥ १३ ॥
 में मुज बोव्यो हो राज, ते एह दीधो राज, तुज
 एाथी रे कीधो माहारे बूटको ॥ १४ ॥ लोक
 हो राज, कहे तिहां बहुलां राज, एहने दीधु
 एणो कांश्क रूअडुं ॥ १५ ॥ विपधर मंक्यो हो राज,
 ते नर मूक्यो राज, तोतिल नामें रे देवी केरें
 ॥ १६ ॥ मुजने तेडी हो राज, मगधा साथें राज
 निजघर थावी रे पांड माहरो मानती ॥ १७ ॥
 बीजे खंये हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति उमये
 रे जांखी रुढी नेहगुं ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ छार रही में तेहने, थाप्यो इम उच्चाट ॥ तुज
 चर नृपदेपी वसे, पेमुं नहीं ते माट ॥ १ ॥ इम रु
 एी ते बिलखी अइ, चिंते एहवुं चित्त ॥ ए नाणो
 कोइक नर, जाणो रहस्य चरित्त ॥ २ ॥ बीदती मन
 मां बापटी, मुजने इम कहे बाण ॥ रखे सुगुण कर
 ता किहां, कहुं वुं जांटी पाण ॥ ३ ॥ किहां दुप

कुम बकी, न रहे ठानी नेट ॥ कदो निपायो किहा
 निपे, दाई आगल पेट ॥ ४ ॥ घने कपट करवो, ति
 हा, जिहा कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मने,
 काहे सपलो लाग ॥ ५ ॥ सुईनिइ करे तिता, पूरण
 धामा साख ॥ सक्कन सहजे गुण करे, दांके अवगुण
 जाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पानुं पदगुं, तेतो पूरव जो
 ग ॥ गले महीने काढवा, हवे बन्यो ठे जोग ॥ ७ ॥
 ॥ ठाल अठारमी ॥ चंदनरी कटकी नली ॥ ए देशी ॥
 ॥ वीरधवलनी गोरही, कनकवती नामेण ॥ नाणि
 डा हो राल, चरित्र सुणो एहवी नारीना ॥ कपट करी
 ने नृपनंदनी, कूपे नखावी एण ॥ ना० ॥ १ ॥
 कूड कपट जाणी नृपे, रोकीती निज गेह ॥ ना० ॥
 नाती निशि आवी रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥
 च० ॥ २ ॥ बलती जेहवी गामरी, पेगी घरने खूण
 ॥ ना० ॥ मुज घरथी काढो परी, करीने काईक टूण
 ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश हुं उपगारडो, बीजो ए
 गुण जोई ॥ ना० ॥ पारथीयां होये स्वारथी, स्वारथ
 विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधा
 ने फलुं, कार्डु जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर बधे तो
 बेहुमां, जाण्यो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५

नरणादिक काई ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तव मुजने
 देखाडीयां, आनूयण तेणें काढि ॥ ना० ॥ हसतां में कसुं
 थोडलां, ते कहे इम रस वाढ ॥ ना० ॥ च० ॥ १५ ॥
 हार अवे माहारे वली, नामें लखमीपुंज ॥ ना० ॥
 गुप्त धखो ते काढतां, आवे वे मुज धूज ॥ ना० ॥
 च० ॥ १६ ॥ में पूछुं ते क्वां धखो, ते कहे चढुटा
 मांही ॥ ना० ॥ शुना घर पासें वढो, कीर्ति येन वे
 त्याहि ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचें जंमारीयो, ते
 हमां मूक्यो माट ॥ ना० ॥ न शकुं जावा वासरें, मर
 ती हुं तिण वाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ रातें थाज
 जई तिहां, थाणीश तेह ठिपाय ॥ ना० ॥ जाई शके
 जो तुं तिहां, तो छेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥
 १९ ॥ नहीं तो सांजे मुळनें, कहेजे जेहवुं होय ॥
 ना० ॥ इम आलोच कखो घणो, मांहोमांहे रस ढो
 य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालयकी हुं वतरी, आ
 वी मगधा नांज ॥ ना० ॥ बीजे खंमें अढारमो, कांते
 जेणी इम ढाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मगधा कहे मुजने हसी, कहो केती वे ढीज ॥ में
 कसुं ए तुज घर यकी, काढी वे अढखीज ॥ १ ॥ सं

तोपण तुज उपरोधथी, करखुं हुं ए काज ॥ ना० ॥
 ते मुज रातें मेलवे, जिम करुं काढण साज ॥ ना०
 ॥ च० ॥ ६ ॥ गणिकार्ये अति आदरें, नोजन मुजने
 दीध ॥ ना० ॥ रातें एकातें मुने, कनका मेलवी सीध
 ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥ मुज साथें रागें जरी, वदती
 मीठा बोल ॥ ना० ॥ जोग जणी मुज प्रारथे, करती
 नयण कल्लोल ॥ ना० ॥ च० ॥ ८ ॥ में जांखुं तेहने
 ईशुं, मुज वालो ठे एक ॥ ना० ॥ ते अति अरथी
 नारिनो, मनमथ रूपें ठेक ॥ ना० ॥ च० ॥ ए ॥ प
 ण कामें गामें गयो, आज करी संकेत ॥ ना० ॥ मु
 ज मलरी देवी घरें, रातें काले सहेत ॥ ना० ॥ च०
 ॥ १० ॥ मुज साथें तुं आवजे, देशुं जोग वनाय ॥
 ना० ॥ नहींतो पण ए आपणी, प्रीति किहां नहीं
 जाय ॥ ना० ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे कनका क्यांथी
 तुमें, आव्यां कुंण तुम जात ॥ ना० ॥ में कह्युं बिहुं
 कूत्री अमें, चाह्या विदेश सखात ॥ ना० ॥ च० ॥
 ॥ १२ ॥ मुज वचनें ते वीशमी, जांखे निज अवदात
 ॥ ना० ॥ गोष्टि करंतां रातडी, वीती अयो परजात
 ॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥ पूछ्युं प्रपंचें में वली, तेह
 ने प्रजातें ताई ॥ ना० ॥ ठे तुज पासें के नहीं, आ

नरणादिक काई ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तव मुजने
 देखाडीया, आनूपण तेणें काढि ॥ ना० ॥ दसतां में कसुं
 थोडला, ते कहे इम रस पाढ ॥ ना० ॥ च० ॥ १५ ॥
 हार अठे साहारे वली, नामें लखमीपुंज ॥ ना० ॥
 गुप्त धखो ते काढता, आवे ठे मुज धूज ॥ ना० ॥
 च० ॥ १६ ॥ में पूठपुं ते क्यां धखो, ते कहे चहुटा
 मांहे ॥ ना० ॥ शुना घर पासें वढो, कीर्ति थंन ठे
 त्याहि ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीचें जंमारीयो, ते
 हमां मूक्यो माट ॥ ना० ॥ न शकुं जावा यासरें, मर
 ती हुं तिण वाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ रातें आज
 जई तिहां, आणीश तेह ठिपाय ॥ ना० ॥ जाई शके
 जो तुं तिहां, तो छेई आव तकाई ॥ ना० ॥ च० ॥
 १९ ॥ नहीं तो सांजे मुऊन, कहेजे जेहवुं होय ॥
 ना० ॥ इम आलोच कखो धणो, मांहोमांहे रस ठो
 य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मालथकी हुं उतरी, आ
 वी मगधां नाज ॥ ना० ॥ बीजे खंमे अढारमी, कांति
 जणी इम ठाज ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मगधा कहे मुजने दसी, कहो केती ठे ढील ॥ में
 कसुं ए तुज घर थकी, काढी ठे अढरबीज ॥ १ ॥

च कल्यो ठे एहवो, पूरी पूरण पूठ ॥ वारंतां पण रा
 तमां, जाशें कनका कठ ॥ ३ ॥ सामग्री जोजन तणी,
 करे मगधा अति नेह ॥ जमी रमी तिहांथी वली, ग
 ई दिवसने ठेह ॥ ३ ॥ ठाना थानक थंजनो, जोतां
 न लह्यो हार ॥ रातें कनकाने वली, जई नांख्यो सु
 विचार ॥ ४ ॥ हार लेई तुं आवजे, देवी नवन मजा
 र ॥ पूठीने मगधा प्रत्यें, हुं चाली निशिचार ॥ ५ ॥

॥ डाल डंगणीशमी ॥ आठे लालनी देशी ॥

॥ रयणी अंधारी मांहे, वहेती हुं चित्त चाहे, आठे
 लाल ॥ अध मारगें नूली पडी ॥ आफलती पुर सेर,
 खाती वारण फेर, आठ ॥ जिम तिम पामी वाटडी
 ॥ १ ॥ आची हुं तुम पास, नांखी वात प्रकाश,
 आठ ॥ कनकवती जोई आवती ॥ हार लेइने एह,
 आवे ठे अतिनेह, आठ ॥ कनका तुमने चाहती ॥ २ ॥
 वात सुणी इम नाह, आणी टेक अयाह, आठ ॥
 प्रीति वचन ते उठप्यां ॥ बोलवुं नही घटमान, एह
 थी होय नुकसान, आठ ॥ इम कही थें ठाना विप्य
 ॥ ३ ॥ कनका मन उत्कंठ, आची मुज उपकंठ
 आठ ॥ तव में इम कहूं तेहनें ॥ आची म कर कां
 सोर, वेठा ठे इहां चोर, आठ ॥ दे मुज जे होय तु

ज कर्ने ॥ ३ ॥ राखुं ठिराढी क्याहि, तव ते आपे त्या
 हि, आ० ॥ बगची हाथें ठवकी, में तेहमायी टा
 जि, काढी वस्तु निदालि, आ० ॥ द्वार अने बली कं
 चूकी ॥ ४ ॥ बाकी सवि समुदाय, बांध्यो एक मित्रा
 य, आ० ॥ चोर मंजूपें ते थप्यो ॥ में कहुं तेहने ए
 स, परके ते तुं केम, आ० ॥ पानक में ताहरे कह्यो
 ॥ ५ ॥ ज्यां लगे चोर न जाय, ह्यां लगे ते न खमाय,
 आ० ॥ पेश मंजूपें ते नणी ॥ पेठी ते निर्जाक, में
 धारी मन ठीक, आ० ॥ तालुं दीधुं आहणी ॥ ६ ॥
 आपण वे अति हुंत, कपाडीने मंजूप, आ० ॥ गोला
 मां वहेती करी ॥ बैर प्रथमनुं वालि, बाही नीर वि
 घाल, आ० ॥ करताशुं करीये खरी ॥ ७ ॥ मांजुं पि
 ठ ततकाल, थूकें माहारुं नाल, आ० ॥ रूप सहज
 तुं हुं लही ॥ तुम आणापी अंग, दीधुं विलेपण चंग,
 आ० ॥ पहेरी पटोली में वही ॥ ८ ॥ पहेल्यां कुंम
 ल खास, रविशशी मंजल जात, आ० ॥ लाथां जे
 तडने थडें ॥ पहेल्यो कंचुक सार, कंठें ठव्यो ते द्वार,
 आ० ॥ वरमाला धारी जलें ॥ ९ ॥ पेठी संपुट मां
 हि, गुहिर विवर अयगाहि, आ० ॥ त्यारें मुज सवि
 शीखवी ॥ निसुणे वीणा घोर, तव ए खोजी चो

आ० ॥ काढे इहांथी नीठवी ॥ ११ ॥ इम कही बी
 जुं खंम, थाप्युं शीश अखंम, आ० ॥ तेहमां वसी खी
 ली जडी ॥ राख्या पवननां माग, नीचें ठानें लाग,
 आ० ॥ चतुराईशुं ते घडी ॥ १२ ॥ जाणुं एती वात,
 कही आगें अवदात, आ० ॥ में न लह्या तिहां संक्र
 मी ॥ बीजे खंम एह, कांति कहे धरी नेह, आ० ॥
 ढाल जणी उंगणीशमी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे माहाबल मानिनी सुणो, आगें जे दुई वा
 त ॥ थंन तिस्यो में चीतखो, जिम जाण्यो नवि जा
 त ॥ १ ॥ रंग प्रमुख जे जगत्या, ते वाह्या जलपूर ॥
 एहवामां फरी चोर ते, आव्या जवन हजूर ॥ २ ॥
 चोर सहित पेटी तिकें, जिहां तिहां जोतां दीठ ॥ तस
 शानें बोलावतां, कीधा आदर इठ ॥ ३ ॥ मुज पूढे मंजू
 शशुं, दीठो एक किहां चोर ॥ बीडुं में देई आदरें, कस्युं
 एम तिण ठोर ॥ ४ ॥ थंन एहजो पूर्वनी, पोळें मूको
 आज ॥ तो देखाडुं चोर ते, व्यवहारें नहीं लाज ॥ ५ ॥
 ॥ ढाल बीशमी ॥ थें तोनें आया उलगुं, उलगाणाजी ॥

जिरमट खाश्यो गाल जण्या ॥ ए देशी ॥

॥ चोर कहे इम उमही ॥ गुणवंताजी ॥ राज नळें

मह्या नाग्यथकी ॥ काम करे शुं ए वही ॥ उजमंता
 जी, शरथे अवसर एह तकी ॥ १ ॥ गुण करता गुण
 कीजीये ॥ गु० ॥ एहमां पाड न कोइ इहां ॥ कहोतो
 काढी बीजीये ॥ उ० ॥ जीव सरखो काज जिहां
 ॥ २ ॥ जीवजीवातन सारिखो ॥ गु० ॥ ते जाता
 होय दुःख घणो ॥ पोतावटीनुं पारिखुं ॥ उ० ॥
 लहीये अर्थ सरे बमणो ॥ ३ ॥ इम कही ते थया
 एकठां ॥ गु० ॥ धन वाटी तेह सिंधु तहें ॥ उपाडे मली
 सामटा ॥ उ० ॥ थंन तिहांथी एक धहें ॥ ४ ॥ ते
 पूठें हुं चालियो ॥ गु० ॥ पूरव पोल समीप गया ॥
 वंठित थल देखाडियो ॥ उ० ॥ ते तिहां मूकी निचिंत
 थयां ॥ ५ ॥ में जाण्यो जो गोपव्यो ॥ गु० ॥ देखाहुं
 ते चोर हवे ॥ तो ए टोलो कोपव्यो ॥ उ० ॥ धन लोनें
 तल लोही पीवे ॥ ६ ॥ इम धारी अंतर बटें ॥ गु० ॥
 उत्तर कूहुं एम कसुं ॥ लोन बजें तेणें चोरटे ॥ उ० ॥
 तालुं कषाढी इव्य ग्रसुं ॥ ७ ॥ गोला सिंधु प्रवाहमां
 ॥ गु० ॥ तरती मूकी मंजूष सुखें ॥ तेह उपर चढी
 राहमां ॥ उ० ॥ नदीयें थई ए जाय मुखें ॥ ८ ॥ दो
 ठा में सपली परें ॥ गु० ॥ पासें कजे चरित घणां ॥
 चोर सहु इम बचरे ॥ उ० ॥ साच चरित ए चोर

णां ॥ ए ॥ रातिसूधी ते नीरमां ॥ गु० ॥ जाशे तरतो
 नूमि कीती ॥ देशुं वड जंजीरमां ॥ उ० ॥ ग्रहिणुं करशे
 जेय थिती ॥ १० ॥ जाशे ए किहां वेगलो ॥ गु० ॥
 चोटी एहनी हाथ थठे ॥ हमणां मूक्यो मोकलो ॥
 उ० ॥ लेशे फल रस पाक पठे ॥ ११ ॥ इम कहेतां
 मन आमले ॥ गु० ॥ चोर गया निज काज वगे ॥ यत
 न करी में एकले ॥ उ० ॥ राख्यो थंन प्रजात जगे ॥
 १२ ॥ प्रह्मकाले जण नूपनो ॥ गु० ॥ आव्यो निरख
 ण थंन तिहां ॥ हुं थई थलख स्वरूपनो ॥ उ० ॥ वेठो
 आवी ठे नूप जिहां ॥ १३ ॥ इत्यादिक वीती कथा
 ॥ गु० ॥ कहीने वली महावल जणे ॥ काहुं चोर ते स
 वेथा ॥ उ० ॥ शिखर ठव्यो जे जुवन तणे ॥ १४ ॥
 चालीश जो हुं निजपुरें ॥ गु० ॥ तो मरशे तिणें नीड
 पढ्यो ॥ चढशे पाप खराखरे ॥ उ० ॥ इणो फिकरें मुज
 चित्त नढ्यो ॥ १५ ॥ तुं इहां रहेजे हुं वही ॥ गु० ॥ आवी
 शं तेहनो खूल करी ॥ कहे मजया रहेशुं नही ॥ उ० ॥
 सार्थे आवीश रंग धरी ॥ १६ ॥ तव कुमर विचारी चि
 त्तामां ॥ गु० ॥ वेगवतीने एम जणे ॥ जो नृप आवे तुर
 तमां ॥ उ० ॥ तो कहेजो इम निपुण पणे ॥ १७ ॥
 गोलातटे देवी नमी ॥ गु० ॥ आवशे कुमर इहां द

मणां ॥ मानत किम लकीर्ये गमी ॥ ३० ॥ मान्या दीप
 जे देव तणा ॥ १७ ॥ इम कही नाथी तिहा, यही
 ॥ ३० ॥ राति समय देवी सुवने ॥ नारी पण नत्रि रही
 शके ॥ ३० ॥ मलया राखें दुर्ग सुमने ॥ ३० ॥ बीजे खमें
 बीशमी ॥ ३० ॥ टाल नली अति सरस रसे ॥ सुणतां
 श्रोताने गमी ॥ ३० ॥ कांति कहे मनने हरमें ॥ ३० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ साम दाम दंभे करी, धीरधवल नूपाल ॥ तमजा
 व्या नरपति घणुं, पण समजे नहीं हवाज ॥ १ ॥
 तेह कहे परजातमां, भारी तुज जामात ॥ कन्या
 छेइ चालशुं, तुं न करे अम तात ॥ २ ॥ वचन सुणि
 नपति चक्यो, थावे सुवन विचाज ॥ साज करावे
 करहलि, संप्रेढण वर वाल ॥ ३ ॥ सुंप करावण था
 विठ, वर कन्या जवणेह ॥ दीठा नहीं पूठपुं तदा,
 वेगवती कहे तेह ॥ ४ ॥ वेगो जोवे वाटडी, नूपति
 करतो चिंत ॥ रात पडी तव जिहां तिहां, शोथ्या पण
 न मिलंत ॥ ५ ॥ खबर लही नृप नंदनां, कटक गयां
 परजात ॥ आव्या तिम निज निज पुरें, विलख वदन
 विरचात ॥ ६ ॥ जामाता कन्या तणी, किहां न लही नृप
 सृज ॥ दुःखियो नूपति चित्तमां, चिते एम अमूंज ॥ ७ ॥

॥ढाल एकवीशमी॥ धिग धिग धणनी प्रीतडी ॥ए देशी॥

॥ नरराज अति चिंता करे, मनमां पोषी दाह
 रे ॥ वर कन्या बिहुं किहां गयां, ए तो अचरिज रे
 दीसे जगनाह ॥ १ ॥ नूपति त्रटकीने कहे रे, कुंण
 जाणे रे एह अकल सरूप ॥ जोयां पण लाधां नहीं
 रे, अयुं होशे रे कांइ विपरिण रूप ॥ नूण ॥ २ ॥
 किहां नगरी चंडावती, किहां नगर पोहवीठाण ॥
 किहां कन्या महाबल किहां, एतो विभ्रम रे रचना
 अहिनाण ॥ नूण ॥ ३ ॥ अथवा दैवें बेहुनो, संयो
 ग इम किम कीध ॥ इंडजाल परें कारिमो, देखाडी
 रे किम जडपी लीध ॥ नूण ॥ ४ ॥ तुज चित्तमां
 एहवुं हतुं, करवुं दैव अनिष्ट ॥ तो मूलथकी परग
 ट करी, क्यां पाडयो रे एह माहारी दृष्ट ॥ नूण ॥
 ॥ ५ ॥ नवि दीधुं नोजन नजुं, नहीं दीधुं लीध उ
 दालि ॥ मणि हीणुं नूषण नजुं, पण पडिउं रे जश
 मणि ते टालि ॥ नूण ॥ ६ ॥ हण्या डुष्ट किए वै
 रीयें, अथवा निरुथ्यां केण ॥ के किए देवें अपह
 र्यां, दंपती दोइ रे आव्यां नहीं तेण ॥ नूण ॥
 ॥ ७ ॥ रूप करी महाबल तणुं, आव्यो हतो कोइ
 चोर ॥ परणी निज देशें गयो, मुज कन्या रे काल

जानी फोर ॥ जू० ॥ ० ॥ कुमर कुमरी रूपे करी,
 प्रांति मुज मन घालि ॥ मरण थकी वारी गया, करु
 णाला रे केइ अथवा विचालि ॥ जू० ॥ १ ॥ शुं करु
 केहने कहुं, कुण लहे मुज मन पीड ॥ इम कहेतो
 गलहण करी, नृप वेतो रे पडयो चिंता जोड ॥ जू० ॥
 ॥ १० ॥ वेगवती वेगें कहे, प्रभु धरो मनमां धीर ॥
 तेहिज मजया ए हती, तेह हुतो रे एह महबल वीर
 ॥ जू० ॥ ११ ॥ पण रातमां जातां वनें, ठल ठेतखां
 ततखेय ॥ कोइक वैरी विरोधयी, संजवियें रे हरि
 या कियो देव ॥ जू० ॥ १२ ॥ देशावर पुर पर्वते,
 वनजुमि विषम प्रदेश ॥ मूकी नर विशवासिया, जो
 बराबो रे तजी अपर किलेश ॥ जू० ॥ १३ ॥ प्रथम
 पुहवीगण पुर दिशि, तुरत करवी शोध ॥ कृणहीक
 कारणथी कदे, नारी लेई रें गयो होय तिहां योध
 ॥ जू० ॥ १४ ॥ सूरपाल नरिंदनें, एह सयल जणावो
 वांत ॥ तेपण खबर करे वजी, करतां इम रें साव आ
 वशे घात ॥ जू० ॥ १५ ॥ जलुं जलुं नृपति कहे, तें
 कह्यो साहु उपाय ॥ वेगवतीने सराहतो, तिम कर
 वा रें नरपति सज याय ॥ जू० ॥ १६ ॥ मलयकेतु
 निजपुत्रनें, देई शीख नृप ससनेह ॥ सूरपाल दि

मोकज्यो, कहेवाने रे व्यतिकर सवि तेह ॥ नूप ॥
 ॥ १७ ॥ हयगय सुनट रथ साजशुं, ते कुमर निय
 त प्रयाण ॥ कुशलें मलशे नूपनें, दोशे रुडा रे इह
 कोडी कज्याण ॥ नूप ॥ १८ ॥ ढाल एह एकवीश
 मी, इम कही कांति रसाज ॥ छुगतें बीजा खंमनी
 नणतां होये रे घर घर मंगल माल ॥ नूप ॥ १९ ॥
 ॥ चोपाई ॥ खंम खंम रस ठे नवनवा, सुणतां मीत
 शाकर लवा ॥ निर्मल मलय चरित्र जग जयो, ब
 जो खंम संपूरण थयो ॥ २० ॥

॥ इति श्री ज्ञानरत्नोपाख्यान द्वितीयनाम्नि मलय
 सुंदरिचरित्रे पंक्तिकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृत
 प्रबंधे मलयसुंदरीपाणीयद्वयप्रकाशको नामाद्वितीय
 खंमः संपूर्णः ॥ २ ॥ सर्वे नाथा ॥ ५७५ ॥

॥ अथ तृतीय खंम प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजो खंम धर्ममशुं, पुरण कीय प्रगट ॥ द
 बीजो कहेवा नशी, उमग्या रंग गरट ॥ १ ॥ प्रेम
 प्रणमी गारदा, कहेनुं जेय चरित्र ॥ अति रस
 अंता सुणी, करजो करण पवित्र ॥ २ ॥ हवे कुम

बनमा लई, मलबाने पनणंत ॥ फिरहुं निशि सम
 शानमा, नारीने न पटंत ॥ ३ ॥ ते माटे नर रूप
 तुज, करुं कही इम जाल ॥ तिलक कणुं आवारसें,
 घोली घसी ततकाल ॥ ४ ॥ नारी रूपे नर दुज, थवा
 बेहु संबंध ॥ बेवी गृहनां शिखरणी, काटे चोर निरुद्ध
 ॥ ५ ॥ कहे इस्पुं रे गत दिनें, गया चोर तुज देख ॥
 ला कुशलें जिहां रुचि होवे, तिहुनो पंथ उवेख ॥ ६ ॥
 प्राण जान धनजान में, तुम पसायें ज-द्ध ॥ इम कह
 ते नमते पणुं, तेणे पयाणुं कीध ॥ ७ ॥ विहुं सुव
 नथी कतरी, थावे बढतलें थाप ॥ तव तिहां गयणे
 गोवनो, सुण्यो नूत आलाप ॥ ८ ॥ कुमर मरंतो नू
 तथी, करवा यत्तन प्रकार ॥ ततक्षण कामिणी कंठ
 थी, लीए उतारी हार ॥ ९ ॥ रहे रहे ठानी सल
 क मां, सांजल देइ कान ॥ बढमां नूत वदे किस्पुं,
 कुमर करे इम शान ॥ १० ॥ ठानां बढ पोलाशमां,
 विहुं वेठां धिरगात ॥ सावधान थइ सांजले, नूत
 तणी इम वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ सहेर जलो पण सांको रे, नगर
 जलो पण दूर रे ॥ हवीला वयरी ॥ ए-देशी ॥

॥ बढ शिखरें इम बोलीउ रे, नूताने एक

रे ॥ मोहन रंगीला ॥ वात कहुं नवली नली होला
 ल ॥ सांजलजो अदचूत रे ॥ मो० ॥ १ ॥ जूत बडो
 कहे वातडी हो जाल ॥ ए आंकणी ॥ कुमर सुणे
 रह्यो हेठरे ॥ मो० ॥ रहस्य मरम जोतां वली हो
 जाल ॥ वेधक पामे नेठ रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ २ ॥ पु
 हवी ठाण नरिंदनो रे, माहावल नामे कुमार रे ॥ मो० ॥
 ठे मतिवंत गुणायरु होजाल, रतिपतिने अणुहार
 रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ३ ॥ तस जननी पदमावती रे,
 तेहना गलानो हार रे ॥ मो० ॥ किणहीक अलख
 पणें लीयो हो जाल, माय करे दुःख नार रे ॥ मो० ॥
 ॥ जू० ॥ ४ ॥ इम पण बांध्यो आकरो रे, वालण
 हार कुमार रे ॥ मो० ॥ हार न दौं दिन पांचमे हो
 जाल, तो मुज अगनि आधार रे ॥ मो० ॥ जू० ॥
 ॥ ५ ॥ मातायें पण आदखो रे, पण तेहवो निर
 धार रे ॥ मो० ॥ पांच दिवसमां ते लहुं हो जाल,
 तो रहुं जीवित धार रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ६ ॥ ख
 बर नहीं ठे कुमरनी रे, हार केडें गयो ऊठ रे ॥ मो० ॥
 पंचम दिन कालें दुगो हो जाल, सूरज ऊग्या पूठ रे
 ॥ मो० ॥ जू० ॥ ७ ॥ नृपनंदन सुगतावली रे,
 मलवा दुर्जच वेह रे ॥ मो० ॥ ते दुःख मरवुं आ

गमो हो लाल, बेगी राणी तेह रे ॥ मो० ॥ जू० ॥
 ॥ ७ ॥ विपथी के गिरि पातथी रे, के पेशी जल
 बेश रे ॥ मो० ॥ मरगो के वलो शस्त्रथी हो लाल, के
 करी अगनिप्रवेश रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ए ॥ लोक
 बहुलशुं राजीपो रे, मरगो पूर्ण तास रे ॥ मो० ॥
 खबर लेईन आचीपो हो लाल, हुं तिहाथी तुम पास
 रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ १० ॥ नूपनंदन बट कोटर
 रे, सांजले बेगो एम रे ॥ मो० ॥ फाटे होपहुं डः
 खथी हो लाल, काचो घट जल जेम रे ॥ मो० ॥
 ॥ जू० ॥ ११ ॥ चिंता जर मन चिंतवे रे, देव कथ
 न नहीं फोक रे ॥ मो० ॥ याशे जो एहबुं कदे हो
 लाल, तो करगुं श्यो डोक रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ १२ ॥
 नत कहे जश्ये तिहां रे, बहेलां ठामि प्रमाद रे
 ॥ मो० ॥ कौतिक जोगुं खंतगुं हो लाल, जेगुं रुधिर
 सवाद रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ १३ ॥ इम कही सम
 काले कखो रे, नूतकुले हुंकार रे ॥ मो० ॥ आका
 शें बढ कपडयो हो लाल, जेता साथ कुमार रे ॥
 ॥ मो० ॥ जू० ॥ १४ ॥ बेगें बढ नर्ने चालतो रे,
 आव्यो पुहवीमाण रे ॥ मो० ॥ आलंबन गिरिनीचें
 जई हो लाल, तुरत कखो मेलाण रे ॥ मो० ॥ जू०

॥ १५ ॥ पुर पासैं गोला तटैं रे, नामे धनंजय यह
 रे ॥ मो० ॥ नूत गयां तस देहरे हो लाल, करवा
 कौतुक लहू रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १६ ॥ निजपुर उ
 पवन नूमिनां रे, परिचित तरुनां वृंद रे ॥ मो० ॥
 कुमरें निहाली उलखी हो लाल, पांथ्यो परमानंद रे
 ॥ मो० ॥ नू० ॥ १७ ॥ कुमर नणे मलया नणी रे,
 दीसे पुण्य प्रमाण रे ॥ मो० ॥ जेहथी ए वड ऊपडी
 हो लाल, ध्याव्यो पुहवीठाण रे ॥ मो० ॥ नू० ॥
 ॥ १८ ॥ वड कोटरथी नीसरी रे, जइयें उपवन कूल
 रे ॥ मो० ॥ सुर शक्तें बली ऊडगे हों लाल, तो कर
 स्यां श्यो सूल रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १९ ॥ एम विचारी
 नीसखां रे, वड कंदरथी दोय रे ॥ मो० ॥ कदली वन
 ठे ठूकडूं हो लाल, तिहां जइ बेठा सोय रे ॥ मो० ॥ नू० ॥
 ॥ २० ॥ ऊपडतो गयणांगणों रे, देखे वड बली तेम रे
 ॥ मो० ॥ मांहो मांहे कहे इहां थको हो लाल, जागे
 ध्याव्यो जेम रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २१ ॥ जो रहेतां ए
 हमां वसी रे, तो जातां किण थान रे ॥ मो० ॥ पडतां
 व १ जोलमां हो लाल, जिम पवनें तरु पान रे
 ॥ मो० ॥ नू० ॥ २२ ॥ त्रीजे खंमैं ए कही रे, सुंदर प

हेली ढाल रे ॥ मो० ॥ कांतिविजय कहे पुण्यथी हो
 लाल, बाधे सुजश विशाल रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ १३ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर निसुणे तदा, विनताना आक्रंद ॥ दया
 पणे नयणें नरे, करुणा जल निस्पंद ॥ १ ॥ आवीश
 हु वहेलो प्रिये, चिंता मुज न करेश ॥ इम कही नर
 रूपें त्रिया, तिहां ठवि चढ्यो नरेश ॥ २ ॥ निरखत पियु
 नी बाढडी, शूने रंजाकुंज ॥ रयणि गमावे नारि ते, दार्धी
 झुखने पुंज ॥ ३ ॥ पीत वरण प्राची दुवे, पास्यो क
 मल विबोध ॥ बंधनयरथी बंध जिम, वूटा अलि कुज
 बोध ॥ ४ ॥ गुंजा पुंज समान तनु, उदयो बालो सूर ॥
 आलें किरण जालें हणी, कखा तिमिर रिपु दूर ॥ ५ ॥
 ॥ ढाल बीजी ॥ वृषजान सुवनें गई दूती ॥ ए देशी ॥
 ॥ मलया मन एम विचारे, जावें हुं पुरमां करारें ॥
 माय बापने मलवा कामें, मुज नाह गयो दुशे धामें
 ॥ १ ॥ चाही इम चाली खुपें, आवी वही पुरनी खुपें ॥
 पेसे जव पुरनें डुवारें, रोकी तव नगर तलारें ॥ २ ॥
 दिव्य वेश निहाली चमक्यो, कहे कुण तुं आयो धम
 क्यो ॥ बोलाव्यो तिहां उत्तर नापे, दश दिशिमां लो
 चन थापे ॥ ३ ॥ मलिया केई नगर निवासी, निरखे त

रूप प्रकाशी ॥ कुंमलने डकूलनी फाली, उलख्यां म
 हबलनां जाली ॥ ४ ॥ तलवर कहे किहांथी लाधां,
 आनूषण कुमरनां बाधां ॥ इम कही नृप पासैं लाव्यो,
 देखी नृप चित्त चमकाव्यो ॥ ५ ॥ कहे कोण पुरुष
 ए नवलो, सोहे नूषणें करी जांतीजो ॥ मुज सुतनां
 पहियां दीसे, आनूषण विश्वावीसैं ॥ ६ ॥ तलवर क
 हे ए हिसंतो, पकड्यो पुरमां पेसंतो ॥ पूठयो पण
 उत्तर नापे, पूठो वली जो हवे आपे ॥ ७ ॥ नृपति
 कहे कुंण तुं किहांथी, आव्यो कहे साच जिहांथी ॥
 मलया मनमाहि विमासे, साचुं इहां जूतुं नासे ॥
 ॥ ८ ॥ कहिशुं अम चरित्र वखाणी, कोइ सर्वहरो नही
 प्राणी ॥ कहेवुं नही पीउडा पाखें, जावी मटरो नही
 लाखें ॥ ९ ॥ इम धारीने मलया बोले, महबल मु
 ज मित्रने तोलें ॥ ते माटे ए वेश प्रसिद्धो, मुजने ते
 ए पेहेरण दीधो ॥ १० ॥ शूरपाल कहे तेह क्यां ठे,
 सा कहे इहांहिज जिहां त्यां ठे ॥ नृप कहे होये जो
 इहां ठावे, मुज मलवा तो किम नावे ॥ ११ ॥ जूठीसवि
 दात प्रकाशी, चोकस न पडी विण रासी ॥ महबल
 थी प्रीति वखाणे, तो सेवक कोइ तुज जाणे ॥ १२ ॥
 इत्यादिक वचन सुणीनें, रही मौन धरी मन हीने ॥ बो

व्यो नरपति डुंकारी, एह वात हवे अवधारी ॥१३॥
 अणदीवां मुज नंदननां, बसनादिक लीधां तननां ॥
 लोनतार नामें जेणे चोरें, रहे ते गिरिकंदर ठोरें ॥
 ॥ १४ ॥ घोखो पुरनो जेणें माल, पकडघो ते भाटे
 हवाल ॥ काले तस नियह कीधो, तस बांधव दीसे
 ए सीधो ॥ १५ ॥ निजबंधु वियोगें बलतो, सूधि लेवा
 आव्यो चलतो ॥ पहेरी मुज सुतनो वेश, इणो पुरमां
 कीध प्रवेश ॥ १६ ॥ मुज सुत हणीउं इणें मलीनें,
 मुज वैरी ए अटकलीनें ॥ लोनतार कन्हें जई हणजो,
 इहां पाप किछुं मत गणजो ॥ १७ ॥ मलया मनमां इं
 म. ध्यावे, अतमंजस कर्मनें दावे ॥ प्राणांतिक आपद
 मोटी, दीसे ठे इहां वली खोटी ॥ १८ ॥ चिंतवती पूर्व
 सलोक, रही मौन धरी अतिशोक ॥ तव बोळ्यो सचि
 व विचारी, महाराज छुवो अवधारी ॥ १९ ॥ जिम
 साह नहीं ए साचो, तिम चोर करी मत खांचो ॥ आ
 चरणा दीसे रुढी, शिर आवी तो मति कूडी ॥ २० ॥
 इहां वचित करावो धीज, होये छुछ अछुछ पतीज ॥
 इम करी हणशे तो आठे, कोई दोष न वेशे पाठें
 ॥ २१ ॥ नृप कहे शी धीज वतावो, तव ते कहे सर्प
 मंगावो ॥ साचो घट सर्पनी धीजे, होशे तो चरण

मीजें ॥ ३२ ॥ नृप गारुडविद अविलंबें, मूके तव
 शैल अलंबें ॥ दुःखर विषधर आणेवा, गया हसता
 ते ततखेवा ॥ ३३ ॥ वस्त्र कुंमल नूपें लेई, तलवरने
 सोंप्यो तेई ॥ बंध आवी मलया राणी, पण ढालें व
 हेरो पाणी ॥ ३४ ॥ त्रीजे खंमें बीजी ढाल, इम
 कांति कहे सुरसाल ॥ केई कौतुक होरो आगें, सांज
 लजो ओता रागें ॥ ३५ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे पटराणी तणी, महुलणी आवी दोड ॥
 गलगलती नृप आगलें, कहे एम कर जोड ॥ १ ॥ देव
 खबर नहीं कुमरनी, पंचम दिन ठे आज ॥ नेट अ
 निष्ट इहां किस्सुं, दीसे ठे नर राज ॥ २ ॥ पुत्र रतन
 दुर्जन हूउ, हार तणी शी वात ॥ शैल अलंबाथी पडी,
 करगुं ते दुःख घात ॥ ३ ॥ अविनय जे कीया हुवे, ते
 खमजो नरनाथ ॥ संदेशा तुम राणीयें, इम दीया
 मुज हाथ ॥ ४ ॥ समयोचित चित्तमां धरी, करो आ
 प हित जाणी ॥ इम सुणी नरपति तेहने, पनणे अ
 वतर वाणी ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ छुंवखडानी देशी ॥
 मुज वचनें इम नांखजो रे, राणी समीपें जाय ॥ स

लूणी गोरही ॥ मुजने पण ताहरी परें रे, ए दुःख ख
 मीउं न जाय ॥ स० ॥ १ ॥ खबर करेवा मोकल्या रे,
 दिशिदिशि सेवक साथ ॥ स० ॥ ते आब्याथी जाण
 शुं रे, वात तणी परमार्थ ॥ स० ॥ २ ॥ पामीशुं नही
 सर्वथा रे, कुमर तणी जो सुदि ॥ स० ॥ तो तुज गति
 मुजने हजो रे, धारी में एहवी बुदि ॥ स० ॥ ३ ॥ उं
 ट कमण किण बेसशे रे, तेज जूउं तेल धार ॥ स० ॥
 कुंमल वसन कुमारनां रे, आब्यां सहसाकार ॥ स०
 ॥ ४ ॥ किम रहेशे ठानो हवे रे, लाथो पग संचार ॥
 स० ॥ पुरुष थपूर्वक दाखशे रे, तेहने ए निरधार ॥
 स० ॥ ५ ॥ सहि नाणी राणी नणी रे, आपीने कहे
 जो एम ॥ स० ॥ जिम ए अजाण्यां आवियां रे, सुत
 पण आवशे तेम ॥ स० ॥ ६ ॥ पुरुषने धीज करावशुं
 रे, जेहथी लाधां साज ॥ स० ॥ मलशे नंदन जीव
 तो रे, करशे जो महाराज ॥ स० ॥ ७ ॥ महुजणी
 थावी महोलमां रे, सकल सुणी अवदात ॥ स० ॥
 कुंमल वसन समर्पिने रे, सुपरें सुणावी वात ॥ स०
 ॥ ८ ॥ विस्मित मन राणी दुई रे, पूने वस्तु निदान
 ॥ स० ॥ महुजणी आगम पुरुषथी रे, जांखे तरा प
 टमान ॥ स० ॥ ९ ॥ हर्य शोकाकुज कामिनी रे,

डुलणी आगें वदंत ॥ स० ॥ मुज सुत वल्लन आवि
 यो रे, कहेवा सुधि कुण खंत ॥ स० ॥ १० ॥ अथवा
 कोईक वैरीयें रे, कुमर हण्यो ठल खेल ॥ स० ॥ कुंन
 ल वसन लीयां तिकें रे, ते आब्यां इणि वेज ॥ स०
 ॥ ११ ॥ ते माटे निरखुं हवे रे, करतो धीज विशु
 ऋ ॥ स० ॥ इम कही यद्गृहें गई रे, परिकर साथें
 मुख ॥ स० ॥ १२ ॥ नृप पहेजो तिहां आवियो
 रे, वांटयो जणने पाट ॥ स० ॥ आब्या तव विपथ
 र ग्रही रे, गारुडी जोतां वाट ॥ स० ॥ १३ ॥ नृप
 तिनें कहे गारुडी रे, देव अलंबा हेठ ॥ स० ॥ वि
 वर अनेक निहालतां रे, लायो फणिधर नेठ ॥ स०
 ॥ १४ ॥ फूंकारे तरु बालतो रे, कालो काजल बान
 ॥ स० ॥ मंत्रप्रयोगें कुंनमां रे, घाव्यो आणी निदा
 न ॥ स० ॥ १५ ॥ यद्ग धनंजय आगलें रे, मूकावें
 नर कुंन ॥ स० ॥ नर न्हवरावी आणीयो रे, सुनटें
 करी संरंज ॥ स० ॥ १६ ॥ रूप निहालो तेदनुं रे,
 कहे राणी पुरलोक ॥ स० ॥ एहवा गुण इम दूषवी
 रे, विधि रचना दुई फोक ॥ स० ॥ १७ ॥ चंड अंगारा
 जो खरे रे, पावक जल विश्राम ॥ स० ॥ दाह अमृ
 तयी जो हुवे रे, तो एहयी ए काम ॥ स० ॥ १८ ॥

दिव्य कठिन ए एहने रे, बेता मन न वहंत ॥ स० ॥
 दोष नहिं जूपति जणे रे, गुणही एम जहंत ॥ स० ॥
 ॥ १९ ॥ समसूयो वानी ग्रहे रे, बाधे सुजश अतागा ॥ स० ॥
 जात्य सुवर्ण हुताशने रे, ताप्यो ले गुण जाग ॥ स० ॥
 ॥ २० ॥ नररूपा विनता तिहा रे, जपती मन नव
 कार ॥ स० ॥ श्लोकारथ निरधारती रे, कषाडे घट
 वार ॥ स० ॥ २१ ॥ निर्जय करकमलें ग्रह्यो रे, वि
 पधर अति रोपाल ॥ स० ॥ लोक लह्यो अचरिज
 नवो रे, निरखी निरुपम ख्याल ॥ स० ॥ २२ ॥ नाग
 दूड निर्विष मुखो रे, रह्यो तस वदन निहाल ॥ स० ॥
 नेह निविड रस पूरीयो रे, संबंधें ततकाल ॥ स० ॥ २३ ॥
 साचो साचो इम कहे रे, पाडे नर करताल ॥ स० ॥
 त्रीजे खंमं ए कही रे, कातें त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कैलि करंतो करतलें, काढें मुखथी हार ॥ ते
 मलया कंठें ठवे, मुखें ग्रही फणधार ॥ १ ॥ ते निर
 खी विस्मित दुड, जूप प्रमुख पुर लोक ॥ हार पि
 ठाणी इम कहे, करता नयणें टोक ॥ २ ॥ लखमी
 पुंज किहांथकी, आब्यो एह अचिंत ॥ विण वादल
 वरसात ज्युं, करे अचंन अनंत ॥ ३ ॥ जाल तिल

क नरनो चढी, चाटे जव अहिराव ॥ दिव्यरूप तरु
णी दुई, तव ते मूल स्वनाव ॥ ४ ॥ विस्तारी फणि
मंमली, रह्यो उपर धरी ठत्र ॥ जोतां जण अद्वैत र
स, जहे चित्र सुपवित्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौथी ॥ माली केरे वागमां,
दो नारंग पक्के रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ घर घरतो नरराजीयो, जणो एहवी वाचा लो
॥ अहो जण ॥ देखी तिहां अचरिज मोटोरे लो ॥ विण
विगते में मूरखें, काम कीथां काचां लो ॥ अण ॥ देखी ॥
॥ १ ॥ पुरजण देवी चारता, अनरथ उठाडयो लो ॥ अण ॥
नरनिंदें सूतो इहां, मृगराज जगाडयो लो ॥ अण ॥ दे ॥
॥ २ ॥ नहिं सामान्य जुजंग ए, कोइ देव सरूपी लो
॥ अण ॥ निरखत रचना एहनी, रही मनडे खूंपी लो
॥ अण ॥ दे ॥ ३ ॥ शक्ति सहित ए वे जणां, ठां
की निज वाना लो ॥ अण ॥ पुरमां कार्य उद्देशयी,
आव्यां कोई ठानां लो ॥ अण ॥ दे ॥ ४ ॥ परमारथ जहे
तो नयी, आराधी वेहुनें लो ॥ अण ॥ जगतें सूधां
रीजवी, पूजु गति एहुनें लो ॥ अण ॥ दे ॥ ५ ॥
इंम कहेतो धूप उखेवतो, कुंकुमांजल ढोवे लो ॥
अण ॥ फणीवर मूको सुंदरी, कही इंम मुख जोवे

लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ अविनय मुज पन्नग प्रभु,
कीधो ते खमजो लो ॥ अ० ॥ नक्त वश होय देव
ता, इम जाणी समजो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ नि
सुणी नृपति वीनति, मलया अहि मूक्यो लो ॥ अ० ॥
नृप पयपात्र धरुं तिहां, पीवा जइ दूक्यो लो ॥
अ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ संतोष्यो पयपानथी, नरपति आ
देशो लो ॥ अ० ॥ गारुडोर्ये पाठो ग्रही, मूक्यो गिरि
वेशो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ९ ॥ नृपति पूठे नारीनै,
जोतां जण पार्से लो ॥ अ० ॥ नरथी नारी किम दूई,
एह कौतुक जासे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १० ॥ कुण
वे किम आवी इहां, केहनी तुं वेटी लो ॥ अ० ॥
रहस्य कहो सवि चित्तथी, अंतर पट मेटी लो ॥ अ०
॥ दे० ॥ ११ ॥ मलया एहवुं चिंतवे, मूल रूप ए उ
जट्युं लो ॥ अ० ॥ जाल अमृतथी मांजतां, पहेलुं
पण वलट्युं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १२ ॥ रूप ए विष
हर चाटतां, कहो किम बदलाणुं लो ॥ अ० ॥ हार
लह्यो पीपु करतणो, अचरिज इहां जाणुं लो ॥ अ० ॥
॥ दे० ॥ १३ ॥ कारण ए मुज पीवनां, विण कारण सीधां
लो ॥ अ० ॥ कारणें नाग थई तिणें, कारज शुं कीधां
लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १४ ॥ समजण मुज पडती

श्यां वनर श्यापुं लो ॥ अ० ॥ जेतुं इहां कहेतुं घटे,
 तेतुं धिर श्यापुं लो ॥ अ० ॥ वे० ॥ १५ ॥ लाजें मुख
 नीतुं करी, कहे भलया बाली लो ॥ अ० ॥ दक्षिण
 दिशि चंदावती, वीरधवलें पाली लो ॥ अ० ॥ वे० ॥ १६ ॥
 हुं ते नृपनी नंदनी, जीवितथी प्यारी लो ॥ अ० ॥ नामें
 मजया सुंदरी, चंपक वरधारी लो ॥ अ० ॥ वे० ॥
 ॥ १७ ॥ जूप कहे जगतुं नही, ए वचन विशेषें लो
 ॥ अ० ॥ प्रयम कहेतुं तेहथी, मजतुं नही लेखे लो
 ॥ अ० ॥ दे० ॥ १७ ॥ कारण वर्जें ते जूपने, पुत्री
 जो आई लो ॥ अ० ॥ केताइक जण आवडो, तो पुत्र
 धाई लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १८ ॥ द्वार सहित एहने
 हने, देवी तुज पासें लो ॥ अ० ॥ सुखजाताशु राख
 लो, वंचे आवामें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १९ ॥ राणी
 मजधाने तिहां, राखे मन खाने लो ॥ अ० ॥ बोयी
 जीनः खंनती, डाल जांती कांते लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ नृपति कहे हृण राजिनी, पंच दिवसने खंन ॥
 द्वार गंधाव अलजागिर, जानो अति चहंत ॥ १ ॥
 जीनो महबज नंदने, प्राणतिक पाप नेन ॥ सुख
 हास खें साहसी, पूछां दीने तेन ॥ २ ॥ बचन ए

णी राणी हुई, दुख नारे दिलगीर ॥ प्रीतमने इम वि
नवे, नयण जरीती नीर ॥ ३ ॥

॥ डाल पायमी ॥ सासू कता वे गहुं पी

साय, आपण जास्या हे मालवे, सोड

नारी जणो ॥ ए देणी ॥

॥ पीया वेठा हे कांई निचिंत, कान ढालीनें हे ई
णपरें ॥ सुत नायो परें ॥ पीया विरहो हे अति खट
कंत, सुतनो हे हीयटा नीतरें ॥ सु० ॥ १ ॥ पीया
मुजयी हे रसुं न जाय, जेवा दीहा किम नीगसुं ॥
सु० ॥ पीया रयणि हे वैरणी पाय, नांव गई शुनी
जसुं ॥ सु० ॥ २ ॥ पीया बालुं हे नवलख हार, पु
त्र रतन जेहयी गम्यो ॥ सु० ॥ पीया लेई हे रतन
वदार, पाहाण कारज आगम्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ पीया
ढोल्सुं हे सरस पीपूर, द्वार उदकने कारणें ॥ सु० ॥
पीया कांपी हे सुरतरु रुख, बाव्यो धंतुरो वारणो ॥
सु० ॥ ४ ॥ पीया जीवुं हे हुं हवे केम, पुत्र रहित
दोनागिणी ॥ सु० ॥ पीया गिरि हे जंयावीश जेम,
निवृत्त होइ जीवित जणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रीया वारी
हे में समजाय, पहेलां पण तुजनें घणुं ॥ सु० ॥ प्री
या जेहेसुं हे पुण्य पसाय, हार परें सुत आपणुं

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया वचनें हे इम आसास, पुत्र विठो
 ही हे गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आव्यो हे निज आवा
 स, मन वींध्युं दुःख कोरीनें ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पो
 होता हे निज निज आन, लोक नखां अचरिज चिंते
 ॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने वि
 रह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया बोव्यो हे तपतां दीप्त, रा
 ति विहाणी दोहिले ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे दुःख
 जगदीश, के जस बीते ते कले ॥ सु० ॥ ९ ॥ प्रीया
 आया हे जन परनात, कुमर खबर पाम्या नहीं ॥
 सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दंपती चा
 व्यां गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया पडवा हे घाली
 हांम, नृप राणी उंचां धसे ॥ सु० ॥ प्रीया सासैं हे
 नरीयां ताम, पुरुष केइक आव्या तिसैं ॥ सु० ॥
 ॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट बड
 मालियें ॥ सुत पायो वडें ॥ प्रीया टांग्यो हे बागु
 ली जेम, महबल दीतो गोवालीये ॥ (कनालिये)
 सु० ॥ १२ ॥ प्रीया बांध्यो हे जे लोनसार, चोर अ
 धो मुख जिण वडे ॥ सु० ॥ प्रीया जीड्यो हे माल
 मजार, तुम नंदन तिहां तडफडे ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्री
 या जाण्यो हे नहीं परमार्य, दीवुं तेहवुं नांखीयुं ॥

सु० ॥ प्रीया सुणीने हे इम नरनाथ, वचन श्रमृत
 करी चाखीयुं ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रीया पाम्यो हे विस्म
 य हपे, समकाले ते राजवी ॥ सु० ॥ प्रीया वाध्या
 हे मन उत्कर्षे, मरवा इठा नाजवी ॥ सु० ॥ १५ ॥
 प्रीया सुतना हे दरिसण चाहि, चाव्यो नृप बड सनसु
 खें ॥ सु० ॥ प्रीया सार्ये हे मलया उमाह, चाली प्री
 तमनी रुखें ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्रीया आया हे बडतरु
 पास, नृपराणी मलया मली ॥ सु० ॥ प्रीया दीगो
 हे उंचो आकाश, टांग्यो न शके सलसली ॥ सु० ॥
 १७ ॥ प्रीया करणे हे सुत संनाल, नवली विधि नृ
 प आगमी ॥ सु० ॥ प्रीया त्रीजा हे खंमनी ढाल, कां
 तें कही ए पांचमी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नयणें आंसुं नाखतो, पूठे सुतनें नृप ॥ लेखन
 निपट रुतांतनो, ए तुज कवण सरूप ॥ १ ॥ लोन
 सार टांग्यो बडे, तुं पण तिम तस कूज ॥ देखीने तु
 ज इर्दशा, गयो सुखि हुं नूल ॥ २ ॥ धिग मुज बल
 जीवित कला, प्रसुता थई थकाज ॥ जेह ठते तें श्र
 नुनवी, दोहिलिम दुःख समाज ॥ ३ ॥ इम कही तेष्ट्यो
 वर्ककी, ठेदावी बड माल ॥ यतनें सुतने जीवतो,

जी ॥ नं० ॥ एकाकी किम होवेजी ॥ नं० ॥ एह सा
 हमुं शुं जोवेजी ॥ नं० ॥ घन जीपम वननें शमशाने,
 वेठी तुं किण काम ॥ नं० ॥ १० ॥ तव ते वदन उधाडी
 जी ॥ नं० ॥ जोती अवली आडीजी ॥ नं० ॥ मूकी
 लाज कमाडीजी ॥ नं० ॥ बोली इम पट काडीजी ॥
 नं० ॥ शुं दुःख नाखुं हुं तुज आगे, जाग्य रहितमां
 लीह ॥ त० ॥ ११ ॥ बांध्यो जे वड मालेंजी ॥ नं० ॥
 शैल अलंब विचालेंजी ॥ नं० ॥ रहेतो कंदर नालेंजी
 ॥ नं० ॥ हरतो पुरधन आलेंजी ॥ नं० ॥ चोर पुरातन
 पाप दशाश्री, ए आव्यो नृप हाथ ॥ नं० ॥ १२ ॥ लोन
 सार इणो नामेंजी ॥ नं० ॥ वीतक त्रीजे यामेंजी ॥ नं० ॥
 संध्यायें विण मामेंजी ॥ नं० ॥ बांधी हणीउं ठामेंजी
 ॥ नं० ॥ मुज प्रीतम ठे हुं धण एहनी, रोवुं हुं दुःख
 तेण ॥ नं० ॥ १३ ॥ नेह नवल मुज खटकेजी ॥ नं० ॥
 चिंता चित्तमां चटकेजी ॥ नं० ॥ विरह अगनि जिम नट
 केजी ॥ नं० ॥ प्राण कंठमां अटकेजी ॥ नं० ॥ आज
 प्रजातें कर मेलावो, हुउं हतो एह साथ ॥ नं० ॥
 ॥ १४ ॥ करवा चोरी निकस्योजी ॥ नं० ॥ गयो नेहनो
 तरस्योजी ॥ नं० ॥ मुज संगें नवि विलस्योजी ॥ नं० ॥
 हवे विरहो मुज विकस्योजी ॥ नं० ॥ चंदन लिपी

आनिगन हुं हूं, लो व्यापे तुज बुद्धि ॥ क० ॥ १५ ॥
 मैं निसुणो तसु वाणीजी ॥ नं० ॥ मनमां करुणा व्या
 णीजी ॥ नं० ॥ कसुं आयो सुण खाणीजी ॥
 नं० ॥ सुज खापे चढी प्राणीजी ॥ नं० ॥ जिम जा
 ऐ तिम कर हुं एहनें, मेव्यो में ए योग ॥ में० ॥ १५ ॥
 रणीयी ते कूदीजी ॥ नं० ॥ चरण देई सुण गूं
 जीजी ॥ नं० ॥ लेपे शचनी बुंदोजी ॥ नं० ॥ आनि
 जे दग मूंदीजी ॥ नं० ॥ कंठालिगन करतां मृतकें, लो
 धी नासा तोहि ॥ ध० ॥ १५ ॥ घणुं हुती अनुरागी
 जी ॥ नं० ॥ पण नाकें कर दागीजी ॥ नं० ॥ मरती
 पाठी जागीजी ॥ नं० ॥ गाढी रोवा लागीजी ॥ नं० ॥
 ॥ ताणे बूटी रह्यो शवमुखमां, नाक तणा अग्रजाग
 ॥ ध० ॥ १५ ॥ जोते रामत खासीजी ॥ नं० ॥ आ
 ॥ मुखें हांसीजी ॥ नं० ॥ तव नव कोष प्रकाशीजी
 नं० ॥ बोव्यो मृतक वकाशीजी ॥ नं० ॥ कांइ ह
 हुं इणे बड सुज ज्यौं, बंधाइश निशि काल ॥ जो०
 १५ ॥ वचन सुणो हुं नडक्योजी ॥ नं० ॥ शोक
 ॥ नर खडक्योजी ॥ नं० ॥ चिंतायी चित्त तडक्यो
 ॥ नं० ॥ हृदययकी जय धडक्योजी ॥ नं० ॥ दै
 योगें शव इम बोव्यो, हैहै करगुं केम ॥ व० ॥ २० ॥

नकटो मरती तितरेंजी ॥ नं० ॥ मुज खांधायी उत
 रेंजी ॥ नं० ॥ कहेवा लागी ईतरेंजी ॥ नं० ॥ किए न
 गरें तुं विचरेजी ॥ नं० ॥ नाम आनादिक में ते आ
 गें, जांखुं सघलुं साच ॥ नं० ॥ २१ ॥ मुज ऊपर
 विश्वासीजी ॥ नं० ॥ बोली ते उछासीजी ॥ नं० ॥
 सुणो कुमर सुविजासीजी ॥ नं० ॥ मुज नासा रुज
 सीजी ॥ नं० ॥ तव हुं पीउनुं इव्य गुफामां, देख
 डीश तुम आय ॥ मु० ॥ २२ ॥ इम कही ते घ
 चालीजी ॥ नं० ॥ हुं चढीउं वड मालीजी ॥ नं० ॥
 ठोडयो चोर संजालीजी ॥ नं० ॥ नाख्यो नीचो न
 लीजी ॥ नं० ॥ उतरि जोउं तो तिण साखें, बांध्य
 तिमहीज दीठ ॥ इ० ॥ २३ ॥ में जाण्यो ततकाल
 जी ॥ नं० ॥ साधक देवी चालाजी ॥ नं० ॥ ठोड
 मन ठकचालाजी ॥ नं० ॥ फिरि चढीयो वड माल
 जी ॥ नं० ॥ बंधन ठोडी केश ग्रहीनें, ऊतरियो व
 ली हेव ॥ में० ॥ २४ ॥ खंध चढावी लीधुंजी ॥ नं०
 ॥ अहत शब परसीधुंजी ॥ नं० ॥ जई योगीनें दी
 जी ॥ नं० ॥ इम पर कारज कीधुंजी ॥ नं० ॥ ब्रिज
 खंमें ढाल ए ठही, कांतें कही रस रेल ॥ खं० ॥ २५

॥ बोद्धा ॥

॥ चरित्र सुणी चित्तमां चम्पा, नूपादिक जन नूर ॥
 अद्भुत नय आनंद दुःख, हास्य सोग आपूर ॥ १ ॥
 बली विगत महबल कहे, मृतक तेह नवराइ ॥ चं
 दन रस चर्चित करी, थाप्युं मंमज वाइ ॥ २ ॥ अ
 प्रिकुंम दीवा चिहुं, राख्यो साधक पाल ॥ पद्मासन
 वेसी जप्यो, मंत्र तिणें ततकाल ॥ ३ ॥ मृतक तुरत
 नन वलले, पडे न-पावक कुंम ॥ खिन्न थयो जप
 ध्यानथी, साधक चिंता मंम ॥ ४ ॥ तेहवे शव गय
 णांगणें, उडघो करतो हास ॥ अवलंब्यो तिमहिज
 जई, बडशाखा अचकाश ॥ ५ ॥ चूको कां एक ध्या
 नमां, तेणें न सीधो मंत्र ॥ साधेशुं फिरि आवती, रा
 तें करीशुं तंत्र ॥ ६ ॥ तुळू वलें साधन तणी, थार्शें
 वहेली तिह ॥ रहो सुजग योगी कहे, उपगरवानी
 बुद्ध ॥ ७ ॥ वचन प्रमाणी हुं रह्यो, थई उपसाधक
 पास ॥ योगी मरतो मुजनें, वोढ्यो एम प्रकाश ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ न्हानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ उपसाधक जो तुं थयो रे, तो सवि याशे काम
 ॥ नंदन रायना रे ॥ पण चोळो मुज चित्तमां रे, ए
 हयो एक इण वाम ॥ नं० ॥ १ ॥ मुज संगें जो

शो रे, तुजने नृप जण वृंद ॥ नं० ॥ तो जई कहे
 शो जोलव्यो रे, अवधूतें तुम नंद ॥ नं० ॥ १ ॥ प्रा
 ण पियाणुं माहरे रे, होशे अचिंत्युं आय ॥ नं० ॥
 तेमाटे तुम फेरवुं रे, कहोतो रूप बनाय ॥ नं० ॥ ३ ॥
 जाशो मां मुज पासथी रे, लखमीपुंज अनेथ ॥
 नं० ॥ ४ ॥ इंस धारी मुखमां ठवी रे, कथन ग्रह्युं में तेथ ॥
 नं० ॥ ५ ॥ ताममूली घसी योगीयें रे, मंत्री तिल
 क मुज कीध ॥ नं० ॥ तास प्रनावें हुं थयो रे, पन्नग
 विष आवीध ॥ नं० ॥ ६ ॥ सूकी मुज गिरि कंदरें रे,
 आप गयो कोइ काम ॥ नं० ॥ पवन नखी सुखमां रहुं
 रे, ठानो बिलने ठाम ॥ नं० ॥ ७ ॥ गिरिथल जोतां
 गारुडी रे, आव्या मुजनें हेर ॥ नं० ॥ मंत्र प्रयोगें व
 श करी रे, घटमां घाढ्यो घेर ॥ नं० ॥ ८ ॥ बद्ध सु
 वनमां सूकीयो रे, कुंज करावी धीज ॥ नं० ॥ तुम
 आदेशों जे नरें रे, काढ्यो हुं विण खीज ॥ नं० ॥ ९
 ॥ तेहने तुरतज उजखी रे, काढी मुखथी हार ॥ नं०
 ॥ कंठें धख्यो तेहथी हुवो रे, ते नारी अवतार ॥ नं० ॥
 ॥ १० ॥ आराधी गिरि कंदरें रे, सूक्यो पाठो नाग ॥
 ॥ नं० ॥ इत्यादिक बीती कथा रे, अइ तुम प्रत्यक्ष
 माग ॥ नं० ॥ ११ ॥ नृप कहे ते किम दूउ रे, जो

ता नारी सांग ॥ नं० ॥ महवज नाखे तातने रे, शेष
 कथा एकांग ॥ नं० ॥ २१ ॥ जाता नारी पाठले रे, गु
 टिका तिलक रचेय ॥ नं० ॥ नारी नर रूपे करी रे,
 मुज बस्त्रादिक देय ॥ नं० ॥ २२ ॥ ते फणिधर हुं क
 र ग्रहो रे, धीज समय इणो बाल ॥ नं० ॥ नाज ति
 लक चाट्युं चढी रे, में एहतुं ततकाल ॥ नं० ॥ २३ ॥
 नर फिटी नारी हुइ रे, ए परमारथ वात ॥ नं० ॥ नू
 प प्रमुख सहु रोजीया रे, सुणि अजुत अवदात ॥
 ॥ नं० ॥ २४ ॥ नूप कहे में आच्युं रे, थणघटतुं प्र
 तिकूल ॥ नं० ॥ लोक कहे न मिटे लिख्युं रे, जे सर
 जित विधि मूल ॥ नं० ॥ २५ ॥ राणी मजयाने कहे
 रे, बेसारी वत्संग ॥ नं० ॥ कां न प्रकाश्यो आतमा रे,
 वत्से ते दुःख संग ॥ नं० ॥ २६ ॥ अथवा ते जा
 एयुं कयुं रे, वात न खाती पाड ॥ नं० ॥ विण अवस
 र जे नाखिये रे, न चढे तेह सिराड ॥ नं० ॥ २७ ॥
 दुःखमां मौन धरी रही रे, नाखि न एका टोक ॥ नं० ॥
 ए विरतंत कही जनो रे, मानत नहिं को लोक ॥
 ॥ नं० ॥ २८ ॥ रुहुं देवे कयुं दशे रे, पाम्यां दुःखतो
 मार ॥ नं० ॥ अम गुनहो खमजो हवे रे, सतियां कु
 न शणगार ॥ नं० ॥ २९ ॥ इम कहेती नृपनी

रे, जे जीवितनी आथ ॥ नं० ॥ आनूपण मणि ते
हसी रे, आपे मलया हाथ ॥ नं० ॥ २० ॥ त्रीजे खं
में सातमी रे, ए थई अनुपम ढाल ॥ नं० ॥ कांति कहे
सुणतां सदा रे, लहियें मंगल माल ॥ नं० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तात कहे विषधर पणे, रहेतां शैल अलंब ॥ का
रण गुं गुं अनुनव्यां, कहीयें ते अविलंब ॥ १ ॥ पव
न नखत गिरि कंदरें, निर्गत हुउं दिनेश ॥ रजनी स
मय साधक धसी, आव्यो मुज उद्देश ॥ २ ॥ दिनक
र तरुना दुग्धथी, घस्युं जाल मुज तेण ॥ देखी मूल
सरूप दृग, बोलाव्यो नेहेण ॥ ३ ॥ आवो कुमर क
ला निजा, करीयें मंत्र विधान ॥ इम कही पावक कुं
म तट, लाव्यो दे सनमान ॥ ४ ॥ साधक वचनैं व
डथकी, आणी दीउं शब फेरि ॥ बेगो जपवा तेह तव,
हुं पण बेगो घेरि ॥ ५ ॥

॥ ढाल आवमी ॥ हरिहां सुझानी

साहेव मेरा वे ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम जाप जपे ते योगी, आहूति ये अवसान ॥
तिम तिम शब कपडी पडे, तडफडतुं रोष निदान ॥ ह
ठीली योगिणी आई वे, अरिहां रीस नराई वे ॥ १ ॥

॥ ६० ॥ आधी रातिमां गगन विचार्ले, बागां नमरू
 माक ॥ वीर बावन आगें चले, पाडंता पोठी हाक
 ॥ ६० ॥ १ ॥ अन्नचकी उडूनट उतरती, शक्ति क
 हे रे धीठ ॥ मृतक अणुद्ध आणी किस्सुं द्रुं, तेढी कां
 नूपीठ ॥ ६० ॥ २ ॥ इम कहेती योगीनें साही, नाखे
 अगतिनें कुंम ॥ नागपाशने बंधने मुज, वे कर बांध्या
 प्रचंम ॥ ६० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप कुमर तेमाटे, मारी
 ले कुण पाप ॥ इम कहेती नन मारगें, विहुं पग
 यही कढी आप ॥ ६० ॥ ५ ॥ वे शाखा विच हुं प
 गं नीडी, वंचा पग शिर हेठ ॥ टांगी मुजनें ए वडे,
 उढी गई लेती कुजेठ ॥ ६० ॥ ६ ॥ शव ते तिमहिज
 उढी तिहांपी, वलगुं गुंमाले आय ॥ पुरलोकें जोयुं
 चली, तिहां पाठी कोट फिराय ॥ ६० ॥ ७ ॥ लोक
 कहे दीसे वे बाधु तो, किम अणुचि ए कीध ॥ नृप कहे
 मुखमां एहनें, नासा पल होशे कुणुद्ध ॥ ६० ॥ ८ ॥
 लोक कहे इम कहिजतां राजा, जोवरावे जण पास ॥
 दीठी वलगी दांतमां, नासा तिण आयो विसास
 ॥ ६० ॥ ९ ॥ एमें साधकनें न जणाव्युं, कुमर करे इ
 म खेद ॥ नूप कहे जवितव्यनां, मेटीजे केम उमेद
 ॥ ६० ॥ १० ॥ नूप कहे केम करथी नूटघा, बांध्या वि

षधर पाश ॥ सुत कहे तेहनुं पुंठडुं, मुज मुखमां आ
 व्युं उकास ॥ ह० ॥ ११ ॥ क्रोध नरी चाव्युं में तेहथी,
 पीडयो पन्नग जोर ॥ नर्म थई हेमो पडयो, न चढ्युं विष
 मंत्रथी घोर ॥ ह० ॥ १२ ॥ दोय पहोर रयणीना काढया,
 दुःखमां में विलजात ॥ संकट सहु टलियां हवे, मलतां
 क्रम योगें तात ॥ ह० ॥ १३ ॥ वचन कह्युं सुरशक्ति
 मृतकें, ते मलियुं प्रत्यक्ष ॥ मुज विरतंत कह्यो सवे, तु
 म आगल पूरी पक्ष ॥ ह० ॥ १४ ॥ लोक प्रशंसे शिर
 धुणंतां, अहो हो अतुल बल वीर ॥ थोडा काल माहें
 घणी, नल सांसयो पीड शरीर ॥ ह० ॥ १५ ॥ नावे वचन
 पथ मन नवि मावे, कहेतां पण जे वात ॥ ते संकट
 जलराशिनो, तारु एक तुंहिज तात ॥ ह० ॥ १६ ॥ अ
 हो साहस निर्णय पण माया, बुद्धि महोद्यम खास ॥
 उपगारक करुणापणुं, दृढता मति पुण्य प्रकाश ॥ ह०
 ॥ १७ ॥ नारि लही लक्षण लाखीणी, मलियो अ
 मनें वेग ॥ लोक अनेक करे तिहां, इम वर्णन गुणमति
 जेग ॥ ह० ॥ १८ ॥ नूप कहे नंदन मंमल ते, देखाडो
 ठे क्यांहिं ॥ कुमर नृपतिं जण विंटीउं, देखाडे जईने
 त्यांहिं ॥ ह० ॥ १९ ॥ हरखें लोक मय्या उत्कर्षें, नि
 रखे पावक कुंम ॥ सोवन पुरिसो तिहां तिणें, दीगो

जलहलतो दंस ॥ ह० ॥ २० ॥ जेयां पण निशिमां
 हें वाधे, शीश विना जस थंग ॥ पुरसो तेह कढावीने,
 जंमार धखो नृप चंग ॥ ह० ॥ २१ ॥ सकुटुंबो निज
 मंदिर आव्यो, रंग नखो नर नेत ॥ दस दिन रंग व
 धामणां, वरताव्यां मंगल हेत ॥ ह० ॥ २२ ॥ त्रोजा
 खंमनी आवमी ढालें, जांग्या विरह वियोग ॥ कांति
 विजय कहे पुण्यथी, लहियें मनवंतित जोग ॥ ह० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नगर वन शोधतो, मलयकेतु मतिवंत ॥ पुहवी
 गाण नरिंदन, वेगें आवी मिलंत ॥ १ ॥ वात प्रका
 शी विगतथी, वर कन्यानी एण ॥ जगिनीपति जगिनी
 बिडुं, मेलवियां नृपतेण ॥ २ ॥ कुशल प्रश्न पूर्वक सद्गु,
 हरखित वेगं गाण ॥ वरकन्यायें आपणुं, दारुणुं चरि
 त्र वखाण ॥ ३ ॥ मलयकेतु शिर धूणतो, पामे मन
 थचरिळा ॥ नवली यार्ते केहनूं, चित्त न चित्र जरिळा
 ॥ ४ ॥ गोष्टि महारस सागरें, करता हर्षेण केलि ॥
 नूख तृषा निझा प्रमुख, न गिणे रत्तनें खेलि ॥ ५ ॥
 मळण जोजन वस्त्रथी, सत्काखो नृपनंद ॥ वांघ्यो
 वेहेनी नेदतो, रदे तिहां स्वधंद ॥ ६ ॥ केताईरु दि

न त्यां रही, मागी नृप आदेश ॥ जननी जनक वधाव
वा, करे प्रयाणुं देश ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ घरे आवोजी आंबो मोरीउ ॥ ए देशी ॥

॥ मलय कुमरने नृप कहे, संप्रेडण मन न वहंत ॥
गुणवंताजी कुमर कलानिला ॥ तोपण कहेवा व

धामणी, पउ धारो पुरि भंतिवंत ॥ गुण ॥ १ ॥ प्रीति

लता सिंची रसें, पहेलांथी वधारी जेह ॥ सफज हूई

तुम आवतां, पोता वट राखी अढेह ॥ गुण ॥ २ ॥

वीरधवलनें मुज वीनति, कहेजो करी कोडि प्रणाम

॥ मुज ऊपर हित आदरी, गणजो लघु दास समान

॥ गुण ॥ ३ ॥ महबलनें मलया प्रत्ये, पोहोतो आ प्र

ढण काज ॥ देखी दंपती कठियां, बोलावे वचनें स

जाज ॥ गुण ॥ ४ ॥ महबल कहे मुज ससुरनें, कहे

जो जई कोडि सलाम ॥ चोर थयो हुं रावलो, खम

जो ते गुनह प्रकाम ॥ गुण ॥ ५ ॥ विण शीखें तुम

नंदनी, लेई आव्यो परनो अधीन ॥ उपजाव्युं डःख

आकरुं, ते करज्यो मां ई वात विजीन ॥ गुण ॥ ६ ॥ मल

य नणी मलया कहे, बांधव मुज वात नितार ॥ व

नवशो माय तातनें, मुंज आगमनादि प्रकार ॥ गुण

॥ ७ ॥ चिंता न करशो चित्तमां, मुज सुख शाता

आहि ॥ चतुर तुमै पण चालती, सावधान रहेजो रा
 हि ॥ गु० ॥ ७ ॥ चवन सङ्गुना चित्त धरी, गलगल
 तो थाय विदाय ॥ ठपपुर लगे आमंवरै, महीपति
 पोहोचावा जाय ॥ गु० ॥ ८ ॥ केटले दिन चंडावती, पो
 होच्यो कहे सकल वृत्तांत ॥ खबर लही माता पिता,
 पामे तिहा हर्ष अनंत ॥ गु० ॥ ९ ॥ महबल मलया
 तंगमें, विजसंते निवहे काल ॥ एक समय वेठा बि
 न्है, उंचा मंदिरने जाल ॥ गु० ॥ १० ॥ नाक विट्ठ
 णी नायिका, आवी एक मंदिर बार ॥ महबल देखी
 ने कहे, एक पश्यतहरनी नारि ॥ गु० ॥ ११ ॥ थिर
 मोटें तव उंजखी, प्रमदायें ते ठपमात ॥ प्रीतम क
 नकवती इहां, दीसे ठे आवी कुजात ॥ गु० ॥ १२ ॥
 गुह्य न कहेशे लाजती, जो उंजखेशे मुज देख ॥ ते
 हथी हुं पडवें रहुं, पूठो अवदात विशेष ॥ गु० ॥ १३ ॥
 इम कहैती सुवर्णंतरै, वेठी जई सुणवा विगत ॥ क
 नकवती आवी करे, नृप नंदनने प्रणिपत्त ॥ गु० ॥ १४ ॥
 आदर ये पूठया थकी, कहेशे इहां आप चरित ॥ नवमी
 त्रीजा खंमनी, कांतें कही ढाल पवित ॥ गु० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पनणे सा चंडावती, नगरीपति उदाम ॥ ५ ॥

वल तस हुं प्रिया, कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ मोप
 रि कोप्यो महीपति, एक दिवस विण काज ॥ तव हुं
 रूठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मव्यो वि
 देशी मुज्जने, तरुणो एक ठयल्ल ॥ तस संकेत सुरि
 गृहें, मली राति हुं हल्ल ॥ ३ ॥ देखाडी नय चोरनो,
 वस्त्रादिक मुज लीध ॥ मुत्तावलीनें कंचुकी, आप हथु
 तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेष जणस साथें मुने, घाली पेटी
 मांहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीउं यंत्र नटकांहिं ॥
 ५ ॥ संकेती बीजो तिहां, आव्यो धूरत दोडी ॥
 बिहुं उपाडी मंजूषडी, नाखी नदीयें रोडी ॥ ६ ॥ अ
 वलंबन विण पवनथी, खाती जोल अठेह ॥ गुहिर
 नदी गोला जलें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क
 हे कियो कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहने
 उजखे, जो उजा होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण
 किरयुं, हता अजाण्या धूत ॥ निक्कारण वैरी इत्या, गया
 करी करतूत ॥ ९ ॥ हुमर कहे हो धूरतें, कीधो अनुचित
 खेल ॥ शीश धूणंतो आगलें, पूठे कथा उकेल ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ वेडले नार घणो ठे

राज, वातां केम करो ठो ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूरें ते तरती पेटी, प्रात समय इहां आवी ॥

यह धनजय जवन समीप, गोला कैंठ ठावी ॥ १ ॥
 साची बात कहा ठो राज, जे बीती छे अममा ॥ तिलन
 र जूठ कहु नहि मोहन, मलताना संगममा ॥ सा
 ची ॥ ए आकणी ॥ लोनसार चोरें जलमांघी, काठी
 नार गरिछी ॥ तालुं चांली जोतां मादे, वस्त्र सहित
 हुं दीठी ॥ सा० ॥ २ ॥ शैल अलंब विषम कंदरमा,
 छेई गयो मुज ठाने ॥ इव्य सहित मंदिर पोतानुं, दे
 खाड्यु बहुमाने ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसं मीजी मुज
 नीजी, तस संगे मन मोदें ॥ पोहोर दोय रही तिहां
 थी इणें पुर, आव्यो फाज विनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पा
 प विशाथी नूपें साही, सांजे वडले बांध्यो ॥ पर्वत शि
 खर रही में जोतां, मोहन विडंबन सांध्यो ॥ सा० ॥
 ५ ॥ राति समय गई पासें रहती, तिहां मली हुं
 तुमने ॥ आगल बात संकल जाणो ठो, ए बीत्युं छे
 अमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आवो इव्य घणुं देखाहुं, ईम
 सुणी महाबल कते ॥ कहुं तातने तात कुमरखुं, चा
 ल्यो ह्यां तस पूठें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु हती जे जे
 हती तेहनें, दीधी सर्व संचाली ॥ शेष इव्य छेइ नर
 पति नगरें, आव्यो पाठो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन
 थापी सत्कारी कनका, आवे कुमर निवासें ॥ जखन

पुज सहित मलया त्यां, देखी बेंठी पासैं ॥ सा० ॥
 चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवन्ती ॥
 पथकी निकशी किम परणी, ए मुज वैरणी हुंती
 ॥ सा० ॥ १० ॥ फरके अधर शके नहिं पूठी, र
 वदन निरखन्ती ॥ रखे चरित्र मुज चावां पाडे, म
 मां इम बीहन्ती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लखमीपुंज मन
 हर महारो, लीधो तो जिण धूतें ॥ ए पापणीने अ
 णी दीधो, दीसे तेण कुपूतें ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणु
 हीं के लीधो इहुंणे, खेडी नवलो फंदो ॥ हवणां तो
 हिज मुज वैरी, कीधो इम दिल मंदो ॥ सा० ॥ १३ ॥
 कहे मलया माता ठो रूडां, एकाकी किम आव्यां ॥ कु
 ल न दीसे नाक जणी कां, के कियो कर्मैं संताव्यां
 ॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर जणे पदमिणी मत पूठो,
 हेछुं हुं तुम आगें ॥ दिन न स्वमे कारज ठे बहुलां,
 हेतां वेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटी
 आप्यो, शूने मंदिर पासैं ॥ मुख मीठी हियडामां
 ठी, वासी तिण आवासैं ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दि
 सैं मलया उपकंठें, आवे कनका रंगें ॥ अई विशव
 सिणी विखवासिणी ते, नव नव कथा प्रसंगें ॥ सा०
 ॥ १७ ॥ ठिड् निहाले मलया केरां, शोक समी नि

दीप्त ॥ सुख जोगवतां मलय एहवे, धरे गर्न सुजगी
 श ॥ सा० ॥ १०॥ ऊपजतां मोहोला पीठ हेजे, पूरे
 नव नव जाते ॥ प्रसव समय आसन्न दूत तव, दीपे
 राणी गाते ॥ सा० ॥ ११॥ त्रीजे खंमे चावी द्रशमी,
 ढाल महारस पूरी ॥ नांखी कांतिविजय बुध नेहें, नि
 रूपम राग सनूरी ॥ सा० ॥ १२॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर महबल प्रत्ये, दीपे तात आदेश ॥
 वत्स विकट नट साजसुं, करो चढाई वेश ॥ १॥ नामें
 क्रूर सज्यो गढें, पछीनायक क्रूर ॥ करे उपद्रव देश
 मां, ते निर्झाटो दूर ॥ २॥ सजा समहें दह ते, तात
 वचन परमाण ॥ मलयानें पूठण नणी, गयो छुवन
 गुणखाण ॥ ३॥ चिंताकुल प्रमदा कहे, हुं आवीश
 पियु साथ ॥ दूर रहीने किम चहुं, विपमविरहनें हाथ
 ॥ ४॥ कुमर कहे अवसर नहिं, रहो करी दृढ चि
 त्त ॥ जानचित्त गुटिका कन्हे, राखो गुण संजुत ॥ ५॥
 जाणो तुं गुण एहना, करजे खरां यतन ॥ ते आपी
 पनणे वली, महबल विरह विखिन ॥ ६॥ पदमिणी
 तो पांखे हिये, आवे विरह नरेय ॥ गल्या दिवसमां
 ते नणी, आवीश कार्य करेय ॥ ७॥ तात वचन

अवगणुं, तो लागे कुललाज ॥ दीउ अनुज्ञा सुंदरी,
जिम साधुं जइ काज ॥ ७ ॥ नयणें आंसू सींचती, ना
खे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, बोली ए
म उदास ॥ ८ ॥ लेइ अनुमति ऊणो मनें, बांधी तरकस
वेग ॥ पाठी मीटें निरखतो, चढ्यो नवनथी वेग ॥ ९ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ अब घर आवो रे
रंगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें मीठी रे धीठी, कपट महा विषवे
लि ॥ अहनिशि जोवे रे ठज मलया तणुं ॥ अनुया
थी वेसे रमे रे धीठी, वात करे मन मेल ॥ अद
नि० ॥ १ ॥ एकलडी नवनें रही रे धीठी, मुज नाग्यें
ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इम ठज केलवी रे धीठी,
आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ वेठी मुख करमां
ठवी रे गोरी, करती मन उदवेग ॥ प्रमदा निहाली रे
ऊरते लोयणां ॥ वेसे पासें आवीनें रे धीठी, पूठे डाल
धरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मेलवी रे
धीठी, रीजावे रति आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमावे
रंगमां रे गोरी, कनकाळुं रसमाणि ॥ नवनव जांतें रे
करती खेजणां ॥ ४ ॥ कहे मलया माता इहां रे जोली,
रातें करो विश्राम ॥ जिम मुज नावे रे मनमां जो

जणा ॥ पयमां साकर जेलवी रे धीवी, चितवती म
 न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५ ॥
 दिन जिम रजनी तीर्गमे रे गोरी, कायो दिनकर प्रा
 त ॥ तव ईम बोली रे करती चालणां ॥ तुज पूर्वे
 एक राहूती रे गोरी, लागी ठे कम जात ॥ नव नव
 जातें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीवी नर रातमां
 रे गोरी, काढी दूरें खेधि ॥ नव ० ॥ जो तुं मुजनें
 आदिशे रे गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
 नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
 थई रे गोरी, टालुं एहनुं ताम ॥ जिम तुज नावे ० ॥
 मलया मन जोलापणे रे गोरी, माने साखुं ताम ॥
 तव ईम बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत
 जलाववी रे गोरी, जे शीखववुं तुळ ॥ तव ० ॥
 मया करी मुज ऊपरें रे जोली, करो वचित जे
 तुळ ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ९ ॥
 नगरीमां तेहवे समे रे धीवी, देखी मरगी ईति ॥ नव ० ॥
 नूप कन्हे कनका गई रे धीवी, तेहने देइ प्रतीति ॥
 रहस्य जहीनें रे कहे ईम बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
 गें एक वारता रे सामी, कहेवी ठे धरो कान ॥ रह ० ॥
 तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो ये जोवित -

॥ रह० ॥ ११ ॥ अजय हजो कहे राजीयो रे जोली,
 कहेतां न कर संकोच ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चो
 लणां ॥ जगमांहे तेहिज वालहा रे जोली, देखाडे
 जो चोच ॥ जिम० ॥ १२ ॥ तेह कहे ए राहसी
 रे सामी, तुम बहूअर दीसंत ॥ नव० ॥ मुज वचनें
 नवि वीससो रे सामी, तो देखाडुं तंत ॥ रह० ॥
 ॥ १३ ॥ रयणीमां रही वेगला रे सामी, जो जो आ
 ज चरित्र ॥ नव० ॥ रातें थई ए राहसी रे सामी,
 साधे राहस मंत्र ॥ नव० ॥ १४ ॥ अंगणमां नाचे
 हसे रे सामी, रमे नमे बलगंत ॥ नव० ॥ दिसिदि
 सि नयणां फेरवे रे सामी, फेंकारी ज्युं रटंत ॥ नव० ॥
 ॥ १५ ॥ फेंकारीथी उहले रे सामी, पुरमां मरगी क
 छ ॥ ग्रहशो जो जाई निशें रे सामी, करशो कांई अ
 निष्ट ॥ नव० ॥ १६ ॥ प्रातसमय सुनटो कन्हें रे सा
 मी, करजो एहनें बंध ॥ जिम तुज नावे रे मनमां
 बोलणां ॥ पहेलां पण नृपनें हतो रे सामी, पूठवो
 कष्ट निबंध ॥ रह० ॥ १७ ॥ एहवामां एहथी सुणुं रे
 सामी, कारण ए असराज ॥ नव० ॥ तेहथी मन मेळुं
 ययुं रे सामी, चित्त चक्यो नृपाल ॥ नृपति विचारे रे
 करतो चोलणा ॥ १८ ॥ निर्मल मुज कुल लोकमां रे

सामी, घात्रो हे सकलंक ॥ नृपति० ॥ लांक कलंक
 न लागशो रे जोली, लागजो विपहर मक ॥ नृप० ॥
 ॥ १९ ॥ रातें सर्व जणायशो रे जोली, बाहिर न जां
 खे चात ॥ तव इम बोली रे करती चालणा ॥ एव
 कथाहुं पारकी रे सामी, एहवी नही मुज धात ॥
 ॥ २० ॥ २० ॥ सतकारी नूपें तिका रे धीमी,
 पोहोती छुवन विचाल ॥ अहोनिशि जोती रे० ॥ त्री
 जे खंमैं इग्यारमी रे मीमी, कातें कही ए ढाल ॥ नव
 नव जातें रे करती खेलणा ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्षसनी विनता तणो, रजनीमां सजी साज ॥
 आची मलयानें कहे, फनका कपट जिहाज ॥ १ ॥
 पुत्री तुं घरमां रहे, हुंतो बाहिर जाय ॥ हणी निशा
 घर नारिनें, आवीश वहेली धाय ॥ २ ॥ शिक्षा देई
 बाहिर गई, कूड चरितनी कूप ॥ वस्त्र उतारे अंगथी,
 फरवा रूप विरूप ॥ ३ ॥ विविध रंग वरणें करी, रंगे
 थाप शरीर ॥ अहे उमाढी वदनमां, चलचलती वे
 पीर ॥ ४ ॥ रुंममाल कंठें धरे, कर साहे करयाल ॥
 प्रत्यक्ष रूपें राक्षसी, थई खेले रीशाल ॥ ५ ॥

ठाने रातिमां, आव्यो जोवा नूप ॥ अपर समीप ग
हैं चढ्यो, निरखे डुष्ट सरूप ॥ ६ ॥

॥ ठाल वारसी ॥ होजी जुंवे जुंवे वर
सालो मेह, लशकर आयो दरिया
पाररो हो जाल ॥ ए देशी ॥

॥ होजी कामिणि करती नाच, देखे नृप ठाने रही
होजाल ॥ होजी दीसे ठे ते साच, जे सुंजनें कनका
यें कही होजाल ॥ ३ ॥ होजी नृप चिंते चित्त एम,
कुजने डुर्यश ए किश्युं होजाल ॥ होजी एह्यी नही
जण खेम, सुजने पण विरुवं किश्युं होजाल ॥ ४ ॥
होजी करवी न पढे कचाट, पहेजी जो समजावीये
होजाल ॥ होजी तेह जणी वनमांहिं, एहने हवण
दणावीये होजाल ॥ ५ ॥ होजी इम कहेतो नरनाथ
लोपानलखुं परजव्यो होजाल ॥ होजी तेडी सेवक
जाच, गुप्त पणें जणे नांजव्यो होजाल ॥ ६ ॥ होजी
सुज सुतरमणी एह, पापिणी मजया सुंदरी होज
ज ॥ होजी रथ चाढी वन ठेह, गुप्त पणें दणज
परी होजाल ॥ ७ ॥ होजी करतां रातें काम, जो
न जाणें बातडी होजाल ॥ होजी इम सुणी सुनट
राम, उठ्या नीडी गातडी होजाल ॥ ८ ॥ होजी क

लीधे करवाल, आवत सुनट निहालीने होलाल ॥
 होजी जिहा ने मलया वाल, कनका त्या गई चाली
 ने होलाल ॥ ७ ॥ होजी थरथरती विण सृज, जल
 फलती बोले इरुं होलाल ॥ होजी नृप नट हणवा
 मुज, आवे ने करवुं किरुं होलाल ॥ ८ ॥ होजी तुज
 पासं हुं आज, नृप आवेश विना रही होलाल ॥ होजी
 तेमाटे महाराज, मुज कपर रुठा सही होलाल ॥ ९ ॥
 होली क्याहिक मुजने त्रिपाड, जणनी मोट न ज्या प
 दे होलाल ॥ होजी मन माने तिहां गाड, हाथ रखे
 कोइनो अमे होलाल ॥ १० ॥ होजी मलयाने निर्देश,
 पेठी तेह मंजूपमां होलाल ॥ होजी रोती नागे वेश,
 वेसे मांहे एकैंगमां होलाल ॥ ११ ॥ होजी तुरतज
 ताळुं दीध, अनय करी राखी तिका होलाल ॥ होजी
 आव्या सुनट प्रसिद्ध, करता रगत कनीनिका होलाल
 ॥ १२ ॥ होजी दोठी मलया तेण, बेठी रूप स्वभाव
 ने होलाल ॥ होजी ते कहे मरथी एण, बदल्यो सांग
 जंटाकिनें होलाल ॥ १३ ॥ होजी फिटरे पापणी छ
 छ, जाणी तुं किम मारशे होलाल ॥ होजी लागी लो
 कां पुंठ, केटली सृष्टि संहारशे होलाल ॥ १४ ॥ होजी
 ईम कहीनें अही वाहिं, काढी रथ चाढी तिसें होला

ल ॥ होजी चाव्या अटवी राह, श्वापद जिहां वांका
 वसे होलाल ॥ १५ ॥ होजी करता अनादर इठ, दे
 खी मलया चिंतवे होलाल ॥ होजी दीसे कांइक अ
 निठ, इण सूर्जे माहारे हवे होलाल ॥ १६ ॥ होजी
 हणवुं के वनवास, सुसरें निश्चय आदिस्थो होलाल ॥
 होजी मुज अपराध प्रकाश, अणजाण्यो देख्यो कियो
 होलाल ॥ १७ ॥ होजी के मुज पूरव कर्म, उदित दु
 आं फल आपवा होलाल ॥ होजी नहींतो माग म
 र्म, बनी आवे किम एहवा होलाल ॥ १८ ॥ होजी
 कठिन थइ रे जीव, खमजे कीधां आपणां होलाल ॥
 होजी दारुण कर्म अतीव, बूटे नहीं चाख्या विनां हो
 लाल ॥ १९ ॥ होजी पूरव श्लोक संजारि, नणती
 नियति निहालिनें होलाल ॥ होजी मूकी वन संचार,
 आघुं पाहुं जालीनें होलाल ॥ २० ॥ होजी ठानी
 जनड पाहाड, विषम थलीमांहे धरी होलाल ॥ होजी
 प्रहसमे नीम निराड, आव्या जण नगरें फरी होलाल
 ॥ २१ ॥ होजी प्रणमी नृपना पाय, वात सयल तिहां
 कही होलाल ॥ होजी मलया मंदिर आय, नृपति
 महीर करे वली होलाल ॥ २२ ॥ होजी नाक रहित
 ते नारि, नृप जोवरावी मंदिरें होलाल ॥ होजी दीगी

नहि किण ठार, नूप नणे नावी खरी होलाल ॥ २३ ॥
 होजी त्रीजे खंमै रसाल, ढाल कही ए बारमी होला
 ल ॥ होजी कांति विजय सुविजास, सुणजो श्रोता
 उजमी होलाल ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे दिन केटले, जींती तेह किरांत ॥ ता
 त चरण आवी नम्यो, प्रिया विरह अकुलात ॥ १ ॥
 मलया नवने संचरे, त्यां नृप साही पाण ॥ वीतक च
 रित्र त्रिया तणा, कहे सकल सुविनाण ॥ २ ॥ कु
 मर निसासो नाखतो, वे कर घसतो आप ॥ गदगद
 कंठें कुंठ मन, करे एम उच्चाप ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ जटीमाणीनी देशी ॥

॥ नृपतिजी काई कीधुं हो डख कीधुं मलया वाल
 नें, हाहा नूलो कांहीं ॥ चित्तमां कां न विचाखो हो
 नवि धाखो अवसर आपणुं, प्रकृति पलटी प्रांहीं
 ॥ नू० ॥ १ ॥ मुज आगम लगें नारी हो नवि धारी
 कोमिनी धारीनें, कीधुं अनुचित कर्म ॥ नाला ज्युं चि
 त्त खटके हो अति नटके अग्निसमा थड, काम क
 खां विण मर्म ॥ नू० ॥ २ ॥ निर्नासा ते नारी हो
 ठज नारी दाव रमी गई, जाणुं एहनां मूल ॥ जे-

रावो किहां दीसे हो पूठीरों कारण मूलथी, एहना
 एह कुसल ॥ नू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो
 नृप वयणें श्याम पणुं धरी, मंद वचन कहे एम ॥
 जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां
 कहो हवे कीजें केम ॥ नू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृ
 प वयणां हो जल नयणां पूरण नाखतो, इम कहे
 हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी मुज
 प्रमदा प्रत्यें, साचुं सहि नरनाथ ॥ नू० ॥ ५ ॥ धू
 तारीनें वचणे हो कुल रयणें लंठन चाढीउं, गोत्र उ
 मूढ्युं एण ॥ उलंजा इम देतो हो नृपनंदन पोहोतो
 मंदिरें, अति पीडयो विरहेण ॥ नू० ॥ ६ ॥ वल्लभ
 सुतनें पूर्वे हो नृप उठी आवे दूमणो, उघाडे घर ता
 ल ॥ इम कहे सुत में दीगी हो तुज ईती दयिता रा
 कूसी, रूपें करती चाल ॥ नू० ॥ ७ ॥ दोष नहिं को
 माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, दुई अपराधें दंभ ॥
 बाहली पण जे विणगी हो ते परगी दीजें ठेदीनें,
 बांहडली करी खंभ ॥ नू० ॥ ८ ॥ कुमलाणा कां म
 नमां हो मंदिरमां आवी आपणो, संजालो घर सा
 ॥ अधमथकी जणहासो हो घर आथ विणासो
 जाणीयें, उठा न सहे नार ॥ नू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

मासे नृपति हो शुं कहे मलया राक्षसी, पीठे जणने
 केम ॥ सुपरं तेह जणागे हो जो यागे दरिण जीव
 ता, चिते विरही एम ॥ नृप ॥ १० ॥ पय पाणीनो
 बहेरो हो यागे मत चहेरो राजिया, धाउ काई अधी
 र ॥ इम कहि जोया लागो हो जई वागो जिहां मं
 जुषडी, वषाडे बल वीर ॥ नृप ॥ ११ ॥ दीवी तिहां
 विण नासा हो वसासा छेती राक्षसी, रूपे कामिनी
 एक ॥ शुक्लणी दुःख नूखे हो तन लूखे दीन दया
 मणी, बस विदूणी ठेक ॥ नृप ॥ १२ ॥ विस्मय
 कारी नारी हो ते नारी चरित्र तिहालीनें, लोक रह्या
 थिरथंन ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीवी रीठी रा
 क्षसी, तेहिज एह सदन ॥ नृप ॥ १३ ॥ खांची बा
 हेर काढी हो तिहां ताढी आमी मारथी, आप चरित
 कहे तेह ॥ नृपे कोपे निर्जुंठी हो जणह थीकारें दूहवी,
 काढी वेशा ठेह ॥ नृप ॥ १४ ॥ शोकाकुल विरहाथी
 हो सुत हाथीनेहि पासीउ, बेगो मौन धरंत ॥ मरवा
 नें अनिलाखें हो नवि चाखे अशन सुहामणां, है है
 मोह डरंत ॥ नृप ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो
 दुःख थाणी जूरे सामटां, सचिव घणा अकुलाय ॥
 चिंता नागिणि नदीया हो पुरवासी पडीया संभ्रमे

सु० ॥ जो० ॥ सुखिणी दुःखिणी प्रायें रे हो सु० ॥ वींटी
 परिवारके किहां एकली हो सु० ॥ ६ ॥ जो० ॥ नरप
 ति तेडया तेह रेहो ॥ सु० ॥ वनमां जाणी सुनटें
 मूकी सुंदरी हो ॥ सु० ॥ जो० ॥ अजय बीडो सस
 नेह रेहो सु० ॥ आपीने पूठे मलया आशरी हो
 सु० ॥ ७ ॥ जो० ॥ कहो सेवक किणी रीत रेहो
 सु० ॥ माहरी आणाथी मलया क्यां ठवी हो सु० ॥
 ॥ जो० ॥ ते कहे सा जय जीतरे हो सु० ॥ रोतीने मू
 की विकटाटवी हो सु० ॥ ८ ॥ जो० ॥ निरखी एहव
 चिन्ह रेहो सु० ॥ अम मन जास्युं एहनें राक्षसी हो
 सु० ॥ जो० ॥ नूपतिमन निर्विन्न रेहो सु० ॥ कुणह
 व्यामोह्यो खेलें साहसी हो सु० ॥ ९ ॥ जो० ॥ ख
 हत्या महापाप रेहो सु० ॥ तिमही कुंण जेरो हत्य
 गाजनी हो सु० ॥ जो० ॥ नहीं हणीयें इहां आप
 हो सु० ॥ करणी ए नहीं ठे रूडा जाजनी हो सु०
 ॥ १० ॥ जो० ॥ खांतिगिरितटें ठेव रेहो सु० ॥ पडत
 आखडती जिम नावे वली हो सु० ॥ जो० ॥ एकलड
 स्वयमेव रेहो सु० ॥ मरजो रडवडती रखडती आफज
 हो सु० ॥ ११ ॥ जो० ॥ इम मन धारी वाल रेहो सु०
 रोती वनमांहे मूकी जीवती हो सु० ॥ जो० ॥ आव

नाखुं आल रहेहु सु० ॥ नयणी तुम आगे कही अ
 वती वती हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नागी मुजघी जे
 ह रहेहु सु० ॥ सुहदे ते करुणा रुढें संगही हो सु० ॥
 ॥ जो० ॥ विणगी मुज मति ठेह रे हो सु० ॥ त्रागी ते
 पैगी नह हीयडे वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृ
 प निवे इम आप रहेहु सु० ॥ जणें परशंते पुरजन
 देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिघल चित्त समाप रहेहु
 सु० ॥ वत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४ ॥
 ॥ जो० ॥ कुमर कहे तुज वयण रहेहु सु० ॥ मजियुं ते
 साहुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो वाला र
 यण रे हो सु० ॥ एहेलें खोयुं ते निज हाथांयकी
 हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खमैं ढाल रहेहु सु० ॥
 सुपरें ए नाखी रूढी चौदमी हो सु० ॥ जो० ॥ कांति
 वचन सुरसाज रे हो सु० ॥ सुणतानें लागे सरस सुधा
 समी हो सु० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर नणे मलया तणा, जनक जणी अवदात ॥ क
 हेवा चर चंडावती, पूरियें प्रेपो तात ॥ १ ॥ वीरधवल
 पण आगमी, करुं पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो
 पामीयें, तो मुज पुण्य प्रबोध ॥ २ ॥ करी

नूपें पुरुष, सूक्या चिहुंदिशि नूर ॥ निरखण
 तेह पण, देश देशंतर दूर ॥ ३ ॥ समजावी
 जनें, नूप जमाडे जाम ॥ कंठें उतरतां कवज,
 द्ये विश्राम ॥ ४ ॥ केते दिन निरखी धरा,
 पास ॥ आख्या नर कर जोडीनें, पनणे एम प्रकाश
 ॥ ढाल पंदरमी ॥ मंदनेसर मुख बोळ्यो त्रटकी ॥ ए

॥ सुण महीपति शुद्धि न पामी, फरि आख्या
 वि वामी हे ॥ ससनेही रे गोरी, दीठी नहीं मलय
 किहां ॥ देश नगर गढ मुंगर मोह्या, जलथल वट
 वरोह्या हे ॥ ससलूणी रे गोरी, दीठी ॥ १ ॥ पु
 पाटण संवाहण पाटें, दुर्घट विषमी वाटें हे ॥ स
 फरिया उद्गट अटवी घाटें, मलया जोवा मा
 हे ॥ स ॥ २ ॥ कुमर सुणी इम चिंता जुत्तो, वि
 मन दुःख खुत्तो हे ॥ स ॥ पूर्व महापातक मु
 विकस्यां, सुचरित संचय निकस्यां हे ॥ स ॥ ३
 निर्गमशुं किम दिन अतिजंवा, जोळ्यो दुःखनी पुं
 है ॥ स ॥ दूउ वियोग प्रियाशुं माहरे, वात न दी
 आरें हे ॥ स ॥ ४ ॥ हैहै शून्य महावन माहें, द
 खादर अवगाही हे ॥ स ॥ मुई हरो हईहुं आप
 ली, दयिता मुज सुगुणाली हे ॥ स ॥ ५ ॥ वन

कीर फिरती आथडती, किए कर चढ़ो रडती हे ॥
 ॥ स० ॥ के कोइ निर्दय आपदसाथें, कीधी दूगो नि
 ज हाथें हे ॥ स० ॥ ६ ॥ मुज विरहें नय जंगुर म
 हिला, सहेती संकट डहिला हे ॥ स० ॥ घूष टली
 बनहरणी सरखी, मरगो नूखी तरसी हे ॥ स० ॥
 ॥ ७ ॥ मुज साथें आवंती प्यारी, पापीपडे में थारी
 हे ॥ स० ॥ सुखमांहेथी दुःखमांहे नाखी, दीन वद
 न हरिणाखी हे ॥ स० ॥ ८ ॥ गोरी तणो विरहो उ
 च्छाटें, करवत थईनें काटे हे ॥ स० ॥ मुज हीश्रुं पड
 रथी कातुं, इंणी बेला नवि फाटुं हे ॥ स० ॥ ९ ॥ सुकु
 लिणी तुं चतुर चकोरी, ये दरिस्तण गुण गोरी हे ॥ स० ॥
 देई विगोहो थलवें जोरी, न करो प्रीत उगोरी हे ॥ स० ॥
 ॥ १० ॥ संजारी इम गुण संदोहो, विलवे कुमर स
 मोहो हे ॥ स० ॥ अणीथालां जालां ज्यों खटके, हि
 यडे विरहो जटके हे ॥ स० ॥ ११ ॥ मात पिता स
 मजावे लेखें, सुतने वचन विशेषें हे ॥ स० ॥ पण
 सुत थरति पड्यो नवि समजे, विपम विरहमां थलजें
 हे ॥ स० ॥ १२ ॥ वचन निमित्त तणुं चित्त धारी, कुंमर
 निरस्कण नारी हे ॥ स० ॥ ग्रही खडग ठानो जली जातें,
 निकस्यो माजिम रातें हे ॥ स० ॥ १३ ॥ दूज प्रजात त

नुज नवि दीसे, शुं कीधुं जगदीशें हे ॥ स० ॥ कुमर .
 जोवा दयिताने, इम कहे पीउ प्रमदानें हे ॥ स० ॥
 ॥ १४ ॥ लेहेगे आपद दुःख किम सहेंगे, पग पालो कि
 म वहेगे हे ॥ स० ॥ नूमि शयन करंगे किम वालो,
 नंदन अति सुकुमालो हे ॥ स० ॥ १५ ॥ वधू सहि
 त सुत सुखडुं जोस्यां, तहीयें कृतारथ होस्यां हे ॥
 ॥ स० ॥ मात पिता इम चिंता दाहें, दोहिले दिवस
 निवाहे हे ॥ स० ॥ १६ ॥ नूख गई सुख निशा य
 की, नृप नंदन एकाकी हे ॥ स० ॥ गामागर पुर क
 रत प्रवेशा, निरखे देश विदेशा हे ॥ स० ॥ १७ ॥ अ
 पंचासर पास प्रसादें, ज्ञान कथा संवादें हे ॥ स० ॥
 पन्नरमी मीठी रसनाला, पूरण कीधी ढाला हे ॥ स० ॥
 ॥ १८ ॥ पूरण त्रीजो खंम वखाण्यो, मलय चरि
 थी आण्यो हे ॥ स० ॥ मलया सरस कथा इम ज
 खी, कांति वचन श्रुत साखी हे ॥ स० ॥ १९ ॥

इति श्री ज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनि श्रीमलयसु
 रीचरित्रे पंढित श्री कांतिविजयगणिविरचिते प्राकृ
 प्रबंधे मलयसुंदरी श्वसुरकुंजतमागमनामा तृतीय
 खंमः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीवतुर्थखंम प्रारंभः ॥

॥ बोहा ॥

॥ स्वस्ति श्री मोहनजता, वान वधारण मेह ॥ जि
न सजुरु शारद तणा, नमुं चरण ससनेह ॥ १ ॥ सु
एतां मलयानी कथा, टले व्यथानी कोडि ॥ कहेतां
जस मन अन्यथा, वृथा तेह पशु जोडि ॥ २ ॥ म
लय कथा उचितारथा, करे व्यथानो ठेह ॥ कथे
विचें विकथान्यथा, वृथा यथा स स तेह ॥ ३ ॥ त्रीजो
खंम कह्यो इहां, सरस वचन रस कुंम ॥ ववाहें था
दर करी, कहेसुं चोथो खंम ॥ ४ ॥ हवे महाबल वा
जही, मूकी निशि वन ठोर ॥ कण कठिन थापद त
णा, सुषो शब्द अतिघोर ॥ ५ ॥ थरथरती मरती
हिये, जरती थांसू नयण ॥ थारडती पडती कहे,
विरहाजां ईम वयण ॥ ६ ॥

॥ डाल पहेली ॥ थम्मां मोरी थम्माहे, थम्मां
मोरी पाणीडां गईती तलाव दे, दे मारुटे
मेहेवासी मेरां ताणीया ॥ ए वेशो ॥

॥ थम्मां मोरी थम्मां दे, सुसरे न पूठयो मुज
को वंक दे, दे कोपेनें कजकजियो राणो मोपरें दे

॥ अम्मां० ॥ उवीनें कूडुं कांइ कलंक हे, हे अनेसुं
 अपमानें काढी वाहिरें हे ॥ १ ॥ अ० ॥ अटवी ए वि
 पमी दंभाकार हे, हे हियडलुं थरकावे नयणें देख
 तां हे ॥ अ० ॥ सिंहना इहां बहुला संचार हे, हे शू
 रानें नडकावे विरुध्या पेखतां हे ॥ २ ॥ अ० ॥ गुद
 री गूजे गोहा उली हे, हे चित्तानें वनकुत्ता चोटे दो
 टणुं हे ॥ अ० ॥ हलके गेवरिया टोला टोलि हे, हे
 खेलंता आफलता नाखर कोटणुं हे ॥ ३ ॥ अ० ॥ सक
 लके सूअरनां मातां यूथ हे, हे तांतां हवें उजातां था
 ता आकुलां हे ॥ अ० ॥ वढता उहलता मांमे युध
 हे, हे रोषाला दाढाला वाघ महाबला हे ॥ ४ ॥
 ॥ अ० ॥ धमके सींगाला जरता फाल हे, हे शंबरिया
 अंबरिया लगे अति कूदणा हे ॥ अ० ॥ रखडे कूंकंता
 पोढा झ्याल हे, हे रोमालां हठवालां शिंठ फरे घणां
 हे ॥ ५ ॥ अ० ॥ खडता दडबडता दोडे रोज हे,
 हे हींमे ते विण बींमे पीडे मारका हे ॥ अ० ॥ दीपड
 करता जडनी सोझ हे, हे टीवरीया गुंवरीया मारकपार
 का हे ॥ ६ ॥ अ० ॥ वलगे घुररंताके स्याहघोष हे, हे
 पैंमामें मद बैंमा गेंमा आथडे हे ॥ अ० ॥ चमके चीतल
 कलिया रोष हे, हे जाडा वन पांमा आमा आरडे हे

॥७॥ अ०॥ चलले हुंकलती नाहरकोडि हे, हे लुंकडि
यां वांकडियां दडवडियां दीये हे ॥ अ० ॥ चुंपती
खेले गेलें जरखां जोडि हे, हे उथडता चलचलता मृ
तलपा लीये हे ॥ ७ ॥ अ० ॥ फितकें फेंकारी मु
ख फाडी हे, हे ससला ते सलसलता तरु मूलें लुके
हे ॥ अ० ॥ महके सुरहा मशक विलाड हे, हे विंजू
ता अति खीजू मदमाता फुके हे ॥ ८ ॥ अ०॥ खमके
खोनालो खातें नील हे, हे हूके ठल नवि चूके मांकड
वानरा हे ॥ अ० ॥ पंथें विपधरनी अडखील हे, हे
फुंकीनें परजाले जालां जोंगरां हे ॥ ९ ॥ अ० ॥ अ
डके चमरी चांसांजाल हे, हे वेफु ने वली सावज फूफे
रोपमां हे ॥ अ० ॥ खडके नडके विहगा माज हे, हे
खच्चरिया ठल जरिया दोडे सूसमां हे ॥ १० ॥ अ०॥
अरडे उवाला थारण वंट हे, हे दाढाला सुंढाला शर
न घणा वमे हे ॥ अ० ॥ रडवडे रोहि वोहिड वूट हे,
हे गोकरुणा कंदलिया मिलि वेसें खूडे हे ॥ ११ ॥
॥ अ० ॥ घुरले घूघडा मांमी घोर हे, हे नड हडतां ह
डहडतां नूत घणां जमे हे ॥ अ०॥ चरडा चोरा करता
जोर हे, हे धाडानें लेईं आवे थाडा मागमें हे ॥ १२ ॥
॥ अ० ॥ एहवा जीरण वनमां मुळें हे, हे निर्वय नृ

ना सेवक मेली ते गया हे ॥ अ० ॥ कहियें को आग
 ल दुःख गुल्ल हे, हे विण अपराधें नृप धीठा यया हे
 ॥ १४ ॥ अ० ॥ जाउं इहांथी क्यां हवे नाथ हे, हे
 पीयरडुंनैं अलगुं वैरी सासरो हे ॥ अ० ॥ पडियां
 दुःखथी साही हाथ हे, हे राखे ते नवि दीसे कोई
 हां आशरो हे ॥ १५ ॥ अ० ॥ सुसरानीगुं पलटी दु
 षि हे, हे पठतावो हवे पाशे ऐहथी आगली हे ॥
 ॥ अ० ॥ पीउडे लीधी नहिं कोई सुधि हे, हे निगमे
 किम दाहाडा मो पाखें वली हे ॥ १६ ॥ अ० ॥ जनमी
 कां हुं न मुई कांइ हे, हे दुःखडामां नवि पडती इणवेला
 इहां हे ॥ अ० ॥ विलवे मलबुं गोरी त्यांहिं हे, हे सं
 नारे चित्त धारे श्लोक जणी तिहां हे ॥ १७ ॥ अ० ॥
 अटवीमें प्रगटी पीडा पेट हे, हे बालायें त्यां सुत प्रस
 व्यो जलो हे ॥ अ० ॥ रविनो ताजो तेज समेट हे, हे
 अवतरीयो सुरवरीयो पुणें ऊजलो हे ॥ १८ ॥ अ० ॥ सु
 तनें खोले ठविनें माई हे, हे आपणपें तिहां आप सुति
 क्रिया करे हे ॥ अ० ॥ पनणो पुत्र वधावुं कांई हे,
 पापिणी हु इण वेला तुजनें आदरें हे ॥ १९ ॥ अ० ॥
 सुतनुं मुखडुं जोती मात हे, हे हरखें ने तिम थरकें
 वन देखी करी हे ॥ अ० ॥ रजनी बीती थयो परजा

त हे, हे कठीने नावाने नदीयें छतरी हे ॥ १० ॥
 ॥ अ० ॥ निर्मल जलमां न्हाई ताम हे, हे पावन
 यज्ञे वेठी बाला काठडे हे ॥ अ० ॥ समरी गुरुने अ
 रिहंत नाम हे, हे संतोपे निज आत्म वनफल मीठडे
 हे ॥ ११ ॥ अ० ॥ ठानी वन कुंजें पाले बाल हे, हे
 हीयडजें हेजाले लालें गह गही हे ॥ अ० ॥ घोथा
 खंमनी पहेली ढाल हे, हे कातें इम जलि जातें
 पनणी कमही हे ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंथें बहेतो ते समे, सारथपति बलसार ॥ आबी
 नदीयें कतखो, बोटघो बहु परिवार ॥ १ ॥ अवल
 वनातां पायरी, नवल किनातां तांणि ॥ मेरा दीधा
 मढकता, कारुजणें जलठाण ॥ २ ॥ जल तृण
 इंधण कारणें, पसखा जन वनमाहीं ॥ सारथपति
 पण संचरे, तनु चिंतायें त्याहीं ॥ ३ ॥ संचरतो वन
 कुंजमां, पोहोतो मजया गम ॥ रुदन सुणी बालक
 तणुं, निरखे विस्मय पाम ॥ ४ ॥ बाल सहित बाला
 तिहां, देखी चिंते एम ॥ रूप अपूरव लवणिमा, व
 सती तरुण इहां केम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आवू मन लागुं ॥ ए देशी ॥

॥ सारथपति पूछे हसी, एकलडी कुंण आहीं रे ॥
 गोरी कहे साचुं ॥ उत्तम कुल संजव प्रत्ये, कहे आकृति
 तुज प्राहीं रे ॥ गो० ॥ १ ॥ मूकी इहां कियो थपद
 री, के रीशाणी तुं आप रे ॥ गो० ॥ के कोइ इष्ट
 वियोगथी, कीधो तें वन व्याप रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पु
 त्र प्रसव ताहरे इहां, दीसे थयो गुणगेह रे ॥ गो० ॥
 वनमांहिं बीहती नथी, कहे सुंदरी ससनेह रे ॥ गो० ॥
 ॥ ३ ॥ धनवंतो व्यवहारीयो, नामें हुं बलसार रे
 ॥ गो० ॥ सागरतिलक पुरें वसुं, पर धीपें व्यापार रे
 ॥ गो० ॥ ४ ॥ जलुं कखुं जगदीश्वरें, मेजवतां तुं
 आज रे ॥ गो० ॥ मुज मेरे आवो वही, मूकी मननी
 लाज रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सा चितवे, ए न
 र चपल पतंग रे ॥ गो० ॥ मातो धन यौवन मदे,
 करशे शीत विजंग रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ कूडो उत्तर वा
 जतां, रहेशे शीत अखंन रे ॥ गो० ॥ ईम धारी यो
 जी त्रिया, सुष्ठु गुणरक्षण करंन रे ॥ गो० ॥ ७ ॥
 तनुजा हुं चंमालनी, कजहें कोपी आप रे ॥ गो० ॥
 आवी रही वनमां इहां, मूकी निज माय बाप रे ॥
 ॥ गो० ॥ ८ ॥ मेज मजे किन ते बटे, निम दिन

रजनी योग रे ॥ गो० ॥ देखी जोवा सारिखो, चहेरे
 सघला लोग रे ॥ गो० ॥ १८ ॥ आवासें पोहोंवो तुमैं,
 नहीं आबुं निरधार रे ॥ गो० ॥ दुःखियां मुज मा
 चापनैं, मलशुं जई इण वार रे ॥ गो० ॥ १९ ॥ आ
 कारें इंगित गतैं, ए नहीं नीची जात रे ॥ गो० ॥
 कपट पणैं उत्तर करे, कारण इहां न जणात रे ॥
 गो० ॥ २० ॥ सार्थपति इम चितवी, बोझो वचन
 विचार रे ॥ गो० ॥ तुज चंमालपणुं कदे, नहीं
 नाखुं सुण तार रे ॥ गो० ॥ २१ ॥ मुज आवासें
 मानिनी, स्वेष्टायें रहो आय रे ॥ गो० ॥ तुज वचनैं
 बांध्यो तदा, रदेष्टुं हुं मन लाय रे ॥ गो० ॥ २२ ॥
 इम कहेतो ऊढपी लीपे, अंकथकी तस बाल रे ॥
 गो० ॥ तस्कर जिम चाल्यो धसी, आवासें ततका
 ल रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ शीज विखंमन नयथकी, ते
 थई कार्यविमूढ रे ॥ गो० ॥ तोपण ते पूंठे चली, नंद
 न नेहारूढ रे ॥ गो० ॥ २४ ॥ हरख वचन बोलायतो,
 बालाने बलसार रे ॥ गो० ॥ सुत निज वसनैं गोप
 यी, पेरो जई आगार रे ॥ गो० ॥ २५ ॥ दुःख कर
 ती ठानें उबी, आसासैं देई बाल रे ॥ गो० ॥ दासी
 एक प्रियंवदा, थापी करण संजाल रे ॥ गो० ॥ २६ ॥

अंबर नूषण नोजनां, आपें दाखी प्रीति रे ॥ गो० ॥
 जांखे नहिं कडवुं मुखें, उपावण प्रतीति रे ॥ गो० ॥
 ॥ १७ ॥ नाम पूठाव्युं अन्यदा, बलसारें करी शान रे
 ॥ गो० ॥ हलुयें सा कहे माहरूं, मलयसुंदरी अनि
 धान रे ॥ गो० ॥ १८ ॥ व्यवहारी इम चिंतवे, मम कहे
 ए स्व चरित्र रे ॥ गो० ॥ पण नामें करी जाणीजं,
 कुल एहतुं सुपवित्र रे ॥ गो० ॥ १९ ॥ चाट्यो तिहां
 श्री वाणीयो, करतो पंथें सुकाम रे ॥ गो० ॥ उदधि
 तिलक पुर आपणें, पोहोतो कुशलें ताम रे ॥ गो० ॥ २० ॥
 पुत्र सहित बानी गृहें, राखी महिला तेम रे ॥ गो० ॥
 दासी एक विना कहे, जाणी न पडे जेम रे ॥ गो० ॥
 ॥ २१ ॥ एक समय मलया प्रत्यें, नितुर इम पनणें
 त रे ॥ गो० ॥ नाथ पणे मुजनें हवे, आदर तुं गुण
 वंत रे ॥ गो० ॥ २२ ॥ मुज संपदनी सामिनी, या
 तां न कर विचार रे ॥ गो० ॥ सपरिवार हुं ताहरो,
 रहेचुं आणाकार रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ पुत्र नहिं को मा
 हरे, ते ठामें तुज पुत्र रे ॥ गो० ॥ आज्ञो जय जय
 मालिका, वधज्ञे इम घरसूत्र रे ॥ गो० ॥ २४ ॥ व
 चन सुणी कामांधनां, बोली मलया मुद्द रे ॥ गो० ॥
 कुलवंतानें नवि घटे, करवुं लोक विरुद्ध रे ॥ गो० ॥

॥ १६ ॥ जाजो सर्वस आपथी, पढजो पण ए पिं
 म रे ॥ गो० ॥ चंडकिरण सम कजलुं, रहेजो शीत
 अखंम रे ॥ गो० ॥ १७ ॥ वाख्यो बहुल प्रकार
 थी, नाख्यो वचन निठेड रे ॥ गो० ॥ रह्यो अत्राजो
 बापडो, न करे बेलती जेड रे ॥ गो० ॥ १८ ॥ रोपा
 रुण घर बारणें, ये तालक सुत लेय रे ॥ गो० ॥ प्रि
 यसुंदरी निज नारिनें, पुत्र पणे ते देय रे ॥ गो० ॥
 ॥ १९ ॥ कहे सुंदरी ए पामीठ, बालक बनिकां मां
 हि रे ॥ गो० ॥ गुण रूपें तेजें नखो, रह्यो लक्ष्मण अ
 वगाहि रे ॥ गो० ॥ २० ॥ व्यनिचारिणी को मारीयें,
 नाख्यो एह प्रहन्न रे ॥ गो० ॥ पुत्र रहित आपण
 घरे, होजो पुत्र रतन्न रे ॥ गो० ॥ २१ ॥ ते बालकनें
 आपणा, नाम तणे एक देश रे ॥ गो० ॥ नामें बल
 इति थापना, कीधी निज वदेश रे ॥ गो० ॥ २२ ॥
 राखी धाड अनेकधा, करवा पोढो बाल रे ॥ गो० ॥
 बीजी चोथा खंमनी, कांतें पनणी ढाल रे ॥ गो० ॥ २३ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ व्यवहारी हवे एकदा, पूरे प्रबल जिहाज ॥ पर छीपें
 चालण तणा, करे सजाइ काज ॥ १ ॥ देइ शीखामण
 नारिनें, पूठी स्वजन कुटुंब ॥ ठानी मलया जोरणी

लेइ चाख्यो अविजंब ॥ १ ॥ साजित पूर्व जहाजमा,
जई वेगो गुन संच ॥ सप्रपंच कारुक जनें, लीयां ना
गर खंच ॥ ३ ॥

॥ ठाल त्रीजी ॥ ईतर आंवा आंवली रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवहण पूख्यो पाधरो रे, वारु पवननें टेग ॥ जल
निधिमां जल मारगें रे, वहेतो तीरनें वेग ॥ १ ॥ धमकीने
चाले वावर कूल ॥ हवे करशुं केहो खूल ॥ ४० ॥ इम कि
ते सा सुधि जूल ॥ ४० ॥ ए आंकणी ॥ परदेशें मुज
चरो रे, के देशे बूमाडी ॥ के कुमरणथी मारगो रे,
किहां देशे गाडि ॥ ४० ॥ २ ॥ दूणी इहां होजो हवे रे, प
मुज तनुज वियोग ॥ संतापें कापे हीयुं रे, जिम रोग
हय रोग ॥ ४० ॥ ३ ॥ जीवन मृत सम ते त्रिया रे, ग
गलती गलनाज ॥ पूत्रे प्रवहण नाथनें रे, वहेती
सु प्रणाल ॥ ४० ॥ ४ ॥ गुं कीयो मुज नंदनो रे, क
सत पुरुष यथार्थ ॥ ते कहे तो सुत मेजवुं रे, जो क
मुज चरितार्थ ॥ ४० ॥ ५ ॥ पडियो निरखी आप
रे, बाघ नदीनो न्याय ॥ राखण शीत सोहामणुं
ते रही मौन धराय ॥ ४० ॥ ६ ॥ अनुगुण पवनें प्रे
रे, वहेतुं प्रवहण यज ॥ कुदार्जे केते वासरें रे, या
वावरकूल ॥ ४० ॥ ७ ॥ वंधारा उतराविनें रे, आनी

रने दाण ॥ व्यवसायी व्यवहारीठ रे, वेचे विविध
 क्रियाण ॥ ध० ॥ ७ ॥ रंगारा हीरा तणा रे, निर्दय
 कारू लोक ॥ ते कुलें मलया वेचिने रे, कीधा शेठें
 दोकड रोक ॥ ध० ॥ ८ ॥ त्या पण बहु कामी नरें
 रे, अद्भुत रूप निहाजि ॥ काम महारस प्रारथी रे,
 तेपण न शक्या चालि ॥ ध० ॥ ९ ॥ निज स्वारथ
 अण पूगते रे, रुखा डछ जुवाण ॥ निम्नहेरा ठोले
 नसा रे, प्रगटे रुधिर उधाण ॥ ध० ॥ १० ॥ तास
 रुधिर नामें करी रे, रुमिज चढावे रंग ॥ मूर्च्छागत वा
 ला दुवे रे, नस नस पीड प्रसंग ॥ ध० ॥ ११ ॥ वि
 च विच अंतर गालीने रे, पोपे अशने अंग ॥ बलती
 महीरगतारथी रे, मांमे रुधिरें रंग ॥ ध० ॥ १२ ॥
 वाला चिंते में कीपुं रे, गत नव पाप अथाग ॥ तेह
 थकी थावी पड्युं रे, मोटुं दुःख दोनाग ॥ ध० ॥
 ॥ १३ ॥ विफलाशा नूनारणी रे, कां सरजी किरता
 र ॥ देतो दुःख न दुवे दया रे, हे तुज सरजण हार
 ॥ ध० ॥ १४ ॥ नजरें थावी किहांथकी रे, एकज
 हुं जगमाहिं ॥ गम न हुंतुं दुक्कने रे, तो थाव्यो मो
 पाहिं ॥ ध० ॥ १५ ॥ जनमी क्यां परणी किहा रे,
 थावी बली किण देश ॥ नाल लळ्युं बनी थावरो

सुपरें तेह सहेस ॥ ध० ॥ १७ ॥ दुःख पूरें अबला
 नरी रे, नाणे मनमां रोष ॥ एकांतें चिंतें तिहां रे, स
 चरित कर्मना दोष ॥ ध० ॥ १८ ॥ परहाकें ठाकें
 चढयो रे, ताके अनुचित दाव ॥ रस पाके थाके वही
 रे, अहो नव विषम बनाव ॥ ध० ॥ १९ ॥ घरडी तन
 लोही लीयुं रे, मूर्खीणी नूपीत ॥ खरडी रुधिरें एकदा
 रे, पडी नारंम शूनि दीत ॥ ध० ॥ २० ॥ पंखी नन
 थी ऊतरी रे, आशंकी पलपिंम ॥ चंच पुटें जेई ऊ
 डियो रे, सहसा ते नारंम ॥ ध० ॥ २१ ॥ नन मां
 ज्यां संचरे रे, जलनिधि मांदि विहंग ॥ तेहवे बीजे
 सामुहो रे, आव्यो नारंम तुंग ॥ ध० ॥ २२ ॥ अ
 मिष लोनें तेहशुं रे, मंमे जूज तिकोई ॥ लडतां चं
 थकी पडे रे, बटके वाला सोई ॥ ध० ॥ २३ ॥ आ
 रिका के खेचरी रे, के सुरकुमरी काय ॥ लखमी के
 कोई जोगिणी रे, जलमां रमवा जाय ॥ ध० ॥ २४ ॥
 के धारा हरिवज्जनी रे, के दामिणी दे दोट ॥ इ
 द्रुण सुरें दीठी तिहां रे, करी करी उंची कोटा ॥ ध०
 ॥ २५ ॥ वाला गुणमाला मुखें रे, गणती श्रीनव
 र ॥ तरता गज मत्स्य उपरें रे, पडी सुकृत आध
 ॥ ध० ॥ २६ ॥ चौथे खंमें ए थई रे, निरुपम त्री

जल ॥ पुण्यकी लहियें सदा रे, कांति सुजश जय
जल ॥ ध० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंखी मुखथी हूं पढी, जखपूर्वें निरनाथ ॥ पण
जो ए जल बूडशे, तो ग्रहेशे कुंण हाथ ॥ १ ॥ मर
ण समय इम चिंतवी, कारण अंत अनिष्ट ॥ धारा
यत हेतुक जणो, महापंच परमेष्ट ॥ २ ॥ नमस्कार
पद सांजले, जख वंको करी खंध ॥ तस मुख निरखी
सूचवें, पूर्वागत संबंध ॥ ३ ॥ रहि कृणिक थिर चित्त
ते, दिशा एक निरधार ॥ तुरत तरंतो चालियो, जुज
जंबो विस्तार ॥ ४ ॥ अहो महोदयनी दिशा, हजो
अबे केतीक ॥ हाले नहों जल उदरनुं, चाजे इम म
स्त ठीक ॥ ५ ॥ जल रमले कमला चढी, गजखंधें दी
संत ॥ के सुरपादप बेलढी, चलगिरि शिर बिलसंत
॥ ६ ॥ संशय एम पमाडती, खगकुजने गजगेल ॥ चा
ले ठांटी जल कणें, जोती जलनिधि खेल ॥ ७ ॥ सुखें सुखें
प्रवहण परें, वहतो पंथ सपिह ॥ उदधितिलक बेजा
उलें, कुशलें पोहोतो मद्य ॥ ८ ॥

॥ ढाल चौथी ॥ चंडावलानी देशीमां ॥

॥ उदधितिलक पूरनो धणी रे, कंदर्प नामें चूषा

लो, तेह समय रयवाडीयें रे, चढिउ अरिनो साजो॥
चढीयो नृपकुल शाल निशंको, दिगिडि डुमामें देवा
डी मंको ॥ रंगें रमतो सायर कंठें, आव्यो वींटयो सु
नट उल्लंते ॥ जीराजेंड जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेल,
पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणो दुर्दंत, सीमाडा नांज
वी रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पुर साहमो जख आवतो
रे, जलमां नूपें दीगो ॥ निरख्यो जण सरिखो वली रे,
बेगो तेहनी पीगो ॥ बेगो तेहनी करी असवारी,
लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक बाध्युं जोवा
सारू, मलया माणस खांते वारू ॥ जी० ॥ २ ॥ ए
क जणो गरुडें चढयो रे, दीसे जिम गोविंदो ॥ एह
कवण जल मारगें रे, आवे ठे स्वहंदो ॥ आवे ठे नृप
नांखे मागो, कोलाहलथी जाशे पागो ॥ मौन धरी नि
रखो रही घाटें, जोवे जण ठाना रही यातें ॥ जी०
॥ ३ ॥ जणथी कांश्क वेगलो रे, आवे सायर तीर ।
झुंठादंमैं सुंदरी रे, उतारे ग्रही धीर ॥ उतारि ग्रह
बाहिर मोडें, सुंदर थल नूमि जई ठोडे ॥ प्रणमी
जियो पागो ठानो, वली वली जोतो मुख प्रमदानो
जी० ॥ ४ ॥ थयो अदृश्य महा जलें रे, रयणायरम
मीनो ॥ नूपति त्यां मलया कन्हे रे, आवे विस्मय ल

॥ आवे विस्मय देखी बाला, करपद आवैं सकल
 वाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम मीनैं, मूकी इम
 ह्युं राय नगीनैं ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि
 ह्यी रे, महु गयो कुंण हेतो ॥ एहज महिला पूठतां
 , कहेसो सवि संकेतो ॥ कहेसो सवि निज वीतक वातें,
 क चक्रनां ग्रण जूउ गार्तें ॥ ए अहिनाणें सिंधुवगाहो,
 मीय घणुं दीसे जलमांही ॥ जी० ॥ ६ ॥ कोपवर्शें को
 यरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवहण जागे पढी
 , महुवासे किहां दूरें ॥ महुवासैं वेगी इहां आवी,
 कहेतो नृप पूठे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो
 शायक, कंइप नामें अहुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥
 नेज वीतक कहेतां हवे रे, सुंदरी कांइ म बीहि ॥ कुं
 ए तु किम मीनैं धरी रे, आफलती डःख दीहैं ॥ आ
 रुजती आवी पुर एणें, हर्ष लही रमणी नृप वपणें ॥
 चिंतें मुज सुत रहस्यें ठिपावी, राख्यो ठे ते पुरी हुं
 आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुरुत महाफल पाकियुं रे, मु
 ज दीहा धनधनो ॥ पुण्य लता जागे हजो रे, जो ल
 हुं पुत्र रतनो ॥ जो लहुं पुत्र तणी छुदि इहांथी,
 तो चरित्रार्थ होये डःखमांथी ॥ पण कहीयें कांइ
 एरी गेरी, ए नृप मुज विहुं पखनो वैरी ॥ जी० ॥

॥ ए ॥ ए नृपनें हुं उजखुं रे, तात श्वसुर कुज बेपी
 ॥ शीजविखंमी माहरुं रे, जेरो सुत संपेखी ॥ जेरो
 सुत इंस चिंती निःशासी, बोली बाजा दुःख चकासी
 सुज चिंता तुमनें ठे केही, पुण्य विना रजजुं हुं एही
 ॥ जी० ॥ १० ॥ सेवक पनए नृपनें रे, नारी ए दु
 ख नारें ॥ न शके इष्ट वियोगथी रे, कहेबुं कांई कर
 रें ॥ कहेबुं कांई शंके मत पूढो, दुःखमां बली बल
 लागरो उठो ॥ मीठें वयण हवे आसासी, उपचरण
 कीजें कांई खासी ॥ जी० ॥ ११ ॥ बली नृप पूढे म
 निनी रे, तो पण कहे तुज नाम ॥ मंदस्वरें क
 माहरुं रे, मजया नाम निकाम ॥ मजया नाम निका
 नठारो, तेहथकी न जग्यो दुःख आरो ॥ सन्मान
 नृप मंदिर आंणा, सुख माजें राखी जिहां राणी
 जी० ॥ १२ ॥ व्रण संरोहण उरधि रे, रुजवियां ब्र
 तासो ॥ दार्मी दाग मर्मापनें रे, थापी पृथग आ
 सो ॥ थापी पृथग वसन अणमारें, संतोपी नृपें ते
 वारें ॥ मुजने इंस नृपनि मनकारें, वारु नहीं आ
 इंस वारें ॥ जी० ॥ १३ ॥ ते दिनथी ततपर दु
 रे, करवा धर्म विजोष ॥ ध्यान धरे अग्रिहंतुं
 ठांनि भ्रम विश्लेष ॥ ठांनि भ्रम विश्लेष विवेकें,

राखे जिनधमे सुटेकें ॥ चोखे खंमे चोयो ढाला, कांति
कहे रहे सुखमां बाला ॥ जी० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ बोहा ॥

॥ एक दिवस जूपति नणे, मलयानें धरी राग ॥ न
हे, मुजनें आवरी कीजें सफल सोहाग ॥ १ ॥ पट्ट बं
ध तुजनें घटे, नहीं अवर त्रिप लाग ॥ वचित हेम
मय मुडिका, ग्रहेवा मणि पर जाग ॥ २ ॥ तुज वच
नामृत चंडिका, चाहुं जेम चकोर ॥ बीजी दपिता
मोजडी, तुं शिरशेखर गोर ॥ ३ ॥ नेह कदे रस
दे नहीं, कीधो एक पखेण ॥ वे पख निवहे रस दिये,
जिम रथ चक्र घुंगेण ॥ ४ ॥ मुज मन जागुं तुळ
शुं, बाखुंही न रहंत ॥ कोडि विकल्प कदर्थना, लता
पातं सहंत ॥ ५ ॥ जो मन जाएये आवरे, तो रस ब
धतो होय ॥ नहीतो पण ते मुज वसू, हीये विचारी
जोय ॥ ६ ॥ जाइश किहां पाने पडी, नहीं जूजुं हवें
दाव ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, एहवो बन्यो बनाव ॥
॥ ७ ॥ सा चिंते धुर जे ठवी, ठानी हीये निघट्ट ॥ वचन
गमें ते छुटता, जूपे करी प्रगट्ट ॥ ८ ॥ धिग मुज यौवन
रूपनें, लवणिम पडो पयाल ॥ पग पग जास पसायथी,
लहुं लाख जंजाल ॥ ९ ॥ बूढी कां नहीं जलधिमां,

खैं उतारी कांई ॥ नरकोपम दुःखमां पडी, है है पाप प
 साई ॥ १० ॥ चाहे शील विखंमवा, कामंधल
 व ॥ मरण शरण जीवित थकी, अद्भुत व्रतनें ॥ ११ ॥
 ॥ ११ ॥ काम कुचेष्टित मत्त नृप, ऊनो निरखी बा
 ल ॥ वधिशुं तन मन संवरी, बोली इम ततकाल ॥ १२ ॥
 ॥ ढाल पांचमी ॥ ठेडो नांजी ॥ ए देशी ॥
 ॥ ठेडो नांजी, नांजी नांजी नांजी, ठेडो नांजी ॥
 नारी नरकनी कूंमी ॥ ठे ॥ आपे दुर्गति ऊंमी ॥ ठे ॥
 अनुचित करतां मीठडा बोलां, लोक कहे हा हाजी ॥
 केई विरला हित मारग दाखे, तेहिज बाजी साज ॥
 ॥ ठे ॥ १ ॥ परनारीथी संपद निकसे, विकसे अपय
 माला ॥ पुरुष पतंगा ऊंपण एतो, विषम अगनि
 जाला ॥ ठे ॥ २ ॥ जोतां अनुपम चित्र विणासे
 लागो जिम मशि बिंडु ॥ तिम परदारा संगति राहु,
 लिन करे गुणइंडु ॥ ठे ॥ ३ ॥ धवल महाजस पट
 एसाडे, परनारी रस ठांटो ॥ उत्तम कुल कीरतिप
 वींधे, व्यसन महाविष कांटो ॥ ठे ॥ ४ ॥ क्लृप्त
 र विषधरनां मुखमां, जिम जीवितना सांसो ॥ ति
 सुख शील तणी शी आशा, सेवे परत्रिय पासो ॥ ठे ॥
 ॥ ५ ॥ निज नारीथी नूख न नांजी, शुं विलखे सु

माटे ॥ नृत नाणे जो वृत्ति नहि तो, शुं एतुं कर चाटे
 ॥ ठे० ॥ ६ ॥ काननना वृणमहि तुं सूतो, आग उशीसं
 सलगे ॥ शीखडली साची हित जाणी, रहेनं मुजयी
 अलगे ॥ ठे० ॥ ७ ॥ हीये विचारी निरख रे पेजा, महि
 लामां शुं राचे ॥ दीसे चटुक कटुक परिणामें, इंझायण
 फल साचे ॥ ठे० ॥ ८ ॥ अनृत वचनगृह कंद कजह
 शुं, मोक्षपथिक पग वेडी ॥ अति आसंगें अवला
 विलगी, नाखे कुगति उयेडी ॥ ठे० ॥ ९ ॥ शठ जन
 नें पण वलगी खटके, जिम खर पूतें ढांची ॥ परदा
 रा काराघर सरखी, निरखी रहो मत राची ॥ ठे० ॥
 ॥ १० ॥ कामदेवनें आहूति देवा, नारी दुताशन कुं
 मी ॥ कामी धन यौवन त्या होमे, देता निजतनु पिं
 मी ॥ ठे० ॥ ११ ॥ न्यायी नृप जिम जनक प्रजानें,
 पाले तिम अति रांगें ॥ तुं नय ठंमी अनय मग हींमे,
 तो कहीये को आगें ॥ ठे० ॥ १२ ॥ चूकवतां ड
 फ्कर जगमाहिं, साचो शील सतीनो ॥ ग्रहतां दुये ड
 लहो जीवते, दग विप नाग नगीनो ॥ ठे० ॥ १३ ॥
 सत्यवती कोपे जे माथे, जस्म करे तस देहा ॥ तेह न
 णी अलगे रहे समजी, नाखे कां कुल खेहा ॥ ठे० ॥
 ॥ १४ ॥ वंश विशाल विमल कुल ताहारुं, जरियो ५

संदोहें ॥ तो कां कुमति प्रसंगें जोला, पररमणीशुं मो
 हे ॥ ठे० ॥ १५ ॥ समजाव्यो बहु नय देखाडी, रा
 मायें रस जरियो ॥ महा कलुष परिणतिथी धीमो, तो
 पण नवि उसरियो ॥ ठे० ॥ १६ ॥ ए नारीशुं जोरें
 पण हुं, मूकीश शील विखंमी ॥ सुखें करजो नस्म
 वपुष ए, इम चिंति थिति ठंमी ॥ ठे० ॥ १७ ॥ विल
 ख वदन कंदर्प नरेसर, राज काजमां वलग्यो ॥ १८
 मदा मिलन महोत्सव वन्हि, हृदय सदनमां सलम्य
 ॥ ठे० ॥ १९ ॥ निर्जल देश पड्यो जिम माठो, ति
 नृप विरही तलपे ॥ दृष्टि प्रसंगादिक मन्मथनी, द
 दिशा वशि विलपे ॥ ठे० ॥ २० ॥ श्वावर्जन करव
 नृप तेहनै, वस्तु नवल नव मूके ॥ सती शिरोमणि
 वस्तु विशेषें, सुपनंतर नवि चूके ॥ ठे० ॥ २१ ॥ वदन य
 जांखुं मन पसखा, चिंता जलधि तरंगा ॥ मरणो
 ख मलया थई बेठी, राखण शील सुरंगा ॥ ठे०
 ॥ २२ ॥ धन्य धन्य शील धरे संकटमां, जे निज म
 थिर राखी ॥ ढाल पांचमी चोथे खंमै, कांतिविज
 बुध जांखी ॥ ठे० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अन्य दिवस एक सूडलो, तरुवर कोइ तव

य ॥ मुख ठवि फल सहकारनुं, गयणें कडयो जाय ॥
 ॥ १ ॥ चंचयकी नारें खिस्सुं, जिहां अगासैं राय ॥
 ननयी नृपना अंकमां, ते फल पडियुं आय ॥ २ ॥
 चकित चित्त करतल ग्रही, चिंते एम नरपाल ॥ अव
 सर विण किहांपी पडयुं, ए सहकार अकाल ॥ ३ ॥
 अठे एक पुरपरिसरें, विन्नटंक गिरितुंग ॥ तास
 विषम शिखरें सदा, वनना अंब अजंग ॥ ४ ॥ आयुं
 तिहांपी सुढले, ए फल मधुर मलूक ॥ लची पडयुं
 तस वदनयी, नारें एह अचूक ॥ ५ ॥ आपुं को व
 लन प्रत्ये, के आरोगुं आप ॥ हण एक एम विमा
 सतो, नूपति थापे थाप ॥ ६ ॥ कहे सुनटने फल
 ग्रही, पोहोचो मलया पास ॥ अंतेउरमां थाणजो,
 आपी अति विश्वास ॥ ७ ॥ नूपति वचन तथा क
 री, सुनट विटल प्रसिद्ध ॥ आदरगुं तेणें जई, मन
 यानें फल दीव ॥ ८ ॥ विणकालें किम संजये, ए फल
 अनुपम आज ॥ विस्मित इम नृपजणथकी, ली
 ये अंब तजी लाज ॥ ९ ॥ सत्यापी फल थापीनें,
 पापी नूपति धाम ॥ उवापी कहे रायनें, पापी नि
 जरुत काम ॥ १० ॥ महाडुखें दिन नीगमे,

नृपति निशि दाव ॥ एहवे समय विपाकथी, अस्त
 दूठ दिन राव ॥ ११ ॥

॥ ढाल ठळी ॥ बींदलीनी देशी ॥

॥ मलया एम विमासे, एतो नूंमो मुज मन नास
 हो ॥ नृपति मतिहीणो ॥ आणी हुं निज आवासें, कां
 न चढे मन विश्वासें हो ॥ नृ० ॥ १ ॥ सुंदर शीज व
 गोशे, आहुं नें अवलुं न जोशे हो ॥ नृ० ॥ शा
 लाखीणी खोशे, तो सूल किश्यो हवे होशे हो ॥ नृ०
 ॥ २ ॥ कामी होये निर्लज्जा, तस शी नगिनी शी
 ज्जा हो ॥ नृ० ॥ बांधे चावी धज्जा, नवि जाणे
 ज्जा अखज्जा हो ॥ नृ० ॥ ३ ॥ इम धारी वेणी टं
 ली, काढी कचमांथी गोली हो ॥ नृ० ॥ आंवा र
 मां चोली, बींदी करी सूधी घोली हो ॥ नृ० ॥ ४
 नर दूठ फीटी नारी, दिव्य रूप कला संचारी हो
 ॥ नृ० ॥ सुंदर यौवन धारी, जाणे मन्मथनो अवा
 री हो ॥ नृ० ॥ ५ ॥ वेगो मंदिर जालें, अंतें उर ख
 ल निहालें हो ॥ नृ० ॥ सूडो जिम रह्यो आलें, स
 तरुनी माल विचालें हो ॥ नृ० ॥ ६ ॥ अनुत स
 निहाली, यई राणी सवि क्षोनाली हो ॥ नृ० ॥
 ए संचे ढाली, इम यंनी रही विरहाली हो ॥ नृ० ॥

॥ ४ ॥ चिते ए कुंण वारु, सुंदर नर अति दीदारु
 हो ॥ जू० ॥ ए सुरपति अंवतारु, कहुं अवर पुरुष
 ते कारु हो ॥ जू० ॥ ७ ॥ वसुधाथी नीतरियो, कोइ
 प्रत्यक्ष ए सुरवरियो हो ॥ जू० ॥ विद्याधर गुणें जरि
 यो, के सिद्ध पुरुष अवंतरियो हो ॥ जू० ॥ ८ ॥ पी
 डी काम विकारें, निहणे त्यां नयण प्रहारें हो ॥ जू० ॥
 वेधी आरें पारें, तसरूप महारस धारें हो ॥ जू० ॥
 ॥ १० ॥ यामिक संशय पेगे, जोखें कुंण गोखे ए वेगे
 हो ॥ जू० ॥ अंतें उर वशि एणें, कीधुं समजावी नेणें
 हो ॥ जू० ॥ ११ ॥ नृपतिनें वीनवियो, आब्यो नृप
 त्यां धसमसियो हो ॥ जू० ॥ नीरुपमं तरुणो दीगो,
 अति शांत सुखासन वेगो हो ॥ जू० ॥ १२ ॥ कुंण ए
 पेगो सौधें, चिते नृप चढिउं क्रोधें हो ॥ जू० ॥ मलया
 वदले योद्धे, कुण मूक्यो मुंज अवरोधें हो ॥ जू० ॥
 ॥ १३ ॥ नृपतें तेह दवावी, पूठया नड नृकुटी चढावी
 हो ॥ जू० ॥ ते कहे मलया आणी, न गई कयां वाहिर
 जाणी हो ॥ जू० ॥ १४ ॥ वेग ठां घर छारें, राजेसरजी
 निरधारें हो ॥ जू० ॥ कहे नृपति चित्त धारी, नर ए
 ययो तेहीज नारी हो ॥ जू० ॥ १५ ॥ नृप पूठे जई
 पासें, तुम रूप किशुं ए नासे हो ॥ जू० ॥ ते कहे

जेहवुं देखो, तेहवो हुं इहां शुं लेखो हो ॥ जू० ॥
 ॥ १६ ॥ नहिं खेचर अणुहारो, सिद्ध साधकयो पड
 न्यारो हो ॥ जू० ॥ मलयानां इणें उमही, पहेसा
 ठे पट ते तिमही हो ॥ जू० ॥ १७ ॥ में रति रस
 सागंतें, नर रूप धखुं कोई तंतें हो ॥ जू० ॥ जाणुं म
 लया एही, बेठी ठलवानें सनेही हो ॥ जू० ॥ १८ ॥
 महीपति कहे सेवकनें, इम अंतेउरमां न बने हो
 ॥ जू० ॥ करशे अनरथ गाढो, कर साही बाहिर का
 ठो हो ॥ जू० ॥ १९ ॥ मलय सुंदरी इति नामें, क
 ढयो वहि जुज ग्रही तामें हो ॥ जू० ॥ बाह्य ए
 नृप राखे, एक दिन बली एहवुं जांखे हो ॥ जू० ॥ २० ॥
 रूप कखुं शे योगें, नरनुं कुण तंत्र प्रयोगें हो ॥ जू० ॥
 हतुं स्वानाविक जेहवुं, याशे किम क्यारें तेहवुं
 ॥ जू० ॥ २१ ॥ तव चिंते सा हियडामें, बिलखे जू
 जोगनें कामें हो ॥ जू० ॥ मौन कखानी बेला, रदेशे
 की एहनी मेला हो ॥ जू० ॥ २२ ॥ मलया बाजी ज
 ती, नृपतिनी मति गति बीती हो ॥ जू० ॥ ठही
 ये खंमें, कांतें कही ढाल यममें हो ॥ जू० ॥ २३ ॥
 ॥ दोहा ॥
 ॥ कत्ती कत्ती नृप पृथीयुं, हत्ती न मेजे मीट

सीखो जागो ते तदा, जिम बाबलनो चीट ॥ १ ॥
 मलयकुमरी ऊपर दूठ, रोषारुण नूपाल ॥ मंभावे
 तन तर्जना, दिन दिन वूरे हवाल ॥ २ ॥ ताडे ताते
 ताजणे, मारे लाठी लात ॥ मुक्की बली चूकी दीये, पाडे
 नाडी घात ॥ ३ ॥ घरसे कर्कश नूतले, आकर्षे पग
 बंध ॥ हों पपेद निरखते, धपे दे पग खंध ॥ ४ ॥
 सिंचे नीचे कूपमा, निहणे पूंठि निबंध ॥ मोटे सोटे
 चोटीने, नर्म करे तन संधि ॥ ५ ॥ नृपसुत इम ताडी
 जतो, चिंते है फिरतार ॥ कहीये इहांथी नीसरी, ज
 हीशुं दुःखनो पार ॥ ६ ॥ एक दिवस निझावशें, पडयो
 निरखी पुहरात ॥ रहस्यपणे पुर बाहिरे, बहे कुमर
 मथरात ॥ ७ ॥ पयिशालार्ये वीशम्यो, धरी मरण मन
 आश ॥ दीगो जमत इहां तिहां, अंध कूप तस पा
 स ॥ ८ ॥ तस कंठें उजो रही, चित चिंते दिलगीर ॥
 पडशुं जो कर नूपने, तो दहेशे वे पीर ॥ ९ ॥ शरण
 नहिं महारे इहां, मरण विना कोइ उर ॥ इष्ट संजारी
 आपणो, इम बोली तिण ठोर ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥ उधवजी कंदेशो बहु न

कहि ॥ ए देशी ॥

॥ प्रद्युजी दुःखणी कांई हुं सरजी ॥ ए आकणी

पीयु विरहो तीखी कातरणी, काटी करे हिय पूर जी ॥
 प्रीतम विण न शके कोइ सांधी, लाख मले जो र
 जी ॥ प्र० ॥ १ ॥ बाहालानो मुज देई वीढो, दुःख स
 कटमां नाखी ॥ नाग्य रहित ज्यां त्यां हुं नटकुं, म
 नूलि जिम माखी ॥ प्र० ॥ २ ॥ दैव अटारा महाबल
 सार्थे, ए नव दीधो वियोगो ॥ परनव कंत पणे मुव
 तेहनो, मेलवजे संयोगो ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कूथ्या शिर क
 नी नररूपे, देती इम उलंजा ॥ सज्ज हूइ कूपे जंपावा,
 प्रेम नरी निरदंजा ॥ प्र० ॥ ४ ॥ एहवे त्यां दयितानें
 जोतो, महबल ते दिन शेपें ॥ पहियशालमां रातें
 सूतो, निंद जही नवि लेशें ॥ प्र० ॥ ५ ॥ हवे जाडु
 जोवा दिशि केही, इम चिंतवतो जागे ॥ मजयायें जे
 दीया उलंजा, ते कानें जई वागे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ एह अ
 पूरव वचन प्रियानां, सरखा सुणतां जागे ॥ प्राण
 त्यागनां सूचक प्राहें, पडवंदे नज मागें ॥ प्र० ॥ ७ ॥
 संचमथी कठयो त्यां नडकी, कहेतो इम मुख वाणी ॥
 विफल महा साहस रस खेलें, मरण लीये कां ता
 णी ॥ प्र० ॥ ८ ॥ शरण हजो मुज महबल पीयुनुं
 इम कही जंपा दीधी ॥ कुमरें पण तस पूर्वे तिम
 ज, ते अनुचरणा कीधी ॥ प्र० ॥ ९ ॥ स्फुट चेतन

नर मूर्खा नाखो, लघु सादें इम नाखे ॥ मुज अब
 जाने ए दुःखमांथी, महबल विण कुण राखे ॥ प्र०
 ॥ १० ॥ कुमर जोवे विस्मित ते वचनें, कर पद तास
 छत्रासे ॥ सजग ययो नर मूर्खा नाखी, बेगो कठी पा
 से ॥ प्र० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे किणो संवधें, इणो
 मुज नाम संनाखो ॥ के मुज नामें कोइ सनेही, दुः
 खमां हियदे धाखो ॥ प्र० ॥ १२ ॥ पूढ्युं कहे साहुं
 कुण तुं ठे, कां पडियो इम कूपें ॥ उलखीनें स्वरनें अ
 नुसारें, पुरुष कहे अति चूपे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कुण तुं ठे
 किम आयो कूपें, पडियो कां मुज केडें ॥ इत्यादिक
 पूढी सहु पाठें, काम करो एक नेडें ॥ प्र० ॥ १४ ॥
 निजयुंके मांजो मुज विंदी, नाखुं जिम स्वस्वरूप ॥
 तिम कीधुं तेणें तव मलयानुं, प्रगट हूउं धुर रूप ॥
 प्र० ॥ १५ ॥ कूप नीतिथी एहवे नागें, बाहिर वदन
 विकास्युं ॥ अंधकूपमां तस मणि तेजें, दूरें तिमिर
 विणाशुं ॥ प्र० ॥ १६ ॥ उलज दयिता दर्शन देखी,
 उत्कंठयो सरवंगें ॥ सहसा आगल आवी क्यांथी,
 चिंते इम उमंगें ॥ प्र० ॥ १७ ॥ विण आनें बूढा
 घर मेहा, यातां संगम नीको ॥ अण चिंतित साजन
 मेलाथी, बीजो सुख सवि फीको ॥ प्र० ॥ १८ ॥

कहीनैं नयणें जल नरतो, पूढे तस विरतंत ॥
 कहे हियडे दुःख पूरी, धुरधी व्यतिकर तंत ॥
 ॥ १९ ॥ कहे पिउ तें संकट सायरमां, पेसी दुःख
 सुखंगें ॥ नोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट
 किम अंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे
 ऊडपीनैं सुत लीथो ॥ अढे किहां ते सा कहे शेठे,
 क्यो इहां घरे सीथो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ लहेज्यो किम न
 दन सुद्ध सूधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थारो सवि
 होरो जो इहांथी, ठूटक वार कदापि ॥ प्र० ॥ २२ ॥
 मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूढ्युं वली दधितायें
 आप चरित्र सवलां ते नांखे, कुमर यथा इच्छायें
 ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संजापण करतां वेदु, रजनी त्य
 निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमैं, पनणी कांतें
 माहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रयणी गई प्रगढो दूउ, ऊग्यो रवि अनुरूप ॥ अनुप
 जोतो राजिउ, आवे जिहां ठे कूप ॥ १ ॥ निरखी वें न
 कूपमां, बोव्यो धरणी नाथ ॥ जूउं सहजरूपें त्रिया
 विजसे ठे कृष्ण साथ ॥ २ ॥ अहो रूप रति सुन
 ता, यौवन गुण विज्ञान ॥ युगती जोडी जोडतां,

हयो नहि जगवान् ॥ ३ ॥ इडाणी सुरपति परे, रति
 रतिपति उपमान ॥ शोभे अनुपम जोडलुं, अनुपुण
 रूप समान ॥ ४ ॥ अजयं हजो तुमनें विन्हें, आगो
 कूपक कंठ ॥ दर्पाधल कंदर्प नृप, कहे राग रस बंध
 ॥ ५ ॥ नृपें विदुनें काढवा, कीथो मांची संच ॥ तव
 पीचनें नृपति तणो, मलया जणो प्रपंच ॥ ६ ॥ रस
 राच्यो आव्यो इहां, मुज पार्थे कम जात ॥ कीथी को
 ढि कदर्थना, कामांघें दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपें मोह्यो
 निलज, न गणो कुजनी कार ॥ आकर्षो निरखी नि
 खर, हणशे तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूप
 थी, नीतरखुं कुशलेण ॥ शिरें सवाई वाजगुं, यथा यो
 ग्य करणेण ॥ ९ ॥

॥ ढाल आवती ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,

सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ एदेशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रुडी
 जी ॥ श्यामा चढि वेसो आणो अंदेसो श्यावती रू० ॥
 कुशलें उतररीयें विपत्ति उररीयें रंगमां रू० ॥ वेठो इम
 कहेतो दोरी ग्रहेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति
 जी वेठी बीजी मांचीयें रू० ॥ नृपति कहे जणनें पहे
 ली धणनें खांचीयें रू० ॥ कम उचें नीचें

जोरशुं रू० ॥ गयएंगण गहेरो कीधो बहेरो सोरगुं
 रू० ॥ ३ ॥ आतम उत्खंमक जाणे करंमक सापना
 रू० ॥ निरखंत नराणा कलश पूराणा पापना रू० ॥
 अंध कूपक आरें आवे करारें ज्यां त्रिया रू० ॥ नूपे
 लहि ताघा वे कर आघा ताकिया रू० ॥ ३ ॥ मुख
 मांहिं उतारी बाहेर नारी राजिये रू० ॥ बेठी पिउ
 विहुणुं ऊणुं डुणुं मन किये रू० ॥ महवल तस केडें
 आव्यो नेडें कांठडे रू० ॥ कोपें कलुषाणो नरनो रा
 णो दीठडे रू० ॥ ४ ॥ चिंते एह रूपें अधिको मोपें
 उपीयो रू० ॥ लावण्य पयोधि नारियें शोधि वर कीयो
 रू० ॥ मुज मीटथी रमणी मावी जमणी ए जुवे रू० ॥
 मीठो गोळ पामी खोलनो कामी को हुवे रू० ॥ ५ ॥
 मादलिउं माखो स परिवाखो गोविनो रू० ॥ नाखुं अ
 ध कोठीमां, जिम पोठी पोढिनो रू० ॥ थापी इम
 की कापी मूकी दोरडी रू० ॥ बंधनथी तूटी मांच
 तूटी उघडी रू० ॥ ६ ॥ पडिउं ततखेवा खातो ठेव
 कोरनां रू० ॥ नीचें दल जावा लागा कांठा जोरन
 रू० ॥ नारी तस पूत्रें पढवा ऊठे साहसें रू० ॥ न
 पे कर ताही राखी वाहीनें तिसें रू० ॥ ७ ॥ थाण
 थायासें राय प्रकासे तेहनें रू० ॥ कुंण ए रस जा

यो ते आदरियो जेहनें रू० ॥ पूतो नवि बोले आसू
 ढोले दुःखनां रू० ॥ निःश्वास बिबूटे आहार न बोटे
 इकमना रू० ॥ ७ ॥ मूर्छा लही जागी कहेवा जागी
 एहयो रू० ॥ नोजन पिठ पाखें न करुं लाखें जेहयो
 रू० ॥ मूकी एक महेलें घाप्पा गयलें पाहरु रू० ॥
 वेतो जइ कार्जे राज समार्जे पाधरु रू० ॥ ८ ॥ था
 शे किम कूपें नाख्यो नूपें नाहलो रू० ॥ नीतरशे क्यां
 थी किम करी त्यांथी वाहलो रू० ॥ चिंता चित्त धर
 ती हइहुं नरती शोगमें रू० ॥ आसंगल गाढो कर
 ती दाहाढो नीगमे रू० ॥ ९ ॥ रति त्यां थण ल
 हेती, बिरहें बहती देहडी रू० ॥ निशिमां एक मा
 गें नूतल नागें ते पडी रू० ॥ मंकी विपधरियें रोपें
 नरिये क्यांहिंथी रू० ॥ बोली अहि बिलगो न रहे
 थलगो आहिंथी रू० ॥ १० ॥ नोकार संजारे जिन
 मन धारे पिर मनें रू० ॥ पोहरायत आया हणवा
 धाया नागनें रू० ॥ जीवितथी टाल्यो नाग उहाल्यो
 वेगलो रू० ॥ विरतंत सुणायो नूपति आयो व्याकुलो
 रू० ॥ ११ ॥ उपचार घणोरा कीधा जलेरा जे घटघा रू० ॥
 साहमा विष जोला लहेर हिलोला कमटघा रू० ॥
 इंडी थयां शूनां चेतन कना धारणें रू० ॥ एक स

उसासो मंझित मासो कृण कृणें रू० ॥ १३ ॥ ते
 दुःख निशि ग्रहेती न जहे वहेती विश्रमो रू० ॥ क
 रवा तन ताजी प्रगटयो गाजी प्रहसमो रू० ॥ या
 को उपचारें नूप तिवारें अति दुःखें रू० ॥ पडहो
 वजडावे साद पडावे जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देस
 कन्या बंधुर रणरंग सिंधुर तेहनें रू० ॥ आपे नृप रा
 जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शोरी
 शोरीयें फखा रू० ॥ त्रिक चाचर चोर्के नृप पथ धोर्के
 संचखा रू० ॥ १५ ॥ आनक सवि नटकी पाठा बटकी
 नें वढ्या रू० ॥ नृप नवननी वार्टे आवे उच्चाटे खल
 नढ्या रू० ॥ चोथे खंमैं चावी ढाल सोहावी आठम
 रू० ॥ कहे कांति उमंगें रसने रंगें एगमी रू० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अजिनवो, पडह बवे त्यां आय ॥ नृप
 सुनटें नूपति कन्हें, आय्यो तेह बुजाय ॥ १ ॥ नि
 रखत मुख नृप उलखे, अहो पुरुषनें प्रांहिं ॥ कू
 थकी किम नोसरी, आव्यो दीसे आंहिं ॥ २ ॥ देव
 हय्यो मुज वैरीयें, कीधो केण कुरुज ॥ मुजनें अ
 गो जाणीनें, काढयो ए निर्जळ ॥ ३ ॥ इम चिति

अण उलखू, थयो गोपिताकार ॥ करवा स्वारथ सा
धना, बोल्यो वचन उदार ॥ ४ ॥

॥ ढाल नचमी ॥ गाढा मारुजी, जमर पीवे जाठी
धरें ॥ अमली पीवे कलाल रे ॥ गाढा मारु अति

जनमादी माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ मोरा नेहीजी, अम वखतें आव्या जलें, उपकार
क सत्यवंत हे ॥ मो० ॥ करुणा ते कीधी साहिबे,

मोहनजी मतिमंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तुम
सरिखे आनूपणें, पुहवी तल शोचंत रे ॥ मो० ॥

॥ क० ॥ १ ॥ मो० ॥ मलया विप वालण तणुं, काम
करो लेई हाथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रणरंग आपुं

हाणियो, जनपद तनुजा साथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥
॥ २ ॥ मो० ॥ लाखिणुं लोकां विषे, ए ठे यशनुं

काम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ वली हुं सुख बो
ल्याथकी, थापीश अधिक इनाम रे ॥ मो० ॥ क० ॥

॥ ३ ॥ मो० ॥ महाबल कहे मुजनें इहां, थापीश
मां तुं काई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मागुं एहिज

सुंदरी, जो पण निर्विप थाई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ४ ॥
॥ मो० ॥ थावी देशांतरथकी, नहों केहने संबंध रे

॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ एहवी मुजनें आपतां,

शो कुण प्रतिबंध रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ५ ॥ मो० ॥
 यो महीपति, कहे तुज देखि तेह रे ॥
 ॥ मो० ॥ बीजां पण मुज केटलां, काम
 ह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ६ ॥ मो० ॥ जे
 मते, करिने तुरत सर्व रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो०
 जाईश निज नारजा, चिंते एम सगर्व रे ॥
 ॥ क० ॥ ७ ॥ मो० ॥ नूप वचन अंगी
 मलया समीप रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मूर्खगित
 त्रिया, मूकी गरल वदीप रे ॥ मो० ॥ क०
 ॥ मो० ॥ विषम अवस्था नारीनी, जोतां जलन रे
 ए रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रोखें मन कातुं करी
 ले इम वली वयण रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ९ ॥ मो०
 त चेतन ए सर्वथा, न लिये श्वास लगार रे ॥
 ॥ क० ॥ मो० ॥ तोषण अंगें आगमी, करु
 प्रतिकार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १० ॥ मो० ॥
 सर निषेधी लोकनो, धरणी करो जल सित रे
 ॥ क० ॥ मो० ॥ तिमहिज नृपने सेयकें,
 धरा सुपतिन रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ११ ॥ मो०
 नूपति आदें जन सबे, बेठा बाहिर आय रे ॥ मो०
 ॥ क० ॥ मो० ॥ कुमरें मंदल मांदीयुं, विप

मो उपाय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३२ ॥ मो० ॥ मंमल
 मां पूजी विधे, ध्यान धरी महा मंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
 ॥ मो० ॥ कटिपटमांथी काढीउं, त्रिप वालक मणित
 त रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३३ ॥ मो० ॥ झाली मणि
 जल सिंचीयुं, विकस्यो लोघण लेश रे ॥ मो० ॥ क० ॥
 मो० ॥ दांण्या ज्यौं रवि तेजथी, कमल दशे एक दे
 श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३४ ॥ मो० ॥ मुखमां जल
 सिंच्युं तदा, बलिया सास उतास रे ॥ मो० ॥ क० ॥
 ॥ मो० ॥ लोचन पुरां उघड्यां, कमल ज्यौं पूर्ण प्रका
 श रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३५ ॥ मो० ॥ सर्वगें जलं सिं
 चीयुं, पायुं उदक अशेष रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥
 कठी आलस मोडती, करती हाव विशेष रे ॥ मो० ॥
 ॥ क० ॥ ३६ ॥ मो० ॥ पय्याखा प्रभुजी इहां, कू
 पयकी किए रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ साजी
 मुजनें किम करी, पूठे सा धरी प्रीत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
 ॥ ३७ ॥ मो० ॥ कुमर कहे मांची थकी, पडीयो हुं
 जई ठेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ त्यां मणि तेजे
 एक शिला, दीवी मणिधर हेठ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३८ ॥
 ॥ मो० ॥ ठाने जइ मूठी हणी, उघडियुं तदा बार रे
 ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणिधर सलक्यो पर दुः

पेगो हुं तिण तार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ १९ ॥ मो० ॥
 साहस धरि हुं चालीयो, विवरें धरणी मांदि रे ॥
 मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ विषधर दीवीधर थयो, आ
 वे पूर्वे उठांदि रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २० ॥ मो० ॥ ए
 ह सुरंगा चोरनी, तिण वली बीजुं बार रे ॥ मो० ॥
 ॥ क० ॥ मो० ॥ होशे एहवुं चिंतवी, आयो कीया
 प्रचार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २१ ॥ मो० ॥ तेहवे सु
 ख आगे थई, मणिधर नागे तेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥
 ॥ मो० ॥ श्याम तिमिरकुल उल्लस्युं, जिम जडता
 जड चेत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २२ ॥ मो० ॥ अनुता
 रे हुं चालतो, आयडीयो जई बार रे ॥ मो० ॥ क० ॥
 ॥ मो० ॥ चरणें हणी बीजी शिला, नाखी उलटी ति
 बार रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २३ ॥ मो० ॥ बार विवर
 उवड्युं, नीतरियो बहि आय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥
 जन्म्यो गजावातयी, चिंत्युं इम अकुलाय रे ॥ मो० ॥
 ॥ क० ॥ २४ ॥ मो० ॥ आवेरो चाव्यो बही, जो
 अहिनि लीक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ शिला
 दीतो अही, वेगो थई निर्निक रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २५
 ॥ मो० ॥ मंत्र नणी ते वद कीयां, लीयो तन म
 नन रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ गिरि नदीये

शानमा, दीसे तेह सुरंग रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २६ ॥

॥ मो० ॥ पश्यतहर दीसे मूठ, चिंती इम शिल तेय रे

॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ ठांकी बार सुरंगने, नीतरियो

उमहेय रे ॥ मो० ॥ क० ॥ २७ ॥ मो० ॥ ठाने पुरमां पेसता,

निसुण्यो पढह निनाद रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ पू

ठपुं जाण्युं ताहरे, व्याप्यो विष उन्माद रे ॥ मो० ॥

॥ क० ॥ २८ ॥ मो० ॥ तुज विरहो अण सांतही, प

ढह उच्चो पण बंध रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मणि

योगे साजो करो, गाल्यो विषनो गंव रे ॥ मो० ॥

॥ क० ॥ २९ ॥ मो० ॥ वाव्यो वचनें सांकडो, धीगो

पण नरनाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ वेशे तुजनें सु

ज जणी, हवे न करे मन दाह रे ॥ मो० ॥ क० ॥

॥ ३० ॥ मो० ॥ पीपु वचनें रंजी त्रिया, चोथा खं

न विचाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ कांतिविजय

नाखी रसें, निरुपम नवमी ढाल रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरे जूपति तेढीठ, आब्यो अधिक प्रमोद ॥

निरखे बाला दुखिणी, करती बात विनोद ॥ १ ॥ शिर

धूणी जूपति जणे, अहो शक्तिनो खेल ॥ अम दुःख

साथे जेणायें, फेक्यो गरल खेज (प्रवाद) ॥ २ ॥

अति विस्मित वसुधाधर्वे, पूठुं नाम निवेश ॥ सिद्ध
पुरुष इति तेहनी, निज कहे नाम निर्देश ॥ ३ ॥ जि
मी नहीं गत वासरें, विरची बाला एह ॥ उचित जमा
डो तेह नणी, कहे नूप ससनेह ॥ ४ ॥ पय पाकुं सा
कर रसैं, पावे कुमर सहाय ॥ स्वस्थ दुई वातो करे,
ते नृप सुतनी साथ ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ पंथीडा रे संदेशडो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर नणे नूपति प्रत्ये, करो शीख सुजाण ॥ यो
मलया मुजनें हवे, पालो वचन प्रमाण ॥ १ ॥ दुंरे
विदेशी पंथियो ॥ न सहुं ढील लगार, मुज मन क
ठुं इहांथकी, चालण निरधार ॥ दुं० ॥ २ ॥ कांई
विचारो राजिया, करो कोडि विषाद ॥ रुसवा याशो
लोकमां, सूक्यां मरयाद ॥ दुं० ॥ ३ ॥ रवि जलधर
जलनिधि शशी, सूके नहिं स्थिति थाप ॥ तिम नृप
पण नवि उठपे, कुजवट स्थिति थाप ॥ दुं० ॥ ४ ॥
थापो मलया एहनें, थाउं राजि प्रसन्न ॥ दंपती ड
स्त्रियां मेजवी, करो सत्य वचन ॥ दुं० ॥ ५ ॥ सम
जावे इम नृपनें, पुरनां लोक समस्त ॥ आपूखो ते
सांजली. कोपे मदमस्त ॥ दुं० ॥ ६ ॥ हण एक अ
ण वांझो रही. मांमे बीजी बात ॥ है है नितुर पण

तणी, जूठ जूमी धात ॥ हुं० ॥ ७ ॥ पूत्रे नरपति
 सिद्धने, लोपण कलुषाय ॥ कहे रे ताहरे एहवुं, श्यो
 सगण थाय ॥ हुं० ॥ ८ ॥ सिद्ध कहे धण माहरी,
 पामी मुक्त विजोग ॥ दैवदयायी माहरो, लही आ
 ज संयोग ॥ हुं० ॥ ९ ॥ अवनपति आखे बली, क
 र एक मुज काम ॥ ढीज नहीं देतां पठें, तुजनें एह
 वाम ॥ हुं० ॥ १० ॥ दुःखे शिर नित्य माहरुं, तेहनो
 एह उपाय ॥ लक्षणधर तुज सारिखो, नर आवे च
 लाय ॥ हुं० ॥ ११ ॥ चयमां वाली तेहनं, कीजें न
 स्म शरीर ॥ लेपें शिर पीडा हरे, तेह नस्म सनीर ॥
 ॥ हुं० ॥ १२ ॥ उदध ए तुजने नलें, करवुं माहरे
 काज ॥ सोंपुं डुप्कर काम ए, मारण नरराज ॥ हुं० ॥
 ॥ १३ ॥ लुब्धो मलया देखीनें, निर्लेज ए नरराज
 ॥ मुजनें हणवा कारणें, सोंपे एहवुं काज ॥ हुं० ॥
 ॥ १४ ॥ अयमें मुजनें सूचवुं, पहेलुं पण एह ॥
 करवुं जो मृत्यु आगमी, तो पण देशे ठेह ॥ हुं० ॥ १५ ॥
 मरण विना कुंण करी शके, दुःख संजव काज ॥ अं
 गीकसुं में धुरयकी, न कखां मुज लाज ॥ हुं० ॥ १६ ॥
 एम धारी साहस ग्रही, वोढ्यो त्यां नर सिद्ध ॥ चिं
 ता न करो राजिया, कारज एमें लीध ॥ हुं० ॥ १७ ॥

दुर्जन उषध ताहरुं, करबुं में निरधार ॥ तुं पण प्रम
 दा आपतां, मत करजे विचार ॥ हुं० ॥ १७ ॥ फो
 गट गाल फुलाविनें, कहे नूप हसंत ॥ उपकारकनें
 आपतां, कहो शुं खटकंत ॥ हुं० ॥ १८ ॥ कतिन हृदय
 नरराजियो, हरख्यो मन पापिष्ट ॥ राखे दंपती जूजू
 आं, जण आपी निःकृष्ट ॥ हुं० ॥ १९ ॥ मंदिर आवे
 मलपतो, करतो रस चाल ॥ दशमी चोथा खंमनी,
 कांतें कही ढाल ॥ हुं० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे नृपनें कहे, करवा बुचित विधान ॥
 काठ शकटनरि जोतरी, सूके ज्यां समशान ॥ १ ॥
 निरखी विषम कर्णव्यता, दुःखियां पूछ्यां लोक ॥ हाहा
 नरमणि विणसरो, इम कहे थोकें थोक ॥ २ ॥ ठे
 हलां आनूषण धरी, वींटयो राज सुनट ॥ पन्निम पो
 होरें पितृवनें, पोहोचे कुमर प्रगट ॥ ३ ॥ व्यतिकर
 लोकथकी लहे, मलया पियुनो आप ॥ संतापी विर
 हानलें, विधविध करे विलाप ॥ ४ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ ऊठ कजालणी नर य
 डो हे, दारुछारो मूल सुणाय ॥ ए देशी ॥

॥ धिग मुज यौवन रूपनें हे, धिग मुज जनम अ

काथ ॥ आपव पडियो जेहथी हे, मोहें लोनाणो ना
 थ ॥ प्राण प्यारो बलवा हे कांई जाय ॥ १ ॥ पहेलो
 दुःख सागरथकी हे, तरियो तुं समरघ ॥ ए वेलामां
 साहेवा हे, कुंण ग्रहणे तुज दह ॥ प्रा० ॥ २ ॥ काठ कुठी
 मां नीडियो हे, पंजरमां जिम कीर ॥ नीतरणे क्यां
 थी तदा हे, मुज नणदीरो वीर ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ कर सा
 ही नूपतिनहें हे, खेप्यो तुं चयमाहि ॥ सहेरो कि
 म पीडा घणी हे, कीथी पावक दाहि ॥ प्रा० ॥ ४ ॥
 क्यां थाव्यो इहां मोहना हे, मलियो कां मुज थाय ॥
 कांई जीवाडी पापिणी हे, हुं दुइ जे दुःखदाय ॥
 ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ विरहो ताहरो प्रीतमा हे, हियडे ये
 घसि घाव ॥ नेह निठुर नाहर थयो हे, खेजे कठिन
 कुदाव ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ आशाथी तें त्रोडीयां हे, ए वेला
 जगदीश ॥ तरठोडी अधमारगें हे, काढी पूरी रीश
 ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ प्रीतडली होयडे वसी हे, लागे मीठी गा
 ढ ॥ साले वूटी अधरसें हे, जिम तीखी यमदाढ ॥
 ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ पडजो शिल शिर तेहनें हे, पाडयो
 जेणे वियोग ॥ परिजन तेहनां रखडजो हे, जिम का
 प्यां थल फोग ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ विलपत प्रमदा खीज
 ती हे, दुःख पूरी महे मूर ॥ पीयुनें लोयण थांसुयें

हे, ये जल अंजली पूर ॥ प्रा० ॥ १० ॥ निरखुं न
 ऐं नाहलो हे, तो मुज नोजन वात ॥ बेठी एह
 आदरी हे, करवा आतम घात ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ नृप
 नंदन समशानमां हे, इहां तिहां निरखी ठोर ॥ खडके
 इक्षित थानकें हे, मोहोटी चय एक कोर ॥ प्रा० ॥ १२ ॥
 साहस देखी तेहुं हे, पुर जण मलिया धाय ॥ दिज
 गिरी धरता हिये हे, नूपतिनें कहे आय ॥ प्रा० ॥
 ॥ १३ ॥ देव विचाखा विण ईश्वरो हे, मांमयो कवण
 अन्याय ॥ राखमिगें पशुनी परें हे, हणियें नहो सि
 दराय ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मलया नापो तो जलें हे
 पण मारो कां एह ॥ अम वचनें मूको हवे हे, करी क
 रुणा गुणगेह ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ नूप जणे ए नाभि
 नी हे, मुजने नवि निरखंत ॥ उपरांठी काठी हुवे हे
 जो नर ए जीवंत ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ ए बाला विण म
 हरे हे, न पडे जक पल मात ॥ मत पडजो ए वा
 मां हे, सो वातें एक वात ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ निर्द
 तव तिहां बोलीयो हे, जीवो नामें प्रधान ॥ शी एह
 तुमनें पढी हे, मेजो ठो इहां तान ॥ प्रा० ॥ १८ ॥
 पोतानें पापें पची हे, मरजो जो दुःख आणि ॥ त
 नगरीमां केहनें हे, ए होरो घर हाणी ॥ प्रा० ॥ १९ ॥

राजाने मंत्री इहां हे, मलिया पापी दोय ॥ तो ते
 हवा नररत्नने हे, कुशल किहांथी होय ॥ प्रा० ॥ २० ॥
 ठारमिर्गे आरंजियो हे, अनरथ विश्वा वीश ॥ सहि
 दुर्मति ए वेदुने हे, ठारज पडजे शीश ॥ प्रा० ॥ २१ ॥
 गलतां माखी जीवती हे, को करे एहवुं काम ॥
 अन्योन्य कहेतां जण तिके हे, पोहोता निज निज
 वाम ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ अकल कला कोई केलवी हे,
 पियु लेहेजे जयमाल ॥ चोथे खंमे अग्यारमी हे,
 कांते पनणी ढाल ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इष्ट संजारी आपणो, परवरियो नडवृंद ॥ व
 क्षिण करें प्रदक्षिणा, चय पाखलि नृपनंद ॥ १ ॥ पु
 रजन मुख हाहा रवे, आपूखो आकाश ॥ लोक हृद
 य कसणें करे, शोक परीक्षा ज्यास ॥ २ ॥ सहसा नृ
 पसुत वतपति, पडे चित्तामां जाम ॥ ततक्षण पुर
 जन नेत्रथी, पसखां आंसू ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल वारमी ॥ तडाके तोडी ठे दुःख माला ॥ ए देशी ॥

॥ निरखे मुजट विकट चयमाहि, पेठो कुमर जि
 वारें ॥ चिहुं दिशि प्रवल अनेल सलगाढयो, पसरी
 जाल तिवारें ॥ १ ॥ फवाकें जलकी ठे दिगमाला,

तापें कटकण लागा काठ ॥ चमकें चमकी ठे सु
 बाला ॥ ए आंकणी ॥ धोरणी धूम तणी त्यां प्रसरी
 दिशिदिशि अंबर ठायो ॥ श्यामघटा करी पावक रूप
 जाणे पावस आयो ॥ ऊ० ॥ १ ॥ वन्हि पतंग उडे
 तगतगता, खजुआ जिम चिहुं थोरें ॥ जाल वीज
 ज्युं चिलकण लागा, अनल जलदनें जोरें ॥ ऊ० ॥
 ॥ २ ॥ सात जीन शतजीन अईनें, नजतल चाटण
 लागो ॥ तस उद्दीपक पचनसहायी, विशमो अई त्व
 वागो ॥ ऊ० ॥ ४ ॥ धीरपणुं पुर लोक प्रशंसे, त
 हा रव अण सुणतां ॥ ज्वलत रह्यो विश्वानर देखी
 सुनट वड्या गुण सुणता ॥ ऊ० ॥ ५ ॥ जिम की
 तेणें तिम नृप आगें, नांख्युं सकल बनावी ॥ नू
 प्रधान विना पुरजननें, ते निशि निंद न आवी ॥ ऊ०
 ॥ ६ ॥ दुर्जे प्रजात विना तनु तारा, टांक्या सूर प्रज
 वें ॥ तव गिर रक्षा पोटी धरीनें, आवे सिद्ध सन
 वें ॥ ऊ० ॥ ७ ॥ देखी विस्मित लोक उमंगें, पग
 ग एहवुं पूजे ॥ अहो सुगुण तुं आव्यो किहांयो, नि
 शें एह कीन्युं ने ॥ ऊ० ॥ ८ ॥ ते चयनी रक्षा दे
 हुं, आव्यो तुं नृप काजें ॥ इम कहेतो पोहांतो नृ
 जवनें, सिद्ध पुरुष गुन सार्जें ॥ ऊ० ॥ ९ ॥ राख

टली आपे नृपनै, कहैतो एहबुं रंगें ॥ ए नाखो निज
 माथे एहथो, रहेजो निरुध्या अंगें ॥ ऊ० ॥ १० ॥
 नूप नणै छुं न बल्यो चयमां, आव्या दीसो साजा ॥
 आग सगी नहों जगमां केहनै, न गणै सतियां आजा ॥
 ऊ० ॥ ११ ॥ कुमर विमासे कूडा आगें, बनरो कू
 डुं बोल्युं ॥ कहे नृपनै हुं दाधो चयमां, मन साहस
 नवि मोल्युं ॥ ऊ० ॥ १२ ॥ मुज साहसथी सुरगण
 रीज्या, अमृत रसैं चय गारे ॥ अयो सजी चित्त फरी
 हुं तेहथी, आवी रह्यो चय आरें ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ ठा
 र पोडली तिहांथो लेइ, आव्यो राज समीपें ॥ बाचा
 तेह पसे, तो रुडी, बोली जेह महीपें ॥ ऊ० ॥ १४ ॥
 नूप विचारे धूरत एणें, मीट सकलनी बंची ॥ इहां र
 ह्यो गाली चय वाली, सुनटें करी दृग-बंची ॥ ऊ० ॥
 ॥ १५ ॥ कांत समागम जाणो मलया, मलवानें धस्ती
 आवी ॥ आरक परिवारें बींटी, निरखत हरख
 न मावी ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ एकांतें जइ पूठे पतिनै, पा
 वक पेठा स्वामी ॥ कुशलें केम मलया ते जांखो, पी
 यु कहे अवसर पामी ॥ ऊ० ॥ १७ ॥ अंध कूप गत
 जेह सुरंगा, ते मुख में चय खडकी ॥ पृथुल गर्न घ
 रनै आकारें, द्वार शिलायें अडकी ॥ ऊ० ॥ १८ ॥

पेठो हुं चयमां अइ ठानें, द्वार सुरंग उघाडी ॥
 सुरंग शिला तस द्वारें, दीधी पाठी आडी ॥ ऊ० ॥
 सुनटें चय सजगाडी मूकी, बली बली अइ टाढी
 द्वार उघाडी कुशलें आव्यो, ठार नृपति शिर
 ॥ ऊ० ॥ १० ॥ सुंदरी गुह्य कथा ए माहरी, को
 आगें मत नांखे ॥ दुष्ट नृपति मुज ठिइ विलोके
 तुज लेवा अनिलाखे ॥ ऊ० ॥ ११ ॥ चोथे खंमें
 द्वादशमी, ढाल सुधारस मीठी ॥ कांति कहे
 पिउ संगें, विरह व्यथा सवि नीठी ॥ ऊ० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्यो नरपति तेहवे, कहे सिद्धने जंत ॥ नोजन
 द्यो मलया जणी, अम हार्थे न करंत ॥ १ ॥ तरुणी तुरत
 जमाडीनें, कहे सिद्ध सुण राय ॥ कीधुं कारज ताहें
 हवे अम दीयो विदाय ॥ २ ॥ आपो मुज धण आदरे
 आपो बोल प्रमाण ॥ निरखे जीवा सामुहो, वचन
 णी महेराण ॥ ३ ॥ संकटपी जगव्यो बली, मंत्री ठ
 नुं धाम ॥ अहो सिद्ध साध्युं सबल, नृपतिनुं ए काम
 ॥ ४ ॥ उपकारी शिर सेहरो, महा सत्त्ववर सिंधु
 बीजुं पण महीपति तणुं, कर एक कारज बंधु ॥ ५ ॥

॥ बल तेरमी ॥ विंजाजी हो रतन कूँ मुख सांकडो
रे विंजा, किम करी करुं रे फकोल ॥

सयविंजा, सयण मारू ॥ ए देशी ॥

॥ साधकजी हो एह पुरनें अति ठूकडो रे मित्ता,
नामै गिरिविन्न टंक ॥ सि० रुडा, सयण म्हारा ॥

॥ सा० ॥ विषम ऊरध शिखरें तिहां रे मित्ता, अंब
अडे निरमंक ॥ सि० ॥ १ ॥ सा० ॥ फल तेहनां

अति सोयलां रे मित्ता, लहीयें वारही मास ॥ सि०
॥ सा० ॥ ते शिखरें उंचा चढी रे मित्ता, तलपी

हवें आकाश ॥ सि० ॥ २ ॥ सा० ॥ विषम थलें
आया शिरें रे मित्ता, पोहोचीनें फल लेय ॥ सि० ॥

॥ सा० ॥ ऊंपावो बली अंबथो रे मित्ता, नूतन जा
ग तकेय ॥ सि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ आयो इहां कुंशजें

यही रे मित्ता, मूको फल नृप नेट ॥ सि० ॥ सा० ॥
पित्तविकार नरिंदनो रे मित्ता, टलशे तेहथी नेट ॥

॥ सि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ कुमर विमासे दोहिनो रे मि
त्ता, ए पण नृप आदेश ॥ सि० ॥ सा० ॥ आनक

मरण तणुं सही रे मित्ता, न फुरे जिहां मति लेश
॥ सि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ जो न करुं तो कामिनी रे

मित्ता, नापे ए नरनाथ ॥ सि० ॥ सा० ॥ बिट्टे

श्रुत्यु माहरुं रे मित्ता, पडिया नूमि बे हाथ ॥ सि० ॥
 ॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रनावथी रे मित्ता, क
 रहुं डुष्कर काज ॥ सि० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज
 सुंदरी रे मित्ता, ठे दोय वात सुसाज ॥ सि० ॥ ७ ॥
 ॥ सा० ॥ धारी एहवुं आदरें रे मित्ता, मंत्री वचन
 तिम तेह ॥ सि० ॥ सा० ॥ आसनथी कठ्यो धस
 रे मित्ता, साहसनुं कुलगेह ॥ सि० ॥ ८ ॥ सा० ॥
 मजया जल नयणें नरे रे मित्ता, दुःख पूरें दिलगी
 ॥ सि० ॥ सा० ॥ महबल जण वींटयो घणे रे मित्ता
 आवे गिरिवर तीर ॥ सि० ॥ ए ॥ सा० ॥ जिम जि
 गिरि उंचो चढे रे मित्ता, तिम तिम जणने शोक
 ॥ सि० ॥ सा० ॥ नूपतिनें मंत्री हश्ये रे मित्ता, वा
 हर्षना झोक ॥ सि० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोने गि
 टुंके चढ्यो रे मित्ता, उदय गिरि जिम सूर ॥ सि० ॥
 ॥ सा० ॥ नृप सुनटें नीचो रह्यो रे मित्ता, अंय
 खाड्यो दूर ॥ सि० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रुहुं जे में
 पाज्युं रे मित्ता, न्याय धर्मनें मेज ॥ सि० ॥ सा० ॥
 सफज हजो माहरुं इहां रे मित्ता, तेहथी साह
 खेज ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० ॥ इंस कहेतो अं
 थकी रे मित्ता, आपे जयापात ॥ सि० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां तणो रे मिता, गिरि कूहं नवि मात ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० ॥ पडव्यो गिरिकंदरें रे, मि
 ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साह
 स देखीनें रे मिता, बोव्यो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥
 ॥ १४ ॥ सा० ॥ पडतो वेगें गृंगथी रे मिता, ये खे
 चरनी घांति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अटश्य दुर्ज जन
 देखतां रे मिता, जिम यात्रो नृप खांति ॥ सि० ॥
 ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मिता,
 हाहा पाप प्रचंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पडतां एहना
 हाडनो रे मिता, जडरो कडो किहां खंम ॥ सि० ॥
 ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजन एहवुं नांखतां रे मिता,
 नृपपुर अशिव कहतं ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज
 घर आब्या वही रे मिता, तस साहस स जहतं ॥
 ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहडें सकल सुणावियुं रे
 मिता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ आप
 रुतारथ मानता रे मिता, निवहे रात निरंत ॥ सि० ॥
 ॥ १८ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रजातें आवियो रे मिता, लै
 सहकार करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी
 कहे रे मिता, आब्या केम अखंम ॥ सि० ॥ १९ ॥
 ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेणुं पठें रे मिता, हवणां

पूठजो कांइ ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहेतो इम जन की
 टीयो रे मिता, नृप जवनें गयो धाई ॥ सि० ॥ १०
 ॥ सा० ॥ इयामवदन राजा दूध रे मिता, बीहीना
 निगखी चित्त ॥ सि० ॥ सा० ॥ बोल्यो तेहरे मंत्रवी
 रे मिता, कुशल्यो किम तुं मित ॥ सि० ॥ ११ ॥
 ॥ सा० ॥ इमहीन इति मुख बोलतो रे मिता, मने
 आव करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ कहे ए ल्यो खाउ मइ
 रे मिता, पित्त समावो उदंम ॥ सि० ॥ १२ ॥ सा० ॥
 बीहीना हाके वापडा रे मिता, नृप प्रमुख करे सुन
 ॥ सि० ॥ सा० ॥ वे ब्रह्म तेह करंमयी रे मिता,
 सिद्ध अहे फल धून ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० ॥ नृपने
 पूठी संचरे रे मिता, मजया पास हसंत ॥ सि० ॥
 ॥ सा० ॥ सावनयी निम सोगडी रे मिता, पीठ दीति
 विकर्मंत ॥ सि० ॥ १४ ॥ सा० ॥ सकल उचित पि
 वि साचदी रे मिता, देवी पीठ संग बात ॥ सि० ॥
 ॥ सा० ॥ पंतिनही रे चौथे खंमे तेगमी रे मिता, क
 ले कही ए दात ॥ सि० ॥ १५ ॥ सा० ॥ इति ॥

॥ होला ॥

॥ कल सोडी कामिनी कहे, नालो कल उदंत
 नालीन मल खागम कया, तव महजन पगाल

॥ १ ॥ सुंदरी पहेलो मुज मळ्यो, योगी वनमां जेह ॥
 प्रजळ्यो पावक कुंममां, थयो व्यंतरो तेह ॥ २ ॥ ते
 व्यंतर इहां अंधमां, वसिउं मुज नाग्येण ॥ गिरिथी
 पडियो वचन वदे, उजखियो हुं तेण ॥ ३ ॥ आप करें
 मुजनें ग्रही, बोळ्यो ते गुण लीह ॥ रे उपगारी मित्र
 तुं, मनमां कांइ म बीह ॥ ४ ॥ आप स्वरूप कहुं ति
 थें, में पण मुज विरतंत ॥ करतां मैत्री संकथा, बी
 ती राति तदंत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुज मनहुं तुमयी हळ्युं, रहो रहो मित्र मुजा
 ए रे ॥ थावो अम घर प्राहुणां, पालो प्रेम पुराण रे

॥ मु० ॥ १ ॥ पूरवला संबंधथी, मलीयो जो मुज आई
 रे ॥ तो तुं एम उतावलो, उगीनें कांई जांई रे ॥ मु० ॥

॥ २ ॥ प्राहुण गति शी साचवुं, कहे तुं मुखथी आप रे ॥
 तुम थाणा माये धरुं, जिम जग नृपनी ठाप रे ॥ मु० ॥

॥ ३ ॥ तव हुं बोळ्यो ते प्रते, सुण बांधव गुणवंत रे ॥
 नृप कामें हुं आवियो, ढील इहां न खमंत रे ॥ मु० ॥

॥ ४ ॥ पण बांध्यो में जेहवो, तेहवो हुये सुकयळ रे ॥ तो
 जाणुं मैत्री तणुं, सही सफल परमळ रे ॥ मु० ॥ ५ ॥

बोळ्यो सुर सुण मित्रजी, ए नृप शत्रु सरीख रे ॥ ६ ॥

चाहे बुझनैं, कहे तो दुं हवे शीख रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ में जायुं
 एह एटले, नहिं विरमे जई आप रे ॥ तो एहनें सम
 जावगुं, करी कूडो उपजाप रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ विपम
 प्रयोजन ताहरे, आवी पडे कोई जेथ रे ॥ संजायो हुं
 ततक्षणें, करगुं सान्निध्य तेथ रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ इम क
 हेतो मुर किहांयकी, जाव्यो एक करंम रे ॥ सरस
 रसान तणे फलें, जरीयो तेह अखंम रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ मु
 जनें तेह करंमगुं, सुखर आप उपाडी रे ॥ सूख्यो पुनै
 उपवनें, जिहां जिन मंदिर आडी रे ॥ सु० ॥ १० ॥ मुर
 बोख्यो ए फल जई, देजे तुं नृप हाथें रे ॥ अदृश्य
 गनिक रुपें निहां, आवीज हुं तुज साथें रे ॥ सु० ॥ ११ ॥
 जे जे बटये काम त्यां, करगुं ठाने हुं तेह रे ॥ शीख
 वियो इम सुझनैं, देवें आणी सनेह रे ॥ सु० ॥
 ॥ १२ ॥ आप्यां तेह करंमीउं, नृपति आगजें जाई
 रे ॥ जेई अदृष्टा तेहनी, बेठां हुं इहां आई रे ॥ सु० ॥
 ॥ १३ ॥ एहवे तेह करंमयी, कडकडनो स्वर कूर रे
 डडनिवो बलियो मदा, पडठेंदे नरपूर रे ॥ सु० ॥
 ॥ १४ ॥ ग्याउं पनेजो हुं नृपनैं, के मुर ग्याउं प्र
 न रे ॥ एक जगनैं विहंमनिदिया, नहिं मुहुं हुं
 दान रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ मुर सुनीनैं नरपति,

यो चित्तानी ज्ञान रे ॥ अथरतो कहे सचिवने, कर
 माहारी संजाल रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ सिद्ध दुष्टद कोरे
 सिद्ध ए, गुहातम निपणीत रे ॥ हुंकर काम करे द
 री, अण चित्तुं केणी गीत रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ कज
 मिशें एह करंममा, आणी कांइ चलाय रे ॥ आगणने
 कृपकारिणी, बलगाढी कृपलाय रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ सचिव
 कहे नृपने प्रभु, एहनें मुख वियो धूल रे ॥ इम कहीनें
 वारी जतो, आये करंमनें मूल रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ क्रूर
 सुणे रय तेहनो, जिम बमहुंहुनिनाद रे ॥ कण वियर
 विष सारिखो, करत अशनि धुनि वाद रे ॥ सु० ॥ २० ॥
 फल ग्रहेवा तस टांकणुं, कपाढे ततकाल रे ॥ वज्रा
 नल सरखो तदा, प्रगट दुई माहाजाल रे ॥ सु० ॥ २१ ॥
 जड जड शब्दे गाजती, प्रत्यक्ष जेम जड धाडि रे ॥
 तेह करंमथी नीसरी, करध नाग धूमाडि रे ॥ सु० ॥
 ॥ २२ ॥ छट प्रधाननें तेणीये, जाल्यो जेम पतंग
 रे ॥ कृणमां जीवो त्यां दुज, निर्जीवित दहि अंग
 रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ मंदिर कांते सलगिल, अंगनि म
 हा डरवार रे ॥ बीहितो नृप तव सिद्धनें, तेडावे ति
 णि वार रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ मुज आधीन सुरें तिहां,
 दीसे ठे कांइ कीय रे ॥ इम धारी नृपति कनें, अ

आस्पद बे अविवेक ॥ संपद होय संपवरा, निरखी
 नृप नय ठेक ॥ ४ ॥ तेह जणी नय गोचरें, निगम
 विचारी गुळ ॥ आतम वचन प्रमाणवा, आपो महि
 ला मुळ ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोझिया, करो देव ए
 वयण ॥ अन्नय रसैं कोपावचो, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥
 ॥ ढाल पंदरमी ॥ योगीतर चेला ॥ ए देशी ॥
 ॥ वचन सुणी नरराजियो रे, पढीयो विमासण मांहीं
 रे ॥ नारि रस रातो पेतो उपांपल गोचरें होलाल ॥
 हियडे चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्रांहीं रे ॥
 करछं विधि केही, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥ १ ॥
 मंत्र तंत्रादिक योगनारे, जहेतो विविध प्रकार रे ॥
 सांधे बाहिरनां, कारज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह
 जणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अन्यंत
 र कोई, झुप्कर ते करशे किहां होलाल ॥ २ ॥ कार
 ज विण कीधे सही रे, जोतां पुरनां लोक रे ॥ होशे उ
 शीयाला, नोंगे पडशे वापडो होलाल ॥ फरि नही मा
 गे सुंदरी रे, थाशे मसागति फोक रे ॥ पहेली जे की
 धी, मलशे नहिं वली ताकडो होलाल ॥ ३ ॥ इम
 करे फावशे प्रिया रे, थपयश लोक विचाल रे ॥ न
 हीं होशे महारे, एहवुं विचारी बोझियो होलाल ॥

सिद्ध प्रसिद्ध रे ॥ मु० ॥ २५ ॥ कहे सकल परे रा
 जियो, बोढ्यो एम मरंत रे ॥ सिद्ध कृपा करी टालिये,
 विज्वर एह डुरंत रे ॥ मु० ॥ २६ ॥ सिद्धें तव जल
 ठांटीयुं, अनल हुउ उपशांत रे ॥ ठांकीयो अंब करंमी
 उ, तव रहियो विश्रांत रे ॥ मु० ॥ २७ ॥ कानें ते
 ह करमनें, बेसे नहीं कोई आय रे ॥ सापें खाधो शि
 दरी, देखी कृण न मराय रे ॥ मु० ॥ २८ ॥ कुशलें
 सिद्ध करंमीयो, उघाडी फल लेय रे ॥ विस्मित नूपा
 दिक जणी, आपहथु जव देय रे ॥ मु० ॥ २९ ॥ त
 व महीपति मरतो हीये, खंचे कर मुख फेरी रे ॥
 थापी बीजानें करें, लेवरावे सिद्ध प्रेरी रे ॥ मु० ॥ ३० ॥
 जीवानो नंदन वडो, सचिव कस्यो गुण खाणी रे ॥
 चोथा खंमनी चौदमी, कांतें ढाल वखाणी रे ॥ मु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप पूछे किम कबहुयो, एह महानय सिद्ध ॥
 मंत्रीनं जेणें इहां, मरण अवस्था दीध ॥ १ ॥ कहे
 सिद्ध ए पद्वय्यो, तुज अन्याय कुवृद्ध ॥ हवे फूल फ
 ल एहनां, लहेरो तुं प्रत्यद्ध ॥ २ ॥ महीयल माहिं
 महीपति, जेह करे नय पोष ॥ नासे आपद तेहयो,
 वाधे संपद कोष ॥ ३ ॥ नीतिमाहि आपद तणो,

बास्यदे ते अत्रितेक ॥ मंद होय सप्रेम, निराली
 नृप नव तेक ॥ ४ ॥ तेह जणी नव गोचरें, निगम
 विचारी मुक्त ॥ आत्म वचन प्रमाणवा, आशे महि
 ला मुक्त ॥ ५ ॥ सामंतादिक बोलिया, करी देव ए
 वयण ॥ अनय रसें कोपावयो, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥

॥ बाल पंजरमी ॥ योगीनर चेला ॥ ए वेशी ॥

॥ वचन सुणी नरराजियो रे, पढीयो विमातण माहिं
 रे ॥ नारि रस रातो पेठो उपापल गोचरें होलाल ॥
 हियहे चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्रांहीं रे ॥
 करछुं विधि केही, मुज मनथी नवी उतरे होलाल ॥ १ ॥
 मंत्र तंत्रादिक योगनारे, लहेतो विविध प्रकार रे ॥
 साधे बाहिरनां, कारज ए सहेजें इहां होलाल ॥ तेह
 जणी निज देहनो रे, सोपुं काम सफार रे ॥ अच्यंत
 र कोई, डुप्कर ते करशे किहां होलाल ॥ २ ॥ फार
 ज विण कीये सही रे, जोतां पुरनां लोक रे ॥ होशे उ
 शीयाला, जोगे पडशे वापडो होलाल ॥ फरि नहीं मा
 गे सुंदरी रे, याशे मसागति फोक रे ॥ पहेजी जे की
 थी, मलशे नहिं वली ताकडो होलाल ॥ ३ ॥ फ
 करे फावशे प्रिया रे, अपयश लोक विचाल रे ॥ न
 हीं होशे महारे, एहवुं विचारी बोलियो होलाल ॥

शों, तो थई ठे एटले घणी होलाज ॥ सिद्ध विमासी
 हवुं रे, बोव्यो एह जो दोट रे ॥ पाये अणु
 वनमां जिन प्रणमे शुणी होलाज ॥ १४ ॥ श्री
 अजित जुहारीनें रे, पायें आवे आंहिं रे ॥ तो यारो
 साजो, बीजो उपाय नहीं तिरयो होलाज ॥ असमर्थ
 पण राजियो रे, कहे हवे चालो त्यांहिं रे ॥ साजो जो
 थावं, तो मुज अजर अठे किरयो होलाज ॥ १५ ॥
 लोक कहे निज पापथी रे, बलगो आवी वींग रे ॥ नू
 पतिनें पूठें, करशे नहिं हवे खोजणी होलाज ॥ रूप
 बन्युं जोवा जिरयुं रे, प्रत्यह् जिम जोटींग रे ॥ दीसे
 ठे कोई, खेधें लत पाम्यो घणी होलाज ॥ १६ ॥ पुर
 जन जोवा पेखणुं रे, चढिया गोखें धाय रे ॥ तिहां
 होडा होडें, ठामें ठामें टोलें मय्या होलाज ॥ चाल
 ण मांमे नूपति रे, पण न पडे वग कांड रे ॥ जोतां
 दुःखदायी, कारण बे वांकां मय्या होलाज ॥ १७ ॥
 जो मांमे पग पाधरो रे, तो दीसे नहिं माग रे ॥ लो
 चन उपरांते, लड थडतो पगें आयडे होलाज ॥ अ
 वले पग ज्यां संचरे रे, लेतो मारग नाग रे ॥ वेरणि त्य
 वाधे, प्रेरण शक्ति विना पडे होलाज ॥ १८ ॥ विद्वं
 वार्ते पुर लोकनें रे, करतो कौतुक दुःख रे ॥ जई अ

थो पाठो, साले मार कुचोटनी होलाल ॥ लोक स
 मरु समजाविउ रे, थाशे हवे अजिमुक्त रे ॥ चिंते
 इम बीजी, खांचे नशा सिद्ध कोटनी होलाल ॥ १९ ॥
 वदन बलीने पाधरुं रे, बेतुं पातुं ताम रे ॥ लागी न
 हिं बेला, हूउ अंतेवर त्यां खुशी होलाल ॥ कर जो
 ढी कहे सिद्धनें रे, बेचाणा तुम नाम रे ॥ सुगुणा
 ससनेही, जोईये ते मागो हसी होलाल ॥ २० ॥ सि
 ष हवे मागशे इहां रे, चोंपे मलया बाल रे ॥ नूपति
 पार्सेयी, अरज करावी तेहणुं होलाल ॥ चोखी चो
 था खंमनी रे, एह पन्नरमी ढाल रे ॥ नांखी रस ने
 ली, कांतिविजय बुध नेहणुं होलाल ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे राणी प्रत्ये, वंठित थाप विचार ॥
 जो होय चारो तुम तणो, तो देवरावो नार ॥ १ ॥
 गोरडीयां गुणवंतियां, जो देवरावो वाम ॥ तो थोढामां
 प्रीठजो, सरियां मुज लख काम ॥ २ ॥ वचन सुणी
 राणी सवे, थावी नृपनी पास ॥ मलया मूकावण न
 णी, करे कोढि अरदास ॥ ३ ॥ उत्तरं न दीये महीप
 ति, पाठो कांइ प्रगट ॥ थाने काने काढतो, चिंते ए

निपट्ट ॥ ४ ॥ जाती मलया सुंदरी, राखुं किम
 दीश ॥ बुद्धि नको मुज ऊपजे, जेहथी फवे सदीस।
 ॥ ढाल शोलमी ॥ प्रणमी सद्गुरु पाय,
 गायशुं राजीमती सतीजी ॥ एदेशी ॥

॥ एहवे अनल उदंम, वाजीशालामांहि जागीउ
 जी ॥ उंचो जाल अखंम, दारुण गयणें लागीउजी
 ॥ १ ॥ निरखीनें नरराज, सिद्धप्रत्यें पनणें इष्ट
 जी ॥ चोष्टुं वली मुज काज, एक अठे करवा जिय
 जी ॥ २ ॥ वारू पाट केकाण, एह बले हयशालमा
 जी ॥ काढो खेंची सुजाण, काम करो एक तालमा
 जी ॥ ३ ॥ रीज्यो हुं तुज नारि, आजज सोंपुं ए
 डीजी ॥ जोतां जण दरबार, वलीयो मणिमय पा
 डी जी ॥ ४ ॥ निसुणी पुरजन लोक, नांखे ए नृ
 चातखोजी ॥ पाम्यो शीक्षा रोक, तो वली इमकां प
 तखोजी ॥ ५ ॥ अति दुष्टाध्यवसाय, गोडे नहीं ए
 र्मेतिजी ॥ करी कोइ व्यवसाय, योग्य दीयुं शीक्षा र
 जी ॥ ६ ॥ ध्यातो एहबुं त्यांहिं, उहाहें बमणो य
 जी ॥ पेसण हुतछुज मांहिं, वाजी शालें उनो ज
 जी ॥ ७ ॥ मनमां नृपनें आप, निंदे आक्रोशें घण
 जी ॥ बांध्यो कोपनें व्याप, इष्ट संनारे आपणोजी

॥ ७ ॥ सनारे तेह देव, करना सफल मनोरथाजी ॥
 जंपावे ततखेव, बीरे पतंग पडे यथाजी ॥ ८ ॥ दाहा
 कार करंत, शोक नशा पुरजन तदाजी ॥ आसूडे व
 रसंत, लोचन जिम लल चारिदाजी ॥ ९ ॥ पाम्यो
 नूप प्रमोद, कुमर जंपाणो देखीनेंजी ॥ माणो हास्य वि
 तोद, सचिवनें साध विशेषिनेंजी ॥ १० ॥ घडियो ह
 प सिद्धराज, अगनिथी नीसरिउं तवेंजी ॥ दीसे जि
 म सुरराज, आरोह्यो वझेःश्रवेंजी ॥ ११ ॥ दीपे तेज
 अपार, दीव्य वसन नूपण धखांजी ॥ फलहल ज्यो
 ति तुखार ॥ अंगें साज नला नखाजी ॥ १२ ॥ धौ
 रादिक गतिपंच, १ धौरित २ वजित ३ भुतकं ४
 वतरकं ५ वत्तेजित ॥ नेदे तुरंग रमाडतोजी ॥ तन
 विलसित रोमांच, जननें चित्र पमाडतोजी ॥ १३ ॥
 देतो हर्षविपाद, लोक नूपतिने पालटीजी ॥ मनमां
 अति आब्हाद, धरतो इम कहे उल्लटोजी ॥ १४ ॥
 अहो अहो तीर्थनी नूमि, एह ठे वंठित दायिनी
 जी ॥ ज्वलित हुताशन धूम, फरसें जे अघ घायि
 नीजी ॥ १५ ॥ पडियो हुं इहां आज, बीजो तुरं
 गम ए वलीजी ॥ बलतां सिद्धतां काज, एहवा थया
 माता टलीजी ॥ १६ ॥ आजथकी अम अंग, १

हवो जगत प्रकाश म० ॥ द० ॥ १४ ॥ म पडीश
 माता मोहमां रे, लंकेश्वर जिम मूंज म० ॥ द० ॥ १५ ॥
 चित हितारथ धारियें रे, आणी मननी सूज म० ॥ द० ॥ १६ ॥
 दूत वचन सुणी लहें रे, आव्या सुसरो तात म० ॥ द० ॥
 ॥ द० ॥ मनमांहे हरख्यो घणुं रे, बोव्यो फेरवी धा
 त म० ॥ द० ॥ १६ ॥ सैन्य घणुं जो नूपनें रे, तो शुं
 नहीं छुज दोय म० ॥ द० ॥ एक एक देह नहीं कियुं रे,
 केवल नर नहीं होय म० ॥ द० ॥ १७ ॥ एकलडो पण
 दिणयरु रे, तेज तणो अंबार ॥ म० ॥ द० ॥ कोडिग
 से तारातणुं रे, हरे महातम सार ॥ म० ॥ द० ॥
 ॥ १८ ॥ आफलतो आना जगें रे, मानीमां शिरदार
 म० ॥ द० ॥ एकाकी पण केशरी रे, गाले गजमद
 नार म० ॥ द० ॥ १९ ॥ तिम हुं जो पण एकलो
 रे, ते नृप ते बल साज म० ॥ द० ॥ बाणेरणमां ते
 होनी रे, फेडीश छुजनी खाज म० ॥ द० ॥ २० ॥ वा
 हलो पण अन्याईयो रे, शीखवीयें सुत थाप म० ॥
 द० ॥ अन्यायें आता पखू रे, लाज्या नही अयाप
 म० ॥ द० ॥ २१ ॥ जो नेही ठे नूपनो रे, तो अम
 कहो लान म० ॥ द० ॥ अमसायें तो वेडतां रे, न
 रजो वाचां आन म० ॥ द० ॥ २२ ॥ न दीये शिक्ष

(३६३)

डुष्टने रे, न गणे साजन शर्म म० ॥ ६० ॥ तो अ
म सरिखाने रहे रे, केहो नृपनो धर्म म० ॥ ६० ॥ २३ ॥
अन्यायी तुज राजिया रे, आव्या जेह उमंग म० ॥
॥ ६० ॥ तेहने पण समजावशुं रे, खग साखें रण
जंग म० ॥ ६० ॥ २४ ॥ सर्व मनोरथ एहुना रे,
रीश हुं इणवार म० ॥ ६० ॥ जा कहेजे तुज पूवले रे,
आव्यो हुं निरधार म० ॥ ६० ॥ २५ ॥ दूत गयो पाठो
वही रे, चौथे खंमे अनूप म० ॥ ६० ॥ ढाल कही ए
अठारमी रे, कांतिविजय करी चूप म० ॥ ६० ॥ २६ ॥
॥ दोहा ॥

॥ सिंहासनयो ऊठियो, बहि मंमपमां आय ॥ ६
का तिहां संग्रामनी, वज्रहावे सिद्धराये ॥ १ ॥ रणरा
तो मातो मर्वे, तातो क्षत्रीय तेज ॥ आव्यो नृप मल
या कन्दे, कहेवा रहस्य सहेज ॥ २ ॥ महुलामां मज
या नणी, ये रहेवा निर्देश ॥ चतुरंगी सेना सजी, ध
रे थाप रणवेश ॥ ३ ॥ असवारी कीधी गर्जे, रण रं
गे शणमार ॥ नीसरियो पुरथी महा, धिंग कटक वि
स्तार ॥ ४ ॥ नवल दमामां गडगडघा, वागां चढ़ र
णतूर ॥ रसिया नाद जंजेरिया, धनिग उजटपो शूर
॥ ५ ॥ उपां ये करवालने, टोपां कै पहेरंत ॥ ६

केता सज्ज करे, धोपां केई धरंत ॥६॥ गज गाजे हय
 हेषणें, रथ चितकार अखंम ॥ सिंहनाद शूरा तणे,
 बधिर हूत ब्रह्मंम ॥७॥ कवच हरा आयुधधरा, पूरा
 रण खेजाड ॥ रणथंजे जई वागियां, फोजां तणां कमा
 ड ॥ ८ ॥ वे दल आसा साहसां, अडियां आई सबा
 हिं ॥ नामनिअणपेठा बही, तारु नड रण मांहिं ॥९॥

॥ ढाल आगणीअमी ॥ कडखानी देगी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप वे नडे सिद्धं,
 रण तणा दाव रमता न चूके ॥ जनड वनता महा
 मद ठवया हाशिया, जेव गिगिर नडे आई दूके ॥
 ॥ सजे ॥ १ ॥ गज चट्या जेव ते गज नट्यापी
 अडे, रथ चट्या रथचट्यापी न संजे ॥ तुरंगधर तुरं
 गधर साथ कपटां जाव, पावचर पावयां गंग कृजे
 ॥ सजे ॥ २ ॥ वज्रव शरणाईयां गंग गिधु गिरे, गृहिर
 निशाण चाण्याज संजे ॥ पुर रणतुर रथ चार निगव न
 णी, युद्ध रम निगवता जई प्रयुंम ॥ सजे ॥ ३ ॥ सु
 णन रणनाड नतमाड रण पुरिया, देव समतेर ज्यो
 द्विगुण कृजे ॥ चट्या चट्या पडे कवच नीचा तणां
 जेदीयां निगवण रमोच कृजे ॥ सजे ॥ ४ ॥ रथ
 चितकार जवकार जजनी जिन्या, गाईयां गयनवर

पुमरीकें ॥ स्वदग कदबोल नृपदंस खेजे तिहां, फेर न
 ही जलधि रणमा रतीकें ॥ स० ॥ ६ ॥ सुद्ध वर
 नोपरि वचन प्रतिदत्त करे, सिंहनादै मद्धा सिंहनादै ॥
 छजपुगा फालणे छज गुगा फालता, करत रण नये
 लीला विवादें ॥ स० ॥ ६ ॥ योद शिरनाल रण चालमा
 वसुक्क्या, कर्ध्वमुख तास रुचि तेम शोनी ॥ ज्वलित
 मन रोप पावकथकी नीसरे, धूम धोरणी जिंती गग
 न घोनी ॥ स० ॥ ७ ॥ करत ललकार हलकार नड को
 पिया, चलत धमकारणुं शेष मोजे ॥ कर ग्रही ढाल
 धुंताल धुंकल रसें, ठयल ठंठाल करवाल तोले ॥ स० ॥
 ८ ॥ जाति छज वीर्य गुण वंश चदनावता, धंदिजन
 प्रबल शूरा जगाडे ॥ उमगिया योध बल बोध करि
 आपणा, रण तणी सबल वाजी फबाडे ॥ स० ॥
 ९ ॥ अश्व खुरताल पडतालथी कपडी, खेह अं
 वर चढी सूर ठायो ॥ दिशि दुई धुंधली अरुण रंगें
 धरा, जाणे विण काल वरसाल आयो ॥ स० ॥ १० ॥
 सगग शर धार वरपण लगी चिहुं दिशें, बगग वरठी
 चले अगग गेढी ॥ रणण रणकार नल्ली (फरती)
 तणा वागिया, सिद्ध सुद्धाण नाखे उथेडी ॥ स० ॥
 ११ ॥ खडग खटकार गजदंत कपर पडे, जर

जरहर जरे अगनि बुंदा ॥ तप तप्या शुंढ
 जल वर्षणें, तुरत शीतल करे ते गयंदा ॥ स० ॥
 ॥ १२ ॥ सबल हाथाल जूजाल मोगर ग्रही, जोरु
 वैरी सनमुख उहालें ॥ वहत नन शस्त्र देखी सुर
 खेचरा, वज्रशंकायें नासे विचालें ॥ स० ॥ १३ ॥
 प्रोझ्या सुनट केर गांजडे गगनमां, जरध कीया जि
 स्या नट्ट वंशें ॥ उमत आकाश आयास विण गृ
 नें, बलि महोत्सव हुं तास मंसें ॥ स० ॥ १४ ॥
 अडड अडडाट करि बूटीयां शतघनी, धुमल धूआं
 धुखें धुम्मरोला ॥ अगनि कण खिरत तग तगत ताता
 घणा, दश दिशें चालीया लोह गोला ॥ स० ॥ १५ ॥
 दडड परनाल ज्यो खाल रुहिरा वहे, कडड नर को
 परी खंम फूटें ॥ गडड गेवरि गडें नालि मुख आह
 एया, खडड खग खाटकें फलक बूटें ॥ स० ॥ १६ ॥
 कलह खय काल सरिखो हुं आकरो, सिद्ध नृप सै
 न्य जागुं दिगंतें ॥ थिर करी बल हवे आप समरंग
 णें, आवियो राघ रोषाल खंतें ॥ स० ॥ १७ ॥ हाक
 तो सुनटनें युद्ध मंमें तिहां, सिद्ध रणरंग गज वेस
 ताजें ॥ विश्व नूपण गर्जे गूर चढि धाईयो, वी
 संग्राम तिलकें विराजें ॥ स० ॥ १८ ॥ देखि पर

बल महापुत्र परिचित निदा, अमर मंनारियो तिह
 राये ॥ आत्रियो करण सादाज्य नेमं बडी, नूप हित
 हेत लागो अराये ॥ स० ॥ १० ॥ आगता बैरी
 हयिपार अथ मार्ग, लेव तिहारायने देव आपे ॥
 सिद्ध गर धार वरसी घणा नूपने, मोरचापी परा
 दूर आपे ॥ स० ॥ १० ॥ कौतुकी अर्ध चंदाज राणे
 करी, शूरना वीरना ठत्र नेदे ॥ चम चम नेजा धजा
 माहि मूरत बडा, तोडियां चिन्ह नृपना उमेदे ॥
 ॥ स० ॥ ११ ॥ कर महे नूप विहुं शस्त्र जे नाखवा,
 तेह पण सिद्ध शस्त्रे विखरने ॥ करत यतना घणी
 वेहुंना देहनी, समरनो खेल इम वारु मने ॥ स० ॥
 ॥ ११ ॥ नूप जांवा पडथा चित्त संकल्पता, समर
 कना रह्या शस्त्र नाखी ॥ खंन चोथे नलो ढाल उंग
 णीशमी, जाति कडखा तणी कांते नाखी ॥ स० ॥ १३ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ दीन वदन शोकानुरा, जोतां नीची देठ ॥ नि
 रख्या सिद्ध महीपति, नाख्या जाणे वेठि ॥ १ ॥
 इम इम कारज साधना, करवी ते सुरराय ॥ इम सम
 जावीने जिखे, लेख एक तिण्ठाय ॥ २ ॥ बाण मुखे उ
 ची लेख ते, मूक्यो गुण संधेव ॥ नरपति कुल १५

जावतो, चढ्यो गगन ततखेव ॥३॥ पोहवी हेगे
 तरी, करे प्रदक्षिण तीन ॥ शूरनृपतिने पाखती, ते
 थई आधीन ॥ ४ ॥ पय प्रणमी लोटेंगणे, मूके
 तुरंत ॥ सिद्ध नरींद कन्हे वही, फरी आव्यो उमंग
 ॥ ५ ॥ चरित निहाली बाणनां, विस्मित दूआ नरी
 द ॥ देव सगति विण किम दुवे, अचरिज एह अमंद
 ॥ ६ ॥ निश्चेतन चेतन तणा, खेले खेले कदापि ॥ ७
 रमारथ एहनो इहां, किम जाणीशुं आप ॥ ८ ॥ एम
 कही निज कर ग्रही, तुरत उखेडे लेख ॥ जोतो अह
 र मालिका, लहे परम उल्लेख ॥ ९ ॥ लोक सकल
 मलिया तिहां, सुणवा पत्र उदंत ॥ हरख वशंवद पत्र
 त्यां, वांचे वसुधा कंत ॥ १० ॥

॥ ढाल वीरमी ॥ थारानें माहारा करहजा,

वरता नदीने तीर हमीरा ॥ ए देशी ॥

॥ स्वस्तिश्री जिनपद नमी, जकत्या श्रीमती तंत्र ॥
 सनेही शूरप नृप चरणांबुजें, सुत महबल निखि पत्र ॥
 सनेही ॥ १ ॥ कुशल संदेशो पाठवे, ठे अमने सुखशात
 ॥ सण ॥ तात शरीर नीरोगता, चाहुं हुं दिनरात ॥ सण ॥
 कुण ॥ २ ॥ वीरधवल सुसरा जणी, प्रणति करुं कर
 जोडि ॥ सण ॥ तात श्वसुर सुपसायथी, पाम्यो यशनी

कोटि ॥ स० ॥ कु० ॥ ३ ॥ निज दयिता पामी ति
 हो, लाधु बली नृपराज्य ॥ स० ॥ पूज्य चरण गुन
 चिंतने, कीधु सवल साहाज्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ४ ॥
 में गुन वीरल वासीठ, करवा बाल विनास ॥ स० ॥
 समजो अविनय मादरी, करजो कोप विनाश ॥ स० ॥
 ॥ कु० ॥ ५ ॥ तात चरण नेट्या तणी, चाद हती
 निज नित्य ॥ स० ॥ ते गुनदैवें मादरी, पूरी था
 ल अचिंत्य ॥ स० ॥ कु० ॥ ६ ॥ काई विषाद करो
 हवे, पठपारो पुरमाहिं ॥ स० ॥ वांचत लेख ईस्यो
 सुणो, पूया हर्ष ठछाहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ ७ ॥ पर
 मानंद महारसैं, सिंच्या नृप सरवंग ॥ स० ॥ सैनिक
 समरु कहे अहो, अहो अहो ए दिन चंग ॥ स० ॥
 ॥ कु० ॥ ८ ॥ कुमरीगुं सुतरलजी, मलियो महव
 ल थाई ॥ स० ॥ जीवित सफल थरुं हवे, जीवा
 दया महाराई ॥ स० ॥ कु० ॥ ९ ॥ उरिया दुःख
 खाण्थी, दुहिलममां लहि थाथ ॥ स० ॥ काढ्या
 नरक निवासथी, पडतां साह्या हाथ ॥ स० ॥ कु० ॥
 ॥ १० ॥ शूरपाल नृप इम कही, वीरधवल जेई सं
 ग ॥ स० ॥ महवल साहमो चालियो, धरतो बहुल
 वमंग ॥ स० ॥ कु० ॥ ११ ॥ पूज्य विने साहमां

पगें, दीठा आवत तेण ॥ स० ॥ सहसा हरपें सामो
 हो, आवे आप रसेण ॥ स० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलि
 या हेजें हरखता, टाली वैर विरोध ॥ स० ॥ मांही
 मांहि प्रकाशीत, पूरण प्रेम निबोध ॥ स० ॥ कु० ॥
 ॥ १३ ॥ हर्ष तणे आंसू जळें, ठावो विरह दुताश
 ॥ स० ॥ नेह नवांकुर पल्लव्या, वाध्या रंग विलास
 ॥ स० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमां चंदन सीयलुं, तेथी
 शशिकर योग ॥ स० ॥ शशिकरथी पण शीयलो, वा
 हाजानो संयोग ॥ स० ॥ कु० ॥ १५ ॥ कृण एक ६
 ष्ट कथारसें, निरवाहे सुख शील ॥ स० ॥ वैतालिक
 (नाटचारणादिक) बोल्या तिसें, न सहे वासर ढीज
 ॥ स० ॥ कु० ॥ १६ ॥ सिद्धनृपें निजपुर प्रत्यें, पथ
 राव्या नृप दोय ॥ स० ॥ विंट्या निज निज परिक
 रें, आव्या जेवनें सोय ॥ स० ॥ कु० ॥ १७ ॥ रोती
 दुःख संजारीनें, राणी मलया ताम ॥ स० ॥ बोला
 वी सुतरादिकें, आदर देय प्रकाम ॥ स० ॥ कु० ॥ १८ ॥
 तुरत करावी महावलें, अशनादिकनी नक्ति ॥ स० ॥
 सैनिक सर्व संतोषियां, नूपाळें जली युक्ति ॥ स० ॥
 ॥ कु० ॥ १९ ॥ तात श्वसुर आदें सहु, वेठां सुखमां
 त्यांहिं ॥ स० ॥ रुद्रि निहाली कुमरनी, चित्र जहे

विषमाहिं ॥ स० ॥ कु० ॥ २० ॥ सुत आगे जनका
 विके, जाखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयाये कुम
 र बली, जाख्या तिम अवदात ॥ स० ॥ कु० ॥ २१ ॥
 खरे बीशमी, जाखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥
 कातिविलय कहे सांजलो, आगल वात रसाल ॥
 ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी दुःख विरतंत ॥
 विषम कर्मगति जावतो, तनुजाने पंजणंत ॥ १ ॥ हे
 है नृपकुज कंपनी, पोपी लाम विलास ॥ रखडी दि
 शि दिशि रंक ज्यों, पढी कर्मने पात ॥ २ ॥ सहां
 यिविध दुःख आकरां, कोमल अंगे एम ॥ व्यसन म
 होवधि-डुत्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकबीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीये ॥ ए
 देशी ॥ अथवा, ठी जावना मन धरो ॥ ए देशी ॥
 ॥ शूरपति महीपति बोले ए, पडिया मामा मोर्जे ए,
 खोले ए, निज मन दुःखनो गांठडी ए ॥ १ ॥ हा पुत्री
 हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, थापीयो, कूडो
 कलंक ताहरे शिरें ए ॥ २ ॥ काज कर्तुं में अण जा
 णुं, जल पीधुं ते विण ठाणुं, अतिताणुं, तुज साथें

में दुर्मति ए ॥ ३ ॥ गुनहो ते सवि माहरो, सम
 जो गुणवंती खरो, आफरो, मननो हवे दूरें करो ए
 ॥ ४ ॥ जित कोषा तुं सुंदरी, या रजियायत गुणजरी,
 दिलवरी, करीयें ते हियडे धरो ए ॥ ५ ॥ परमार
 नी झापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तुं सत्य
 शील कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुसरा त
 णां, मजया ते धरी धारणा, कारणां, दुःखनां तुरत
 विसारीयां ए ॥ ७ ॥ धन्य धरामां तुज मती, साहस
 करुणा रति ठती, धृतिगति, सूरिम गुनकृत तुज न
 लां ए ॥ ८ ॥ इंस महाबल गुण नांखता, नृपादिक
 यश दाखता, जण किता, सजहें महबलने तिहां ए
 ॥ ९ ॥ जनकादिक पूठे तिहां, वत्स कहो सुत ठे कि
 हां, लीधो इहां, पापीडे जे वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र
 कहे वाणिज धरें, ठानो किहां किय उठरे, पण खरो
 खबर नहीं ठे ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेडीनें पूठां खरो
 जतरशे नहीं पाधरो, आकरो, करतां ते देखाडशे
 ॥ १२ ॥ ततरुण सुजटें आणियो, पग बांधीनें त
 णियो, वाणीयो, दुःख पीडयो रोवे घणुं ए ॥ १३ ॥
 कहे रे दुर्मति गुं कख्यो, पुत्र लेइनें किहां धख्यो, जा
 ख्यो, किम तुजथी अम नंदनो ए ॥ १४ ॥ करबुं

टो तुज गिरे, तेतो करसुंदिर सारे, पण अवतरे, तु
 त जावा देखे नही ए ॥ १५ ॥ जीहीनो ते कहे तो आ
 १६, पुत्र तुमारी करी थापु, दुःख टापु, माहरो जो दुरे
 करो ए ॥ १६ ॥ ठोडो सुज सकुटुंबने, जो नवि पा
 डो विटवने, तो सुने, देता वेजा ते नही ए ॥ १७ ॥
 दाख्या तस वचने सवे, मान्यु वचन तथा तवे, ति
 ए जवे, पुत्र थाणीने सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो
 बालक सुंदरु, रूपे जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कजा
 नो फलकतो ए ॥ १९ ॥ नूपादिक सविहरखीया, पुत्र
 रतन गुण परखीया, निरखीया, थंग सकल लक्षण
 नखा ए ॥ २० ॥ राय कहे बलसारने, कहेरेसी निर
 धारिने, कुमारने, कीधी नामनी थापना ए ॥ २१ ॥ ते
 कहे बल इति थापना, कीधी ठे करी कल्पना, वध्नापना,
 चित्त माने ते कीजीये ए ॥ २२ ॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो,
 तात तणे खांजे रह्यो, गह गह्यो, खेवा धननी गांवडी
 ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांवडी, सो दीनारनी दीठडी,
 कथडी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोराथी
 गाठी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे वही, शतबज
 नाम त्यां थापीयुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिने ठोडीयो,
 घरवाखर लुंटी लीयो, जीवित दीयो, निज

परिपालवा ए ॥ ३६ ॥ शूर कहे वरपांतरें, मलया
 प्रीतमचुं खरे, इण्णिपुरें, निश्चयचुं दीसे मली ए ॥ ३७ ॥
 ज्ञानी वचन साचुं मळ्युं, वरपातें दुःख निर्वळ्युं, दूरें
 टळ्युं, संकट सघळुं आजयी ए ॥ ३८ ॥ राज्य अचुं को
 तूहलें, सिद्ध नृपें छुजनें बलें, ते तिण वेळें, तातन
 णी आप्पुं वही ए ॥ ३९ ॥ सकुटुंबा वे महीपति, ब
 हेता स्नेहरसोन्नति. छुनमति, राज काज करता बहे
 ए ॥ ४० ॥ चोथे खंनं मीठडी, एकवीशमी रस पूव
 ठी, इठडी, ढाल कही कातें जली ए ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ते कालें तेणे समे, करता उग्रविहार ॥ पारस
 जिनना शिष्य मुनि, चंड्यशा अणगार ॥ १ ॥ ते पु
 रवरने उपवनें, समवसखा गुरु राज ॥ केवलधर गुरु
 नर नम्या, वोट्या साधु समाज ॥ २ ॥ उपगारी वि
 हु लोकने, पूज्य कृपास मिंधु ॥ नव अनंत नांसे
 यथा, रूपें श्रीजगबंधु ॥ ३ ॥ वनपालक जई नीनव्या,
 विहु नृपतिने वेग ॥ पुनजन वंदे पणिवखा, आवे नृप
 ततेग ॥ ४ ॥ पंचानिगमन साचवी, प्राणनी जिनने
 ॥ धर्मकथा सुणवा वन्दे, वेग विनयी तेम ॥ ५ ॥

काल बाबो मी ॥ मलजालनी वेशी ॥

॥ चित्त बुजो रे कांई ठांमो मोदनी निंद, जागो ति
 पधारिणीयकी, नवि बुजो रे ॥ चि० ॥ एतो चिदमो
 जाल पुनिंद, वज जोये वानो तकी ॥ ज० ॥ १ ॥ चि०
 पतो सोकडे उरामांदी, खूता काल थनादिना
 ॥ चि० ॥ घोष न पाम्यो त्याहिं, खोया फोकट के
 दिना ॥ ज० ॥ २ ॥ चि० ॥ वरजो विषय कयाय, ए
 रमा साद न को थरे ॥ ज० ॥ चि० ॥ रद्देशो जो ल
 टाय, पठतावो होशो पठे ॥ ज० ॥ ३ ॥ चि० ॥ वर्जो
 हंता दूर, सत्य वदो परधन तजो ॥ ज० ॥ चि० ॥ ठां
 मी मधुन नूर, परिग्रह मूर्खा मति नजो ॥ ज० ॥ ४ ॥
 चि० ॥ क्रोधादिक रिपु चार, संगति एहनी ठामजो
 ज० ॥ चि० ॥ प्रेम नाय संचार, तजजो द्वेष नमा
 जो ॥ ज० ॥ ५ ॥ चि० ॥ कलहनें अन्याख्यान, चा
 रति थरति तजो ॥ ज० ॥ चि० ॥ पर परिवादादा
 न करो माया मृपा रजो ॥ ज० ॥ ६ ॥ चि० ॥ मि
 यामति मय साल, काढी नाखो चित्तथी ॥ ज० ॥
 चि० ॥ कुगति तणा ए जाल, ठाण थडारह नित्य
 ॥ ज० ॥ ७ ॥ चि० ॥ जीतो इंडिय गाम, मन मां
 ङडलुं वश करो ॥ ज० ॥ चि० ॥ बावो वित्त ७

शील सुरंगो आवरो ॥ ज० ॥ ७॥ चि० ॥ परचो योगा
 न्यास, अहनिशि जावो जावना ॥ ज० ॥ चि० ॥ मुनि
 दीये विलास, कारण एतां पावनां ॥ ज० ॥ ए० ॥ चि० ॥ क
 त्रिम ए संसार, तन धन यौवन कारिमां ॥ ज० ॥ चि० ॥
 जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ ज० ॥ १० ॥
 ॥ चि० ॥ कुण केहनो जगमांहि, स्वारथनां सहुको सगां
 ॥ ज० ॥ चि० ॥ स्वारथ विण नर प्रांहि, वालानें थापे
 दगां ॥ ज० ॥ ११ ॥ चि० ॥ पुण्य अने वलो पाप, एहि
 ज साथें आवरो ॥ ज० ॥ चि० ॥ नोगवरो दुःख आ
 प, तिहां नहिं को वेहेंचावरो ॥ ज० ॥ १२ ॥ चि० ॥
 जुम तणुं जिम ठाण, नरनव धर्म विना तिस्यो ॥ ज० ॥
 ॥ चि० ॥ सुलहा नवनव प्राणि, धर्म नहीं मलरो इ
 स्यो ॥ ज० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टांत डुजंन, मा
 नव नव पुण्यें लही ॥ ज० ॥ चि० ॥ पास्या योग सु
 लंन, सफल करो हवे ते वही ॥ ज० ॥ १४ ॥ चि० ॥
 आवो अति उजमाल, अवसर फिरि नहीं आव
 शे ॥ ज० ॥ चि० ॥ लाख गमे जंजाल, धर्म मारग वि
 च आवरो ॥ ज० ॥ १५ ॥ चि० ॥ चेतो चित्तमां आ
 प, कदेशो पठी जाणुं नहिं ॥ ज० ॥ चि० ॥ टालो
 व संताप, शिव कारण संयम ग्रही ॥ ज० ॥ १६ ॥

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपदेश, चंड्यशायें इम दीयो
 ॥ ज० ॥ चि० ॥ रीज्या दीय नरेश, पुरजन सघलो
 हरखियो ॥ ज० ॥ १७ ॥ चि० ॥ चोथा खंमनी ढा
 ल, एह कही बावीशमी ॥ ज० ॥ चि० ॥ कांतिवि
 जय जयमाल, वरियें सुणतां मनगमी ॥ ज० ॥ १८ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ शूरनरेशर अवसरें, पूढे गुरुनें एस ॥ जगवन
 मलया जलथकी, जखें उतारी केम ॥ १ ॥ सुख शा
 ताये जलधिथी, आणी उतारी कंठ ॥ कारण ते सु
 एवा तणो, ते अमने उतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दि
 वायरू, महिमावंत महंत ॥ चंड्यशा सूरेश्वरू, इम
 कारण पनणंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल त्रिवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, म
 लया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती ना
 में हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का० ॥
 ॥ १ ॥ दुष्यनिं कालें मरी, ते थवतरी रे ॥ जलनिधि
 मां गजमीन ॥ का० ॥ पढतां नारंम सुखयकी, अति
 दुःखयकी रे, श्रीनवकारमां जीन ॥ का० ॥ २ ॥ गज
 मत्सनें वासे पढी, जाणे चढी रे, कमत्रा गजनें

॥ का० ॥ गाढें नवपद त्यां नण्यां, श्रवणें सुण्या रे, मीनें
 मनसां तूत ॥ का० ॥ ३ ॥ ईहापोह कल्यां थकी, मीनें
 चकी रे, दीगो गत नव आप ॥ का० ॥ ग्रीवा वाली नि
 रखतां, मन हरखतां रे, वाध्यो प्रेमनो व्याप ॥ का० ॥
 ॥ ४ ॥ जोतां मजया उलखी, पुत्री दुःखी रे, लागो
 विचारण मीन ॥ का० ॥ हैहै दुःखें अवघडी, एहसां
 पडी रे, दुर्विधिनें आधीन ॥ का० ॥ ५ ॥ सुजयी कां
 ई न नीपजे, नवि संपजे रे, उपकारकनां काम ॥ का० ॥
 तोपण मूकुं इहां थकी, रुडुं तकी रे, जिहां होवे वस
 तीनुं ताम ॥ का० ॥ ६ ॥ यदपि कदाचित् ए वली,
 दुःखथी टली रे, पामे वल्लन योग ॥ का० ॥ इमं चिं
 ति तेणे साठलें, धरी पाठलें रे, सूकी घल संयोग ॥
 ॥ का० ॥ ७ ॥ कंधर वाली निरखतो, एहनें कितो रे,
 दुःख धरतो ऊख राय ॥ का० ॥ नेहें हियडे पूरतो,
 जलपूरतो रे, पाठो जलमां जाय ॥ का० ॥ ८ ॥
 गतनव देखी जागीयो, सोनागीयो रे, साठो पामी
 विवेक ॥ का० ॥ फासु आहार आहारतो, मन
 पारतो रे, श्रीनवपदनी टेक ॥ का० ॥ ९ ॥ पूरी
 आयुष तिहां, सुगति इहां रे, ऊपजरो लघु
 मी ॥ का० ॥ कालें परिणति पाकशे, नव थाक

जे रे, आराधि जिनवमे ॥ का० ॥ १० ॥ मद्गुरु
 वचने सरहे, साजुं कहे रे, नृपादिक नरिजाग ॥
 ॥ का० ॥ वेगवतो नर सांनजी, कहे एम वली
 रे, अहो अहो नायी जोग ॥ का० ॥ ११ ॥ लोक
 कहे एक एक प्रत्ये, जूठ मद्य ठतें रे, पायो जननी
 प्रेम ॥ का० ॥ दाव्यो पण लोहारिकें, अघिकाधिकें
 रे, वानी धारे हेम ॥ का० ॥ १२ ॥ मजया चरित्त
 सुशामणुं, रजियामणुं रे, कहेता वाधे प्रीति ॥ का० ॥
 ढाल त्रेवीशमी ए सहो, मन गद्ग गही रे, कांतिवि
 जय गुन रीति ॥ का० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पूठे वली नर राजिठ, नगवन् करुणावंत ॥
 मजया महबल पूर्वजव, जांखो स्वामी सुतंत ॥ १ ॥
 बालायें वली महबलें, श्यां श्यां कीधां कर्म ॥ जेहयकी
 पौवन समे, लाधां दुःख विण मर्म ॥ २ ॥ सूरि नणे
 महीपति सुणो, थिरकरी चित्र बनाव ॥ मलयाने म
 हबल तणा, जांखुं गत नवनाव ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥ हस्तिनागपुर वर नजुं,

निहां पांछु राजा सार रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुहवी ठाण तुज पुरवरें, एक गृहपति हुंतो

मृदु रे ॥ प्रियमित्र नामें अपुत्रिउ, धनवंतो पूर्वे प्रसि
 द रे ॥ धनवंतो पूर्वे प्रसिद, पूरव नव केवली, इम ना
 खे रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ त्रण दयिता तेहने दूती, रुझा
 वली नझा नाम रे ॥ त्रीजी तिम प्रियसुंदरी, नामें तस
 प्रीतिनुं ठाम रे ॥ ना० ॥ १ ॥ वहेन सगी धुरनी बिन्हें
 मांहो मांहें धारे नेह रे ॥ बिहुं उपर प्रिय मित्रने,
 नवि बेगो प्रेमनो नेह रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ प्रियसुंदरी
 साथें पिउ, अनुकूल रहे निश दीश रे ॥ निरखी ते
 बेहु अंगना, पोपे मनमां अति दोष रे ॥ पो० ॥ ४ ॥
 प्रियसुंदरी प्रियमित्रथी, बिहुं कलह करे नित्यमेव
 रे ॥ प्राहिं सोकजडी तणी, दीसे जग एहवी टेव रे ॥
 दी० ॥ ५ ॥ मदनप्रिय नामें तिहां, प्रियमित्रनें दुंतो
 मित्र रे ॥ प्रियसुंदरी साथें तेणें, मांमी रतिप्रीति वि
 चित्र रे ॥ मां० ॥ ६ ॥ काम महारस याचना, अत्र
 जाने करतो तेह रे ॥ प्रियमित्रें दीगो तिहां, तव जा
 ग्यो कोप अवेह रे ॥ त० ॥ ७ ॥ निज बांधव आगे
 कही, नम चरित्र रहस्यनुं तेण रे ॥ पुरवाहिर का
 द्यो पगो, निघंती कोप वगेण रे ॥ नि० ॥ ८ ॥ बो
 ल्या तिहां केइ बाणिवा, जाणे तेह गुह्यनी बात रे ॥
 नही ए अजाणी अमयकी, पण न करुं कोइ परता

त रे ॥ १० ॥ १० ॥ निज मोटा गुण लघु करे, परगुण
 अणु मेरु करंत रे ॥ धन्य धरामां ते नरा, निरला
 कोइ जननी जणंत रे ॥ वि० ॥ १० ॥ मदनबदन
 जाखुं करी, नागो दिशि धारी एक रे ॥ दुर्वह अटवी
 मां पडयो, नूख्यो बली तरस्यो ठेक रे ॥ नू० ॥ ११ ॥
 पार लह्यो अटवी तणो, ब्रीजे दिन तेणे नेव रे ॥
 आव्यो वही एक गोकुलें, दीगा पशुपालक देठ रे ॥
 दी० ॥ १२ ॥ महिपी कुल वन चारता, वेठा तरु ठा
 या गम रे ॥ नोजननो अरपी धस्ती, आव्यो तेह पा
 सें ताम रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ पय याच्यां गोवालीया,
 आपे पय महिपी दोहि रे ॥ पामर-जन पण आचरे,
 करुणा रस अवसर मोहि रे ॥ क० ॥ १४ ॥ खीर त
 णुं नाजन ग्रही, पशुपालक अनुमति लेय रे ॥ आ
 वे समीप सरोवरें, शीतल जल पानक केय रे ॥ शी० ॥
 ॥ १५ ॥ पंथें वहेतो अनुक्रमें, चिंतें चित्त एम सुहृद रे ॥
 कोइकर्ने आपी जमुं, होय तो मुज जनम कयद रे ॥
 दो० ॥ १६ ॥ चिंतवतां इम सांमुहो, मलीयो मुनि
 पुण्य पसाय रे ॥ मास तणो उपवासियो, पारण दिन
 टाणो आय रे ॥ पा० ॥ १७ ॥ मुनि निरखा मन हर
 खियो, अहो सफल दिवस मुज आज रे ॥ न।

प्रिय मित्रनै, निज लज्जनां जेठ तार ॥ यक्ष पनंजय ने
 टवा, श्यामो सररीवार ॥ २॥ पंचे कहेती अपमर्ग, आ
 र्थो र्था पट डेठ ॥ इक मुनि सादगो आवतां, देखे
 र्था निज डेठ ॥ ३ ॥ आपणने सादगो मर्था, अणु
 न सुरुन ए सुंन ॥ गात्रा चाजो निःकला, एदयो अ
 णुन व्यसंन ॥ ४ ॥ इम कहेती प्रियसुंदरी, जन वा
 दन घोलाड ॥ करे परिसद साधुनं, पाणिणी रीम
 कुहाडि ॥ ५ ॥

॥ डाल पक्षीसमो ॥ जेसांदाने गोरीमें दोला,
 पढारे नगारारी ठोर दोला, नाग मजा जे
 रे रणसिंघ जागोरा ॥ ए देशी ॥

॥ वदय श्यामो मुजने इहां हांजी, परिसद मो
 टो एह हांजी, चिंति एहबुं रे, मुनि कावस्तग गावे ॥
 त्रिविधे धारी रे, श्यातम वांसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नठ
 वस्तियादिकें हांजी, आगारें निरवेह ॥ चि० ॥ १ ॥ पद
 थंगुए नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्या
 न महोदधि लहेरमां हांजी, जीजे मुनि अधिकार हां
 जी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी अमशुं वाकरी हांजी, कनो
 ए हठ मांनि हांजी, कहेती एहबुं रे, कोपो मठरांजी ॥
 कुमते व्यापी रे, आचरणे काली ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

सेवक प्रत्ये हांजी, मर्यादा बट ठामि हांजी ॥ क० ॥ १ ॥
 साहसां ए इंटवाहथी हांजी, जारे लाव हुताश हां
 जी, ए पापीनें मांजिये हांजी, जिम होये अशुन वि
 नाश हांजी ॥ क० ॥ ४ ॥ अशुकन फल एहनें हुवे
 हांजी, फीटे बली अहंकार हांजी, सुंदरी सेवक ए
 वां हांजी, निसुणी वचन विचार हांजी ॥ क० ॥ ५ ॥
 कहे में चरणे पाडुका हांजी, पहेरी ले नहीं आन
 हांजी, इटामां कुण जायशे हांजी, विपम थजे विण
 काज हांजी ॥ क० ॥ ६ ॥ मूकी कदाग्रह एहवो हां
 जी, चालो आगे सदीस हांजी, वचन सुणी पीस
 दासनां हांजी, बोड्यो चढावी रीश हांजी ॥ क० ॥ ७ ॥
 कहेनां एहवुं रे, कोप्यो मठराजो ॥ कुमते व्याप्यो रे,
 आचरणे कालो ॥ अहो सेवक सुंदरी तणा हांजी,
 बांध्यो बडथुं पाय हांजी, नूमी जिहां लागे नहीं हां
 जी, बली कंटक नज जाय हांजी ॥ क० ॥ ८ ॥ या
 हनयो प्रियसुंदरी हांजी, कतरे देवी नुरंत हांजी ॥
 सुनिबर पामे आहनें हांजी, निरुर इम पनपंत हां
 जी ॥ क० ॥ ९ ॥ इम अपशुकनें अमतणो हांजी,
 कदिमत होजो नियोग हांजी ॥ विरह हजो ताहनें स
 हांजी, याहाजानो बजी सोग हांजी ॥ क० ॥ १० ॥

स्वामी तु पापीउ हांजी, राक्षस नो अवतार हांजी ॥
 ॥ १२ ॥ निरुर इम आक्रोशयी हांजी, तप
 नीने ग्रणवार हांजी, पापाणे करी आहणे हांजी
 करती कोप अपार हांजी ॥ क० ॥ १३ ॥ उर्ध्वो मुनिना हाथ
 धी हांजी, ऊडपी लीये निरलज्ज हांजी ॥ निज वाद
 नमां यापीने हांजी, टाळे कुशुकन कज्ज हांजी ॥ क०
 ॥ १४ ॥ कुशुकन फल एहनें दुउ हांजी, चालो
 वे निहचिंत हांजी ॥ इम कहेतां परिवारनें हांजी, सु
 दंपती पयें वहंत हांजी ॥ क० ॥ १५ ॥ यक्ष नव
 पोहोतां वही हांजी, पूज्यो धनंजय देव हांजी
 वेग करजोडी बिन्हें हांजी, सारे विधिगुं सेव हां
 ॥ क० ॥ १६ ॥ रागिणी श्रीजिनधर्मनी हांजी, त
 पर दासी एक हांजी ॥ एहबुं बोली रे, सुंदरी सुगु
 ली ॥ सुमते व्यापी रे, आचरणा वाली ॥ कर ज
 दंपती प्रते हांजी, समजावे इम ठेक हांजी ॥ ए० ॥ १
 पापकरम बांधुं महा हांजी, आज तुमें विण क
 हांजी, उपशम धर तेहयो घणुं हांजी, संताप्य
 पिराज हांजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ हासें पण जो क
 रे हांजी, एहवा कृपिनी जेह हांजी ॥ इहनय पर

मां लहे हांजी, दारिद्र दुःख अठेह हांजी ॥ १८ ॥
 ॥ १८ ॥ श्रीअग्रिहंतें सूत्रमां हांजी, वेप कहां व
 नीक हांजी, आदर करतो वेपनें हांजी, थाणे भगति
 नजीक हांजी ॥ १९ ॥ १९ ॥ वासी वचनें तेव्हा
 हांजी, पास्यां ते प्रतिबोध हांजी ॥ दुर्गति दुःखथी यो
 नां हांजी, यरक्या अई गतकोथ हांजी ॥ २० ॥ २० ॥
 पठतावो करता दीये हांजी, करतां लोचन नीर था
 जी, दीन मना अई आपने हांजी, नींदे वली वली
 धीर हांजी ॥ २१ ॥ २१ ॥ निजदासीनें प्रगलता हा
 जी, पाठां आवे घाम हांजी, तेहिज मुनिपाये ग
 हांजी, वंदे पग शिर नाम हांजी ॥ २२ ॥ २२ ॥
 या खंन तणी दुई हांजी, ए पणवांशमी दात हांजी,
 कांति कहे धन्य ते नग हांजी, मन वाजे नतहात
 हांजी ॥ २३ ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जो बर्मज्जत्र आन हू, पावो कही पावत ॥
 तोहिज ह आनक बर्ही, जालनन पावत ॥ १ ॥
 नी प्रतिज्ञा केली, तिमहीत कजो गेह ॥ राग री
 परिजान लकी, पैरो लपकन गेह ॥ २ ॥
 संपन लकी, न कहे दंडी लकी ॥ अमिज्जत्र पावो हि

करता स्तुति अन्यास ॥ ३ ॥ निजरुत कुचरित
 एना, संचारी सवि रांग ॥ गदगद कंठे वीनवे, ध
 ता दुःख अताग ॥ ४ ॥

॥ राज ठवीसमी ॥ मारुजी केणे थांने चा
 लोजी चालयो, किणे थांने दीधी शीख
 मारा लोनी ॥ वारीहो वक्षिणरी हो
 राजन चाकरी ॥ ए देशी ॥

॥ साधुजी मेंतो थांने चालोजी चालव्यो, म्हेंतो
 थांणुं कीधी जेड महारा साधु, वारी हो सुगुण रे हो
 जावं नामणें साधुजी ॥ राज रुढी नांति हो आदरी
 कोप नाख्यो दूरें फेडी ॥ मा० ॥ १ ॥ मेंतो थारी की
 हो थवगना, पडीयां मोहें वेहु थाप ॥ मा० ॥ नव उ
 याही इहां थाकरुं, थलवें बांधुं जुंमुं पाप ॥ मा०
 ॥ २ ॥ खमजो महोटी एह विराधना, करुणामें रुढे
 त्यालि ॥ मा० ॥ ताता कृता पूर्वे हो जो नसे, पण ग
 न पडे तेहने ख्याल ॥ मा० ॥ ३ ॥ जंबुक यनो कूकेव
 रोशमां, जोरे सोरें मुखडानें पास ॥ मा० ॥ तोही उ
 ही मातो हो केसरी, मांमे नहीं हणवानो क्यास
 मा० ॥ ४ ॥ दोपें पोप्यो जारी हो थातमा, थारो के
 थमचा दवाल ॥ मा० ॥ जो कोई हेतु हो दाखीये

पुर न बसाय ॥६॥ डुष्ट चरित्रा एहबुं, धारी मन
 मो पाप ॥ कारज अचसर पढखती, जई वेठी घर आप
 ॥७॥ तेत्रीशमी ॥ वीर वखाणीराणी चेलणा ॥ एदेशी ॥
 ॥ सांज विहाणी पडी रातडोजी, व्यापिउ घोर अं
 धार ॥ तग तग्या गगनमां तारकाजी, लाग्या फिर
 ण निशिचार ॥ सां० ॥ १ ॥ एकरूपें थया विश्वनाजी,
 जूजुआ वस्तु समुदाय ॥ आक्रम्या श्याम अलिकुलस
 मेजी, तमगुणें आप ठल पाय ॥ सां० ॥ २ ॥ खेलता
 सुरमणी रसेंजी, जेह मधुपान रसजीन ॥ व्यसनथी
 तेह अलि बांधियाजी, कमल काराघरें दीन ॥ सां० ॥
 ॥ ३ ॥ लोक निजनिज घर विश्रमेजी, वजी मट्या
 मार्गे संचार ॥ तेह संमे निसरी गेहथीजी, रहस्य प
 णे तेह जिम जार ॥ सां० ॥ ४ ॥ अगनी धुखती ग्रही
 हाथमांजी, आवी जिहां मुनियर तेह ॥ मूर्तिधर धर्म
 ज्यो थिर रह्योजी. काठस्तग्गे जतकंते वेह ॥ सां० ॥
 ॥ ५ ॥ पोजिये द्वार पुरनां जहयांजी, संत व्यवहार
 विधिमाण ॥ जाणे निज नेत्र मळ्यां पुरेंजी, नावि मु
 नि फष्ट मन जाण ॥ सां० ॥ ५ ॥ लोकसंचार नर्त
 वाहिरे ॥ निरखीपो शून्य वन जाग ॥ डुष्ट कनका
 जोजी, साधवा कार्यनो लाग ॥ सां० ॥ ७ ॥

हरे रे, पावन ए पुर लोक रे वारू ॥ दीयो रे जे ३
 एँ जनकें आइने दीदारू ॥ १३ ॥ एम कही पद ॥
 डुका रे, मूकीनें नरनाथ रे वंदे ॥ त्यांहि रे अति नकें
 रातो पापनें निकंदे ॥ १४ ॥ तात चरण युग जेटिनो
 रे, लोजी ते निशि डुःखथी रे काठे ॥ प्रगडो रे हरे
 प्रगटयो दिणयर दीपियो प्रगाठे ॥ १५ ॥ दात डुई
 वत्रीशमी रे, चोये खंमें एह रे चोखी ॥ कांतें रे सुन
 शांतें नांखी रंगमां रस पोखी ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती हवे ते समे, जनपद पुर नटकंत ॥
 दैवयोगथी डुक्कणी, तिण पुर आवी रहंत ॥ १ ॥
 तेहिज दिन संख्या समे, काननमां गई काम ॥ दृष्टि
 पडयो महवज सुनि, रह्यो कावससग तांम ॥ २ ॥ नि
 रखी रहें जंजखी, दुई महा जय जीनी ॥ तेहिज ए
 सुन शूरनो, महवज सुनि अवनित ॥ ३ ॥ सूजय
 की ए मादगं, जापो सकल चरित ॥ कजो प्रगट इयो
 कदे, तो मादारे छुण मित ॥ ४ ॥ तेह जणी निगुं
 इहां, तेहयो कोई उनाय ॥ तेहयो को जापो नहि.
 सुज कचमि रजत ॥ ५ ॥ कमें लपेहः हिम हरे, न
 नरय चांहु पाव ॥ नहिं सुज जंजित खनय, कली

न वसाय ॥६॥ डुष्ट चरित्रा एहबुं, घारी मन
 ॥ कारज अतसर पडखती, जई घेरी घर आप
 मंत्रीशमी ॥ वीर बखाणीराणी चेलणा ॥ एदेशी ॥
 सांज विहाणी पडी रातढोजी, व्यापित घोर अं
 तग तग्या गगनमां तारकाजी, लाग्या फिर
 शिचार ॥ सां० ॥ १ ॥ एकरूपें थया विश्वनाजी,
 प्रा वस्तु समुदाय ॥ आक्रम्या श्याम अलिकुलस
 , तमगुणें आप ठल पाय ॥ सां० ॥ २ ॥ खेलता
 मणी रसंजी, जेह मधुपान रसलीन ॥ व्यसनथी
 अलि बांधियाजी, कमल काराघरें दीन ॥ सां० ॥
 ३ ॥ लोक निजनिज घर विश्रमेजी, बली मट्या
 र्ग संचार ॥ तेह समे निसरी गेहथीजी, रहस्य प
 तेह जिम जार ॥ सां० ॥ ४ ॥ अगनी धुखती ग्रही
 हाथमांजी, आवी जिहां मुनिवर तेह ॥ मूर्तिधर धर्म
 ज्यों थिर रह्योजी, कावस्सगें जलकंते देह ॥ सां० ॥
 ५ ॥ पोलिये द्वार पुरनां जडयांजी, संत व्यवहार
 विधिमाण ॥ जाणे निज नेत्र मल्यां पुरेंजी, नावि मु
 नि कष्ट मन जाण ॥ सां० ॥ ६ ॥ लोकसंचार नहीं
 बाहिरेंजी, निरखीयो शून्य वन जाग ॥ डुष्ट कनका
 लही एोजी, साधवा कार्यनो लाग ॥ सां० ॥ ७ ॥

काष्ठ अंगारनें कारणेंजी, किएहीकें था
 गतदिनें सीममां सहजथीजी, सामटा ते
 ए ॥ सां० ॥ ७ ॥ तेह काठें करी पापिणीजी,
 साधुनें तेम ॥ चिट्ठुंदिसें निरखतां साधुनुंजी, अंग
 नहीं जेम ॥ सां० ॥ ८ ॥ विटंतां साधुने
 आणी हत्या महा व्याप ॥ चउगइ डुक संसारनजी,
 विंटीयो तेणीयें आप ॥ सां० ॥ ९ ॥ पूर्व जव
 तेणीयेंजी, निर्दयायें महाघोर ॥ अगनि
 चिट्ठुं दिसेंजी, पवनयो जागीयो जोर ॥ सां० ॥ १० ॥
 मुनिवरें काउस्तग्न ध्यानमांजी, देखी उपसर्ग मरणा
 त ॥ कीथी आराधना चित्तयीजी, तेम रह्यो योग रत
 शांत ॥ सां० ॥ ११ ॥ खंन चौथे खरी खांतगुंजी,
 एह तेत्रीशमी ढाल ॥ कांतिविजय कहे द्वे इहांजी,
 साधुनें साधु जयमाल ॥ सां० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उड़ीप्यो बनदव समो, ज्वालजिह्व चउफेर ॥ मुनि
 वरनें तन पाखते, खातां घूमणिवेर ॥ १ ॥ कामत तनु क
 विरायनुं, बाजे बन्दि तरपंत ॥ मृतयही कनका तणां, जा
 से मुहंत इदंत ॥ २ ॥ विरटापद्व पीडता, सदेतो यी
 हरियो ॥ जगो निज आत्म प्रत्ये, देवा ईन प्रणिप्रा

॥ अलखोत्रीशमी ॥ रागबंगाल ॥ राजा नहीं नमे ॥ ए देशी
 ॥ रे जीउ क्रोधकुं दूरें मारि, शांतिदशासौं आप
 कौं तार ॥ इहानी आतमा ॥ हारे तेरे घरका रूप सं
 जार ॥ मेरे आतमा ॥ हारे रागादिककी संग निवार
 ॥ तेरे नातमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिदिया दे तर
 न उपाव, मत नूछे तुं अबको दाव ॥ झा० ॥ १ ॥
 काल अनादिका नटक्या अनंत, अछुअ न पाया न
 बजल अंत ॥ झा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल, तो
 फिर न मिले ऐसा मेल ॥ झा० ॥ २ ॥ चढिके आ
 वे नाव जिहाज, तर ले नवसागर विनु पाज ॥ झा० ॥
 नावमहा प्रवहनकौं फेर, ध्यान पवनसौं, तैसैं प्रेर
 ॥ झा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वनावें करिकें करार, जैसैं पा
 वैं नवतटपार ॥ झा० ॥ दुःख पाय तैं नरक निगोद,
 करत बसेरा कर्मकी गोद ॥ झा० ॥ ४ ॥ ता दुःख आ
 गें या दुःख कौन, घटमें विचारिकें देखत कौन ॥
 ॥ झा० ॥ या महिलाको कठुअ न दोष, मत कर ई
 न उपर तुं रोष ॥ झा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काट
 न आयु, थाइ नई हे साची सहायु ॥ झा० ॥ बाहि
 र तनकुं जारेंगी आगि, अन्तर तन नहीं इन ला
 गि ॥ झा० ॥ ६ ॥ फहा दहेगी अगनि सगोल,

काष्ठ अंगारनें कारणेंजी, किएहीकें थापिया थाप ॥
 गतदिनें तीममां सहजथीजी, सामटा ते मया टा
 ए ॥ सां० ॥ ७ ॥ तेह काठें करी पापिणीजी, आवे
 साधुनें तेम ॥ चिहुंदिसें निरखतां साधुनुंजी, अंग दीप
 नहीं जेम ॥ सां० ॥ ८ ॥ विटंतां साधुने काउगुजी,
 थापी हत्या महा व्याप ॥ चउगइ डुक संतारनेंजी,
 विटीयो तेणीयें थाप ॥ सां० ॥ १० ॥ पूर्व जय वैरथी
 तेणीयेंजी, निर्दयायें महाधोर ॥ अगति सजगाडीयो
 चिहुं दितेंजी, पवनथी जागीयो जोर ॥ सां० ॥ ११ ॥
 सुनिवरें काउस्तग ध्यानमांजी, देखी उपमर्ग मरण
 त ॥ कीधी आराधना चितथीजी, तेम रह्यां योग रत
 सांत ॥ सां० ॥ १२ ॥ खंन चोये खरी खानुंजी,
 एह तेत्रीशमी टाल ॥ कानिबिजय कहे हवे इहांजी,
 साधने साधु जयमाज ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उदीयो वनदय नमो, ज्यज्जिह्व चउधोर ॥ सुनि
 वरनें तन पावते, जातो घूमखिंदे ॥ १ ॥ कोमल तनु
 गिरायहुं, जाते बन्धि नयंत ॥ सुलयकी कलहा तप्या, जा
 से सुकृत दहत ॥ २ ॥ निरुद्धोपद्रव पीता, तहतां की
 करियांत ॥ लयां निज आत्मन प्रत्ये, देवा देव ॥ ३ ॥

भाग्यश्रीश्री ॥ गगनगाल ॥ राजा नहीं नमे ॥ ए देशी
 ॥ रे जीव कोपकुं दूरें मारि, क्षातिवशासों थाप
 की सार ॥ शानी थातमा ॥ दूरे तेरे घरका रूप सं
 जार ॥ मेरे थातमा ॥ दूरे रागादिककी संग निवार
 ॥ तेरे नातमा ॥ ए आंकणी ॥ आय मिल्या हे तर
 न उपाव, मत नूझे तुं अबको दाव ॥ झा० ॥ १ ॥
 काल अनादिका नटक्या अनंत, अजुअ न पाया न
 बजल अंत ॥ झा० ॥ चूकेगा जो आजका खेल, तो
 फिरि न मिले ऐसा मेल ॥ झा० ॥ २ ॥ चढिके था
 ने नाव जिहाज, तरछे नवसागर बिनु पाज ॥ झा० ॥
 नावमहा प्रवहनकों फेर, ध्यान पवनसों, तैसें प्रेर
 ॥ झा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वनावें करिकें करार, जैसें पा
 वें नवतटपार ॥ झा० ॥ दुःख पाय तैं नरक निगोद,
 करत वसेरा कर्मकी गोद ॥ झा० ॥ ४ ॥ ता दुःख था
 गें या दुःख कौन, घटमें विचारिकें देखत कौन ॥
 ॥ झा० ॥ या महिलाको कबुअ न दोष, मत कर ई
 न उपर तुं रोष ॥ झा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काट
 न थायु, आइ नई हे साची सहायु ॥ झा० ॥ बाहि
 र तनकुं जारेंगी आगि, अन्तर तन नहीं इन
 नि ॥ झा० ॥ कदा दहेगी अगनि सगल

धुं अकाजो रे ॥ निर्णय निःकारण वैरीयें, उपसर्गों
 मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ नवत्रमणथी रे डर्मति,
 बीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हियडुं रे तेहनु,
 वज्र कठिन सुविशेषो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ चरण तुमा
 रां रे तातंजी, पामीनें पण डहिलां रे ॥ प्रणमी न
 शक्यो रे पापथी, आवीनें दुं पहिलां रे ॥ आ० ॥ ९ ॥
 मीट तुमारी रे रस जरी, न पडी माहरे अंगें रे ॥
 वचन तुमारां रे नवि सुण्यां, बेशी कृण एक रंगें
 रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ माहरा, विलय
 गया मनमांहिं रे ॥ कामें नाव्या रे कारिमा, जिम
 कूआनी ठांहिं रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात तणो आ
 गम सुणी, हरख दुउं मुज जेतो रे ॥ इण वेला मुज
 पापथी, थयो दुःखरूपी तेतो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥
 अशरण कीधो रे साहिवा, आजयकी दुं अनाथो रे ॥
 सुतवत्सल जातां मुन्हें, लीधो कांइं न साथो रे ॥
 आ० ॥ १३ ॥ निरखी न शकुं रे तेहवी, एह अवस्था
 रे दीसे रे ॥ पुण्य किहांथी माहरे, दर्शन न लहुं दी
 सें रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ शोकें पूख्यो रे जनकनें, विलपे
 इम जूपालो रे ॥ कांतें चोथा रे खंमनी, कही पणती
 समी ढालो रे ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रति लोचन आंसुपे, खेदाकुंज नृपाल ॥ निज
 दने इस आदिसे, करि नृकुटीनी चाल ॥ १ ॥ पग अन्त
 सारे निरखता, करो शीघ्र परगट्ट ॥ जिम पापीने पाप
 फल, आवे उदय विकट्ट ॥ २ ॥ आप हृदय ठाणे ठव्यो,
 बीजो डुट परिणाम ॥ दुःप्रघर्ष रस सींचता, कग्युं क
 टक विराम ॥ ३ ॥ मुनि हिंसा शाखाशते, पान्यो अति
 विस्तार ॥ आशंकादिक कुसुमगुं, बाध्यो चिहुं पख
 नार ॥ ४ ॥ प्राणनाश फल तेहनुं, अनिमुख हूठ स
 मद् ॥ हिसकने फलशे हवे, पोप्यो पातक वृद्ध ॥ ५ ॥
 ॥ दाल ठत्रीशमी ॥ जाठलदे सात मजार ॥ ए देशी ॥
 ॥ वचन सुणी ततकाल, कठया नड मठराल, आज
 हो डुछा रे जण रुठा जाणे कालनाजी ॥ १ ॥ जोतां
 रत उत नूम, माने सवली धूम, आज हो धारे रे अ
 सुतारे पगने तेहनेंजी ॥ २ ॥ पुर बाहिर एक देश, पेखत
 कुंज निवेश, आज हो बीठी रे त्रिय बीठी पेठी खाड
 गंजी ॥ ३ ॥ नीचे मुख जयजीत, श्याम वसन
 यविनीत, आज हो बेठी रे उपरांठी काया गोपबीजी
 ४ ॥ सुहडें साही केश, काढी बाहिर देश, आज हो
 पाणी रे ॥ साँपी रायनेंजी ॥ ५ ॥ नूपें त

धुं अकाजो रे ॥ निर्जय निःकारण वैर
 मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ जवत्रमण
 बीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हि
 वज्र कठिन सुविशेषो रे ॥ आ० ॥ ८ ॥
 रां रे तातंजी, पामीनें पण डहिलां रे
 शक्यो रे पापथी, आवीनें हुं पहिलां रे ॥
 मीट तुमारी रे रस नरी, न पडी माह
 वचन तुमारां रे नवि सुण्यां, वेशी क
 रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ मा
 गया मनमांहिं रे ॥ कामें नाव्या रे का
 कूआनी ठांहिं रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात
 गम सुणी, हरख दुर्ल मुज जेतो रे ॥ इ
 पापथी, यद्यो दुःखरूपी तेतो रे ॥ आ
 अशरण कीथो रे साहिबा, आजयकी हुं
 सुतवत्सल ॥ कांइ न

नाव बनाया रे ॥ ज० ॥ ए ॥ संवतसर मुनि मुनि वि
 धु १७७५ वर्ष, रही पाटण चोमास ॥ श्रीविजयद
 मा सूरेश्वर राज्यें, गाई मलया उल्लास रे ॥ ज० ॥ १० ॥
 अखा त्रीज तणे गुन दिवसें, रास दुउ सुप्रमाण ॥
 बालकक्रीडानी परें माहरी, हांसी न करशो सुजाण रे
 ॥ ज० ॥ ११ ॥ श्रीजयतिलक वचनथी जे में, न्यूना
 धिक कांई नाख्युं ॥ संघ सकलनी साखें तेहनुं, मि
 ढाडकड दाख्युं रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ उत्तमना गुण
 परिचय करतां, होय समकितनो शोध ॥ उत्तर लाज
 अधिक वली पामे, श्रोता जे प्रतिबोध रे ॥ ज० ॥ १३ ॥
 पाटण नगरनो संघ विवेकी, तस आग्रहथी सीधी ॥
 चिहुं खंमें थई सर्व संख्यायें, ढाल एकाणुं कीधी रे
 ॥ ज० ॥ १४ ॥ जे नवि नावें नणरो गुणरो लेहेरो ते
 जयमाल ॥ उगुणचालीशमी कही कांतें, चोया खंम
 नी ढाल रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ सर्व श्लोक संख्या ॥ ३४०० ॥
 ॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनाम्नि श्रीमलयसु
 दरीचरित्रे पंढितकांतिविजयगणिविरचिते प्राक्
 शीलावदातपूर्वचवर्णनोनामाचतुर्थः परि

